MA(JMC)- 114 (N)

फोटोग्राफी सिद्धांत और अभ्यास

उ.प्र. राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज

खण्ड– 1 फोटो पत्रकारिता का परिचय

इकाई 1 फोटो पत्रकारिता : इतिहास, परिभाषाए एवं महत्व।
इकाई. 2 फोटो पत्रकारिता के बुनियादी सिद्धांत
इकाई. 3 फोटो पत्रकार के आवश्यक गुण, उत्तरदायित्व।
इकाई. 4 फोटो पत्रकारिता : नैतिक मुद्दे एवं आचार संहिता

खण्ड– 2 फोटोग्राफी के उपकरण एवं तकनीक–1

इकाई 5 कैमरा के विभिन्न प्रकार
इकाई. 6 फोटोग्राफी एवं लेंस
इकाई. 7 फोटोग्राफी एवं फिल्टर
इकाई. 8एक्सपोजर, शटर स्पीड, एपर्चर

खण्ड– 3 फोटोग्राफी के उपकरण एवं तकनीक–2

इकाई 9 प्रकाश व्यवस्था एवं उपकरण
इकाई. 10 प्रकाश व्यवस्था : गुणवत्ता एवं महत्व
इकाई. 11 बेसिक शॉट्स
इकाई. 12 फोटो एडिटिंग, फोटो प्रोसेसिंग और प्रिंटिंग

खण्ड– 4 फोटो पत्रकारिता के विविध स्वरूप

इकाई 13 ट्रैवल फोटोग्राफी,
इकाई. 14 नेचर फोटोग्राफी,
इकाई. 15 फैशन फोटोग्राफी
इकाई. 16 पोट्रेट फोटोग्राफी

परामर्श समिति

आचार्य सत्यकाम कुलपति, उ0 प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज

विनय कुमार कुलसचिव, उ0 प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज

पाठ्यक्रम निर्माण समिति ; (अध्ययन बोर्ड)

प्रो0 सत्यपाल तिवारी निदेशक, मानविकी , विद्याशाखा उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज

प्रो. अनुराग दवे आचार्य, जनसंचार एवं पत्रकारिता विभाग , काशी हिन्दू, विश्वविद्यालय, वाराणसी

प्रो. गोविन्द जी पाण्डेय आचार्य जनसंचार एवं पत्रकारिता विभाग , बाबा साहेब भीमराव, अम्बेडकर विश्वविद्यालय, लखनऊ

डॉ0 दिग्विजय सिंह राठौर सहा0 आचार्य, जनसंचार एवं पत्रकारिता विभाग , वीर बहादुर सिंह पूर्वाचल,विश्वविद्यालय,जौनपुर

डॉ0 साधना श्रीवास्तव सहा0 आचार्य जनसंचार एवं पत्रकारिता विभाग, उ0प्र0राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज

डॉ0 सतीश चन्द्र जैसल, सहा0 आचार्य जनसंचार एवं पत्रकारिता विभाग, उ0प्र0राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज

लेखक

डॉ0 साधना श्रीवास्तव, असिस्टेन्ट प्रोफेसर, जनसंचार एवं पत्रकारिता विभाग, उ0प्र0राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज, उ0प्र0– **इकाई–1**

डॉ0 सतीश चन्द्र जैसल, असिस्टेन्ट प्रोफेसर, जनसंचार एवं पत्रकारिता विभाग, उ0प्र0राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय,प्रयागराज,उ0प्र0 **इकाई–3, 4**

डॉ0 रूचिता सुजाय चौधरी, असि0 प्रो0 जनसंचार एवं पत्रकारिता विभाग,ख्वाज़ा मुइनददीन चिश्ती लैंग्वेज विश्वविद्यालय, लखनऊ **इकाई–2 ,13**

डॉ0 सुनील मिश्र, एसोसिएट प्रोफेसर, पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग, विवेकानन्द इंस्टीटूयट ऑफ प्रोफेशनल स्टटीज,नई दिल्ली **इकाई–5,9,10**

डॉ0 हरीश, प्रोफेसर ,पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग, सेन्ट जेवियर विश्वविद्यालय कोलकाता, पश्चिम बंगााल **इकाई–6,12**

डॉ0 आज्ञा राम ए0 राम पाण्डेय, प्रोफेसर ,पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग,स्कूल ऑफ इंस्टीटूयट ऑफ मीडिया एवं कम्यूनिकेशन स्टटीज, गलगोटिया विश्वविद्यालय नोएडा **इकाई–7,8,11**

डॉ सूर्य प्रकाश, पत्रकारिता एवं जनसंचार, माखन लाल चतुर्वेदी पत्रकारिता वि0वि0,रीवा कैम्पस, मध्यप्रदेश **इकाई–14**

डॉ रवि सूर्यवंशी, असिस्टेन्ट प्रोफेसर, पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज **इकाई–15,16**

सम्पादन

प्रो. सुबोध कुमार , पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग,वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा राजस्थान

समन्वयक

डॉ0 साधना श्रीवास्तव, असिस्टेन्ट प्रोफेसर, जनसंचार एवं पत्रकारिता विभाग, उ0प्र0राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज, उ0प्र0

मुद्रितवर्ष– 2024

© उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज

ISBN No. –

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस सामग्री के किसी भी अंश को उ प्र राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज की लिखित अनुमति के बिना किसी भी रूप मे ंमिनियोग्राफी (वक्रमुद्रण) द्वारा या अन्यथा पुनः प्रस्तुत करने की अनुमति नही ंहै।

नोट :पाठय साम्रगी में मुद्रित साम्रगी के विचारों एवं आकड़ो ंआदि के प्रति विश्वविद्यालय, उत्तरदायी नही हैं।

प्रकाशन विनय कुमार, कुलसचिव, उ0 प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज, 2024।

इकाई - 1

फोटो पत्रकारिता का इतिहास, परिभाषाएं एवं महत्व

पाठ संरचना

1.0 उद्देश्य

1.1 प्रस्तावना

1.2 फोटो पत्रकारिता और फोटोग्राफी में अंतर

1.3 फोटो पत्रकारिता और पत्रकारिता में अन्तर

1.4 फोटो पत्रकारिता एवं फोटोग्राफी की परिभाषा

1.5 फोटो पत्रकारिता का विश्व में इतिहास

1.6 भारत में फोटो पत्रकारिता का विकास

1.7 फोटो पत्रकारिता और महिला फोटोग्राफर

1.8 फोटो पत्रकारिता का महत्व

1.9 सारांश

1.10 शब्दावली

1.11 सन्दर्भ ग्रन्थ

1.12 अभ्यास हेतु प्रश्न

1.0 उद्देश्य

इस इकाई का अध्ययन करने से आप निम्नलिखित तथ्यों से परिचित हो सकेंगे:

- फोटो पत्रकारिता का अर्थ एवं परिभाषा।
- फोटो पत्रकारिता और फाटोग्राफी का अंतर।
- फोटो पत्रकारिता का विश्व में इतिहास।
- फोटो पत्रकारिता का भारत में इतिहास के बारे में जान सकेंगे तथा
- फोटो पत्रकारिता के महत्व को समझ सकेंगे।

1.1 प्रस्तावना

फोटो पत्रकारिता एक ऐसा साधन है जो समाज के विभिन्न पहलुओं, संघर्षों, और सफलताओं को सकारात्मक दृष्टिकोण से प्रस्तुत करने में सफल हो रहा है। चित्रों की शक्ति से समाज के गहरे परिवर्तन, बदलाव, और विचारों को बदलने में मदद मिलती है। फोटो पत्रकारिता, घटनाओं, परिस्थितियों और समाज के विभिन्न पहलुओं को चित्रों के माध्यम से प्रस्तुत करती है। यह न केवल तथ्यात्मक जानकारी प्रदान करती है, बल्कि कहानियों को भी जीवंत करती है। फोटो पत्रकारिता का इतिहास समृद्ध और विविधतापूर्ण है। भारत की फोटो पत्रकारिता में न केवल भारतीय संस्कृति का प्रतिबिंब है, बल्कि राष्ट्रीय आंदोलनों, सामाजिक बदलावों और राजनीतिक परिवर्तन के दृश्यों को प्रस्तुत करता है। फोटो पत्रकारिता ने समाज की असलियत को उजागर करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। घटना की तस्वीर दिखा कर शांत किया जा सकता है। फोटो अथवा तस्वीर पाठकों को हकीकत से रूबरू कराते है। यह शाश्वत सत्य है। बिना शब्दों के तस्वीर घटना स्थल की स्थिति बयान करती है। हजारों शब्दों में जिस स्थिति, भाव या घटना की अभिव्यक्ति नहीं हो सकती उसे हम एक चित्र द्वारा स्पष्ट कर सकते हैं। चित्र शब्द रहित काव्य हैं। टेलीविजन, फिल्म के जरिये हम घटनाओं के फोटो देखकर समाचार की जानकारी प्राप्त कर लेते हैं। फोटो हमें उस स्थान से भी परिचय करा देती हैं जहाँ घटनाएं घटी और समाचार विकसित हुए। प्रिन्ट मीडिया और इलेक्ट्रानिक मीडिया में फोटो पत्रकारिता अधिक प्रभावी होता है। यह फिल्म, टीवी और अखबारों पत्र-पत्रिकाओं का चित्रात्मकता प्राण तत्व है। एक चित्र हजार शब्दों के बराबर होता है। यह समाचार के आभूषण तो होते ही हैं साथ में दर्शकों के मानस को मथने वाले भी होते हैं और दर्शकों को भाव-विह्वल कर दते हैं। इसमें चित्रों के माध्यम से सामाजिक समस्याएं जैसे गरीबी, न्याय, शिक्षा, स्वास्थ्य, पर ध्यान केंद्रित किया जा रहा है। यह चित्रों के जरिए लोगों को जागरूक करता है और समाज में सुधार के लिए प्रेरित करता है।

1.2 फोटो पत्रकारिता और फोटोग्राफी में अंतर

फोटो पत्रकारिता का इतिहास को लेकर अलग-अलग मत है इसके प्रारंभ के संदर्भ में कुछ विद्वानों का मानना है कि फोटोग्राफी के इतिहास के साथ ही फोटो पत्रकारिता का इतिहास प्रारंभ हो जाता है तो वहीं कुछ विद्वानों का मानना है कि जब से फोटो का प्रयोग पत्र पत्रिकाओं में समाचार के साथ किया जाने लगा है तब से फोटो पत्रकारिता का इतिहास शुरू हो जाता है।

पत्रकारिता का इतिहास और फोटोग्राफी के इतिहास को अनेक विद्वान एक मान लेते हैं परंतु इन दोनों में एक बारीक अंतर है फोटोग्राफी का इतिहास कैमरे के विकास, फोटोग्राफी प्रक्रिया के विकास और तस्वीरों की दुनिया से जुड़ा है जबकि फोटो पत्रकारिता में समाचार मूल्य और तत्व निहित होते हैं यद्यपि फोटो पत्रकारिता के केंद्र बिंदु में फोटो ही है लेकिन इसके साथ ही इसमें एक पत्रकार का विजन और समाचारों को प्रदर्शित करने की क्षमता भी सम्मिलित होती है।

1.3 फोटो पत्रकारिता और पत्रकारिता में अन्तर

पत्रकारिता में शब्दों और भाषा का महत्व होता है। सूचना और समाचारों को प्रकाशित और प्रसारित करने के लिए भाषा की आवश्यकता होती है। पूरे विश्व में प्रिंट मीडिया की भाषा अलग-अलग है किन्तु फोटो की भाषा एक ही है। हिन्दी, अंग्रेजी, रूसी, चीनी उर्दू वे सभी भाषाएं अलग-अलग प्रतीकों द्वारा समझी और लिखी जाती है। विभिन्न देशों के लोग अपनी विविध भाषा में विचार प्रकट करते हैं। फोटो ही ऐसा है जिसकी भाषा एक है जो सर्वजन हेतु बोधगम्य है। यह भाषा की दीवार को चित्रों और फोटो ने ही तोड़ा है।

- फोटो पत्रकार शब्दों के स्थान पर फोटो का ही प्रयोग करता है। किसी भी घटना, त्योहार (दुर्गापूजा, दशहरा आदि) फैशन, विज्ञापन आदि के बारे में फोटो पत्रकारिता का महत्व बढ़ जाता है। विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में इन दिनों कुछ ऐसी फोटो भी प्रकाशित की जाती है जिसमें कुछ अधिक बताने की जरूरत नहीं पड़ती लोग फोटो देखकर ही समझ जाते हैं। सम-सामयिक घटनाओं के सचित्र विवरण की प्रस्तुति फोटो पत्रकारिता हैं। भयावह विनाशकारी, विकृत, वीभत्स घटनाओं को कैमरे में बंद करने हेतु एक फोटो पत्रकार जितना तत्पर रहता है उतना ही वह किसी समारोह, उत्सव और आयोजन के समय भी एकाग्रचित होता है। फोटो अच्छी और बुरी सभी घटनाओं का साक्षी होता है।
- पत्रकारिता और फोटो पत्रकारिता में कलम और कैमरे का अन्तर भी है। पत्रकार कलम से समाचार पत्र और पत्रिका के लिए जो काम करता है तो वहीं एक फोटो पत्रकार अपने कैमरे से। पत्रकारिता हो या फिर फोटो पत्रकारिता इन दोनों के लिए कुशलता, ईमानदारी और पत्रकारिता के बुनियादी सिद्धान्तों का पालना आवश्यक है।
- पत्रकारिता की तरह फोटो पत्रकारिता भी मात्र व्यवसाय नहीं, बल्कि एक मिशन और कला भी है, जिसमें कुशलता और हुनर की जरूरत होती है जो समय के साथ आती है।

फोटो और फोटो पत्रकारिता का अंतर –फोटो और फोटो पत्रकारिता की दृष्टी से कुछ उदहारण अग्रलिखित है -

1. जैसे होली या दीपावली या किसी अन्य उत्सव या त्योहार पर सब फोटोग्राफी करते हैं, वह समाचार पत्र या पत्रिका में छपने से पहले तक सिर्फ फोटो है, परन्तु जैसे वह फोटो या तस्वीर एक समाचार के साथ प्रकाशित हो गई वह फोटो पत्रकारिता के दायरे में आ जाएगा-

फोटो पत्रकारिता	फोटो
Dr amit @DainikBhaskar, newspaper about Holi Festival in India #Hindi https://x.com/ankit1989/status/839708639640215552/photo/1	क्रेडिट - मोहित कुमार जायसवाल

2. मैथिलीशरण गुप्त जी के जन्म जयन्ती पर पर फोटोग्राफी की गयी जो वह समाचार पत्र या पत्रिका में छपने से पहले तक सिर्फ फोटो है परन्तु जैसे वह समाचार के साथ प्रकाशित हो गई वह फोटो पत्रकारिता है -

फोटो पत्रकारिता	फोटो
संयम भारत, प्रयागराज संस्करण	सहयोग -हिन्दुस्तानी एकेडमी

3. भारी बारिश और बाढ़ के समय कही जल जमाव, तो कहीं राहत और बचाव किये जाते हैं, परन्तु जो फोटो प्रकाशित नहीं होती वह फोटोग्राफी है। जो फोटो समाचार पत्र या पत्रिका में समाचार के साथ प्रकाशित हो गई वह फोटो पत्रकारिता है।

फोटो पत्रकारिता	**फोटो**
आभार - हिंदुस्तान	क्रेडिट - मोहित कुमार जायसवाल

1.4 फोटो पत्रकारिता एवं फोटोग्राफी की परिभाषा

फोटो अपने में समाचार, विचार, रिपोर्ताज, लेख, दस्तावेज और सम्पादकीय सभी कुछ है, यह विश्वसनीयता का सर्वोत्तम माध्यम है। विवादास्पद बातों पर फोटो द्वारा की गई अभिव्यक्ति निर्णायक होती है। सफल फोटो पत्रकार वही होता है जो संवेदनशील अनुभूतियों को दर्शक के सामने प्रस्तुत करता है। उसका सम्प्रेषण ही उसका प्रेरक होता है और सत्य ही उसकी कथा का प्राण होता है।

- पत्रकारिता की समझ में फोटोग्राफी का हुनर मिलाना ही फोटो पत्रकारिता है। फोटो पत्रकारिता में दो शब्दों का जोड़ है। फोटो पत्रकारिता एक ऐसा माध्यम है जिसके जरिये सूचनाओं को प्रमाण और दृश्य रूप में रिकॉर्ड कर सकते है। जो समाचार शब्दों से लिखे जाते है. उनका मानव मन पर उतना गहरा प्रभाव नहीं होता है जितना कि फोटो साथ प्रकाशित समाचारों का होता है। जब पत्रकारिता में समाचारों के प्रस्तुतिकरण में फोटो का प्रयोग होता है तो उसे ही फोटो पत्रकारिता कहते है।
- जैसा कि पहले भी स्पष्ट किया गया है कि फोटो पत्रकारिता का सम्बन्ध समाचारों से है तो वही फोटोग्राफी अलग-अलग प्रकार की और अलग-अलग लक्ष्यों के लिए की जाती है। फोटो पत्रकारिता में समाचार और घटनाओं के अनुरूप फोटो के माध्यम से सटीक जानकारी दी जाती है।

- फोटो पत्रकारिता ने समाचारों के प्रस्तुतीकरण को नई दिशा प्रदान की है, जिसमें सूचनाओं, घटनाओं और विषयों को पाठकों और दर्शकों तक भेजने के लिए फोटो का प्रयोग किया जाता है, जिससे पाठकों और दर्शकों को प्रमाण के सार्थक रूप में सामग्री प्रदान होती है।

'फोटोग्राफी' शब्द का पहली बार इस्तेमाल सर जॉन हर्शल ने वर्ष 1839 में किया था। इसी तरह फोटोग्राफिक प्रक्रिया सार्वजनिक हो गई। फोटोग्राफी शब्द, जिसका अर्थ है 'प्रकाश से लिखना' ग्रीक शब्दों से लिया गया है, फोटो जिसका अर्थ है प्रकाश और ग्राफी का अर्थ है लेखन।

ग्रीक शब्द फोटोग्राफी का अर्थ है 'प्रकाश से लिखना' अर्थात् फोटोग्राफी एक तरीका है जिसमें वस्तु की छवि को प्रकाश संवेदी धरातल पर प्रकाश के प्रभाव से बनाया जाता है। इसमें कैमरे में जो प्रकाश प्रवेश करता है उसका नियन्त्रण अपरचर (Aperture) को खोलने के आकार और शटर (Shutter) की गति पर निर्भर करता है जिसे उद्भासन (Exposure) कहा जाता है।

डॉ. अर्जुन तिवारी ने कैमरा को स्मृति सहित एक दर्पण कहा साथ उनका इस सन्दर्भ में कहना था कि- ''फोटोग्राफी एक प्रभावी संचार माध्यम है जो असीमित विविधता की धारणा, व्याख्या और निष्पादन की पेशकश करता है।'' तो एन्सेल एडेम्स ने फोटो के सन्दर्भ में बताया कि ''आप तस्वीर खींचते नहीं हैं बल्कि आप सृजन करते हैं''

''सब राष्ट्रों की जनता के बीच मेल-मिलाप उत्पन्न करने में फोटो पत्रकार की बहुत बड़ी देन होती है। दुनिया की समस्त भाषाओं में फोटो समाचारों की भाषा सबसे अधिक सरल होती है। आज के युग में जबकि अगिनत मनुष्यों पर अत्याचार हो रहे है तथा कई देशों में व्यक्तिगत स्वतन्त्रता नष्ट हो रही है, चित्र व्यक्ति की स्वतंत्रता को बरकरार रखते हैं क्योंकि सच्चाई को ज्यों का त्यों प्रस्तुत करते हैं।''- आइजन हावर

1952 में, हेनरी कार्टियर-ब्रेसन, जो आधुनिक फोटो जर्नलिज्म के संस्थापक माने जाते हैं, जिन्होंने फोटोग्राफी को एक ''निर्णायक क्षण''।

फोटो पत्रकारिता का प्रभाव अधिक है। चित्र किसी को उद्वेलित करने तक में सक्षम है। जो कि सोचने को भी मजबूर कर देते हैं। अकबर इलाहाबादी की उक्ति सार्थक सिद्ध होती है-

'महफिल उनकी साकी उनका, आंखे अपनी बाकी उनका।'
'एक तस्वीर अक्सर मात्राओं से कहीं अधिक बयां कर देती है'

उपरोक्त सभी परिभाषाओं से स्पष्ट है कि फोटो पत्रकारिता सत्यपरक और साक्ष्य की पत्रकारिता है। जो समाचार और जानकारी को फोटो के माध्यम से प्रमाण स्वरूप् प्रस्तुत करने का सक्षम तरीका है। यह घटनाओं, समाचारों को सीधे से

दर्शकों के सामने लाने का जरिया है। सामाजिक मुद्दों, विभिन्न सांस्कृतिक घटनाओं और राजनीतिक बदलावों के साथ किसी भी घटनाक्रम को सीधे प्रस्तुत करना ही फोटो पत्रकारिता है।
चित्रों से और दृश्यों से मानव का लगाव हमेशा से रहा है। समय-समय पर मिलने वाली पुरानी सभ्यताओं के अवशेष और गुफा चित्र इस बात के गवाह है । कैमरे के अविष्कार के पहले यह चित्रकार ऐतिहासिक कहानियों को चित्रित किया करते थे।

फोटो पत्रकारिता का प्रारंभ फोटोग्राफी के आविष्कार के साथ हुआ। 19वीं सदी में फोटोग्राफी के उद्भाव के बाद, लोगों का दृष्टिकोण समाचार और जानकारी प्राप्त करने के प्रति बदल गया। यह एक विशेषज्ञता का क्षेत्र है जो व्यक्ति को सीधे और शक्तिशाली तरीके से जानकारी प्रदान करता है। कैमरा 19 वीं शताब्दी में आया था और उसके बाद से ही फोटो का बनाना सम्भव हो पाया। सन् 1839 ई. में 'निगेटिव' से 'पॉजिटिव ' चित्र बनाने की प्रक्रिया का आविष्कार विलियन हेनरी फाक्स ने किया। फोटो के माध्यम से समाचारों के प्रसारण को पत्रों ने महत्व दिया।

1.5 फोटो पत्रकारिता का विश्व में इतिहास

समाचारों पत्रों में फोटो को महत्व दिया जाना ही फोटो पत्रकारिता का इतिहास है। फोटो पत्रकार घटनाओं को अपने कैमरे से दुनिया को दिखाता है। सत्यता और प्रमाणिता के साथ विश्वास को स्थापित करना पत्रकारिता की अनिवार्य शर्त है। फोटो से जब दृश्य स्वयं उपस्थित हो जाता है तब किसी और प्रमाण की आवश्यकता ही नहीं रहती है।

फोटो पत्रकारिता के इतिहास में फोटोग्राफी के प्रवेश से पहले रेखाचित्रों का चलन था। फोटोग्राफी का आविष्कार 1839 में माना जाता है किंतु इससे बहुत पहले ही लकड़ी के ठप्पों और रेखा चित्रों का प्रयोग हो रहा था 1607 के आसपास लकड़ी के ठप्पों पर रेखा चित्र बनाकर उनका प्रयोग समाचार पत्र और पत्रिकाओं में किया जाने लगा था। यह समाचार पत्र और पत्रिकाओं को सुन्दर और आकर्षक बनानें के लिए किया जाता था। फोटो पत्रकारिता के पहले के दौर में 18वीं शताब्दी तक छोटी पुस्तिका और न्यूज लैटर ही प्रकाशित किए जाते थे। 19वीं शताब्दी के मध्य से रेखाचित्रों से सुसज्जित समाचार-पत्रों के प्रचलन के कारण इन छोटी-छोटी पुस्तिकाओं का प्रकाशन बंद-सा हो गया या फिर ताजा समाचारों और रेखाचित्रों से युक्त अनेक समाचार पत्र प्रकाशित हुए।

सन् 1632 में स्वीडिश इन्टेलीजेन्सर नामक समाचार पत्र प्रकाशित हुआ, जिसमें रेखाचित्रों का समावेश और प्रकाशन किया गया था। उस समय के फोटोपत्रकारों का प्रमुख उद्देश्य कला के माध्यम से समाचार पत्रों को आकर्षक बनाकर ज्यादा से ज्यादा बेचना होता था । इसके बाद से ही पत्रों और पत्रिकाओ में समाचार के साथ ठप्पों और रेखाचित्रों को प्राथमिकता दी जाने लगी थी। इन ठप्पों पर नक्काशी करने वाले और प्रकाशन के लिए इन्हें जोड़कर एकरूपता प्रदान करने वाले अपने कार्य में

कुशल होते थे और इसके लिए वे काफी अधिक राशि लेते थे। यह एक साधारण प्रक्रिया नहीं थी, बल्कि इसमें और सुधार की आवश्यकता थी। समाचार पत्रों और पत्रिकाओं में ऐसे चित्रों के प्रकाशन से वह अधिक आकर्षक हो गए।

द पेनी मैग्जीन (The Penny Magazine)

फोटो पत्रकारिता के इतिहास में द पेनी मैग्जीन (The Penny Magazine) का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। सन् 1832 में लंदन से प्रकाशित द पेनी मैग्जीन का प्रकाशन फोटो पत्रकारिता के इतिहास की एक महत्वपूर्ण घटना थी । इसमें बहुत अलग-अलग तरह की जानकारी जैसे प्रमुख स्थलों, पशु, पक्षी, कविताओं के साथ रेखाचित्र प्रकाशित किये जाते थे। इसके सम्पादक चाल्स व्हाईट (Charles White) थे जो प्रति शनिवार इसका प्रकाशन करते थे। इसका प्रकाशन समस्याओं और सामान्य जानकारी को ध्यान में रखकर आरम्भ किया गया था। पत्रिका का मुख्य लक्ष्य समाज में जागरूकता लाना था परन्तु इसके साथ ही पाठकों की रूचि अलग-अलग रेखाचित्र के कारण ज्यादा हो जाती थी।

रेखाचित्रों से आगे फोटो से सुसज्जित पत्र-पत्रिकाओं के दौर में सन् 1842 में साप्ताहिक दि इलस्ट्रेटेड लंदन न्यूज (The Illustrated London News) के प्रकाशन से शुरू हुआ।

- हर्बट इन्ग्राम (Herbert Ingram) ने द इलस्ट्रेटिड लंदन न्यूज का पहला संस्करण 14 मई 1842 को प्रकाशित किया था। इसके फोटो प्रकाशन के बाद से आबजरवर (Observer) संडे टाइम्स (Sunday Times) और वीकली क्रानिकल (Weekly Chronicle) ने भी धीरे-धीरे रेखाचित्रों का प्रकाशन बंद कर दिया। जिससे फोटो पत्रकारिता में अभूतपूर्व परिवर्तन आया। इसकी सफलता से प्रेरित होकर इन्ग्राम ने सन् 1848 में लंदन टैलीग्राफ (London Telegraph) नामक दैनिक पत्रिका का प्रकाशन आरम्भ करने का निर्णय लिया।
- उसी दौरान अमेरिका में पहला सफल साप्ताहिक समाचार पत्र ग्लैजनस पिक्टोरियल एण्ड ड्रांइग रूप (Gleason's Pictorial and Drawing Room Companion) का सन् 1851 में बोस्टन (Boston) से प्रकाशन किया गया, जिसमें चित्र भी छापे जाते थे।
- हर्बट इन्ग्राम और उनके समाचार पत्र 'इलस्ट्रेटेड लन्दन न्यूज' से प्रतियोगिता करते हुए एन्ड्रयू स्पोटिसवुड (Andrew Spottiswoode) ने पिक्टोरियल टाइम्स (Pictorial Times) नामक समाचार पत्र को करना आरम्भ किया। समय के साथ हि उस समाचार पत्र को हर्बरट इन्ग्राम ने खरीद कर दि इलस्ट्रेटिड लंदन न्यूज में समायोजित कर दिया। इसी तरह सन् 1855 में इन्ग्राम ने इलस्ट्रेटिड टाइम्स नामक समाचार जो प्रतियोगियों ने शुरू किया था उसे अपने वर्चस्व में ले लिया था।इसके अतिरिक्त भी अनेक समाचार पत्र आये जिन्होंने फोटो पत्रकारिता के महत्व को समझा और समाचार पत्रों में फोटो और रेखाचित्र क प्रयोग किया गया
- न्यूयार्क से प्रकाशित हार्पर्स वीकली (Harper's Weekly) और दि डेली मिरर (the Daily Mirror) लंदन से प्रकाशित होने वाला दि डेली ग्राफिक (The Daily Graphic) और पेरिस से छपने वाला एकसेल्शीयर (Excellsior) ऐसे समाचार पत्र थे, जिन्होंने समाचारों पत्रों के लिए चित्रों के महत्व को समझा और समाचार

पत्रों में प्रकाशन भी किया।1923 में लार्ड नार्थ क्लीफ (Lord North Cliff) ने London Daily Mirror नामक टेबलायड शुरू किया, जिसका बाद में नाम बदल कर इलस्टेटिड मिरर (Illustrated Mirror) रखा गया। 1919 में संयुक्त राष्ट्र अमेरिका से न्यूयार्क इलस्ट्रटिड डेली न्यूज (New York Illustrated Daily news) जिसका बाद में नाम बदल कर डेली न्यूज (Daily News) रखा गया.

फोटो पत्रकारिता के लोकप्रिय होने के बाद अनेक-समाचार-पत्र और पत्रिकाएं चित्र छपने लगी और इस प्रकार अनेक फोटो पत्रकारों को रोजगार उपलब्ध हो गये। संयुक्त राज्य अमेरिका से प्रकाशित होने वाली Life Magazine और ब्रिटेन से छपने वाली पिक्चर पोस्ट फोटो पत्रकारिता के सफल उदाहरण है।

लाईफ मैंगजीन (Life Magazine)

लाईफ मैंगजीन का प्रकाशन हैनरी लूस (Hennery Loose) जो टाइम्स मैगजीन का सफल प्रकाशक था, द्वारा सन् 1936 में आरम्भ किया गया। लाईफ मैंगजीन ने दूसरे विश्वयुद्ध, कोरिया युद्ध और वियतनाम युद्ध की घटनाओं की अनेक खबरें और फोटो प्रकाशित की, परन्तु इसकी बिक्री में कमी आई और सन् 1972 के बाद इसका प्रकाशन बंद कर दिया गया था। अब टाइम्स मैगजीन ग्रुप ने लाईफ मैगजीन का प्रकाशन पुनः आरम्भ किया है।

पिक्चर पोस्ट

ब्रिटेन से प्रकाशित होने वाली पिक्चर पोस्ट उन पत्रिकाओं में से थी, जिसने फोटो के महत्व को समझते हुए इन्हें प्रमुखता से प्रकाशित किया। सन् 1938 में एडवर्ड जी हलटन द्वारा पिक्चर पोस्ट पत्रिका का प्रकाशन ब्रिटेन से पहली बार किया गया और इसका सम्पादन स्टीफन लोरैन्ट द्वारा किया गया था। सन् 1940 में जब स्टीफन लोरैन्ट संयुक्त राष्ट्र अमेरिका चले गए, टॉम होपकिन्सन इसके सम्पादन बने जिन्होंने यहूदियों पर हो रहे अत्याचारों के विरूद्ध अभियान चलाया। फोटो पत्रकारिता के इतिहास में पिक्चर पोस्ट का योगदान उल्लेखनीय है। दूसरे विश्वयुद्ध के दौरान अन्य समाचार पत्रों और पत्रिकाओं की तरह पिक्चर पोस्ट की बिक्री भी दिन प्रतिदिन बढ़ने लगी।

फोटो पत्रकारिता के इतिहास में लाईफ मैंगजीन और पिक्चर पोस्ट दोनों का योगदान अपने आकर्षक और संवेदनशील चित्रों के लिए है। घटनाओं को देखना, संसार को देखना, महान घटनाओं का साक्षी बनना, गरीब का चेहरा एवं गौरवान्वित की भंगिमाएं देखना, अपरिचित एवं विलक्षण वस्तुएं देखना, जंगल व चन्द्रमा पर अनेक बिम्ब देखना, आदमी के कार्य, उसकी चित्रकारी, मीनारें एवं आविष्कार देखना, दीवारों के पीछे, कमरों के भीतर रखी चीजों को देखना, देखना और देखने की प्रक्रिया में आनन्द लेना, देखना एवं चकित होना यह सब कैसे संभव होता है। 17 वीं सदीफ्रांसीसी मुद्रक जोसफ नाइसफोर नीप्से (Joseph Nicephore Niepce) और लुईस डैगेरे (Louis Daguerre) ने फोटोग्राफी में महतवपूर्ण काम किये।

- 19 वीं सदी के अंत और 20 वीं सदी की शुरुआत में, पोर्टेबल कैमरों का प्रचलन बढ़ा, जिसके परिणाम स्वरूप स्पेनिश-अमेरिकी युद्ध और दक्षिण अफ्रीकी युद्ध जैसी घटनाओं की वृत्तचित्र छवियां उत्पन्न हुईं।
- फोटो पत्रकारिता के इतिहास में क्राइमन युद्ध की फोटो को जब फोटोग्राफर्स ने कैद किया और सार्वजनिक रूप से प्रदर्शित किया जिससे लोगों को युद्ध की असलियत और उसके प्रभावों का सामना करने का मौका मिला। युद्ध की फोटो ने फोटो पत्रकारिता में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।
- अमेरिका, प्रथम विश्व युद्ध तथा स्पेन के गृह युद्ध की फोटाग्राफी को महत्वपूर्ण दौर माना जाता है। इस समय भी फोटो पत्रकारिता पनपी। मैथ्यू बी. ब्रेडी (Mathew B. Brady) ने अनेक फोटो जो सिविल वार के दौरान खींचे थे, पत्रिका में प्रकाशन के लिए उन्हें लकड़ी के ठप्पों पर उकेरा था।
- जिमी हेयर, जेसी हेमंत ने युद्धों का रोचक चित्र प्रस्तुत किया। इसके बाद धीरे-धीरे फोटो पत्रकारिता में निरंतर विकास होता गया। शुरूआत युद्ध की घटनाओं से हुई बाद में समारोहों, उत्सवों, समाचार, आदि पर भी ध्यान दिया जाने लगा। समाचार, रिपोर्ट, फीचर को आकर्षक व रोचक बनाने मे फोटो की प्रमुख भूमिका है। वर्ष 1888 में अमेरिकी उद्यमी जार्ज ईस्टमैन ने 'कोडैक बॉक्स कैमरे का आविष्कार किया।
- ईस्टमैन ने इस कैमरे में हल्की रील फिल्म का प्रयोग किया। इस ब्राउनी कैमरे के आविष्कार से पहले फोटोग्राफी की विधि काफी खर्चीली थीं।

1892 में 'ईस्टमैन कोडैक' नामक फोटो ग्राफिक कंपनी की स्थापना की गई, जिसने 1900 तक आते-आते एक डॉलर की कीमत पर कैमरे बेचना प्रारंभ कर दिया। कैमरे में उपयोग की जाने वाली रंगीन फिल्म में विद्युत संवेदी मिश्रण की कई परतें होती हैं, जो विद्युत की प्रत्येक किरण को विभिन्न रंगों में रिकॉर्ड करती हैं। यह मिश्रण विद्युत संवेदी सिल्वर हेलाइड और जिलेटिन से निर्मित होता है। जब इन परतों को रंगीन प्रिंट या ट्रांसपेरेंसी के माध्यम से देखा जाता है, तो विभिन्न रंग मिलकर वास्तविक दृश्य के सही रंग को प्रदर्शित करते हैं।

मूविंग कैमरा के आगमन ने इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के क्षेत्र में एक नया मोड़ लाया है। यह तकनीक चलती-फिरती घटनाओं को वास्तविकता के करीब लाने में सहायक है। मूविंग कैमरा के विकास ने न केवल इलेक्ट्रॉनिक मीडिया बल्कि फिल्मों के निर्माण में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया है। इसके द्वारा विभिन्न गतिशील क्रियाओं और संवादों को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया जा सकता है।यह जीवन के वास्तविक अनुभव के समान लगता है। इसमें फोटो ऑफर का महत्व अत्यधिक बढ़ जाता है। मूविंग कैमरा का उपयोग करके समाचार, फीचर और फिल्म को रोचकता प्रदान की जा सकती है। मूविंग कैमरा के कारण टेलीविजन पर समाचारों को वास्तविकता के अनुरूप दिखाया जा सकता है। इस कैमरे के विकास ने विभिन्न चैनलों के विस्तार में सहायता की है। इससे समाचारों की विश्वसनीयता में भी सुधार हुआ है।

1920 के दशकमें एर्मनॉक्स और लीका कैमरों के आगमन ने एक नई कैंडिड शैली को जन्म दिया, जिसने तस्वीरों के माध्यम से कहानियों को प्रस्तुत करने के तरीके को नया रूप दिया। तकनीकी उन्नति और मानव साहस के माध्यम से,

प्रारंभिक फोटो पत्रकारिता ने समाज की सफलताओं, त्रासदियों और दैनिक जीवन को दर्शाने के लिए एक नया मार्ग प्रशस्त किया।

1.6 भारत में फोटो पत्रकारिता का विकास

भारत में फोटो पत्रकारिता का इतिहास गरिमापूर्ण और विविधतापूर्ण यात्रा है, भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के समय में पत्रकारिता का उद्देश्य केवल समाचार प्रसार नहीं था, बल्कि जनजागरूकता और संघर्ष में सक्रिय भागीदारी भी थी। आजादी के बाद भी सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक परिवर्तनों का गहरा प्रभाव पड़ा है। भारत आजाद हुआ समाचार पत्र और पत्रिकाएं सामाजिक बुराईयों के उन्मूलन और राष्ट्रीयता की भावना से ओत-प्रोत थी। समाचार पत्रों और पत्रिकाओं में न केवल स्वतन्त्रता आन्दोलन को बल दिया, बल्कि में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

पहला समाचार पत्र बंगाल गजट जिसे कलकत्ता जनरल एडवरटाइजर के नाम से भी जाना जाता है सन् 1780 में जेम्स आगस्टन हिक्की द्वारा प्रकाशित किया गया। बंगाल से सन् 1818 में समाचार दर्पण नामक पहला स्थानीय भाषा का समाचार पत्र प्रकाशित किया गया. पहला हिंदी साप्ताहिक समाचार पत्र उदंड मार्तंड 1826 में कलकत्ता से प्रकाशित हुआ था.

हमारे देश में समाचारों पत्रों और पत्रिकाओं में समाचार का रेखाचित्रों और फोटो की सहायता से प्रकाशित करना कब से आरम्भ हुआ, इस पर निश्चित तौर पर कुछ नहीं कहा जा सकता परंतु नरेन्द्र सिंह यादव अपनी पुस्तक तकनीक एवं प्रयोग में लिखते है कि- ‘‘भारत में फोटोग्राफी का प्रारम्भ 1840ई. में कोलकाता में विलियम हावर्ड (William Howard) ने किया।

फोटोग्राफी और फोटो पत्रकारिता का इतिहास ताने-बाने सा एक साथ है, शुरूआत के दिनों दिल्ली, कोलकाता, और बॉम्बे में विदेशी फोटोग्राफरों के आगमन, भारतीय प्रेस में स्वतंत्रता की चाह और देशी रियासतों के राजाओं के भारत में फोटोग्राफी को संरक्षण देने की चाह ने भारत में फोटो पत्रकारिता के मार्ग को प्रशस्त किया है।

- भारत में जयपुर प्रारम्भिक रियासत थी जिसने फोटोग्राफी को प्रोत्साहन प्रदान किया था। यहाँ के महाराजा सवाई रामसिंह द्वितीय स्वयं फोटोग्राफी को पसंद करते थे तो चम्बा के राजा श्रीसिंह के पास भी फोटोग्राफी के उपकरण थे वही पूर्वोत्तर राज्य त्रिपुरा का राजपरिवार भी फोटोग्राफी के प्रति रुचि रखता था। एच.एच. विरचन्द मानिक्य बहादुर एवं उनके पुत्र रामचन्द्र चन्ददेव वर्मन ने फोटोग्राफी में अपनी रूचि दिखायी ।
- भारत में पहले फोटो स्टुडियों की नींव सर्वप्रथम 1849 ई. में कलकता (कोलकाता) में डाली गई थी। इसके पश्चात् 1850 ई. में दूसरा स्टूडियो बम्बई (मुम्बई) खोला गया । फोटोग्राफर डी जोहन मुरे (D. Johan Murray) के नेतृत्व में फरवरी 1856 में बॉम्बे में प्रथम फोटोग्राफी की प्रदर्शनी का आयोजन किया गया जिसमें लगभग 500 फोटोग्राफ प्रदर्शित किये गये थे।

- सन् 1863 में सैमुअल बोर्ने;(Samuel Bourne) व्यावसायिक फोटोग्राफर के रूप में भारत आये । भारतीय फोटोग्राफी में उस समय महाराजा सवाई रामसिंह द्वितीय ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। बनारस के राजा प्रभुनारायण सिंह ने भी फोटोग्राफी के लिए भारतीय फोटोग्राफरों, जैसे- बृजगोपाल वर्मोचारी को 1860 के दशक एवं माधो प्रसाद को 1890 के दशक में फोटोग्राफी के लिए नियुक्त किया था।
- हैदराबाद के छठे निजाम मिर महबूब अलि खान को भी फोटोग्राफी के प्रति गहरा लगाव था। उनके समय में हैदराबाद के पुराने शहर एवं सेना छावनी सिकन्दराबाद में फोटोग्राफी के लगभग 20 फोटो स्टूडियो स्थापित थे।
- सन् 1860- 1880 के मध्य में बॉम्बे के अधिकतर फोटोग्राफर भी हैदराबाद में सक्रिय थे, जैसे- पेस्टन जी दोसाभोय, हरीचन्द, चिन्तामन, एल स्टीनर, सी. के. पोलेक, रिट्टर मोल्केन, बोर्ने एण्ड शेफर्ड तथा जोहनसन हॉफमैन आदि प्रमुख फोटोग्राफर थे। बोर्ने शेफर्ड तथा जोहनसन हॉफमैन कलकत्ता में स्थापित थे लेकिन 1870 के दशक में ये निजाम के बुलावे पर प्रायः निजाम की फोटोग्राफी के लिए हैदराबाद आते थे।
- 1870 के दशक में भारत में फोटोग्राफी को कुछ कला विद्यालयों (महाराजा स्कूल ऑफ ऑर्ट एण्ड क्राफ्ट, जयपुर, स्कूल ऑफ इण्डस्ट्रियल आर्ट कलकत्ता एवं सर जे.जे. स्कूल ऑफ आर्ट, बॉम्बे आदि) के पाठ्यक्रम में शामिल कर इसका अध्यापन करवाया जाने लगा था।
- सन् 1878 में फोटोग्राफर रेमण्ड ने 'द इण्डियन स्टैट मेन' समाचार पत्र में एक व्यावसायिक फोटोग्राफर के रूप में मशीनों एवं जहाजों आदि की फोटोग्राफी करने के लिए अपना विज्ञापन जारी किया था। 19 वीं शताब्दी के अन्तिम दशकों में राज लाल दीनदयाल भी एक प्रसिद्ध भारतीय फोटोग्राफर थे। इन्होंने हैदराबाद के निजाम के लिए भी कार्य किया था।
- भारतीय फोटोग्राफरों में राजा लाला दीनदयाल का नाम उल्लेखनीय रूप से आता है वह एक प्रसिद्ध फोटोग्राफर थे और जिन्होनें व्यावसायिक फोटोग्राफी के लिए अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। दीनदयाल ऐसे प्रथम भारतीय फोटोग्राफर थे जिन्हें भारत की अंग्रेज सरकार तथा सभी भारतीय राजा-महाराजाओं ने मान्यता दी थी।
- 20वीं सदी में रघुराय, भिण्डे, शरद देवारे, केजी माहेश्वरी, पुन्नु स्वामी, ओपी शर्मा, बी डब्ल्यू गिरीश खत्री एवं ज्योति भट्ट आदि कई प्रमुख फोटोग्राफरों ने फोटोग्राफी में विशिष्ट पहचान बनाई तथा इस क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया।

20वीं सदी में तकनीकी उन्नति के साथ-साथ फोटो पत्रकारिता में भी उल्लेखनीय विकास हुआ, जिसमें फिल्म और तस्वीर बनाने के उपकरणों में सुधार, डार्करूम का उपयोग, और डिजिटल तकनीकों का प्रवेश शामिल है। आधुनिक युग में विश्वस्तरीय फोटो पत्रकारिता ने समाचार, सामाजिक मुद्दों और घटनाओं की छवियों को साझा करने का एक प्रभावशाली माध्यम विकसित किया है। फोटोग्राफर्स वैश्विक स्तर पर सभी प्रकार के घटनाक्रम जैसे शांति प्रयास,संघर्षों, विकास और सम्मेलनोंको प्रदर्शित करने में अपनी तस्वीरों के माध्यम से महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं।

डिजिटल फोटोग्राफी के आविष्कार ने फोटो जर्नलिस्टों के कार्य करने के तरीके और उनके फोटो के जरिये प्रस्तुत करने के लिए अनेक मार्ग प्रस्तुत किये है।

डिजिटल कैमरों ने तात्कालिकता की एक नई परिभाषा प्रस्तुत की है, जिससे फोटोग्राफरों को छवियों की त्वरित समीक्षा, संपादन और साझा करने की सुविधा लगभग वास्तविक समय में प्राप्त हुई है। इंटरनेट और सोशल मीडिया के विकास ने इस क्षेत्र में अभूतपूर्व परिवर्तन लाए हैं, जिससे कार्य को चंद क्षणों में वैश्विक स्तर पर प्रदर्शित किया जा सकता है। फेसबुक, इंस्टाग्राम और ट्विटर जैसे प्लेटफार्मों ने पेशेवर और शौकिया फोटोग्राफी के बीच की सीमाओं को मिटा दिया है, जिससे इस क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति हुई है।

मोबाइल फोटोग्राफी ने एक महत्वपूर्ण बदलाव किया है, जिसने पत्रकारों को पारंपरिक कैमरा उपकरणों के बिना कहानियों को साझा करने की क्षमता प्रदान की है। ड्रोन और 360-डिग्री कैमरों जैसी नई तकनीकें नए दृष्टिकोण प्रस्तुत करती हैं। समकालीन फोटो पत्रकार अक्सर मल्टीमीडिया कहानी कहने में संलग्न रहते हैं, जिसमें वह तस्वीरों को वीडियो, ऑडियो और इंटरैक्टिव तत्वों के साथ मिलाकर एक अधिक समृद्ध अनुभव प्रदान करते हैं। इस डिजिटल युग में, फोटो पत्रकारिता नई चुनौतियों और अवसरों के प्रति लचीलापन और रचनात्मकता के साथ अनुकूलित हो रही है, और यह सुनिश्चित कर रही है कि कहानियाँ प्रामाणिकता और गहराई के साथ प्रस्तुत की जाएं।

इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में फोटो पत्रकारिता का महत्व प्रिंट मीडिया से अधिक है। इसमें समाचार, घटना के विवरण प्रस्तुत करने के साथ ही कैमरा कवरेज दिखाया जाता है। इसमें कैमरामैन द्वारा उपलब्ध करायी गई दृश्यसूची को दृश्यों के लिए मूल सामग्री मानते हुए इसी आधार पर रिपोर्ट बनायी एवं प्रस्तुत की जाती है। चुनाव परिणाम, अपराधिक घटनाएं, आपदाओं की घटना की फोटो सहित रिपोर्ट को ही आवश्यक माना जाता है। प्रिंट व इलेक्ट्रानिक मीडिया में ग्राफिक्स मानचित्र, फोटोग्राफ पहले से तैयार कर लिये जाते हैं, चुनाव परिणाम में इसका महत्व और भी बढ़ जाता है। इलेक्ट्रानिक मीडिया में रिपोर्टर के साथ साथी बन कर कैमरामैन जाता है।

भारत में फोटो पत्रकारिता ग्लैमर, शोहरत और खतरों से भरा क्षेत्र है। जिसे भी समाचारों की समझ के साथ फोटोग्राफी की जानकारी है वह मीडिया के अतिरिक्त फॉरेंसिक , फिल्म, विज्ञापन, फैशन पुलिस सेना, पर्यटन, विज्ञान आदि ऐसे क्षेत्रों में भी किस्मत आजमा सकता है। जिन लोगों में नयी चीजें, अलग सामग्री जुटाने का शौक है वह भी इसमें कैरियर बना सकते है। वैसे तो दृश्यों, रंगों, प्रकाश, आकार-प्रकार आदि से तादात्म्य स्थापित करने वाले लोग फोटो पत्रकारिता

का सैद्धान्तिक ज्ञान प्राप्त करके बेजोड़ फोटोग्राफी कर लेते हैं किन्तु यदि इसमें विधिवत् प्रशिक्षण प्राप्त कर लिया जाय तब तो सोने में सुहागा वाली बात होगी। फोटो पत्रकारिता और फोटोग्राफी के कोर्स के दौरान प्रशिक्षार्थी को कैमरा तथा फोटोग्राफी से संबंधित विभिन्न पहलुओं को प्रायोगिक एवं सैद्धान्तिक रूप से पढ़ाया जाता है। प्रशिक्षण के दौरान प्रशिक्षुओं को अनेक स्थलों पर ले जाकर फोटोग्राफी करवाई जाती है। इस दौरान फोटोग्राफी में आवश्यक प्रकाश, रंग छाया इत्यादि की भी सूक्ष्म जानकारी दी जाती है।

इसलिए फोटोग्राफी के क्षेत्र में दिलचस्पी रखने वालों के लिए फोटोग्राफी का कैरियर असीम संभावनाओं वाला है। जिस प्रकार पत्रकारिता को चुनौतीपूर्ण करियर माना जाता है फोटो पत्रकारिता भी चुनौती वाला करियर है। इस क्षेत्र में ग्लैमर, शोहरत आ जाने से फोटोग्राफर खतरों और चुनौतियों को सहर्ष स्वीकार कर लेते हैं। फोटोग्राफर अपनी सृजनशक्ति द्वारा विशेष कोण अथवा पोज के आधार पर किसी साधारण चेहरे एवं व्यक्तित्व में चार चांद और साधारण से समाचार को अच्छी फोटो लगा कर रोचक और तथ्यपरक बना सकता है।

सम-सामयिक घटनाओं के सचित्र विवरण की प्रस्तुति फोटो पत्रकारिता हैं। अपराध, भ्रष्टाचार, दंगों, लूटपाट, चोरी, कानून और व्यवस्था सम्बन्धी परिस्थितियों में एक फोटो पत्रकार की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। अपराध अनुसंधान तथा अपराधियों की खोज में छायाचित्र काफी मददगार साबित हो रहे हैं। फोटोग्राफ घटनास्थल के स्वयं एकमात्र प्रमाण होते हैं। इनको देखकर घटनास्थल पर अनुपस्थित व्यक्ति भी घटना का सही आंकलन कर सकता है। वैसे भी गवाहों से सुनी सुनाई बातों की अपेक्षा फोटो में देखी बात अधिक विश्वसनीय लगती है।

1.7 फोटो पत्रकारिता और महिला फोटोग्राफर

फोटो पत्रकारिता, समाचार और जानकारी को तस्वीरों के माध्यम से प्रस्तुत करने का एक साहसिक और प्रभावी तरीका है। इसका उद्देश्य दर्शकों को गहराई से बिना किसी शब्द के समझाना है । यह एक नए संवेदनशीलता का स्रोत है जो समाचार को अद्वितीयता और जिम्मेदारी के साथ प्रस्तुत करता है। फोटो पत्रकारिता में तस्वीरों का अद्वितीय उपयोग होता है जो एक कहानी को सही और सुस्त प्रकार से साझा करने में सहायक होता है। यह लोगों को विषयों के साथ जोड़ता है और उन्हें गहराई से सोचने के लिए प्रेरित करता है। यह लोगों को उनके आस-पास हो रहे घटनाक्रमों के प्रति आकर्षित करता है और उन्हें सच्चाई के साथ जोड़कर उनको उत्तरदाता बनाता है। तस्वीरों की भाषा में समाचार का प्रसार करने से लोगों को बीते हुए और वर्तमान की स्थिति में जोड़कर उन्हें अपने समाज की सच्चाई से रूबरू करता है। फोटो पत्रकारिता ने समाचार को विशेष रूप से युवा पीढ़ी के बीच में प्रभावी रूप से पहुंचाने का साधन बनाया है। लोग अब तकनीकी युग में हैं और उन्हें त्वरितता और अधिक जानकारी की आवश्यकता है, जिसका सामंजस्यिक पहलू फोटो पत्रकारिता के माध्यम से आता है। यह एक समझदारी और सकारात्मक सामाजिक साक्षरता का एक माध्यम है जो तस्वीरों के माध्यम से जानकारी को विशेष बनाता है। यह एक नए सोच के साथ समाचार को प्रस्तुत करता है और लोगों को उनके समाज के लिए जागरूक करने का एक नया तरीका प्रदान करता है।

- फोटो पत्रकारिता के इतिहास में पुरूषों की महत्वपूर्ण भूमिका है। फोटो पत्रकारिताके जरिये समाज में सामाजिक बदलाव और जागरूकता बढ़ाने में महिलाओं की भी भागीदारी रही है।

- विश्व की पहली महिला फोटो पत्रकार आन्तिनेटी डी कोरावोट (Antoinette De. Correvont) थी। जिन्होंने 1843 में म्यूनिरव में अपना एक 'फोटो स्टूडियो' स्थापित किया। भारत में फोटो पत्रकारिता के क्षेत्र में महिलाओं की स्थिति निराशाजनक ही रही है।
- होमाई व्यारा वाला को भारत की पहली महिला फोटो जर्नलिस्ट के रूप में जाना जाता है । उनका जन्म गुजरात में हुआ था और उनके पति मानेकशॉ व्यारावाला ने उन्हें फोटोग्राफी की दुनिया से अवगत कराया।
- भारतीय फोटोजर्नलिज्म के संस्थापक टी एस सत्यन का जन्म1923 में मैसूर में हुआ। 2005 में, उन्होंने अपने संस्मरण ''अलाइव एंडकिकिंग'' का प्रकाशन किया, जिसमें उन्होंने एक फोटो पत्रकार के रूप में अपने अनुभवों और कार्यों का विस्तृत वर्णन किया है। इस युग ने फोटो पत्रकारिता के विकास में अपनी एक अहम भूमिका निभाई ।
- स्वयं के पोर्टल पर डॉ. राधिका खन्ना का मूक कोर्स फोटोग्राफी के सभी पहलुओं पर गहनता से अध्ययन और विमर्श करता है। सौम्या खंडेलवाल का नाम महिला फोटोग्राफरों में प्रमुखता से लिया जाता है।
- फोटो पत्रकारिता का जो स्वरूप वर्तमान में हम देख रहे हैं, यह उनका अन्तिम रूप नहीं है। फोटोग्राफी की व्यापक क्षमताओं को देखते हुए इसे और सहज और बहुआयामी बनाने के लिए आविष्कार जारी है। पत्रकार भी फोटोग्राफी के निरन्तर बदलते स्वरूप को अपनाते रहेंगे और महिलाओं के लिए भी निश्चय ही फोटो पत्रकारिता का भविष्य उज्ज्वल है।

महिलाओं की रचनात्मकता फोटो पत्रकारिता को एक नए दृष्टिकोण देता है जिससे लोग अपने आस-पास के वातावरण को समझते हैं और उसमें सकारात्मक बदलाव लाने के लिए प्रेरित होते हैं।

1.8 फोटो पत्रकारिता का महत्व

आधुनिक युग में फोटो पत्रकारिता का महत्व अत्यधिक है, क्योंकि यह एक शक्तिशाली और प्रभावी साधन है जिससे समाचार और जानकारी को पाठकों तक पहुंचाना और समझाना आसान हो जाता है।

एक सटीक और सही फोटो से पाठकों और दर्शकों को घटना की आँखों देखी जानकारी मिलती है और उन्हें समझने में मदद करती है, जिससे समाचार की सत्यता में एक नया आयाम मिलता है। फोटो पत्रकारिता का महत्व सामाजिक

जागरूकता और सकारात्मक परिवर्तन लाने में हो सकता है। यह विभिन्न स्तरों पर सत्यता, स्पष्टता और न्याय की भावना बढ़ाता है। निष्पक्ष सकारात्मक पत्रकारिता की दिशा में निम्नलिखित कारणों से फोटो पत्रकारिता का महत्व है-

1. फोटोग्राफी एक अत्यंत प्रभावशाली कला है, जो गहन और व्यापक प्रभाव उत्पन्न करती है। एक उत्कृष्ट तस्वीर दर्शकों को समझने में सहायता करती है और उन्हें अधिक जानकारी प्रदान करने की क्षमता रखती है।
2. सत्यता और प्रमाण के संदर्भ में, फोटोग्राफी द्वारा प्रस्तुत छवियां किसी घटना की पारदर्शिता और वास्तविकता को उजागर करती हैं। यह पाठकों के लिए एक ठोस प्रमाण प्रस्तुत करती है, जिससे पत्रकारिता की गुणवत्ता बनी रहती है।
3. फोटो पत्रकारिता के माध्यम से संवेदनशील मुद्दों, चुनौतियों और जनसंख्या के हितों को प्रभावी ढंग से उजागर किया जा सकता है। यह समाज को जागरूक करने और सकारात्मक परिवर्तन के लिए प्रेरित करने में सहायक होती है।
4. फोटो पत्रकारिता विचारों और भावनाओं के आदान-प्रदान का एक प्रभावी माध्यम है। यह व्यक्ति की भावनाओं को एक सशक्त रूप में प्रस्तुत करने में सहायता करता है और समाज में बदलाव लाने के लिए प्रेरित करता है।
5. भाषा में उत्पन्न होने वाली कठिनाइयों को इसके उपयोग के माध्यम से समाप्त किया जा सकता है।
6. फोटोग्राफ का प्रभाव तुरन्त पड़ता है क्यों कि इससे यथार्थ, सत्य माना जाता है और विश्वसनीयता प्रदान करता हैं। लोगों के दृष्टिकोण और अभिरूचि को फोटोग्राफी के माध्यम से बदला जा सकता है।

इस प्रकार, फोटो पत्रकारिता पत्रकारों को विभिन्न पहलुओं को समर्थन करने में मदद करती है और समाज को विचारशीलता और सत्य के प्रति जागरूक करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। फोटो पत्रकारिता में केवल किसी घटना की फोटो खींचना नहीं है बल्कि इसमें कुछ इससे ज्यादा प्रभावशाली, नयी दृष्टि से समाचार को जनता तक लाना होता है।

उदाहरण- समाज में विभिन्न प्रकार के अपराध निरंतर घटित होते रहते हैं, जिनकी तस्वीरें फोटो पत्रकारों द्वारा खींची जाती और समाज के समक्ष प्रस्तुत की जाती हैं। अस्पतालों में गंदगी की घटनाओं की खबरें नियमित रूप से प्रकाशित होती हैं, लेकिन इनका प्रभाव उतना नहीं होता जितना कि अस्पताल की गंदगी की तस्वीरें प्रकाशित होने पर होता है।

बारिश के मौसम में जलजमाव, गर्मी में जनजीवन की कठिनाइयाँ, धरना-प्रदर्शनों की गतिविधियाँ, गंभीर ट्रेन दुर्घटनाएँ, और रिश्वत लेते भ्रष्टाचारियों की खबरें अधिक प्रभाव डालती हैं। इसके विपरीत, त्योहारों के समय बाजारों की रौनक और विवाह समारोहों की तस्वीरें अधिक चर्चा का कारण बनती हैं।

1.9 सारांश

फोटो पत्रकारिता एक विशिष्ट कला है जो छवियों के माध्यम से समाज की वास्तविकता को दर्शाती है और दर्शकों को एक अनुभवात्मक दृष्टिकोण प्रदान करती है। इसका मुख्य उद्देश्य विभिन्न घटनाओं, स्थलों और व्यक्तियों को वास्तविकता के साथ प्रस्तुत करना है, ताकि दर्शक एक सटीक और अर्थपूर्ण दृष्टिकोण प्राप्त कर सकें।

फोटो पत्रकारिता ने समाचार संसार को एक नए आयाम दिया है, जहां विशेष घटनाएं और अद्वितीय किस्से तस्वीरों के माध्यम से प्रस्तुत किये जा सकते हैं। एक अच्छी तस्वीर से व्यक्ति आसानी से विषय को समझ सकता है, जिससे उसमें संबंध बनता है और उसे सत्य की अधिक अच्छी समझ मिलती है। फोटो पत्रकारिता का उदय सोशल मीडिया और डिजिटल मीडिया के साथ हुआ है। वर्तमान तकनीकी युग में, लोगों को त्वरित और विस्तृत जानकारी की आवश्यकता है, जिसे फोटो पत्रकारिता प्रभावी रूप से पूरा करती है। इसके माध्यम से, हम उन घटनाओं को देख सकते हैं जो सामान्यतः अनदेखी रह जाती हैं।

अमेरिका स्पेन युद्ध, प्रथम विश्व युद्ध तथा स्पेन के गृह युद्ध के समा फोटो पत्रकारिता पनपी। उस समय मैथ्यू ब्राडी, जिमी हेयर, जेसी हेमंत ने युद्धों का ऐस चित्र प्रस्तुत किया। इसके बाद धीरे-धीरे फोटो पत्रकारिता में निरंतर विकास होता गया। बाद में समारोहों, उत्सवों, समाचार, आदि पर भी ध्यान दिया जा लगा। समाचार, रिपोर्ट, फीचर को आकर्षक व रोचक बनाने मे फोटो की प्रमुख भूमिका है।

इस विषय का एक और महत्वपूर्ण पहलू यह है कि यह समाज के विभिन्न पहलुओं को सामने लाती है और उनकी बेहतर समझ में सहायता करती है। फोटो पत्रकारिता के माध्यम से हम विभिन्न समृद्धियों, सांस्कृतिक विविधताओं, और सामाजिक मुद्दों को समझने और उन पर विचार करने की क्षमता प्राप्त करते हैं। इसके साथ ही, फोटो पत्रकारिता एक साहित्यिक दृष्टिकोण का माध्यम है जो दर्शकों को कहानियों के माध्यम से जोड़ता है। ये छवियां विशिष्ट भावनाओं और भाषाई अभिव्यक्तियों को व्यक्त करती हैं।

फोटो पत्रकारिता का इतिहास अत्यंत प्राचीन है और यह विभिन्न तकनीकी, सामाजिक और राजनीतिक परिवर्तनों के साथ विकसित होता रहा है। इसका आरंभ 19वीं सदी में हुआ, जब कैमरे के आविष्कार ने लोगों को छवियों को अद्यतन और प्रसारित करने की क्षमता प्रदान की। 20वीं सदी में, फोटो पत्रकारिता ने मीडिया के साथ एक महत्वपूर्ण संबंध स्थापित किया। इस समय, पत्रिकाओं, समाचार पत्रों और अन्य मीडिया प्लेटफार्मों ने फोटोग्राफी का उपयोग करके रिपोर्टिंग को और अधिक प्रभावी बनाया और तस्वीरों के माध्यम से सामाजिक और राजनीतिक मुद्दों पर जागरूकता बढ़ाई।

विशेष रूप से द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद, फोटो पत्रकारिता का महत्व और प्रभाव काफी बढ़ गया है। चित्रकारों ने युद्ध के दुष्परिणामों, जैसे कि प्रभावित समुदायों की स्थिति और उनके संघर्ष को उजागर करने के लिए तस्वीरें खींची। फोटो पत्रकारिता ने समय के साथ नए आयामों को ग्रहण किया है। आज, यह समाज, राजनीति, पर्यावरण और अन्य क्षेत्रों में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। पुलिट्जर पुरस्कार विजेता तस्वीरें इस बात का उदाहरण हैं, जो समाज के विभिन्न मुद्दों पर ध्यान केंद्रित करती हैं और लोगों को जागरूक करती हैं। अंत में, फोटो पत्रकारिता चित्रों के माध्यम से सच्चाई और तथ्यों को प्रस्तुत करके समाज में सुधार लाने का कार्य कर रही है, जिससे लोग जागरूक और सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाने के लिए प्रेरित हो रहे हैं।

फोटो पत्रकारिता का एक अन्य महत्वपूर्ण पहलू सामाजिक न्याय को बढ़ावा देने में इसकी भूमिका है।यह विभिन्न वर्गों की आवाज को सुनने का मंच प्रदान करती है और उन्हें समर्थन और समझदारी के माध्यम से आपसी समरसता की दिशा में बढ़ने का साहस दिखाती है। फोटो पत्रकारिता एक विचारशील और साक्षरता को प्रोत्साहित करने वाला माध्यम है, जो दर्शकों को आपसी संबंध, सामाजिक न्याय, और सामूहिक संवाद में जोड़ने में सहायक होता है। इसके जरिए हम समाज के विभिन्न पहलुओं को समझने में सक्षम होते हैं और एक सार्थक दृष्टिकोण से जीवन का अनुभव करते हैं।

1.10 शब्दावली

- **फोटोग्राफी-** फोटोग्राफी शब्द का पहली बार इस्तेमाल सर जॉन हर्शल ने वर्ष 1839 में किया था। इसी तरह फोटोग्राफिक प्रक्रिया सार्वजनिक हो गई। फोटोग्राफी शब्द, जिसका अर्थ है 'प्रकाश से लिखना' ग्रीक शब्दों से लिया गया है, फोटो जिसका अर्थ है प्रकाश और ग्राफी का अर्थ है लेखन।
- **फोटो पत्रकारिता-** फोटो पत्रकारिता एक विशिष्ट कला है जो छवियों के माध्यम से समाज की वास्तविकता को दर्शाती है और दर्शकों को एक अनुभवात्मक दृष्टिकोण प्रदान करती है। इसका मुख्य उद्देश्य विभिन्न घटनाओं, स्थलों और व्यक्तियों को वास्तविकता के साथ प्रस्तुत करना है, ताकि दर्शक एक सटीक और अर्थपूर्ण दृष्टिकोण प्राप्त कर सकें।
- **डिजिटल फोटोग्राफी -** डिजिटल कैमरों ने तात्कालिकता की एक नई परिभाषा प्रस्तुत की है, जिससे फोटोग्राफरों को छवियों की त्वरित समीक्षा, संपादन और साझा करने की सुविधा लगभग वास्तविक समय में प्राप्त हुई है। इंटरनेट और सोशल मीडिया के विकास ने इस क्षेत्र में अभूतपूर्व परिवर्तन लाए हैं, जिससे कार्य को चंद क्षणों में वैश्विक स्तर पर प्रदर्शित किया जा सकता है।
- **मोबाइल फोटोग्राफी**- मोबाइल फोटोग्राफी ने एक महत्वपूर्ण बदलाव किया है, जिसने पत्रकारों को पारंपरिक कैमरा उपकरणों के बिना कहानियों को साझा करने की क्षमता प्रदान की है। ड्रोन और 360-डिग्री कैमरों जैसी नई तकनीकें नए दृष्टिकोण प्रस्तुत करती हैं।

1.11 सन्दर्भ ग्रन्थ

1. Tiwari, A. (n.d.). जनसंचार समग्र [Mass communication comprehensive]. उपकार प्रकाशन.
2. Singh, O. P. (n.d.). संचार माध्यमों का प्रभाव [Impact of communication media]. क्लासिफल पब्लिकेशन.

3. Dixit, P. (n.d.). Mehra, R. (2006). संचार और फोटो पत्रकारिता [Communication and photojournalism]. तक्षशिला प्रकाशन जनमाध्यम और पत्रकारिता (भाग 1, 2) [Mass media and journalism (Part 1, 2)]. सहयोगी साहित्य संस्थान.
4. Sapru, S. (2003). फोटो पत्रकारिता [Photojournalism]. हरियाणा साहित्य अकादमी.
5. Jain, R. (2007). जनसंचार विश्वकोष [Encyclopedia of mass communication]. नेशनल पब्लिशिंग हाउस.
6. Kothari, G. (1997). फोटो पत्रकारिता [Photojournalism]. पंचशील प्रकाशन.
7. Gautam, N. (2010). आधुनिक फोटो पत्रकारिता [Modern photojournalism]. मोहित पब्लिकेशनन्स.
8. Tiwari, A. (2005). ई- जर्नलिज्म [E-journalism]. संजय बुक सेण्टर.
9. यादव, एन. S. (2020). फोटोग्राफी तकनीक एवं प्रयोग [Photography techniques and practices]. राजस्थान हिंदी ग्रन्थ अकादमी.
10. UPRTOU. (n.d.). PGDJMC – 106, फिल्म एवं इलेक्ट्रॉनिक मीडिया [Film and electronic media]. स्वाध्याय सामग्री.
11. Khan, A. (2020). फोटो पत्रकारिता का इतिहास [History of photojournalism]. प्रकाशन हाउस.
12. शर्मा, R. (2019). फोटो पत्रकारिता: एक ऐतिहासिक विश्लेषण [Photojournalism: A historical analysis]. भारतीय पत्रकारिता अध्ययन.
13. Pinne, C. (n.d.). भारत में फोटोग्राफी का आगमन [Arrival of photography in India].
14. Hoye, F. P. (1986). फोटो पत्रकारिता: दृश्य दृष्टिकोण [Photojournalism: Visual perspectives]. प्रेंटिस हॉल.
15. Tiwari, P. (n.d.). भारत में फोटो पत्रकारिता का विकास (2001से 2011) [Development of photojournalism in India (2001 to 2011)]. Retrieved from https://www.academia.edu/54884983/Evolutions_in_Photojournalism_in_India_2001_to_2011
16. Mathur, A. (2020). यूनिट-11 फोटोजर्नलिज्म [Unit-11 photojournalism]. इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय. Retrieved from https://egyankosh.ac.in/handle/123456789/57122m
17. Kumar, A. (2020). यूनिट-8 फोटोग्राफी की तकनीकें [Unit-8 techniques of photography]. इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय. Retrieved from https://egyankosh.ac.in/handle/123456789/74347
18. Mathur, A. (2020). यूनिट-17 फोटो पत्रकारिता [Unit-17 photojournalism]. इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय. Retrieved from http://egyankosh.ac.in//handle/123456789/86147

1.12अभ्यास हेतु प्रश्न

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. भारत में फोटो पत्रकारिता महत्व का वर्णन कीजिए।
2. विश्व में फोटो पत्रकारिता का विकास बारे में लिखिए?
3. भारत में फोटो पत्रकारिता का विकास बारे में लिखिए?

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. फोटो पत्रकारिता और फोटोग्राफी में अंतर को उदाहरण देकर लिखिए?

2. फोटो पत्रकारिता और पत्रकारिता में अंतर बारे में लिखिए?

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

1. भारत की पहली महिला फोटो जर्नलिस्ट कौन हैं?

2. भारतीय फोटो जर्नलिज्म के संस्थापक कौन है?

इकाई-2

फोटो पत्रकारिता के बुनियादी सिद्धांत

पाठ संरचना

2.0 उद्देश्य

2.1 प्रस्तावना

2.2 फोटोग्राफी के सिद्धांत- नियमों की कला

2.2.1 कम्पोजीशन

2.2.2 कम्पोजिशन का अर्थ

2.3 इम्फसिस (प्रभाव) का महत्व

2.4 थर्ड्स का नियम (रूल ऑफ़ थर्ड)

2.5 रंग और कंट्रास्ट

2.6 दृश्य साक्षरता

2.7 प्रकाश (लाइटिंग)

2.8 कोण (एंगल)

2.9 गहराई (डैप्थ)

2.10 रंग (कलर)

2.11 फोकस

2.12 पृष्ठभूमि (बैकग्राउंड)

2.13 मूवमेंट (गति)

2.14 फोटो मैनिपुलेशन : सही या गलत

2.15 सारांश

2.16 शब्दावली

2.17 संदर्भ ग्रन्थ सूची

2.18 अभ्यास हेतु प्रश्न

2.0 उद्देश्य

1- फोटो पत्रकारिता का अर्थ, महत्व, संचारक गुणों का व्यापक अध्ययन तथा फोटो पत्रकारिता के सिद्धांतों के अध्ययन द्वारा, छात्रों में फोटोग्राफ़ी के नवीन दृष्टिकोण का विकास करना।

2- इस अध्याय द्वारा यह भी ज्ञात होता है कि विशिष्ट फोटोग्राफिक परिदृश्यों और विषयों के लिए रचनात्मक तकनीकों को अनुकूलित करना।

3- इस अध्याय द्वारा यह पता चलता है कि डिजिटल फोटोग्राफी और फोटो पत्रकारिता के आधुनिक सिद्धांतों के आपसी समावेश के प्रयोग से फोटोग्राफी एक सरल जन संचार माध्यम बन गया है।

4- इस अध्याय से यह भी पता चलता है कि लैंडस्केप, पोर्ट्रेट, आर्किटेक्चरल व्यू से विभिन्न रचनात्मक दृष्टिकोणों के साथ प्रयोग करना ताकि कहानी कहने और दृश्य प्रभाव को बढ़ाया जा सके।

2.1 प्रस्तावना

फोटो पत्रकारिता, समाचार और घटनाओं को तस्वीरों के माध्यम से साझा करने का एक अद्वितीय तरीका है। यह सामाजिक मीडिया और पत्रिकाओं में एक नए दौर की शुरुआत कर रहा है। इसके माध्यम से, हम न केवल खबरों को पढ़ते हैं, बल्कि उन्हें देखकर भी अनुभव करते हैं। एक अच्छी तस्वीर से अधिकांश जानकारी एक ही समय में प्रस्तुत हो सकती है। इस नए युग में, फोटो पत्रकारिता ने समाचार को सुरक्षित, सुर्खियों में और अधिक सामाजिक बनाने का कारगर माध्यम साबित किया है। इसमें रंग-बिरंगी तस्वीरों के माध्यम से समाचार की विविधता को प्रमोट करने का भी एक महत्वपूर्ण आदान-प्रदान है। इस प्रस्तावना के माध्यम से, हम फोटो पत्रकारिता के महत्वपूर्णता को समझते हैं, जो समाचार सामग्री को जीवंत और सामाजिक बनाने में सहायक है। तस्वीरें भाषा के पार हमारे दर्शकों तक पहुंचती हैं और इससे समाचार का प्रभाव और समर्थन मजबूत होता है।

- फोटो पत्रकारिता एक ऐसी नई दिशा है जो समाचार और जानकारी को तस्वीरों के माध्यम से पहुंचाने का अद्वितीय और प्रभावी तरीका प्रदान करती है। इसमें खबरों, घटनाओं और विषयों को दृष्टिकोण देने के लिए तस्वीरों का प्रयोग किया जाता है, जिससे दर्शकों को विशेष और सार्थक रूप में सामग्री प्रदान होती है।
- फोटो पत्रकारिता ने समाचार संसार को एक नए आयाम दिया है, जहां विशेष घटनाएं और अद्वितीय किस्से तस्वीरों के माध्यम से प्रस्तुत की जा सकती

हैं। एक अच्छी तस्वीर से व्यक्ति आसानी से विषय को समझ सकता है, जिससे उसमें संबंध बनता है और उसे सत्य की अधिक अच्छी समझ मिलती है।फोटो पत्रकारिता का उदय सोशल मीडिया और डिजिटल मीडिया के साथ हुआ है। लोग अब तकनीकी युग में हैं और उन्हें त्वरितता और अधिक जानकारी की आवश्यकता है, जिसका सामंजस्यिक पहलू फोटो पत्रकारिता के माध्यम से आता है।फोटो पत्रकारिता के माध्यम से, हम अनदेखी घटनाओं को देखने का अवसर प्राप्त करते हैं जो शब्दों में असंभव होता है। यह सुधारकर्ता और सामाजिक सुधारकर्ताओं को आवश्यक दृष्टिकोण प्रदान करता है, जो समाचार को और भी समझने में मदद करता है।

- इस समय में, जब शब्दों की संख्या में सीमा होने के बावजूद फोटो पत्रकारिता के माध्यम से हम एक पूर्ण कहानी को समझ सकते हैं। यह नया सामाजिकता का स्रोत बन रहा है जो साकार और आकर्षक तरीके से लोगों को जोड़ने का एक नया तरीका प्रदान कर रहा है।इस प्रकार, फोटो पत्रकारिता एक उच्च स्तरीय और प्रभावी संवाद का साधन बन रही है, जो व्यक्ति को समाचार से ज्यादा में ले कर विश्व से जोड़ने का एक माध्यम प्रदान करती है। तस्वीरों की कहानी से हम नए और भिन्न पहलुओं को समझते हैं और समाचार को एक नए और रंगीन दृष्टिकोण से देखने का आनंद लेते हैं।
- फोटोग्राफी, क्षणों को कैद करने और यादों को संजोने की कला, लंबे समय से उत्साही और पेशेवर लोगों के लिए एक आकर्षक विषय रही है। एक विकासशील अर्थव्यवस्था के संदर्भ में, फोटोग्राफी की भूमिका इसके रचनात्मक गुणों से परे है, क्योंकि यह रोजगार सृजन और सतत विकास के लिए एक महत्वपूर्ण प्रेरक के रूप में कार्य कर सकती है । आधुनिक समाज में, शायद कोई अन्य संचार का रूप हमें फोटोग्राफी की कला जितना गहराई से प्रभावित नहीं कर सकता । यह एक सार्वभौमिक भाषा है जो भाषाई बाधाओं को पार करती है और व्यक्तियों को अनूठी दृष्टिकोण व्यक्त करने की अनुमति देती है।
- फोटोग्राफी के विकास का इतिहास निरंतर वृद्धि का रहा है, जिसमें प्रत्येक पीढ़ी ने पिछली उपलब्धियों पर निर्माण किया है । जबकि यह माध्यम अपेक्षाकृत युवा है, अपनी शुरुआत के बाद से केवल 150 वर्षों से भी कम समय के अंतराल में, इसके अनुप्रयोगों की व्यापकता वास्तव में उल्लेखनीय है । अब फोटोग्राफी का उपयोग विभिन्न क्षेत्रों में किया जा रहा है, जैसे चिकित्सा अनुसंधान, अंतरिक्ष अन्वेषण, आपराधिक जांच और कृषि उत्पादन ।
- एक सिरे पर, फोटोग्राफी पारिवारिक जीवन को दस्तावेज करने और पहचान के विश्वसनीय तरीके प्रदान करने के लिए एक उपकरण के रूप में कार्य करती है । विपरीत सिरे पर, इस कला रूप ने बढ़ती मान्यता और प्रमुखता हासिल की है, जिसमें दुनिया भर के संग्रहालय और प्रदर्शनियाँ प्रतिभाशाली फोटोग्राफरों के कार्यों को प्रदर्शित कर रहे हैं।

2.2 फोटोग्राफी के सिद्धांत- नियमों की कला

फोटोग्राफी एक ऐसी कला है जिसमें न केवल तकनीकी ज्ञान की आवश्यकता होती है बल्कि रचनात्मकता और संवेदनशीलता का भी महत्वपूर्ण स्थान होता है। इस अध्याय में हम फोटोग्राफी के कुछ महत्वपूर्ण सिद्धांतों के बारे में जानेंगे, जो एक सामान्य फोटो को अद्वितीय बना सकते हैं।

2.2.1 कम्पोजिशन - कम्पोजिशन का मतलब है कि आप अपनी तस्वीर को कैसे फ्रेम करते हैं। इसके कई नियम होते हैं, जैसे कि "थर्ड्स का नियम"। इस नियम के अनुसार, आप अपने फ्रेम को नौ बराबर हिस्सों में बाँटते हैं और मुख्य विषय को इन हिस्सों के इंटरेक्शन पॉइंट्स पर रखते हैं। इससे तस्वीर में संतुलन और दिलचस्पी बढ़ती है।

2.2.2 कम्पोजिशन का अर्थ

अब तक हमने फोटोग्राफी के विभिन्न तत्वों को सीखा है और प्रकाश तकनीकों और लेंस प्रकारों से परिचित हो चुके हैं। अभी तक हमने फोटोग्राफी के आवश्यक तत्वों को कवर किया है। लेकिन फोटोग्राफी यहीं समाप्त नहीं होती। फोटोग्राफी के पीछे का विज्ञान जानना आपको हमेशा मदद नहीं करेगा, हालांकि यह जानना बहुत महत्वपूर्ण है कि कैमरा कैसे संभालना है और विभिन्न सेटिंग्स कैसे उपयोग करनी हैं। इन सबके अलावा, एक सौंदर्यबोध और यह निर्णय लेना कि फ्रेम में क्या होना चाहिए और क्या टाला जा सकता है, भी बहुत महत्वपूर्ण है। यही निर्णय कम्पोजिशन को निर्धारित करता है।

कम्पोजिशन शब्द का उपयोग एक फोटोग्राफ के सामग्री को संदर्भित करने के लिए किया जाता है; फ्रेम में उपस्थित तत्वों, मुख्य विषय सहित, उसके आकार और स्थिति और उसके आसपास के अन्य वस्तुओं के स्थान को दर्शाने के तरीके को कम्पोजिशन कहते हैं। एक अच्छी तरह से कम्पोज की गई फोटोग्राफ संतुलित होती है और प्राकृतिक लगती है। यह दर्शक का ध्यान आकर्षित करती है।

कैटी मिलर (2006) के अनुसार, फोटोग्राफी संरचना एक तस्वीर के भीतर विषय के विभिन्न तत्वों की व्यवस्था है। और एक फोटोग्राफर के रूप में, उसे यह निर्णय लेने की जिम्मेदारी होती है कि उनकी तस्वीर में कौन-कौन से दृश्य तत्व शामिल होंगे। उन्होंने यह भी कहा कि समय के साथ अनुभव प्राप्त करने से फोटोग्राफरों की दृश्य रचना में सुधार होगा। फोटोग्राफरों के इरादे की दृश्य व्याख्या उनके संरचना संबंधी निर्णयों का मार्गदर्शन करेगी।

संरचना एक ऐसी तस्वीर बनाने के बारे में है जिसमें बिना किसी पूर्वाग्रह के, फोटोग्राफर यह निर्णय लेगा कि उसमें क्या शामिल होगा और क्या छोड़ा जाएगा। संरचना के नियमों के माध्यम से फोटोग्राफर एक ऐसी छवि बना सकता है जो आँखों को पसंद आए और दर्शकों को यह समझा सके कि उन्होंने क्या देखा है और क्या देखना चाहिए। लेकिन संरचना का मतलब क्या है? यह संरचना के मूल और अर्थ का प्रश्न है, जो बर्ट पीद आर्ट"क्रैजेस की पुस्तक . ऑफ़ कंपोज़िशनके अनुसार ", संरचना दृश्य तत्वों की ऐसी व्यवस्था है जो इस प्रकार होती है कि जब इसे पूरे रूप में देखा जाए तो वे स्वयं को प्रस्तुत करते हैं। कई लोग संरचना को देखने से अलग मानते हैं और इसे सबसे अच्छा संयुक्त रूप से या समवर्ती रूप से काम करके सीखा जा सकता है। स्कॉट वाल्डेन के एक निबंध में (2010), तस्वीरों को भी सतह

पर निशानों की व्यवस्था के रूप में माना जाता है जो, जब हमारे दृश्य प्रणाली के सामने प्रस्तुत की जाती है, तो यह कई तरीकों से काम करती है जैसे कि यह एक तस्वीर के साथ नहीं बल्कि उस चीज़ के साथ सामने होती जिसके बारे में तस्वीर है।

डिजाइन के सिद्धांत, जैसे विविधता, पैमाना, संतुलन और जोर, किसी भी कम्पोजिशन की समग्र संरचना के प्रतिनिधित्व को नियंत्रित करते हैं। दृश्य तत्व जैसे रेखा, आकार, रंग और बनावट, संरचना के भीतर विवरण और सामग्री को व्यवस्थित और मूर्त रूप देते हैं। एकता और विविधता दृश्य जुड़वां हैं। एकता, जिसे सद्भावना भी कहा जाता है, एक पूर्ण, सुसंगत और सुखद संपूर्ण बनाने की स्थिति है, जिसे छवि निर्माता द्वारा योजनाबद्ध और नियंत्रित किया जाता है। विविधता का तात्पर्य एक समान वर्ग के विषय से है जो किसी न किसी प्रकार से विविध या अलग होता है। एक कम्पोजिशन जो एकीकृत सिद्धांत से रहित होती है, वह फोटोग्राफप्रतिनिधित्व की गई चीज़ों के प्रति एक अराजक या अव्यवस्थित प्रतिक्रिया उत्पन्न करेगी। छायाचित्रण में संरचना के कुछ "नियम" होते हैं, जैसे स्वर्ण अनुपात या तिहाई का नियम। ये सख्त अर्थों में नियम कम और उपयोगी टेम्प्लेट अधिक प्रतीत होते हैं, जिन्हें हम अपनी रचनाओं को बेहतर बनाने के लिए उपयोग कर सकते हैं। मैंने इन टेम्प्लेट्स/प्रेरणाओं के लिए एक दृश्य मार्गदर्शिका तैयार की है।

संरचना की अवधारणा को समझना हमें अच्छी फोटोग्राफी रचना के कुछ महत्वपूर्ण तत्वों की ओर ले जाएगा, जो हैं "तिहाई का नियम," "विकर्णों का नियम" या केंद्र, अभिसारी संरचना जिसमें सममितीय तत्व, दृष्टिकोण रेखाएं शामिल होती हैं, जो क्षैतिज और ऊर्ध्वाधर रेखाओं के स्थान और कैमरा कोणों को भी शामिल करती हैं।

हम अपनी तस्वीर में वस्तुओं को तीन समूहों में विभाजित कर सकते हैं:

1. **विषय (Subject) -** यह फोटो का सबसे महत्वपूर्ण तत्व है और यह दर्शकों के लिए स्पष्ट होना चाहिए कि यह क्या है। एक फोटो बिना विषय के फोटो नहीं है।
2. **विधेय (Predicate) -** यह विषय को पूरा करने या उससे प्रतिस्पर्धा करने वाला तत्व है। हमें यह सुनिश्चित करने की कोशिश करनी चाहिए कि विधेय विषय से अधिक प्रमुख न हो, और इसे विषय के बारे में विवरण प्रदान करना चाहिए ताकि विषय पर एक अलग कोण या दृष्टिकोण मिल सके।
3. **पृष्ठभूमि (Background) -** यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि पृष्ठभूमि फोटो के विषय जितनी ही महत्वपूर्ण है। यह सच है कि कई लोग फोटो लेते समय यह नहीं देखते कि विषय के पीछे क्या है, लेकिन पृष्ठभूमि एक साधारण फोटो को शानदार बना सकती है। पृष्ठभूमि को विषय की पूरक होनी चाहिए जबकि उस पर से ध्यान न हटे।

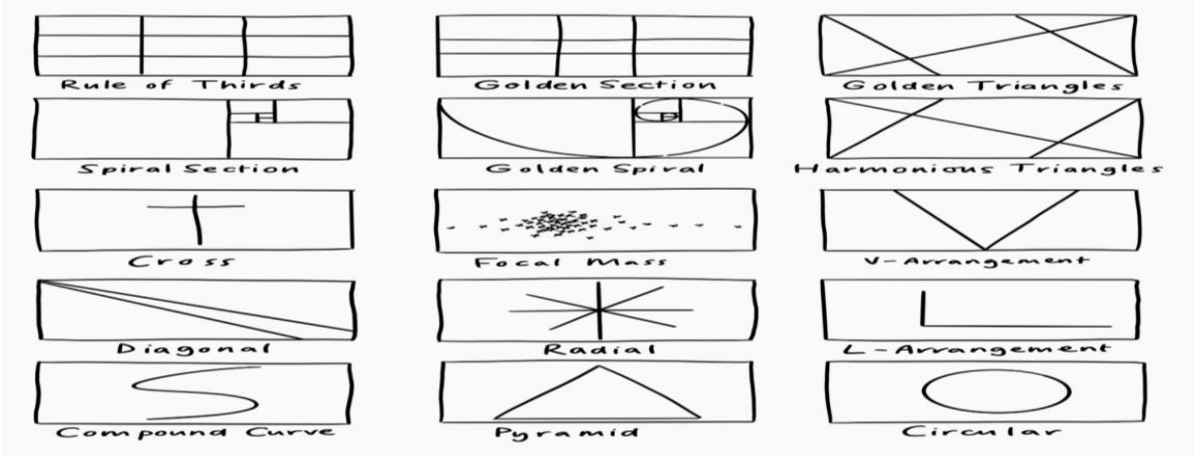

चित्र 2.2.1: प्रारम्भिक मार्गदर्शिका के लिए रचना

बर्ट पी. क्रैजेस के अनुसार, रचना के दिशा-निर्देश कई अन्य रूपों में भी मौजूद हैं। रचना करते समय पैटर्न्स, ऊर्ध्वाधर और क्षैतिज अभिविन्यास, दृष्टिकोण का कोण, बनावट और पृष्ठभूमि को भी ध्यान में रखना आवश्यक है।क्रैजेस ने यह भी बताया कि फोटोग्राफी रचना में प्रमुख रूप से फोटोग्राफ का कंट्रास्ट, टोनालिटी और रंग अन्य संकेत होते हैं। जैसा कि रचना के पारंपरिक सिद्धांत, जो ज्यादातर ग्राफिक डिज़ाइन से प्राप्त हुए हैं, पर्याप्त अनुभव प्राप्त करेंगे, उनकी प्रवृत्ति अपनी अंतर्दृष्टि पर निर्भर करने की होगी और एक निश्चित बिंदु पर दिशा-निर्देशों का सचेत स्तर पर उपयोग करना बंद कर देंगे।

2.3 इम्फसिस (प्रभाव) का महत्व

अधिकांश फोटोग्राफ़्स को दृश्य जोर प्रदान करने के लिए एक या अधिक फोकल पॉइंट्स की आवश्यकता होती है। ये ऐसे तत्व होते हैं जो आंख को आकर्षित करते हैं और एक दृश्य चरमोत्कर्ष के रूप में कार्य करते हैं, कम्पोजिशन के भीतर एक प्रमुख बिंदु या बिंदुओं पर जोर देते हैं।

एक पूरी तरह से एकीकृत कम्पोजिशन जिसमें विविधता नहीं होती, अक्सर उबाऊ और एकरस होती है। पैटर्न के रंग, आकार, या बनावट को बदलने से यह तुरंत गतिशील हो जाता है। फोटोग्राफी में, विविधता को नियंत्रित करने के लिए कंट्रास्ट एक प्रमुख विधि है — प्रकाश और अंधकार का विपरीत, बड़ा और छोटा, चिकना और खुरदरा, कठोर और नरम।

फोटोग्राफ लेना सिर्फ कैमरे से क्लिक करने का नाम नहीं है। वास्तव में तस्वीर लेने से पहले, अपनी फोटो को मानसिक रूप से कल्पना करें और कम्पोज करें। कम्पोजिशन व्यक्तिगत होती है और यह फोटोग्राफर की पसंद पर निर्भर करती है, लेकिन फ्रेमिंग के समय कुछ बुनियादी दिशानिर्देशों को ध्यान में रखना चाहिए जो आपको बेहतर फोटोग्राफ लेने में मदद करेंगे। आपको हमेशा अपने फ्रेम में अव्यवस्था से बचने का प्रयास करना चाहिए। अक्सर फ्रेम में कम संख्या में

तत्व रखने से दर्शकों को विषय को समझने में मदद मिलती है। यदि फ्रेम में बहुत सारी चीजें होती हैं, तो फोटोग्राफ का फोकस बिखर जाता है।

इसी तरह, कई रंगों का उपयोग करने से बचने की कोशिश करें। एक रंगीन फोटोग्राफ में सभी रंगों का समावेश जरूरी नहीं है। इसे सरल रखें और फोटोग्राफ के मुख्य बिंदु पर ध्यान केंद्रित करें।फ्रेम में विभिन्न तत्वों के बीच की दूरी भी महत्वपूर्ण है। वस्तुओं और फ्रेम में मौजूद स्थान के बीच संतुलन होना चाहिए।आपको हमेशा चौड़े शॉट्स लेने की जरूरत नहीं है ताकि सब कुछ दिख सके, और साथ ही, बहुत अधिक क्लोज़-अप भी न करें जो फोटो को संदर्भ नहीं दे सके।

2.4 थर्ड्स का नियम (रूल ऑफ़ थर्ड)

थर्ड्स का नियम एक "हथेली का नियम" या दिशानिर्देश है जिसका उपयोग दृश्य छवियों की कम्पोजिशन के लिए किया जाता है। इस नियम के अनुसार, छवि को नौ समान भागों में विभाजित किया जाता है, दो समानांतर क्षैतिज रेखाओं और दो समानांतर लंबवत रेखाओं के द्वारा। जिसे आप दर्शकों को देखाना चाहते हैं, उसे इन रेखाओं के साथ या रेखाओं के मिलन बिंदुओं पर रखा जाना चाहिए। इन बिंदुओं के साथ एक विषय को संरेखित करने से अधिक रुचि उत्पन्न होती है, बजाय इसके कि आपका विषय केवल केंद्र में हो।

इस नियम का पालन करना अनिवार्य नहीं है, क्योंकि यह सभी स्थितियों पर लागू नहीं होता। इसलिए, एक फोटोग्राफर के रूप में, आपको यह समझने की क्षमता होनी चाहिए कि एक अच्छी कम्पोजिशन क्या बनाती है और एक अच्छा फोटो लेना कैसे चाहिए। लेकिन शुरुआती लोगों के लिए, थर्ड्स का नियम यह दर्शाता है कि एक फोटोग्राफ को अच्छी तरह से कम्पोज़ किया हुआ कैसे दिखाया जा सकता है।

सबसे बुनियादी "संरचना के नियमों" में से एक, जो तब बहुत रहस्यमय प्रतीत होता है जब इसे स्पष्ट रूप से नहीं समझाया जाता। साधारण रूप में, कल्पना करें कि आप एक तस्वीर ले रहे हैं और इसे ऊर्ध्वाधर रूप में तीन हिस्सों में मोड़ रहे हैं, फिर क्षैतिज रूप में, जैसे कोई पत्र को व्यापारिक लिफाफे में रखने के लिए मोड़ता है। इसका परिणाम यह होगा कि तस्वीर को नौ समान आयतों में विभाजित किया जाएगा। तस्वीर के माध्यम से क्षैतिज रूप से चलने वाली रेखाओं ने तस्वीर को तीन क्षैतिज खंडों में विभाजित कर दिया है। तस्वीर के माध्यम से ऊर्ध्वाधर रूप से चलने वाली रेखाओं ने तस्वीर को तीन ऊर्ध्वाधर खंडों में विभाजित कर दिया है।

चार रेखाओं में से किसी एक पर, चाहे क्षैतिज या ऊर्ध्वाधर, सबसे महत्वपूर्ण तत्वों को रखने से एक अधिक आकर्षक और गतिशील छवि बनती है। दो रेखाओं के प्रतिच्छेदन पर महत्वपूर्ण कार्रवाई रखना एक आकर्षक छवि बनाने में मदद करता है। रेखाओं में से किसी एक पर रखे गए विषयों को भी ऐसा कुछ गति उत्पन्न करना चाहिए जो दर्शकों की आंखों को तस्वीर के केंद्र की ओर ले जाए, दूर नहीं।

चित्र 2.4.1: रूल ऑफ़ थर्ड का प्रयोग

2.5 रंग और कंट्रास्ट

रंगीन फोटोग्राफ्स में, विभिन्न रंगों की तीव्रता के बीच का संबंध बहुत महत्वपूर्ण होता है। इसे कंट्रास्ट कहा जाता है। काले और सफेद छवियों के लिए, कंट्रास्ट सबसे अंधेरे और सबसे हल्के क्षेत्र के बीच का संबंध होता है। जैसा कि पहले उल्लेख किया गया है, एक रंगीन फोटोग्राफ का मतलब यह नहीं है कि इसमें सूरज के नीचे सभी रंग शामिल होने चाहिए। विशेष रूप से, एक ही फ्रेम में पूरक रंगों से बचने की कोशिश करें, जैसे नीला और पीला, हरा और मैजेंटा, या लाल और सायन।

ये पूरक रंग कहलाते हैं क्योंकि ये रंग पहिये के विपरीत पक्षों पर स्थित होते हैं। पूरक रंगों की तीव्र कंट्रास्ट आंख को चुभने वाला हो सकता है।

2.6 दृश्य साक्षरता

दृश्य संचार, जो संकेतों और प्रतीकों के माध्यम से संवाद करने की प्रक्रिया है, में फोटोग्राफी शामिल है। ऊपर चर्चा किए गए दृश्य डिज़ाइन और कम्पोजिशन के तत्वों के साथ-साथ, फोटोग्राफी के माध्यम को प्रभावी ढंग से उपयोग करने के लिए दृश्य साक्षरता की आवश्यकता होती है। एक छवि को पढ़ने, उसकी व्याख्या करने और उससे अर्थ निकालने की क्षमता को दृश्य साक्षरता कहते हैं। दृश्य साक्षरता पाठ्य साक्षरता से एक कदम आगे जाती है, यह इस तथ्य पर जोर देती है कि चित्र भी संवाद कर सकते हैं और चित्रों को भी किसी पाठ सामग्री की तरह पढ़ा और व्याख्या किया जा सकता है।

दुर्भाग्यवश, हमारे समाज में दृश्य साक्षरता को बहुत महत्व नहीं दिया जाता है। जब लोग फोटोग्राफ़्स को पढ़ने और संकेतों की व्याख्या करने की क्षमताओं से वंचित होते हैं, तो इस मीडिया-संतृप्त दुनिया में भी, लोग अक्सर दृश्य संचार को समझने में असफल हो जाते हैं। हाल के समय में कई मामले सामने आए हैं जहां फोटोग्राफ़्स को मोड़ा गया है और प्रचार और सतही विज्ञापन के लिए उपयोग किया गया है। इसलिए, दृश्य साक्षर होना महत्वपूर्ण है।

एक फोटोग्राफर और फोटो जर्नलिस्ट के रूप में, आपका काम बहस और चर्चाओं को आमंत्रित कर सकता है और दूसरों में सोच और क्रिया को उत्तेजित कर सकता है। देखने का अनुभव हमेशा व्यक्तिपरक होता है, इसलिए आपकी फोटोग्राफ़ में जो कुछ भी आप दिखाते हैं, उसे विभिन्न लोग विभिन्न तरीकों से व्याखित करते हैं, उनके संकेतों और प्रतीकों को समझने की क्षमता के आधार पर। दृश्य साक्षरता प्राप्त करना एक छोटा कदम है जो आपको ऐसी फोटोग्राफ़्स लेने में मदद कर सकता है, जिनके माध्यम से आप लोगों के साथ संवाद कर सकते हैं।

2.7 प्रकाश (लाइटिंग)

प्रकाश फोटोग्राफी का सबसे महत्वपूर्ण तत्व है। प्रकाश के बिना कोई भी फोटो अच्छी नहीं बन सकती। आपको यह समझना होगा कि किस प्रकार का प्रकाश आपके विषय को सबसे अच्छे तरीके से प्रस्तुत कर सकता है। प्राकृतिक प्रकाश, स्टूडियो लाइट, और यहाँ तक कि शैडोज़ का भी फोटोग्राफी में विशेष महत्व होता है।

2.8 कोण (एंगल)

किसी भी तस्वीर का कोण उसकी दृष्टिकोण को बदल सकता है। ऊँचे कोण से ली गई तस्वीरों से विषय छोटा दिख सकता है, जबकि नीचले कोण से विषय बड़ा और प्रभावशाली दिखता है। इसके अलावा, कोण से आप किसी विषय का अनोखा पहलू भी दिखा सकते हैं। कैमरा कोण उस विशिष्ट स्थान को दर्शाता है जहां तस्वीर लेने के लिए कैमरा रखा जाता है। विषय के संबंध में कैमरा कहां रखा गया है, इससे दर्शक के विषय को देखने के तरीके पर प्रभाव पड़ सकता है।

शॉट का आकार यह दर्शाता है कि विषय के संबंध में फ्रेम कितना बड़ा या छोटा है। क्या विषय फ्रेम को पूरी तरह से भरता है, या वे दूर हैं और मुश्किल से दिखाई दे रहे हैं? अपनी फोटो में कितना शामिल करना चाहते हैं, इसके आधार पर अपने कैमरा शॉट का चयन करें। चुना गया कैमरा कोण और शॉट का आकार छवि को बदल सकता है और एक पूरी तरह से अलग कहानी बता सकता है।नए शॉट्स आजमाने और कैमरा कोणों के साथ प्रयोग करने से आपके फोटो संग्रह को नीरस और बेप्रेरित होने से बचाया जा सकता है। यहां तक कि कैमरा को थोड़ा झुकाने में भी परिणामस्वरूप छवि में बड़ा अंतर आ सकता है।

2.9 गहराई (डैप्थ)

गहराई का मतलब है कि आप अपनी तस्वीर में तीन-आयामी प्रभाव कैसे पैदा करते हैं। यह प्रभाव फोकस, लाइटिंग, और पृष्ठभूमि के उपयोग से उत्पन्न किया जा सकता है। गहराई से तस्वीरें जीवंत और वास्तविक लगती हैं। फोटोग्राफी में डेप्थ ऑफ फील्ड (DOF) उस दूरी की सीमा को दर्शाता है जिसमें एक फोटो में वस्तुएं स्पष्ट रूप से दिखती हैं। यह तय करता है कि दृश्य के कितने हिस्से, अग्रभूमि और पृष्ठभूमि दोनों, फोकस में हैं। शैलो डेप्थ ऑफ फील्ड (कम

गहराई का फोकस) से पृष्ठभूमि और अग्रभूमि धुंधले हो जाते हैं, जिससे ध्यान एक विशिष्ट विषय पर केंद्रित रहता है। इसके विपरीत, डीप डेप्थ ऑफ फील्ड (अधिक गहराई का फोकस) में अधिकांश दृश्य स्पष्ट रूप से दिखता है, जो परिदृश्य फोटोग्राफी और चौड़े शॉट्स के लिए उपयोगी होता है।

डेप्थ ऑफ फील्ड का रचनात्मक उपयोग:

- पोर्ट्रेशैलो डेप्थ ऑफ फील्ड का उपयोग अक्सर पृष्ठभूमि और अग्रभूमि को धुंधला करने के लिए किया जाता है, जिससे ध्यान विषय पर केंद्रित होता है और एक आकर्षक प्रभाव बनता है।
- लैंडस्केप्सनों स्पष्ट रूप से दिखेंडीप डेप्थ ऑफ फील्ड सुनिश्चित करती है कि अग्रभूमि और पृष्ठभूमि दो:, जिससे दृश्य का पूरा विवरण कैप्चर होता है।
- मैक्रो फोटोग्राफी : इसमें छोटे विषयों पर फोकस किया जाता है जैसे कीड़े आदि।

2.10 रंग (कलर)

रंग का प्रभाव भी फोटोग्राफी में बहुत महत्वपूर्ण होता है। सही रंगों का चयन और उनका संतुलित उपयोग तस्वीर को उत्कृष्ट बना सकता है। विभिन्न रंगों के संयोजन से आप मूड और भावना को दर्शा सकते हैं।फोटोग्राफी में रंग एक महत्वपूर्ण तत्व है जो छवि की दृश्य अपील और भावनात्मक प्रभाव को निर्धारित करता है। रंग आपकी तस्वीर को जीवंतता और गहराई प्रदान करता है, और यह विषय, माहौल और दृश्य की भावनात्मक स्थिति को व्यक्त करने में मदद करता है।

रंग का महत्व

- **भावनात्मक प्रभाव:** रंग विभिन्न भावनाओं और मनोभावों को व्यक्त कर सकते हैं। गर्म रंग जैसे लाल, नारंगी और पीला उत्साह, ऊर्जा और गर्मी का अहसास देते हैं, जबकि ठंडे रंग जैसे नीला, हरा और बैंगनी शांति, ठंडक और शीतलता का अहसास कराते हैं। सही रंग संयोजन आपके दर्शकों को वांछित भावनात्मक प्रतिक्रिया उत्पन्न करने में मदद कर सकता है।
- **रचना और फोकस:** रंग आपकी तस्वीर की रचना को भी प्रभावित करता है। चमकीले और विपरीत रंगों का उपयोग मुख्य विषय को दर्शकों का ध्यान आकर्षित करने में मदद कर सकता है। रंगों का सामंजस्यपूर्ण उपयोग और संतुलन एक आकर्षक और संतुलित छवि बनाने में सहायक होता है।
- **गहराई और परिप्रेक्ष्य:** रंग की तीव्रता और गहराई का सही उपयोग आपके दृश्य को अधिक गहराई और परिप्रेक्ष्य दे सकता है। रंग की गहराई को बढ़ाकर आप विभिन्न वस्तुओं के बीच की दूरी और परत को स्पष्ट कर सकते हैं, जिससे छवि अधिक यथार्थवादी लगती है।

2.10.1 रंग की विशेषताएँ

- **रंग की गर्मी और ठंडक :** रंगों को गर्म और ठंडे में विभाजित किया जाता है। गर्म रंग दृश्य को नजदीक और जीवंत बनाते हैं, जबकि ठंडे रंग इसे दूर और शांतिपूर्ण बनाते हैं।
- **रंग का विपरीतता :** रंगों के बीच विपरीतता (Contrast) चित्र की स्पष्टता और दृश्यमानता को बढ़ा सकती है। विपरीत रंग एक दूसरे को हाइलाइट करने में मदद करते हैं, जिससे महत्वपूर्ण तत्व अधिक स्पष्ट होते हैं।
- **रंग का संतुलन :** संतुलित रंग स्कीम छवि में एक सामंजस्यपूर्ण और सौंदर्यपूर्ण प्रभाव पैदा करती है। रंगों का संतुलन और संयोजन रचना को आकर्षक और मनमोहक बना सकता है।

2.10.2 रंग का उपयोग

- **पोर्ट्रेट फोटोग्राफी :** रंग त्वचा के टोन और व्यक्तित्व को उजागर करने में मदद कर सकते हैं। उचित रंग चयन से विषय की भावनात्मक स्थिति और चरित्र को बेहतर तरीके से दर्शाया जा सकता है।
- **लैंडस्केप फोटोग्राफी :** प्राकृतिक दृश्यों में रंग का उपयोग गहराई, विस्तार और वातावरण को व्यक्त करने में सहायक होता है। सूरज की किरणें, बादल, और पौधे सभी रंगों के माध्यम से दृश्य को बेहतर तरीके से प्रस्तुत किया जा सकता है।
- **वाणिज्यिक फोटोग्राफी :** रंग ब्रांडिंग और विपणन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। सही रंग संयोजन उत्पाद की पहचान और आकर्षण को बढ़ा सकता है।

2.10.3 फोटोग्राफी हेतु कुछ सुझाव

- विभिन्न रंगों के संयोजन और विपरीतता के साथ प्रयोग करें और देखें कि वे आपकी तस्वीरों पर कैसा प्रभाव डालते हैं।
- अपनी तस्वीरों में रंग की तीव्रता और संतुलन को समझने के लिए रंग सर्कल (Color Wheel) और रंग सिद्धांत का अध्ययन करें।
- प्राकृतिक और कृत्रिम रोशनी के प्रभाव को समझें, क्योंकि ये रंगों की प्रदर्शनी को प्रभावित कर सकते हैं।
- रंग फोटोग्राफी में एक शक्तिशाली उपकरण है जो आपकी छवियों को जीवंतता और गहराई प्रदान करता है। रंग का सही उपयोग आपके दृश्य को अधिक प्रभावशाली और आकर्षक बना सकता है।

2.11 फोकस

फोकस का मतलब है कि आप अपनी तस्वीर के किस हिस्से को स्पष्ट और किस हिस्से को धुंधला दिखाना चाहते हैं। यह निर्णय आपकी तस्वीर की कहानी और विषय को स्पष्ट करने में मदद करता है। फोटोग्राफी में फोकस उस क्षेत्र को संदर्भित करता है जिसमें तस्वीर स्पष्ट और तीव्र होती है।

2.11.1 फोकस के प्रकार

1. **ऑटोमैटिक फोकस (Automatic Focus):** अधिकांश आधुनिक कैमरों में ऑटोमैटिक फोकस (AF) सिस्टम होता है, जो स्वचालित रूप से फोकस को समायोजित करता है। AF सिस्टम विभिन्न मोड्स में काम करता है, जैसे कि:

- सिंगल AF (Single AF):** स्थिर वस्तुओं के लिए, जहां एक बार फोकस लॉक करने के बाद कैमरा तस्वीर लेता है।
- कंटीनुअस AF (Continuous AF):** गतिशील वस्तुओं के लिए, जहां कैमरा लगातार फोकस को अपडेट करता है जब वस्तु चल रही हो।
- ऑटो AF (Auto AF):** कैमरा खुद तय करता है कि कौन सा AF मोड उपयुक्त है।

2. मैनुअल फोकस (Manual Focus) : मैनुअल फोकस में, फोटोग्राफर खुद लेंस के फोकस रिंग को घुमाकर फोकस सेट करता है। यह उन परिस्थितियों में उपयोगी होता है जहां ऑटोमैटिक फोकस काम नहीं करता या जब फोटोग्राफर सटीक फोकस की आवश्यकता महसूस करता है।

2.11.2 फोकस के प्रभाव

1. गहराई और चौड़ाई (Depth of Field): फोकस का चयन आपके चित्र की गहराई और चौड़ाई को प्रभावित करता है। शैलो डेप्थ ऑफ फील्ड (कम गहराई का फोकस) से मुख्य विषय स्पष्ट होता है, जबकि पृष्ठभूमि और अग्रभूमि धुंधले होते हैं। डीप डेप्थ ऑफ फील्ड (अधिक गहराई का फोकस) से अधिक क्षेत्र स्पष्ट होता है।

2. विषय पर ध्यान (Subject Focus): सही फोकस से विषय को ध्यान आकर्षित किया जा सकता है। मुख्य विषय पर फोकस करके, आप दर्शकों का ध्यान उस पर केंद्रित कर सकते हैं और अन्य कम महत्वपूर्ण हिस्सों को धुंधला कर सकते हैं।

3. दृश्य प्रभाव (Visual Impact): फोकस का सही उपयोग छवि के समग्र दृश्य प्रभाव को बढ़ा सकता है। स्पष्ट फोकस छवि में विवरण और स्पष्टता को उजागर करता है, जबकि धुंधला फोकस एक सौंदर्यात्मक और कलात्मक प्रभाव उत्पन्न कर सकता है।

फोकस से संबंधित सुझाव

1. फोकस लॉक (Focus Lock): जब आप मुख्य विषय पर फोकस करना चाहते हैं, तो फोकस लॉक का उपयोग करें। इसके लिए, फोकस बटन को आधे दबाकर रखें और फिर शटर बटन को पूरा दबाकर तस्वीर लें।

2. फोकस प्वाइंट्स (Focus Points): कैमरे के विभिन्न फोकस प्वाइंट्स का उपयोग करें ताकि आप उस क्षेत्र पर ध्यान केंद्रित कर सकें जिसे आप सबसे अधिक महत्वपूर्ण मानते हैं।

3. लाइटिंग और शटर स्पीड (Lighting and Shutter Speed): अच्छी रोशनी और सही शटर स्पीड से फोकस को सही ढंग से सेट करने में मदद मिलती है। कम रोशनी में या गति वाली वस्तुओं के साथ काम करते समय, उचित फोकस प्राप्त करना चुनौतीपूर्ण हो सकता है।

4. लेंस और एपर्चर (Lens and Aperture): लेंस की गुणवत्ता और एपर्चर का आकार फोकस की स्पष्टता को प्रभावित कर सकते हैं। उच्च गुणवत्ता वाले लेंस और उचित एपर्चर सेटिंग्स का उपयोग करें। फोकस फोटोग्राफी का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है जो आपकी छवियों की स्पष्टता और प्रभावशीलता को प्रभावित करता है। सही फोकस सेटिंग्स का उपयोग कर आप अपनी तस्वीरों को अधिक पेशेवर और आकर्षक बना सकते हैं।

2.12 पृष्ठभूमि (बैकग्राउंड)

पृष्ठभूमि को ध्यान में रखना बहुत जरूरी है। एक अच्छी पृष्ठभूमि आपके विषय को उभार सकती है, जबकि एक व्यस्त या ध्यान भटकाने वाली पृष्ठभूमि आपकी तस्वीर को खराब कर सकती है। इसलिए, पृष्ठभूमि को साधारण और साफ-सुथरा रखना अक्सर बेहतर होता है। फोटोग्राफी में पृष्ठभूमि उस क्षेत्र को संदर्भित करती है जो मुख्य विषय के पीछे होता है। यह एक तस्वीर के समग्र दृष्टिकोण को प्रभावित करता है और चित्र की भावनात्मक और दृश्य अपील को बढ़ा या घटा सकता है। पृष्ठभूमि एक महत्वपूर्ण रचनात्मक तत्व है जो तस्वीर के तत्वों के बीच संतुलन और सामंजस्य स्थापित करता है।

2.12.1 पृष्ठभूमि के महत्व

- **मुख्य विषय को उभारना :** पृष्ठभूमि मुख्य विषय को उभारने में मदद करती है। एक स्पष्ट और अनुकूल पृष्ठभूमि विषय को प्रमुखता देती है, जबकि एक भ्रामक या भारी पृष्ठभूमि मुख्य विषय को ढक सकती है या उसका ध्यान हटा सकती है।
- **भावनात्मक प्रभाव :** पृष्ठभूमि के रंग, बनावट और तत्व चित्र की भावनात्मक स्थिति को व्यक्त करने में सहायक होते हैं। एक शांत और साधारण पृष्ठभूमि शांति और साधारणता को व्यक्त कर सकती है, जबकि एक रंगीन और जटिल पृष्ठभूमि ऊर्जा और गतिशीलता को प्रदर्शित कर सकती है।

- **दृश्य गहराई और परिप्रेक्ष्य :** पृष्ठभूमि चित्र में गहराई और परिप्रेक्ष्य जोड़ सकती है। गहरी पृष्ठभूमि दृश्य को अधिक तीन-आयामी और वास्तविक बना सकती है, जबकि एक शैलो पृष्ठभूमि एक सपाट प्रभाव दे सकती है।

2.13 मूवमेंट (गति)

गति को तस्वीर में कैद करना एक चुनौतीपूर्ण लेकिन रोचक तत्व है। शटर स्पीड का सही उपयोग करके आप गति को फ्रीज या ब्लर कर सकते हैं। यह आपके फोटो को एक विशेष गतिशीलता दे सकता है। फोटोग्राफी के ये सिद्धांत केवल प्रारंभिक दिशानिर्देश हैं। अनुभव और अभ्यास से आप इन सिद्धांतों को अपने तरीके से प्रयोग कर सकते हैं और अपनी खुद की शैली विकसित कर सकते हैं। फोटोग्राफी में सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि आप अपनी दृष्टि और रचनात्मकता को स्वतंत्रता से व्यक्त करें। फोटोग्राफी में मूवमेंट उन तत्वों को संदर्भित करता है जो चित्र में गति और गतिशीलता को दर्शाते हैं। यह एक महत्वपूर्ण तकनीक है जो दृश्य को जीवंतता और ऊर्जा प्रदान करती है, और यह दर्शकों को गतिशीलता का अहसास कराती है। मूवमेंट को सही तरीके से कैप्चर करने से एक तस्वीर में अतिरिक्त प्रभाव और संदर्भ जुड़ सकता है।

2.13.1 मूवमेंट के प्रकार

- **सहज मूवमेंट (Actual Movement):**यह तब होता है जब वास्तविक गति या आंदोलन छवि में कैप्चर किया जाता है, जैसे कि दौड़ते हुए व्यक्ति, बहती हुई नदी या उड़ते हुए पक्षी। इस प्रकार का मूवमेंट फोटोग्राफर को गति को स्थिर रूप में प्रस्तुत करने की चुनौती देता है।
- **मूवमेंट का प्रभाव (Motion Blur):**जब कैमरा या विषय गति में होता है, तो इसका परिणाम मूवमेंट ब्लर (Motion Blur) हो सकता है। यह तकनीक गति की भावना पैदा करती है, जैसे कि एक दौड़ती हुई कार के पीछे का धुंधलापन। इसे एक धीमी शटर स्पीड के साथ कैप्चर किया जाता है।
- **स्टेटिक मूवमेंट (Static Movement):**यह तब होता है जब विषय स्थिर होता है, लेकिन उसके चारों ओर के तत्व या बैकग्राउंड गति की भावना पैदा करते हैं। उदाहरण के लिए, एक स्थिर व्यक्ति के पीछे तेजी से गुजरते वाहन।

2.14 फोटो मैनिपुलेशन : सही या गलत

अब तक हमने फोटोग्राफी लेने के आवश्यक तत्वों पर चर्चा की है। फोटो जर्नलिस्ट केवल घटनाओं को फोटोग्राफ्स के माध्यम से दस्तावेज़ करने वाले दृश्य इतिहासकार नहीं होते; उन्हें तेजी से बढ़ती तकनीक के साथ भी चलना पड़ता है।

बदलती तकनीक के साथ, उन्हें इसके साथ आने वाली नैतिक जिम्मेदारियों के प्रति भी जागरूक रहना पड़ता है। एनालॉग तकनीक के दिनों में, एक फोटो की पोस्ट-प्रोसेसिंग एक थकाऊ काम था । सही रसायनों को मिलाने, सही प्रकाश व्यवस्था बनाने आदि में कई घंटे बिताने पड़ते थे। लेकिन डिजिटल तकनीक के आगमन के साथ, फोटो मैनिपुलेशन बस एक क्लिक की दूरी पर है। फोटो मैनिपुलेशन की अवधारणा नई नहीं है। 1839 के आसपास डाग UERREOTYPE और कैलो टाइप के आविष्कार के बाद से, फोटोग्राफरों को विषय वस्तु और उसके इतिहास में स्थान को बदलने का श्रेय दिया जा सकता है। वर्षों के साथ, तकनीक में केवल leaps और bounds से सुधार हुआ है, जिससे मैनिपुलेशन एक बच्चे का खेल बन गया है। किसी भी प्रकार के मैनिपुलेशन से गुजरने वाली फोटोग्राफ की प्रामाणिकता पर कई नैतिक चिंताएँ हैं। एक फोटोग्राफ को एक घटना की सही चित्रण होनी चाहिए जैसे कि वह हुई थी। कुछ पैरामीटर्स को बदलने से फोटोग्राफ का अर्थ बदल सकता है। इसलिए, फोटो जर्नलिस्टों को सावधान रहना चाहिए कि वे इन तकनीकों का उपयोग अपने लाभ के लिए कैसे करें, बिना छवि की मौलिकता को प्रभावित किए।

फोटोशॉप और लाइटरूम जैसे कई सॉफ़्टवेयर हैं जिनका उपयोग क्रॉपिंग, एक्सपोजर समायोजन, रंग सुधार आदि के लिए किया जा सकता है। एक ओर, ये तस्वीर के अव्यवस्थाओं को दूर करने में मदद करते हैं। यानी क्रॉपिंग करके, अवांछित जानकारी को तस्वीर से हटा दिया जा सकता है। लेकिन कुछ हिस्सों को क्रॉप करके तस्वीर के अर्थ को बदलने की संभावना भी होती है। दूसरी ओर, तस्वीर में अतिरिक्त विवरण जोड़ने से भी उसका अर्थ बदल सकता है जो मूल रूप से छवि को कैप्चर करते समय मौजूद नहीं थे। इसी प्रकार, रंग सुधार और एक्सपोजर सुधार जैसी अन्य मैनिपुलेशं सभी दर्शक को गुमराह कर सकती हैं। लेकिन कभी-कभी, कम रोशनी में खींची गई एक संभावित अच्छी फोटोग्राफ को एक्सपोजर सुधार के साथ बचाया जा सकता है ताकि यह प्रस्तुत करने योग्य लगे।

इसलिए, एक फोटो जर्नलिस्ट के रूप में मैनिपुलेशंस का सहारा लेने से पहले आपको कुछ मार्गदर्शक सिद्धांतों का पालन करना चाहिए। सबसे महत्वपूर्ण सिद्धांत यह है कि तस्वीर की सामग्री को नहीं बदलना चाहिए। छवि पर की गई कोई भी छेड़छाड़ तस्वीर के इरादे और उद्देश्य को नहीं बदलनी चाहिए। यह जनता को गुमराह नहीं करनी चाहिए। एक फोटो जर्नलिस्ट के रूप में, आपकी जिम्मेदारी है कि आप तथ्यों को जैसे हैं, वैसे दिखाएँ। आप केवल उन छवियों को प्रस्तुत करके अपनी विश्वसनीयता बना सकते हैं जो वास्तविकता के करीब हों, जैसा कि घटना घटी थी, न कि जिस वास्तविकता को आप छवियों को बदलकर निर्माण करते हैं।

जब आप फोटोग्राफी पर पूरी तरह से अधिकार प्राप्त कर लें और इस माध्यम का उपयोग करना सीख जाएँ, तो इसके अतिरिक्त, आपको एक फोटो जर्नलिस्ट के रूप में अपनी भूमिका के प्रति जागरूक होना चाहिए। बहुत ही सीमित समय में, आपको यह निर्णय लेना होता है कि कोई विषय समाचार के योग्य है या नहीं, फिर एक अच्छी कम्पोजिशन की कल्पना करनी होती है जो पल के अनुसार सही हो और फोटो लेना होता है। एक फोटो जर्नलिस्ट के लिए मन की उपस्थिति और त्वरित सोच दो बहुत महत्वपूर्ण गुण होते हैं। इसलिए, फोटो जर्नलिस्ट को समाचार की सूझ-बूझ होनी

चाहिए और दबाव में शांत रहना चाहिए। तेज और ध्यान केंद्रित होने के साथ-साथ, एक फोटो जर्नलिस्ट को सहानुभूतिपूर्ण और मानवतावादी भी होना चाहिए और उनके असाइनमेंट्स के नैतिक विचारों से अवगत रहना चाहिए।

एक फोटो जर्नलिस्ट के रूप में, आपको उस विषय के बारे में अच्छी तरह से पढ़ा हुआ होना चाहिए जिसे आप फोटोग्राफ कर रहे हैं। आपको उस समाज, लोगों और उनकी संस्कृति के बारे में शिक्षित होना चाहिए जिसमें आप रहते हैं। आपको उनकी कहानियों को जितनी संभव हो सके उतने भावनाओं के साथ बताने में सक्षम होना चाहिए। एक कहानीकार के रूप में, आपको हमेशा अपने विषय के करीब जाने की कोशिश करनी चाहिए और एक व्यक्तिगत संबंध बनाना चाहिए, उनके भावनाओं, इमोशंस, दोषों और असुरक्षाओं को समझना चाहिए और उन्हें अपनी फोटोग्राफ़्स में प्रक्षिप्त करने की कोशिश करनी चाहिए।

2.15 सारांश

फोटो पत्रकारिता एक ऐसी कला है जो छवियों के माध्यम से समाज को दर्शाती है और उसे साक्षात्कारिक रूप में अनुभव कराती है। इसका मुख्य उद्देश्य विभिन्न घटनाओं, स्थलों, और व्यक्तियों को असली तरीके से प्रस्तुत करना है, जिससे दर्शकों को एक सटीक और सार्थक दृष्टिकोण प्राप्त हो। फोटो पत्रकारिता का सबसे महत्वपूर्ण सिद्धांत है सत्यप्रियता, जिससे हर छवि वास्तविकता का अनुकरण करती है और दर्शकों को सच्चाई का एहसास होता है। इसके साथ ही, फोटो पत्रकारिता ने नैतिकता, विषयवादिता, और जवाबदेही के सिद्धांतों का भी पालन किया है।

इसका और एक महत्वपूर्ण पहलू यह है कि यह समाज के विभिन्न पहलुओं को उजागर करती है और उन्हें बेहतर समझने में मदद करती है। फोटो पत्रकारिता के माध्यम से हम विभिन्न समृद्धियों, सांस्कृतिक विविधताओं, और सामाजिक समस्याओं को समझ सकते हैं और इस पर विचार कर सकते हैं। साथ ही, फोटो पत्रकारिता एक साहित्यिक योजना का माध्यम है जो दर्शकों को कहानियों के माध्यम से जोड़ती है। यह छवियां विशेष भावनाएं और भाषा प्रकट करती हैं। फोटो पत्रकारिता का और एक महत्वपूर्ण आयाम है सामाजिक न्याय की प्रमोट करने में जोड़ना। यह विभिन्न वर्गों और समुदायों की आवाज को सुनने का मंच प्रदान करती है और उन्हें समर्थन और समझदारी के माध्यम से आपसी समरसता की दिशा में बढ़ने का साहस दिखाती है। समाप्त करते हुए, फोटो पत्रकारिता एक विचारशील और साक्षरता को बढ़ावा देने वाला माध्यम है जो दर्शकों को आपसी संबंध, सामाजिक न्याय, और सामूहिक संवाद में जोड़ने में मदद करता है। इसके माध्यम से हम समाज के सभी पहलुओं को जानने में सक्षम होते हैं और सार्थक दृष्टिकोण से जीवन को समझते हैं।

2.16 शब्दावली

- **फोटो पत्रकारिता -** फोटो पत्रकारिता एक ऐसी कला है जो छवियों के माध्यम से समाज को दर्शाती है और उसे साक्षात्कारिक रूप में अनुभव कराती है। इसका मुख्य उद्देश्य विभिन्न घटनाओं, स्थलों, और व्यक्तियों को असली तरीके से प्रस्तुत करना है।

- **फोकस-** फोकस का मतलब है कि आप अपनी तस्वीर के किस हिस्से को स्पष्ट और किस हिस्से को धुंधला दिखाना चाहते हैं। यह निर्णय आपकी तस्वीर की कहानी और विषय को काफी स्पष्ट करने में मदद करता है।
- **पृष्ठभूमि-** फोटोग्राफी में पृष्ठभूमि उस क्षेत्र को संदर्भित करती है जो मुख्य विषय के पीछे होता है। यह एक तस्वीर के समग्र दृष्टिकोण को प्रभावित करता है और चित्र की भावनात्मक और दृश्य अपील को बढ़ा या घटा सकता है।

2.17 संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. https://www.adobe.com/in/creativecloud/photography/discover/rule-of-thirds.html
2. https://www.udemy.com/topic/photography-composition/
3. https://www.oreilly.com/library/view/photographic-composition/9781492016335/
4. https://graphics.stanford.edu/courses/cs178-09/lectures/composition-07may09.pdf
5. Tom Grill, M.S. Photographic Composition; Amphoto Books: New York, NY, USA, 1990.
6. Yeh, C.H.; Ho, Y.C.; Barsky, B.A.; Ouhyoung, M. Personalized photograph ranking and selection system. In Proceedings of the 18th ACM international conference on Multimedia, Firenze, Italy, 25–29 October 2010; pp. 211–220, doi:10.1145/1873951.1873963.
7. Cao, Z.; Qin, T.; Liu, T.Y.; Tsai, M.F.; Li, H. Learning to Rank: From Pairwise Approach to Listwise Approach. In Proceedings of the 24th International Conference on Machine Learning, Corvallis, OR, USA, 20–24 June 2007; ACM: New York, NY, USA, 2007; pp. 129–136, doi:10.1145/1273496.1273513.
8. Yeh, C.H.; Barsky, B.A.; Ouhyoung, M. Personalized Photograph Ranking and Selection System Considering Positive and Negative User Feedback. ACM Trans. Multimed. Comput. Commun. Appl. 2014, 10, 36. doi:10.1145/2584105.
9. Carballal, A.; Perez, R.; Santos, A.; Castro, L. A Complexity Approach for Identifying Aesthetic Composite Landscapes. In Evolutionary and Biologically Inspired Music, Sound, Art and Design; Romero, J., McDermott, J., Correia, J., Eds.; Springer: Berlin/Heidelberg, Germany, 2014; pp. 50–61.
10. https://www.academia.edu/1100941/THE_PHOTOGRAPHY_COMPOSITION_A_SIMPLER_WAY_OF_DOING_IT

2.18 अभ्यास हेतु प्रश्न

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1: फोटो पत्रकारिता में सही एक्सपोजर कैसे प्राप्त किया जा सकता है और इसका क्या महत्व है?

प्रश्न 2: फोटो पत्रकारिता में 'लाइटिंग' का महत्व समझाइए और इसके विभिन्न प्रकारों का वर्णन कीजिए।

लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1: 'रूल ऑफ थर्ड्स' का फोटो कंपोजिशन में क्या महत्व है?

प्रश्न 2: फोटो मैनिपुलेशन से आप क्या समझते हैं?

प्रश्न 3: 'गोल्डन ऑवर' का फोटो खींचने में क्या महत्व है?

बहुविकल्पीय प्रश्न

प्रश्न 1: फोटो कंपोजिशन में 'रूल ऑफ थर्ड्स' का क्या अर्थ है?

1. फोटो को तीन भागों में विभाजित करना
2. फोटो के तीन प्रमुख रंग
3. फोटो के तीन मुख्य विषय
4. फोटो का तीन बार संपादन

प्रश्न 2 : सही फोटो एंगल चुनने के लिए क्या महत्वपूर्ण है?

1. कैमरा का ब्रांड
2. लाइटिंग की स्थिति
3. तस्वीर का फ्रेम
4. रंगों का उपयोग

प्रश्न 3 : 'गोल्डन ऑवर' किस समय को कहा जाता है?

1. सुबह 8 बजे से 9 बजे तक
2. दोपहर 12 बजे से 1 बजे तक
3. सूर्योदय और सूर्यास्त के आस-पास का समय
4. रात 8 बजे से 9 बजे तक

प्रश्न 4 : 'डिप्थ ऑफ फील्ड' का क्या महत्व है?

1. तस्वीर की गहराई को दिखाने के लिए
2. फोटो की चौड़ाई बढ़ाने के लिए

3. फोटो को रंगीन बनाने के लिए
4. फोटो का आकार बढ़ाने के लिए

उत्तर कुंजी:

(1) 1 (2) 2 (3) 3 (4) 1

इकाई-3

फोटो पत्रकार के आवश्यक गुण, उत्तरदायित्व

पाठ संरचना

3.0 उद्देश्य

3.1 प्रस्तावना

3.2 फोटो पत्रकार के आवश्यक गुण

3.3 फोटो पत्रकार का उत्तरदायित्व

3.4 कर्तव्य और जिम्मेदारियाँ

3.5 एक फोटो पत्रकार का कार्यस्थल

3.6 सारांश

3.7 शब्दावली

3.8 संदर्भ ग्रन्थ सूची

3.9 अभ्यास हेतु प्रश्न

3.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप समझ पाएंगे-

- फोटो पत्रकार का सामान्य परिचय को आप जानेंगे।
- पत्रकार के गुण को आप समझेंगे।
- फोटो पत्रकार के आवश्यक उत्तरदायित्व को आप जानेंगे।
- फोटो पत्रकार के आवश्यक कर्तव्य और जिम्मेदारियाँ को आप जानेंगे।
- एक फोटो पत्रकार के कार्य की दशाएं आप समझ सकेंगे।

3.1 प्रस्तावना

एक पत्रकार को अपने आस-पास की दुनिया में व्यापक रुचि होनी चाहिए तथा चीजों का पता लगाने और अपने पाठकों या श्रोताओं के साथ अपनी खोजों को साझा करने की इच्छा होनी चाहिए। उन्हें लिखित या मौखिक भाषा से प्रेम होना चाहिए, शब्दों के अर्थ और प्रवाह को समझना चाहिए तथा उनका प्रयोग करने में आनंद लेना चाहिए।

फोटो जर्नलिज्म को कहानी कहने के लिए तस्वीरों का उपयोग करने की प्रक्रिया के रूप में परिभाषित किया जा सकता है जबकि पारंपरिक पत्रकार कलम और कागज (या शायद कीबोर्ड) का उपयोग करके अपनी जानकारी साझा करेंगे, फोटो जर्नलिस्ट अपने माध्यम के रूप में कैमरे का उपयोग करते हैं। एक फोटो जर्नलिस्ट पूरी कहानी को बताने के लिए छवियों का उपयोग करेगा, शुरू से अंत तक, और अगर ठीक से निष्पादित किया जाता है तो पाठक को प्रस्तुत किए जा रहे संदेश को पूरी तरह से समझने के लिए शब्दों की भी आवश्यकता हो सकती है ।

चूंकि आज हमारी दुनिया डिजिटल उपकरणों के माध्यम से आपस में जुड़ी हुई है, इसलिए समाचार आउटलेट और मीडिया एजेंसियां सबसे अच्छी, सबसे व्यापक और सूचनात्मक तस्वीरों के लिए सूचना के सबसे आधिकारिक और विश्वसनीय स्रोतों की तलाश करते हैं। फोटो पत्रकार के लिए अविश्वास और संदेह असामान्य नहीं हैं, क्योंकि घटनाएँ तेजी से सामने आती हैं, शब्द तेज़ी से फैलते हैं, और शीर्ष ब्रेकिंग न्यूज़ जल्दी बदल सकती है। फोटोग्राफी के आगमन के साथ समाचार ज्यादा प्रमाणित तथा ध्यानाकर्षण के साथ तस्वीर सहित दिया जाना संभव हो सका है। साथ ही डिजिटल उपकरणों ने फोटो पत्रकारिता के क्षेत्र को विशेषीकृत बना दिया है। इस क्षेत्र में लगातार बदलावों का दौर जारी है।

3.2 फोटो पत्रकार के आवश्यक गुण

फोटो पत्रकार निडर, धैर्यशील, जुझारू व संघर्षशील हो तभी वह दंगो, हिंसा-संघर्ष, युद्धों व प्रकृतिक आपदाओं को अपने कैमरे में कैद कर सकता हैं। फोटो पत्रकार के लिए समय बड़ा महत्वपूर्ण होता हैं, वह समय के साथ होड़ करता हैं, समय उसकी प्रतिक्षा नहीं करता हैं, फोटो पत्रकार के लिए समय का पाबन्द होना उसका मुख्य गुण हैं।

फोटो पत्रकार के लिए कैमरा एक डायरी है जो घटनाओं को रिकार्ड करता है। फोटो पत्रकारिता में सिर्फ कैमरे का महत्व नहीं है उसके पीछे खड़े व्यक्ति का भी होता है। भयावह, विनाशकारी, विकृति एवं वीभत्स घटनाओं को कैमरे में कैद करने हेतु एक फोटो पत्रकार जितना तत्पर रहता है उतना ही वह किसी समारोह, उत्सव और आयोजन के साथ एकाग्रचित होता है।

फोटो पत्रकार के अन्दर सही तथा निर्णायक क्षण को पकडने की क्षमता भी होनी चाहिए उसे यह मालुम होना चाहिए कि वह किस कोण व दृष्टि से कैमरे का प्रयोग करे, क्योंकि कोण बदलने से दृष्टिकोण बदल जाता है। फोटो खूबसूरत आये इसके बजाय ध्यान इस बात पर दिया जाता है कि किस एंगल से फोटो लिया जाये ताकि फोटो के माध्यम से पूरी कहानी स्पष्ट हो जाये।

एक साधारण समाचार और एक महान समाचार के बीच का अंतर अक्सर केवल आपके द्वारा शामिल किए गए तथ्यों का नहीं होता, बल्कि उस तरीके का होता है जिससे आप उन तथ्यों को बताते हैं। पत्रकारों को व्याकरण का दुरुपयोग नहीं करना चाहिए, हमेशा वर्तनी की जांच करनी चाहिए तथा अपनी शब्दावली विकसित करने का हर अवसर लेना चाहिए। समाचार कहानी पत्रकारिता का मूल आधार एक सरल, सीधी लेखन शैली की आवश्यकता होती है। सरलता की यह आवश्यकता नए पत्रकारों को निराश कर सकती है, भले ही शब्दों में लिखने की तुलना में सरलता से लिखना अक्सर अधिक चुनौतीपूर्ण होता है। एक बार जब आप बुनियादी समाचार कहानी प्रारूप में निपुण हो जाएं तो आप अपनी स्वयं की शैली विकसित करना शुरू कर सकते हैं।

एक पत्रकार के पास सतर्क और व्यवस्थित दिमाग होना चाहिए। लोग पत्रकारों पर तथ्यों के मामले में भरोसा करते हैं, सभी पत्रकारों को सटीकता का लक्ष्य रखना चाहिए। इसके बिना भरोसा और दर्शक दोनों खो जाएंगे। पत्रकारों को हमेशा अपने पास एक नोटबुक या रिकॉर्डिंग डिवाइस रखनी चाहिए। रिपोर्ट संकलित करते समय समसामयिक नोट्स बहुत ज़रूरी होते हैं। पत्रकारों को सतर्क रहना चाहिए और अपनी कल्पना का इस्तेमाल करके लोगों द्वारा बताई गई बातों का मानसिक चित्र बनाना चाहिए। उन्हें कहानी की कल्पना करना सीखना चाहिए। अनुभव और अभ्यास के साथ, एक पत्रकार इस बात के बारे में विशेष जागरूकता विकसित कर लेगा कि समाचार क्या है? इसे कभी-कभी समाचार बोध कहा जाता है। यह ऐसी जानकारी को पहचानने की क्षमता है जो दर्शकों को रुचिकर लगेगी या जो अन्य

कहानियों के लिए सुराग प्रदान करेगी। यह तथ्यों और विचारों के ढेर को छांटने की क्षमता भी है, जो दर्शकों के लिए सबसे महत्वपूर्ण या दिलचस्प है।

उदाहरण के लिए, एक युवा रिपोर्टर को एक सरकारी मंत्री की शादी को कवर करने के लिए भेजा गया था। जब वह कार्यालय लौटा, तो उसके समाचार संपादक ने कहानी के बारे में पूछा। उसने उत्तर दिया क्षमा करें, कोई कहानी नहीं है दुल्हन कभी नहीं आई। जैसा कि उसके समाचार संपादक ने बताया, जब दुल्हन शादी के लिए नहीं आती है तो वह समाचार कहानी है। युवा रिपोर्टर ने इस घटना में सभी तथ्यों के सापेक्ष महत्व के बारे में नहीं सोचा था; उसके पास कोई समाचार समझ नहीं थी।

- पत्रकार के पास संदेह करने वाला दिमाग होना चाहिए। उन्हें कई तरह के कारणों से जानकारी दी जाएगी, कुछ उचित तो कुछ अनुचित। और उन्हें ऐसे मौकों को पहचानने में सक्षम होना चाहिए जब लोग सच नहीं बोल रहे हों। यह जरूरी है कि पत्रकार यह पहचानने की क्षमता विकसित करें कि उन्हें कब गलत जानकारी दी जा रही है। इसके लिए स्वस्थ संदेह जरूरी है।

- पत्रकारों को दृढ़ निश्चयी होना चाहिए ताकि एक बार उन्हें कोई स्टोरी मिल जाए तो वे उसे तब तक पकड़े रखें जब तक उन्हें संतुष्टि न हो जाए कि उनके पास पूरी स्टोरी है। पत्रकार को हड्डी के साथ कुत्ते की तरह होना चाहिए, जब तक कि वे उसमें से सारा मांस न चबा लें, तब तक उसे नहीं छोड़ना चाहिए, भले ही लोग उसे खींचने की कोशिश करें। इसका मतलब यह है कि पत्रकार को अक्सर कठिन सवाल पूछने पड़ते हैं और उन लोगों को परेशान करने का जोखिम उठाना पड़ता है जो सहयोग नहीं करना चाहते। यह दर्दनाक हो सकता है लेकिन अंत में पत्रकार को सम्मान मिलेगा। इसके लिए यह आवश्यक है कि सरल, विनम्र रहें, किन्तु दृढ़ रहें।

- पत्रकारों को हर तरह के लोगों के साथ घुलना-मिलना सीखना चाहिए। वे यह नहीं चुन सकते कि किसका साक्षात्कार करना है, ठीक उसी तरह जैसे वे यह चुन सकते हैं कि किसे अपना मित्र बनाना है। पत्रकार को सभी के साथ दोस्ताना व्यवहार करना चाहिए, यहाँ तक कि उन लोगों के साथ भी जिन्हें वे नापसंद करते हैं। विश्वसनीयता को विशेष रूप से पत्रकारिता में महत्व दिया जाता है, जहां नियोक्ता और दर्शक दोनों ही पत्रकार पर भरोसा करते हैं कि वह अपना काम पेशेवर ढंग से और समय पर करना आवश्यक है।

- यदि किसी पत्रकार को साक्षात्कार के लिए भेजा जाता है, लेकिन वह नहीं पहुंचता है तो इससे कई लोगों को ठेस पहुंचती है, वह व्यक्ति जो साक्षात्कार के लिए इंतजार कर रहा है; वह संपादक जो साक्षात्कार को अपने अखबार या कार्यक्रम में शामिल करने का इंतजार कर रहा है, तथा पाठक, श्रोता या दर्शक, जिनसे समाचार छीन लिया जाता है।

- पत्रकारिता का मतलब है समय सीमा, आपका समाचार संगठन आपसे उम्मीद करेगा कि आप सबसे पहले खबर लेकर आएं। वे नियमित अपडेट सटीक स्रोत और जिम्मेदार तथ्य चाहते हैं। वे विशेष तत्वों की अपेक्षा करेंगे, शायद एक उद्धरण, एक तस्वीर, जानकारी का एक टुकड़ा। लेकिन सबसे बढ़कर समाचार संकलन सबसे कुशल और प्रभावी तरीके से सटीक जानकारी चाहते हैं।

- एक फोटो पत्रकार को दबाव में और चुनौतीपूर्ण वातावरण में काम करने में सक्षम होना चाहिए, और सर्वोत्तम संभव छवियों को कैप्चर करने के लिए समय और प्रयास करने के लिए तैयार रहना चाहिए। उसे यह भी पता होना चाहिए कि कम उपकरणों के साथ कठिन परिस्थितियों में कैसे काम करना है। फोटो पत्रकार में दृढ़ निश्चय और आत्मविश्वास की भावना का होना बहुत जरूरी है। यदि उसमें निडरता, संघर्षशीलता और धैर्यशीलता के गुण नहीं है तो वह दंगों, झड़पों, युद्धों और प्राकृतिक आपदाओं आदि को कैमरे में कैद नहीं कर पायेगा। ऐसी परिस्थितियों में फोटो पत्रकार की असली परीक्षा होती है, क्योंकि उसे खुद की सुरक्षा के साथ-साथ अपने कैमरे में कैद सबूतों को भी बचाना होता है।

- एक फोटो पत्रकार को हमेशा बदलते मीडिया परिदृश्य में नई तकनीकों और प्लेटफार्मों के अनुकूल होने में सक्षम होना चाहिए। इसमें उनके काम को ऑनलाइन संपादित करने और प्रकाशित करने में कुशल होना शामिल है। फोटो पत्रकार को समय का पाबंद होना चाहिए। उसे हमेशा अपनी सभी आवश्यकताओं के साथ पहले से ही तैयार रहना चाहिए ताकि अगर कोई घटना हो रही है तो वह उस कार्यक्रम में समय पर पहुंच सके।

- सरल शब्दों में कहें तो, एक फोटो जर्नलिस्ट की भूमिका फोटोग्राफी के माध्यम से एक कहानी को बताना है। इसका लक्ष्य केवल तस्वीरें लेना ही नहीं है, बल्कि सच्चाई को व्यक्त करने के प्रयास में छवियों को उच्चतम पत्रकारिता मानकों पर बनाए रखना भी है।

- कुल मिलाकर, एक फोटो जर्नलिस्ट को एक कुशल और रचनात्मक फोटोग्राफर होना चाहिए, जिसमें नैतिकता की प्रबल भावना हो और जिसमें नई तकनीकों को अपनाने की क्षमता हो। उसे प्रभावी ढंग से संवाद करने और विभिन्न प्रकार के वातावरण में दबाव में काम करने में भी सक्षम होना चाहिए।

- फोटो पत्रकारिता में सफल होने के लिए फोटो पत्रकार में कई तरह के गुण होने चाहिए। उसे तकनीकी कौशल में दक्ष होना चाहिए, जैसे- कैमरा सेटिंग्स और संरचना की समझ, साथ ही जल्दी और दबाव में काम करने की क्षमता। उन्हें जिज्ञासु, सहानुभूतिपूर्ण और विविध पृष्ठभूमि के लोगों से जुड़ने में सक्षम होना चाहिए। फोटो जर्नलिस्टों को पत्रकारिता नैतिकता और दुनिया के दस्तावेजीकरण के साथ आने वाली जिम्मेदारी की गहरी समझ होनी चाहिए।

- फोटो पत्रकार को फोटोग्राफी के तकनीकी पहलुओं में कुशल होना चाहिए, जिसमें कैमरा सेटिग्स, लाइटिंग, कंपोजिशन और इमेज एडिटिंग शामिल हैं। उन्हें विभिन्न प्रकार के कैमरों और लेंसों की भी समझ होनी चाहिए, साथ ही किसी स्थिति में सर्वोत्तम संभव छवियों को कैप्चर करने में समर्थ होना चाहिए।

- फोटो पत्रकार के लिए सहानुभूति एक महत्वपूर्ण गुण है, क्योंकि यह उन्हें उन लोगों से जुड़ने की अनुमति देता है जिनकी वे तस्वीरें खींच रहे है और उनके अनुभवों को समझते हैं। अपने विषयों के प्रति सहानुभूति विकसित करके,फोटो पत्रकार अधिक शक्तिशाली और भावनात्मक छवियों को कैप्चर करने में सक्षम होते हैं जो एक कहानी बताते हैं और परिवर्तन को प्रेरित करते हैं।

- फोटो पत्रकार को पे्रस संबंधी कानूनों की जानकारी होनी चाहिए। उसे सत्य, तथ्य और यथार्थ पर आधारित फोटो ही लेना चाहिए, नहीं तो वह अवमानना के अपराध में फंस सकता है। फोटो पत्रकार को प्रतिबंधित स्थलों, कापीराईट, अश्लील दृश्यों, कार्यालयी गोपनीयता आदि से संबंधित वस्तुओं का फोटोग्राफी नहीं करना चाहिए। जिन स्थानों पर फोटोग्राफी निषिद्ध है, या फोटोग्राफी निषेध की सूचना लगा है उन जगहों की फोटोग्राफी नहीं करनी चाहिए। यदि उसे पत्रकारिता की आचार संहिता का ज्ञान नहीं होगा तो राष्ट्र, समाज, विधायिका और न्यायपालिका का हनन होने की संभावना बढ़ जायेगी।

- पत्रकारिता के क्षेत्र में व्यावसायिकता का मतलब है समय-सीमा को पूरा करना, नियमित कार्य समय से पहले काम करने के लिए तैयार रहना और संपादकों की आलोचना को स्वीकार करने का साहस रखना। साथ ही आपको हमेशा अपनी सीमाओं से सीखने और अपने कौशल को बढ़ाने के लिए उत्सुक रहना चाहिए।

कुल मिलाकर एक फोटो जर्नलिस्ट को एक कुशल और रचनात्मक फोटोग्राफर होना चाहिए जिसमें नैतिकता की भावना प्रबल हो, नई तकनीकों को अपनाने की क्षमता हो साथ ही उसे प्रभावी ढंग से संवाद स्थापित करने और विभिन्न परिस्थितियों में दबाव में कार्य करने की क्षमता का होना भी आवश्यक है।

3.3 फोटो पत्रकार का उत्तरदायित्व

आप एक औसत समाचार और एक मनोरंजक समाचार के बीच कैसे अंतर करते हैं? प्रभावी लेखन कौशल बहुत फर्क ला सकता है। एक लेखक को शब्दों के साथ खेलना आना चाहिए और उसे त्रुटि-रहित, व्याकरणिक रूप से सही और संक्षिप्त लेख लिखने में सक्षम होना चाहिए जिसमें तथ्यात्मक जानकारी हो जो दर्शकों की रुचि को बढ़ाए। एक अच्छा पत्रकार होने के लिए, आपको वर्तमान घटनाओं के बारे में पता होना चाहिए। साथ ही, किसी कहानी को कवर करने और उस पर लिखने से पहले आपको कुछ पृष्ठभूमि ज्ञान होना चाहिए। किसी कहानी के महत्वपूर्ण विवरणों का पता लगाने के लिए शोध करने की आपकी क्षमता काफी मददगार होती है ।

एक पत्रकार किसी स्टोरी पर काम करते समय भावनाओं पर नहीं, बल्कि तथ्यों और सबूतों पर भरोसा करता है। एक आदर्श पत्रकार को सावधान रहना चाहिए और किसी स्थिति का आकलन करने के लिए मजबूत विश्लेषणात्मक कौशल होना चाहिए, चाहे स्रोतों की विश्वसनीयता की पुष्टि करना हो या किसी घटना का आकलन करना हो, एक पत्रकार को पता होना चाहिए कि किसी स्थिति को गंभीरता से कैसे तौला जाए। स्टोरी लिखने से पहले जानकारी को सत्यापित करने के लिए सही निर्णय लेना भी उतना ही महत्वपूर्ण है।

किसी भी अन्य क्षेत्र की तरह, एक आदर्श पत्रकार के लिए प्रभावी संचार कौशल आवश्यक हैं। यदि आप लोगों के साथ अपना व्यवहार जानते हैं, उन्हें समझ सकते हैं तो आप स्टोरी के लिए प्रासंगिक जानकारी निकाल सकते हैं। एक आदर्श पत्रकार को यह भी पता होना चाहिए कि यदि साक्षात्कार गलत हो जाता है तो स्थिति को कैसे नियंत्रित किया जाए। पत्रकारों को अंग्रेजी भाषा में कुशल होना चाहिए और एक ऐसी स्टोरी फाइल करने में पारंगत होना चाहिए जो लक्षित दर्शकों को आकर्षित करे।

- पत्रकारिता के पेशे में कड़ी मेहनत और दृढ़ता की आवश्यकता होती है। कभी-कभी आपको लीड पाने और अख़बारों में जगह पाने के लिए महीनों तक किसी स्टोरी का पीछा करना पड़ सकता है। ऐसे समय में, एक आदर्श पत्रकार को स्टोरी का अनुसरण करना नहीं छोड़ना चाहिए और अनुशासित रहना चाहिए। किसी भी पत्रकार का अंतिम उद्देश्य सत्य की खोज करना और सभी मामलों में न्याय की तलाश करना होना चाहिए, भले ही उसे अपने प्रयासों के लिए मान्यता मिली हो।

- फोटो पत्रकार एक फोटोग्राफर होने से पहले एक पत्रकार होता है, अर्थात उसे पत्रकारिता का विषय ज्ञान भी होना चाहिए। उसके ऊपर दोहरी जिम्मेदारी होती है। उसे घटनाओं पर पैनी नजर रखनी चाहिए तथा यह निर्णय करने में सक्षम होना चाहिए कि कौन सा समाचार फोटो की दृष्टि से महत्वपूर्ण हो सकता है। किशोर पारेख के अनुसार, फोटोग्राफी संवाद की अत्यंत प्रभावकारी भाषा है। फोटोग्राफर को अपने विषय की अच्छी जानकारी और अपने आस-पास के जीवन में गहरी रूचि होनी चाहिए। सामने जो दुनिया दिखती है उसे दिल और दिमाग तक महसूसा जाना चाहिए। सिकुड़ती दुनिया को फोटोग्राफी विस्तार दे सकती है। दुनिया को एक-दूसरे के नजदीक लेन में फोटोग्राफी अहम भूमिका निभा सकती है। मनुष्य की आँख बहुत कुछ देखती है। उस प्रकाश का, छाया व रंग का अलग-अलग ढंग से अर्थ लगाती है। अतः आँख बढ़िया दृश्य पर टिकनी चाहिए।

- फोटो पत्रकार को फोटोग्राफी और संपादन की सभी तकनीकों कौशल का ज्ञान होना चाहिए। उच्च गुणवत्ता वाली छवियों को कैप्चर करने के लिए एक फोटो जर्नलिस्ट को कैमरे और अन्य उपकरणों का उपयोग करने में कुशल होना चाहिए। इसमें विजुअल रूप से आकर्षक फोटोग्राफ़ बनाने के लिए विभिन्न लेंसों, फिल्टर्स, शटरगति, सेटिंग्स और प्रकाश तकनीकों का उपयोग करने की समझ शामिल है। फोटो पत्रकार के पास सभी कैमरे, लाइट और लेंस होने चाहिए और घटनाओं के अनुसार उनका उपयोग करने का ज्ञान होना चाहिए। यदि वह फोटो तकनीक की बारीकियों में दक्ष नहीं है तो अच्छा फोटो पत्रकार नहीं बन सकता। संक्षेप में उसे कैमरे के प्रचलित किस्मों, तकनीकी पहलुओं और कैमरे के संचालन की अच्छी जानकारी होनी चाहिए।

- एक फोटो पत्रकार के पास समाचार का निर्णय एवं योग्य घटनाओं के लिए गहरी नजर होनी चाहिए और एक कहानी बताने के लिए सबसे सम्मोहक छवियों की पहचान करने में सक्षम होना चाहिए। उसे पूरी घटना का विश्लेषण करने के लिए त्वरित होना चाहिए। उन्हें होने वाले सहज क्षणों का अनुमान लगाने और कैप्चर करने में भी सक्षम होना चाहिए। वर्तमान समय में फोटोग्राफी तकनीक काफी उन्नत हो चुकी है, फोटोग्राफी के लिए किसी विशेष तकनीकी प्रशिक्षण की जरुरत अब उतनी नहीं है। क्योंकि आटोमेटिक एक्सपोजर और आटो फोकस जैसे कैमरे उपलब्ध है। वहीं फोटो पत्रकार को विषय की समझ के साथ पूर्व ज्ञान और जीवनानुभव के आधार पर सही निर्णय ले पाता है कि कोई विषय समाचार है या नहीं।

- एक फोटो पत्रकार सृजनशील और रचनात्मक रूप से सोचने में सक्षम होना चाहिए। किसी विचार या घटना को विस्तृत रूप में सोचना ही अच्छे पत्रकार का गुण है। उसे शक्तिशाली छवियाँ बनाने के लिए संरचना, प्रकाश व्यवस्था और अन्य तत्वों का उपयोग करना आना चाहिए ताकि क्या घटित हो रहा है, की भावना को व्यक्त कर सके। यदि फोटो पत्रकार के पास रचनात्मक दृष्टि नहीं होगी तो वह फोटो पत्रकारिता करने में असमर्थ होगा। उसके पारा कल्पना की एक अनूठी भावना होनी चाहिए। क्योंकि विचारों में मौलिकता, नवीनता एवं प्रभावशीलता फोटो पत्रकार का महत्वपूर्ण गुण है।

- एक फोटो पत्रकार को मिलनसार और संवेदनशील होना चाहिए। उसे अपने सहयोगियों और ग्राहकों के साथ प्रभावी ढंग से संवाद करने में सक्षम होना चाहिए, साथ ही साथ अपनी छवियों के लिए स्पष्ट और संक्षिप्त कैप्शन लिखने में सक्षम होना चाहिए। उसे घटनाओं, कार्यक्रमों तथा परिवर्तनों की जानकारी होनी चाहिए। यदि फोटोग्राफर किसी जानी-पहचानी शख्सियत की तस्वीर क्लिक करने जा रहा है तो उसके पास उनके बारे में कुछ पृष्ठभूमि की जानकारी होनी चाहिए। ताकि वह उनकी पर्सनैलिटी के हिसाब से तस्वीरें क्लिक कर सकें। फोटो पत्रकार को अपना काम चुपचाप तरीके से करना चाहिए, क्योंकि प्रदर्शन करने से प्रायः वास्तविक स्थिति विकृति हो जाती है।

- एक फोटो पत्रकार को सांस्कृतिक विविधता के प्रति संवेदनशील होना चाहिए। उसे विभिन्न दर्शकों पर छवियों के संभावित प्रभाव से अवगत होना चाहिए। जहाँ एक फोटोग्राफर में फोटोग्राफ की गई वस्तु की जानकारी होना आवश्यक नहीं है, वहीं फोटो पत्रकार के लिए विषयवस्तु की जानकारी होना अति आवश्यक है। किसी भी घटना, उसके कारणों तथा उससे पड़ने वाले असर की जानकारी होना जरूरी है। उसे सदैव सतर्क, सजग और जिम्मेदार रहना चाहिए। फोटो पत्रकार को ऐसे चित्र नहीं लेने चाहिए जो सामाजिक तथा राजनितिक समस्याएं उत्पन्न करने का कारक बने। इससे समाज व राष्ट्र को हानि होने की संभावना रहती है। फोटो पत्रकार की दृष्टि सदैव मानवीय होनी चाहिए। देश व मानवता के प्रति जिम्मेदारी का वहन करते हुए अनेक चित्रों का मोह पत्रकार को छोड़ देना चाहिए।

- फोटो पत्रकार को प्रेस संबंधी कानूनों की जानकारी होनी चाहिए। उसे सत्य, तथ्य और यथार्थ पर आधारित फोटो ही लेना चाहिए, नहीं तो वह अवमानना के अपराध में फंस सकता है। फोटो पत्रकार को प्रतिबंधित स्थलों, कॉपीराइट, अश्लील दृश्यों, कार्यालयी गोपनीयता आदि से संबंधित बस्तुओं का फोटोग्राफी नहीं करना चाहिए। जिन स्थानों पर फोटोग्राफी निषिद्ध है, फोटोग्राफी निषेध की सूचना लगा है उसे उन जगहों की फोटोग्राफी नहीं करनी चाहिए। यदि उसे पत्रकारिता की आचार संहिता का ज्ञान नहीं होगा तो राष्ट्र, समाज, विधायिका और न्यायपालिका का हनन होने की संभावना बढ़ जाएगी।

- एक फोटो पत्रकार को सख्त नैतिक सिद्धांतों का पालन करना चाहिए, जैसे कि सटीकता, निष्पक्षता, विषयों की गोपनीयता और गरिमा के लिए सम्मान। उन्हें अपने विषयों और जनता पर उनकी छवियों के संभावित प्रभाव के बारे में भी पता होना चाहिए। उसे स्वभाव से सकारात्मक और कुछ स्थितियों के प्रति मानवीय होना चाहिए। फोटो पत्रकारिता में सच्चाई और ईमानदारी का महत्व सबसे अधिक है, क्योंकि पाठकों को उसमें सत्यता दिखती है। एक अच्छा फोटोग्राफर केवल बटन दबाने वाला नहीं होता, वह लाखों पाठकों और दर्शकों को सूचना देने वाला होता है। अतः उसे दूर-दृष्टि वाला होना चाहिए तथा सूझ-बूझ से काम लेना चाहिए। दौड़ में आगे बढ़ने के लिए इतनी प्रतिस्पर्धा के साथ, कभी-कभी पत्रकार पैसे और प्रसिद्धि के लिए अपनी नैतिकता को त्याग देते हैं। एक अच्छे पत्रकार को हमेशा नैतिक रूप से व्यवहार करना चाहिए और कभी भी अवैध उपायों का पालन नहीं करना चाहिए, भले ही इससे किसी स्टोरी के पीछे के रहस्यों को उजागर करने में मदद मिले। नया लेख लिखते समय सटीकता और ईमानदारी अधिक महत्वपूर्ण होनी चाहिए।

- एक फोटो पत्रकार के अंदर संवाददाता के भी सभी गुण मौजूद होना चाहिए क्योंकि वह फोटोग्राफर से पहले एक पत्रकार है। अपने नाम के अनुरूप उसमें दोनों के गुण होने चाहिए। एक पत्रकार की तरह उसमें भी संबंधित क्षेत्र का विस्तृत ज्ञान होना आवश्यक है, क्योंकि उसे अकेले कैमरे के साथ सारे तथ्य इकट्ठे करने होते

हैं। उसमें पत्रकारों की तरह समाचार सूंघने, खोजने की क्षमता होनी चाहिए। फोटो पत्रकार को आंदोलनकारियों, प्रदर्शनकारियों की स्वाभाविक मुद्रा का चित्र लेना चाहिए।

- नैतिकता फोटो पत्रकारिता का एक अनिवार्य हिस्सा है, क्योंकि फोटो पत्रकार की जिम्मेदारी है कि वे दुनिया को सही और सच्चाई के साथ दस्तावेज करें। इसका मतलब उस संदर्भ के बारे में ईमानदार होना है जिसकी छवि ली गई थी। उसे उन छवियों में हेरफेर या परिवर्तन से बचना चाहिए जो वास्तविकता को गलत तरीके से प्रस्तुत करता हो। फोटो पत्रकार को अक्सर तेज तर्रार और अप्रत्याशित वातावरण में काम करना पड़ता है, जहाँ घटनाएं जल्दी और बिना किसी चेतावनी के सामने आ सकती हैं। तेजी से कार्य करने से वे महत्वपूर्ण क्षणों को उसी रूप में कैप्चर कर पाते हैं जैसे वे घटित होते हैं, और समाचार ईवेंट की सामयिक और प्रासंगिक कवरेज प्रस्तुत करने में सक्षम होते हैं।

3.4 कर्तव्य और जिम्मेदारियां

फोटो पत्रकार दृश्य कथावाचन, इतिहास के क्षणों को कैद करने और समाज में महत्वपूर्ण मुद्दों और घटनाओं पर प्रकाश डालने के माध्यम से जनता को सूचित और शिक्षित करते हैं। जो एक फोटो पत्रकार के कर्तव्यों और जिम्मेदारियों में शामिल हैं।

- किसी कहानी को कवर करने के लिए निकलने से पहले, फोटो जर्नलिस्ट घटना के संदर्भ और महत्व को समझने के लिए शोध करते हैं और जानकारी इकट्ठा करते हैं। वे रिपोर्टरों या संपादकों के साथ मिलकर कहानी के मुख्य तत्वों को निर्धारित कर सकते हैं और इसे दृश्य रूप से कैप्चर करने के लिए अपने दृष्टिकोण की योजना बना सकते हैं।
- फ़ोटोग्राफ़ी फ़ोटो जर्नलिस्ट की प्राथमिक ज़िम्मेदारी ऐसी आकर्षक तस्वीरें लेना है, जो उस कहानी या घटना को प्रभावी ढंग से संप्रेषित करती हैं जिसे वे कवर कर रहे हैं। इसमें कैमरे और अन्य उपकरणों को संचालित करने के लिए तकनीकी कौशल का उपयोग करना, उपयुक्त कैमरा सेटिंग्स का चयन करना, शॉट्स को रचनात्मक रूप से फ्रेम करना और प्रभावशाली छवियों को कैप्चर करने के लिए प्रकाश और संरचना को समायोजित करना शामिल है।

- ऑन-साइट रिपोर्टिंग के सम्बन्ध में फोटो जर्नलिस्ट अक्सर रिपोर्टरों और पत्रकारों के साथ मिलकर समाचार घटनाओं, विरोध प्रदर्शनों, खेल आयोजनों या अन्य घटनाओं की ऑन-द-ग्राउंड कवरेज प्रदान करते हैं। वे विषयों का साक्षात्कार कर सकते हैं, उद्धरण एकत्र कर सकते हैं, और लिखित या मल्टीमीडिया सामग्री के साथ अपनी दृश्य कहानी को पूरक करने के लिए नोट्स ले सकते हैं।

- संपादन और प्रसंस्करण तस्वीरें खींचने के बाद, फोटो जर्नलिस्ट अपनी तस्वीरों की समीक्षा करते हैं और उन्हें संपादित करते हैं ताकि कहानी को प्रभावी ढंग से व्यक्त करने वाले सर्वश्रेष्ठ शॉट्स का चयन किया जा सके। वे प्रकाशन के लिए भेजने से पहले छवियों को क्रॉप करने, एक्सपोज़र समायोजित करने, रंग बढ़ाने और आवश्यकतानुसार उन्हें फिर से संशोधित करने के लिए सॉफ़्टवेयर टूल का उपयोग कर सकते हैं।

- फोटो जर्नलिस्ट को कहानियों को कवर करते समय नैतिक मानकों और दिशा-निर्देशों का पालन करना चाहिए, अपनी तस्वीरों में चित्रित व्यक्तियों की गरिमा और गोपनीयता का सम्मान करना चाहिए। वे अपने काम में निष्पक्षता और सटीकता बनाए रखने का प्रयास करते हुए पक्षपात या हेरफेर से बचते हैं, जो सच्चाई को विकृत कर सकते हैं या तथ्यों को गलत तरीके से प्रस्तुत कर सकते हैं।

- फोटो जर्नलिस्ट प्रकाशन या प्रसारण के लिए छवियों को वितरित करने के लिए सख्त समय-सीमा के तहत काम करते हैं। उन्हें अपने काम की गुणवत्ता और अखंडता को बनाए रखते हुए तेज़ी से और कुशलता से काम करने में सक्षम होना चाहिए, फोटो पत्रकार को अक्सर एक साथ कई असाइनमेंट को संभालना पड़ता है।

3.5 एक फोटो पत्रकार का कार्यस्थल

- फोटो जर्नलिस्ट का कार्यस्थल गतिशील, विविधतापूर्ण और अक्सर अप्रत्याशित होता है। पारंपरिक कार्यालय सेटिंग्स के विपरीत, फोटो जर्नलिस्ट खुद को कई तरह के वातावरण में काम करते हुए पा सकते हैं, शहर की व्यस्त सड़कों से लेकर दूरदराज के ग्रामीण इलाकों तक और बीच में सब कुछ। उनका कार्यस्थल वह जगह है जहाँ समाचार हो रहा है, चाहे वह कोई राजनीतिक रैली हो, कोई प्राकृतिक आपदा हो, कोई खेल आयोजन हो या कोई सांस्कृतिक उत्सव हो।

- फोटो जर्नलिस्ट को अलग-अलग परिस्थितियों में काम करने के लिए तैयार रहना चाहिए, जिसमें गरम मौसम, कम रोशनी और उच्च दबाव की स्थितियाँ शामिल हैं। फोटो पत्रकार को असाइनमेंट पर लंबे समय तक बिताना, एक आकर्षक छवि को कैप्चर करने के लिए सही क्षण की प्रतीक्षा करना, इसमें शारीरिक परिश्रम शामिल हो सकता है। जैसे कि दूरदराज के स्थानों पर पैदल चलना या शॉट लेने के लिए भीड़भाड़ और अराजक दृश्यों को नेविगेट करना।

- चुनौतियों के बावजूद, एक फोटो जर्नलिस्ट का कार्यस्थल इतिहास को देखने और उसका दस्तावेजीकरण करने का एक अनूठा अवसर प्रदान करता है। यह दुनिया की सबसे महत्वपूर्ण घटनाओं के लिए एक अग्रिम पंक्ति की सीट प्रदान करता है और फोटो जर्नलिस्टों को दुनिया भर के दर्शकों को सूचित करने, शिक्षित करने और प्रेरित करने के लिए अपनी रचनात्मकता और कहानी कहने के कौशल का उपयोग करने की अनुमति देता है। यह एक ऐसा करियर है जो जुनून, समर्पण और अप्रत्याशित को अपनाने की इच्छा की मांग करता है, लेकिन जो लोग पीछा करने के रोमांच और दृश्य कहानी कहने की शक्ति से पनपते हैं, उनके लिए यह अविश्वसनीय रूप से फायदेमंद हो सकता है।

3.6 सारांश

फोटो पत्रकार की भूमिका सामान्य पत्रकार से कठिन होती है। जहां सामान्य पत्रकार घटना की जानकारी द्वितीयक स्रोतों से प्राप्त कर भी रिपोर्ट बना सकता है, परन्तु फोटो पत्रकारिता में संभव नहीं है।

फोटो पत्रकार को घटना के केन्द्र में उपस्थित रहना पड़ता है जिससे वह घटनाक्रम की सजीव फोटो कवरेज कर सके क्योंकि घटना के बीत जाने के बाद फोटो पत्रकार के लिए कुछ भी बचा नहीं रहता है। जबकि सामान्य पत्रकार लोगों से पूंछकर या अन्य स्रोतों से जानकारी जुटाकर अपनी रिपोर्ट बना सकता है। इसलिए फोटो पत्रकारिता में सफलता अनुशासन तथा दृढ़ निश्चय से ही प्राप्त की जा सकती है। जरा-सा भी आलस्य या लापरवाही से फोटो पत्रकार घटना को कवर करने से चूक सकता है इसके लिये फोटो पत्रकार को पूर्णरूप से तैयारी करनी होती है। यह तैयारी घटना की जानकारी, घटनास्थल तक पहुंच तथा फोटोग्राफी के यंत्रों की कुशलता के साथ-साथ मानसिक रूप से भी फोटो पत्रकार को करनी पड़ती है।

3.7 शब्दावली

- **फोटो पत्रकार -** फोटो पत्रकार निडर, धैर्यशील, जुझारू व्यक्ति होता है। वह अपने कैमरे मे तस्वीरें कैद करता है। ऐसी तस्वीरें जो समाचार या कहानी बयां करती हों। फोटो पत्रकार के लिए समय का पाबन्द होना उसका मुख्य गुण हैं।

- **फोटो पत्रकारिता -** तस्वीरों के जरिए समाचार या कहानी कहने की कला को हम फोटो पत्रकारिता की श्रेणी में रख सकते हैं।

- **रिकॉर्डिंग डिवाइस -** हर पत्रकार को अपने पास नोटबुक या रिकार्डिंग डिवाइस रखनी चाहिए जिसमें वह तत्कालीन परिस्थितियों के अनुसार घटनास्थल की जरूरी बातों को नोट कर सके।

3.8 संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. डॉ. शर्मा, ठाकुर दत्त (2012), हिंदी पत्रकारिता और जनसंचार, वाणी प्रकाशन, दिल्ली।
2. दुबे, एस.के. (2006), पत्रकारिता के नए आयाम, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
3- https://www.reva.edu.in/blog/essential-qualities-of-a-good-journalist
4- https://www.careerexplorer.com/careers/photojournalist/
5- https://hindisarang.com/photojournalist/-qualities/
6. स्वअध्ययन सामग्री, उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय, पृष्ठ-174

3.9 अभ्यास हेतु प्रश्न

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. फोटो पत्रकार के आवश्यक गुण बताइये।
2. फोटो पत्रकार के महत्वपूर्ण उत्तरदायित्वों को लिखिए।
3. फोटो पत्रकार के लिए समय कितना जरूरी है, समझाइए।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. समाचार बोध क्या है?
2. फोटो पत्रकार किसे कहते हैं?
3. फोटो पत्रकार पर वातावरण का कितना प्रभाव पड़ता है, लिखिए।

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

1. नैतिकता फोटो पत्रकारिता का एक अनिवार्य हिस्सा है।

   (अ) हाँ (ब) नहीं

2. फोटो पत्रकार में संवाददाता का गुण भी होना चाहिए।

(अ) हाँ (ब) नहीं

3. फोटोग्राफर के पास होनी चाहिए।

(अ) पारखी नजर (ब) कलात्मक सोच (स) अ एवं ब दोनों

अति लघु उत्तरीय प्रश्नों के उत्तर

1.(अ), 2. (अ), 3. (स)

इकाई-4

फोटो पत्रकारिता : नैतिक मुद्दे एवं आचार संहिता

पाठ संरचना

4.0 उद्देश्य

4.1 प्रस्तावना

4.2 पत्रकारिता का समान्य परिचय

4.3 फोटो पत्रकारिता का इतिहास

4.4 पत्रकारिता का अर्थ

4.5 पत्रकारिता की परिभाषा

4.6 पत्रकारिता और पत्रकार

4.7 फोटो पत्रकारिता में नैतिकता

4.8 फोटो पत्रकारिता में आचार संहिता

4.9 सारांश

4.10 शब्दावली

4.11 सन्दर्भ ग्रंथ सूची

4.12 अभ्यास हेतु प्रश्न

4.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद :

1. पत्रकारिता के सामान्य परिचय को आप जानेंगे।

2. फोटो पत्रकारिता के इतिहास के विषय में आप जानेंगे।

3. पत्रकारिता का अर्थ एवं परिभाषा को आप समझ सकेंगे।

4. पत्रकारिता और पत्रकार के बीच के अंतर को आप समझ सकेंगे।

5. फोटो पत्रकारिता में नैतिकता के व्यवहार को आप समझेंगे।

6. फोटो पत्रकारिता में आचार संहिता की भूमिका को आप जानेंगे।

4.1 प्रस्तावना

सार्वजनिक प्राधिकरणों को यह नहीं सोचना चाहिए कि वे सूचना के स्वामी हैं। ऐसे प्राधिकरणों की प्रतिनिधित्व क्षमता मीडिया में बहुलवाद की गारंटी देने और उसे बढ़ाने के प्रयासों को कानूनी आधार प्रदान करती है और यह सुनिश्चित करती है कि अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और सूचना के अधिकार का प्रयोग करने और सेंसरशिप को रोकने के लिए आवश्यक परिस्थितियाँ बनाई जाएँ। मीडिया के माध्यम से पत्रकारिता द्वारा दी जाने वाली सूचना और संचार, नई प्रौद्योगिकियों के शक्तिशाली समर्थन के साथ, व्यक्ति और समाज के विकास के लिए निर्णायक महत्व रखता है। यह लोकतांत्रिक जीवन के लिए अपरिहार्य है, क्योंकि यदि लोकतंत्र को पूरी तरह से विकसित होना है तो उसे सार्वजनिक मामलों में नागरिकों की भागीदारी की गारंटी देनी होगी।

यह कहना पर्याप्त है कि यदि नागरिकों को सार्वजनिक मामलों पर वह जानकारी प्राप्त नहीं होती जिसकी उन्हें आवश्यकता है और जिसे मीडिया द्वारा प्रदान किया जाना चाहिए, तो ऐसी भागीदारी असंभव होगी। लोकतांत्रिक मूल्यों की रक्षा के मामले में किसी को भी तटस्थ नहीं रहना चाहिए। इस उद्देश्य से मीडिया को तनाव को रोकने में प्रमुख भूमिका निभानी चाहिए और संघर्ष वाले क्षेत्रों में विभिन्न समुदायों के बीच आपसी समझ, सहिष्णुता और विश्वास को प्रोत्साहित करना चाहिए, जैसा कि यूरोप की परिषद के महासचिव ने पूर्व यूगोस्लाविया में अपने विश्वास-निर्माण उपायों के साथ करने का लक्ष्य रखा है। इसलिए पत्रकारिता को सत्य, निष्पक्ष जानकारी या ईमानदार राय को बदलना नहीं चाहिए, या जनमत बनाने या उसे आकार देने के प्रयास में मीडिया के उद्देश्यों के लिए उनका शोषण नहीं करना चाहिए, क्योंकि इसकी वैधता लोकतांत्रिक मूल्यों के सम्मान के हिस्से के रूप में नागरिकों के सूचना के मौलिक अधिकार के लिए प्रभावी सम्मान पर टिकी हुई है।

4.2 पत्रकारिता का सामान्य परिचय

मानव जीवन में नैतिकता अपने महत्वपूर्ण स्थान और उच्च आदर्शों के पालन के लिए हमेशा अपनी पहचान बना रही है। आज पत्रकारिता शब्द हमारे लिए कोई नया शब्द नहीं है। सुबह होते ही हमें अखबार की जरूरत होती है, फिर सारे दिन रेडियो, दूरदर्शन, इंटरनेट एवं सोशल मीडिया के माध्यम से समाचार प्राप्त करते रहते हैं। साथ ही रेडियो, टीवी और सोशल मीडिया पर सुबह से लेकर रात तक हमारे मनोरंजन के अतिरिक्त अन्य कई संपर्कों से परिचित होते हैं। इसके साथ ही विज्ञापन ने हमें उपभेक्ता संस्कृति से जोड़ा है। कुल मिलाकर पत्रकारिता के विभिन्न माध्यम जैसे समाचार पत्र, पत्रिकाएं, रेडियो, टेलीविजन, इंटरनेट, सोशल मीडिया ने व्यक्ति से लेकर समूह तक और देश से लेकर सारे विश्व को एकसूत्र में बांध दिया है। इसके परिणाम स्वरूप पत्रिका आज राष्ट्रीय स्तर पर विचार, अर्थ, राजनीति और यहां तक कि संस्कृति को भी प्रभावित करने में सक्षम हो गई है। तो आइए इस शब्द का अर्थ, परिभाषा और क्षेत्र के बारे में विस्तार से जानें।

4.3 फोटो पत्रकारिता का इतिहास

अपनी खोज के दो वर्ष के भीतर ही भारत में फोटोग्राफी का प्रवेश हो गया। ब्रिटिश शासनकाल में ब्रिटिश फोटोग्राफरों द्वारा देश, इसकी दृश्यावली तथा स्मारकों का फोटोग्राफ लेना शुरू हुआ। जब सन् 1857 में पहला स्वतंत्राता संघर्ष आरम्भ हुआ, यह दुनिया के पहले युद्ध फोटोग्राफी में से एक था स्वतंत्राता आंदोलन के समय बहुत सारे राजनैतिक घटनाक्रम भारत में मूर्त रूप ले रहे थे। इन सबने फोटो पत्राकारों को फोटो लेने के बहुत से मौके उपलब्ध कराए। राजा दीनदयाल भारत के आरम्भिक प्रसिद्ध फोटो पत्राकारों में से एक थे। वह भारत में छठे हैदराबाद निजाम के दरबार के फोटोग्राफर थे। जैसा कि वह एकमात्र देशी फोटोग्राफर थे, उन्होंने ब्रिटिश भारत का महत्वपूर्ण दस्तावेज अपने पीछे छोड़ा। फोटो जर्नलिज्म वह पत्रकारिता है जिसमें समाचार बताने के लिए छवियों का उपयोग किया जाता है। यह आमतौर पर केवल स्थिर छवियों को संदर्भित करता है, लेकिन प्रसारण पत्रकारिता में उपयोग किए जाने वाले वीडियो को भी संदर्भित कर सकता है।

उस समय सक्रिय प्रसिद्ध फोटो पत्रकार सुनील जानाह भी थे। एक राजनैतिक कार्यकर्ता तथा पत्राकार के रूप में अपने समाचार पत्रों के लिए लिखते समय सुनील जानाह ने भारत में महत्वपूर्ण घटनाओं के चित्र खींचे तथा ब्रिटिश राज से भारत की स्वतंत्राता के परिवर्तन के महत्वपूर्ण दस्तावेज तैयार किए। उनके भारत विभाजन, देश के लोग; विशेषकर जनजातीय लोग तथा उद्योग एवं मंदिर संरचनाओं के फोटोग्राफ काफी प्रसिद्ध हैं। सुनील जानाह का नेहरू एवं गांधी का चित्र हमें अब हर जगह दिखाई देता है।

यहाँ एक और नाम है जिसका विशेष उल्लेख आवश्यक है क्योंकि पुरुष वर्चस्व के व्यवसाय में वह पहली महिला फोटो पत्रकार थीं, होमाई व्यारावाला। उनका काम पहली बार सन् 1938 में बॉम्बे क्रॉनिकल में प्रकाशित हुआ तथा बाद में उस समय के अन्य प्रमुख प्रकाशनों में। उन्होंने इलस्ट्रेटेड वीकली ऑफ इण्डिया के लिए भी काम किया तथा द्वितीय विश्वयुद्ध के समय भारत में युद्धकालीन गतिविधियों के हर पहलू को कैमरे में कैद किया। उनका स्वतंत्राता आंदोलन का दस्तावेजीकरण महत्वपूर्ण है। वह सन् 1970 तक स्वतंत्र फोटोग्राफर के रूप में सक्रिय रहीं तथा उन्हें सभी फोटो पत्रकारो में ऊँचा सम्मान हासिल रहा।

इसके अतिरिक्त कुछ अन्तरराष्ट्रीय विदेशी फोटोग्राफर भी थे जिन्हें भारत में फोटोग्राफी करना पसन्द था। इनमें से हेनरी कार्टियर ब्रेसन का नाम प्रसिद्ध है। हेनरी कार्टियर ब्रेसन एक फ्रांसिसी थे तथा उनका नाम दुनिया के सर्वश्रेष्ठ फोटो पत्राकारों में शुमार किया जाता है। वह 1940 में भारत की यात्रा पर आए तथा बाद के वर्षों में उनकावापस आना जारी रहा। उनका सबसे महत्वपूर्ण फोटोग्राफ है पंडित जवाहरलाल नेहरु द्वारा गाँधी जी की मृत्यु की घोषणा। उनकी पुस्तक 'हेनरी कार्टियर ब्रेसन इन इंडिया' काफी प्रसिद्ध है।

स्वतंत्रता पश्चात के फोटो पत्राकारों में रघु राय का नाम सर्वाधिक प्रसिद्ध है। सन् 1960 में रघु राय ने दिल्ली से अपने काम की शुरुआत की तथा महत्वपूर्ण राष्ट्रीय समाचारपत्रों जैसे हिन्दुस्तान टाइम्स तथा 'स्टेट्समैन' के लिए काम किया। बाद में वह 'इंडिया टुडे' के प्रधान फोटोग्राफर हुए तथा वहाँ लम्बे समय तक काम किया। श्री राय स्वतंत्र फोटोग्राफर के रूप में पूरे विश्व में उनके नाम का सम्मान है। उनके इन्दिरा गाँधी तथा मदर टेरेसा जैसे प्रसिद्ध व्यक्तित्वों के फोटोग्राफ काफी प्रसिद्ध हैं। 20वीं सदी के उत्तरार्ध की महत्वपूर्ण घटनाओं जैसे भोपाल गैस त्रासदी, बांग्लादेश युद्ध आदि को छायांकित करने के अतिरिक्त उन्होंने विविध विषयों जैसे दिल्ली, ताजमहल, सिक्ख, बनारस आदि पर पुस्तकें भी प्रस्तुत की हैं। उनके आरम्भिक चित्र श्वेत-श्याम हैं पर बाद में उन्होंने रंगीन फोटोग्राफी को अपनाया। उन सबमें सौन्दर्यपूर्ण गुणवत्ता है। प्रशान्त पंजियर एक अन्य सफल फोटो पत्राकार हैं। वे कोलकाता में जन्मे तथा स्वयं प्रशिक्षित फोटोग्राफर हैं जिन्होंने दिल्ली में विभिन्न पत्रिकाओं के लिए काम किया है। उनका सबसे सफल जुड़ाव 'आउटलुक' पत्रिका के प्रधान फोटोग्राफर तथा संयुक्त संपादक के रूप में रहा। वह इस पत्रिका के संस्थापक सदस्य रहे हैं तथा उन्होने इसके लिए लोगों में लोकप्रिय अपील की है तथा 'आउटलुक' आज भारत में अग्रणी पत्रिका के रूप में प्रतिष्ठित है। ऊपर वर्णित नाम मात्र कुछ प्रसिद्ध फोटो पत्रकारों के नाम हैं। इनके अतिरिक्त और भी बहुत सारे लोग हैं जिन्होंने दुनिया भर में प्रिंट मीडिया में अपने नाम से फोटो पत्रकारिता के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। मुद्रण प्रौद्योगिकी में सुधार के साथ ही समाचार पत्रों ने अधिक तथा रंगीन चित्रों का प्रयोग आरम्भ कर दिया है। इससे फोटो पत्राकारिता के क्षेत्र में प्रशिक्षित लोगों की माँग बढ़ी है।

4.4 पत्रकारिता का अर्थ

अपने रोजमर्रा के जीवन की स्थिति के बारे में थोड़ा गौर कीजिए। दो लोग आसपास रहते हैं और कभी बाजार में, कभी राह चलते और कभी एक-दूसरे के घर पर रोज मिलते हैं। आपस में जब वार्तालाप करते हैं उनका पहला सवाल होता है, क्या हालचाल है? या कैसे हैं? या क्या समाचार है? रोजमर्रा के ऐसे सहज प्रश्नों में कोई खास बात नहीं दिखाई देती है लेकिन इस पर थोड़ा विचार किया जाए तो पता चलता है कि इस प्रश्न में एक इच्छा या जिज्ञासा दिखाई देगी और वह है नया और ताजा समाचार जानने की। वे दोनों पिछले कुछ घंटे या कल रात से आज के बीच में आए बदलाव या हाल की जानकारी प्राप्त करना चाहते हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि हम अपने मित्रों, पड़ोसियों, रिश्तेदारों और सहकर्मियों से हमेशा उनकी आसपास की घटनाओं के बारे में जानना चाहते हैं। मनुष्य का सहज प्रवृत्ति है कि वह अपने आसपास की चीजों, घटनाओं और लोगों के बारे में ताजा जानकारी रखना चाहता है। उसमें जिज्ञासा का भाव प्रबल होता है। यही जिज्ञासा समाचार और व्यापक अर्थ में पत्रकारिता का मूल तत्व है। जिज्ञासा नहीं रहेगी तो समाचार की जरूरत नहीं रहेगी। पत्रकारिता का विकास इसी जिज्ञासा को शांत करने के प्रयास के रूप में हुआ है जो आज भी अपने मूल सिद्धांत के आधार पर काम करती आ रही है।

4.5 पत्रकारिता की परिभाषा

1. डॉ. अर्जुन तिवारी के अनुसार - ज्ञान और विचारों को समीक्षात्मक टिप्पणियों के साथ शब्द, ध्वनि तथा चित्रों के माध्यम से जन-जन तक पहुँचाना ही पत्रकारिता है। यह वह विधा है जिसमें सभी प्रकार के पत्रकारों के कार्यों, कर्तव्यों और लक्ष्यों का विवेचन होते है। पत्रकारिता समय के साथ साथ समाज की दिग्दर्शिका और नियामिका है।

2. रामकृष्ण रघुनाथ खाडिलकर के अनुसार- ज्ञान और विचार शब्दों तथा चित्रों के रूप में दूसरे तक पहुंचाना ही पत्रकला है। छपने वाले लेख-समाचार तैयार करना ही पत्रकारी नहीं है। आकर्षक शीर्षक देना, पृष्ठ का आकर्षक बनाव-ठनाव, जल्दी से जल्दी समाचार देने का उतावलापन, देश-विदेश के प्रमुख उद्योग-धन्धों के विज्ञापन प्राप्त करने की चतुराई, सुन्दर छपाई और पाठक के हाथ में सबसे जल्दी पत्र पहुंचा देने की उत्कंठा, ये सब पत्रकार कला के अंतर्गत रखे गए।

3. डॉ. बद्रीनाथ कपूर के अनुसार- पत्रकारिता पत्र-पत्रिकाओं के लिए समाचार लेख आदि एकत्रित करने, सम्पादित करने, प्रकाशन आदेश देने का कार्य है।

4. डॉ. शंकरदयाल शर्मा के अनुसार- पत्रकारिता एक पेशा नहीं है बल्कि यह तो जनता की सेवा का माध्यम है। पत्रकारों को केवल घटनाओं का विवरण ही पेश नहीं करना चाहिए, आम जनता के सामने उसका विश्लेषण भी करना चाहिए। पत्रकारों पर लोकतांत्रिक परम्पराओं की रक्षा करने और शांति एवं भाईचारा बनाए रखने की भी जिम्मेदारी आती है।

4.6 पत्रकारिता और पत्रकार

अब तक हमने जान लिया है कि पत्रकारिता एक ऐसी कला है जिसे शब्द और चित्र के माध्यम से पेश किया जाता है। इसे आकार देनेवाला पत्रकार होता है। ऊपर से देखने से यह एक आसान काम लगता है लेकिन यह उतना आसान नहीं होता है। उस पर कई तरह के दबाव हो सकते हैं। अपनी पूरी स्वतंत्रता के बावजदू उस पर सामाजिक और नैतिक मूल्यों की जवाबदेही होती है। लोकतंत्र में पत्रकारिता को चौथा स्तंभ माना गया है। इस हिसाब से न्यायपालिका, कार्यपालिका, विधायिका जैसे तीन स्तंभ को बांधे रखने के लिए पत्रकारिता एक कड़ी के रूप में काम करती है। इस कारण पत्रकार की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। उसके सामने कई चुनौतियाँ होती है और दबाव भी। सामाजिक सरोकारों को व्यवस्था की दहलीज तक पहुँचाने और प्रशासन की जनहितकारी नीतियों तथा योजनाओं को समाज के सबसे निचले तबके तक ले जाने के दायित्व का निर्वहन करना पत्रकार और पत्रकारिता का कार्य है।

एक समय था भारत में कुछ लोग प्रतिष्ठित संस्था एवं व्यवस्था को समाज के विकास मे सहायक नहीं समझते थे, यह लोग अपने नए विचारों के प्रचार प्रसार के लिए पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन करते थे यह उनकी प्रति एवं प्रवृत्ति को लोगों तक पहुंचाने का माध्यम बना था। तकनीकी विकास एवं उद्योग एवं वाणिज्य के प्रसार के कारण एक दिन यह एक कमाऊ व्यवसाय में परिवर्तित हो जाएगा की बात उन्होने सपनों में भी नहीं सोचा था। समाज के कल्याण, नए विचार के प्रचार-प्रसार के लिए पत्रकारिता को समर्पित माना जाता था। यह एक दिन पेशा में बदला जाएगा और इसके लिए डिग्री, डिप्लोमा के पैमाने पर योग्यता एवं दक्षता मापा जाएगा यह कोई सोचा भी नहीं होगा। लोकतंत्र व्यवस्था में पत्रकारिता भाव की अभिव्यक्ति के लिए आवश्यक माध्यम के रूप में स्वीकृत है। इसलिए पत्रकारिता या मीडिया को राष्ट्र का चौथा स्तंभ कहा जा रहा है। लेकिन खुली हवा के अभाव में इसका विकास भी अवरूद्ध हो सकता है। आजादी के बाद लोकतांत्रिक राष्ट्र के रूप में भारत आगे बढ़ने के कारण समाचार पत्र-पत्रिकाओं के प्रकाशन, प्रसारण में वृद्धि हुई है। इसका सामाजिक सरोकार होने के बावजदू यह एक उद्योग के रूप में परिवर्तित हो चुकी है। पत्रकारिता ने एक विकसित पेशा के रूप में शिक्षित युवाओं को आकर्षित किया है। देश में जिन क्षेत्रों में प्रवृत्ति एवं वृत्ति यानी पेशा में मिलान एवं जुड़ाव की आवश्यकता है उनमें से पत्रकारिता एक है।

पत्रकारिता के लिए किताबी ज्ञान की तुलना में कुशल साधना की जरत अधिक होती है। क्योंकि यह एक कला है। साधना के बल पर ही कुशलता हासिल किया जा सकता है। किताब पढ़कर डिग्री तो हासिल की जा सकती है लेकिन कुशलता के लिए अनुभव की जरूरत होती है। इसके बावजूद चूंकि यह अब पेशे में बदल चुकी है इसलिए योग्यता का पैमाना विचारणीय है। उस प्राथमिक योग्यता एवं सामान्य ज्ञान के लिए इस विषय मे कुछ सामान्य नीति नियम जानना और समझना अत्यंत जरूरी है। एक बात और अतीत में जितने भी पत्रकारों ने श्रेष्ठ पत्रकार के रूप में ख्याति प्राप्त की है उन्होंने किसी विश्वविद्यालय से पत्रकारिता विषय में कोई डिग्री या डिप्लोमा हासिल नहीं किया है। उन्होंने प्रवृत्ति के आधार पर साधना के बल पर पत्रकारिता के क्षेत्र में शीर्ष में पहुंचे हैं। कक्षाओं में कुछ व्याख्यान सुनकर या पाठ्यपुस्तक पढ़ने से पत्रकार के रूप में जीवन आरंभ करने के लिए यह सहायक हो सकता है।

4.7 फोटो पत्रकारिता में नैतिकता

चूंकि फोटो पत्रकारिता रिपोर्टिंग का एक रूप है, इसलिए नैतिकता केंद्रीय है। तथ्यात्मक रूप से सटीक जानकारी प्रदान करने की एक सचेत आवश्यकता है, और फोटो पत्रकारों को बिना किसी बदलाव के वस्तुनिष्ठ सत्य को व्यक्त करने का प्रयास करना चाहिए जिससे छवि के पीछे का अर्थ बदल जाए। हालांकि एक पेशेवर व्यक्ति का मानना है कि कैमरा कभी झूठ नहीं बोलता लेकिन आम तौर पर फोटो जर्नलिज्म निष्पक्षता के लिए उसी नैतिक दृष्टिकोण के भीतर काम करता है जिसे अन्य पत्रकार लागू करते हैं। क्या, कब और कैसे शूट करना है, कैसे फ्रेम करना है और कैसे एडिट करना है, ये सभी बातें इस पेशे में लगातार विचारणीय हैं। और ऐसा इसलिए है क्योंकि पेशेवर के तौर पर फोटो जर्नलिस्टों पर अपने समाज के प्रति कुछ दायित्व होते हैं। अपनी प्रस्तावना में, यू.एस. नेशनल प्रेस फ़ोटोग्राफ़र्स एसोसिएशन (NPFA) कहता है कि फोटो जर्नलिस्ट जनता के ट्रस्टी के रूप में काम करते हैं। हमारी प्राथमिक भूमिका महत्वपूर्ण घटनाओं और हमारी आम दुनिया में विभिन्न दृष्टिकोणों पर विज़ुअल रूप से रिपोर्ट करना है। हमारा प्राथमिक लक्ष्य विषय का विश्वसनीय और व्यापक चित्रण करना है। फोटो जर्नलिस्ट के तौर पर, हमारी ज़िम्मेदारी है कि हम समाज का दस्तावेजीकरण करें और छवियों के माध्यम से इसके इतिहास को संरक्षित करें। यह फोटो जर्नलिज्म नैतिकता की एक मुख्य बात है।

प्रासंगिक कानूनी मानदंडों में निर्धारित कानूनी अधिकारों और दायित्वों के अतिरिक्त, मीडिया की नागरिकों और समाज के प्रति एक नैतिक जिम्मेदारी भी है, जिसे वर्तमान समय में रेखांकित किया जाना चाहिए, जब सूचना और संचार नागरिकों के व्यक्तिगत दृष्टिकोण के निर्माण और समाज और लोकतांत्रिक जीवन के विकास में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

पत्रकारिता के किसी भी नैतिक विचार का मूल सिद्धांत यह है कि समाचार और राय के बीच एक स्पष्ट अंतर किया जाना चाहिए, जिससे उन्हें भ्रमित करना असंभव हो। समाचार तथ्यों और आंकड़ों के बारे में जानकारी है, जबकि राय मीडिया कंपनियों, प्रकाशकों या पत्रकारों की ओर से विचारों, विश्वासों या मूल्य निर्णयों को व्यक्त करती है।

समाचार प्रसारण सत्यता पर आधारित होना चाहिए, सत्यापन और प्रमाण के उचित साधनों द्वारा सुनिश्चित किया जाना चाहिए, तथा प्रस्तुति, विवरण और कथन में निष्पक्षता होनी चाहिए। अफ़वाह को समाचार के साथ भ्रमित नहीं किया

जाना चाहिए। समाचार की सुर्खियों और सारांशों में प्रस्तुत तथ्यों और डेटा के सार को यथासंभव करीब से प्रतिबिंबित करना चाहिए।

विचारों की अभिव्यक्ति में सामान्य विचारों पर विचार या टिप्पणियाँ या वास्तविक घटनाओं से संबंधित समाचारों पर टिप्पणियाँ शामिल हो सकती हैं। हालाँकि राय अनिवार्य रूप से व्यक्तिपरक होती हैं और इसलिए उन्हें सत्यता की कसौटी पर नहीं कसा जा सकता और न ही कसा जाना चाहिए, हमें यह सुनिश्चित करना चाहिए कि राय ईमानदारी और नैतिक रूप से व्यक्त की जाए।

सूचना एक मौलिक अधिकार है जिसे यूरोपीय आयोग और मानवाधिकार न्यायालय के मानवाधिकारों पर यूरोपीय सम्मेलन के अनुच्छेद 10 से संबंधित मामले के कानून द्वारा उजागर किया गया है और ट्रांसफ्रंटियर टेलीविजन पर यूरोपीय सम्मेलन के अनुच्छेद 9 के तहत मान्यता प्राप्त है, साथ ही सभी लोकतांत्रिक संविधानों में भी। अधिकार का स्वामी नागरिक है, जिसके पास यह मांग करने का संबंधित अधिकार भी है कि पत्रकारों द्वारा दी गई जानकारी समाचार के मामले में सच्चाई से और राय के मामले में ईमानदारी से सार्वजनिक अधिकारियों या निजी क्षेत्र के बाहरी हस्तक्षेप के बिना दी जाए।पत्रकारिता से निपटने के दौरान यह ध्यान में रखना चाहिए कि यह मीडिया पर निर्भर करता है, जो एक कारपोरेट संरचना का हिस्सा है जिसके भीतर प्रकाशकों, मालिकों और पत्रकारों के बीच अंतर किया जाना चाहिए। इस उद्देश्य के लिए, मीडिया की स्वतंत्रता की रक्षा के अलावा, मीडिया के भीतर की स्वतंत्रता की भी रक्षा की जानी चाहिए और आंतरिक दबावों से बचाव किया जाना चाहिए।

समाचार संगठन के अंदर, प्रकाशकों और पत्रकारों को सह-अस्तित्व में रहना चाहिए, यह ध्यान में रखते हुए कि प्रकाशकों और मालिकों की वैचारिक प्रवृत्तियों के लिए वैध सम्मान सत्य समाचार रिपोर्टिंग और नैतिक राय की पूर्ण आवश्यकताओं द्वारा सीमित है। यदि हमें नागरिकों के सूचना के मौलिक अधिकार का सम्मान करना है तो यह आवश्यक है।

हमें पत्रकारों की अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता की सुरक्षा को सुदृढ़ करना चाहिए। इस मामले पर राष्ट्रीय प्रावधानों को सुसंगत बनाना चाहिए ताकि उन्हें लोकतांत्रिक मूल्यों के व्यापक संदर्भ में लागू किया जा सके।

यह मीडिया और पत्रकारिता को प्राधिकारियों या प्रति-प्राधिकारियों में रूपांतरित करने के समान होगा, भले ही वे नागरिकों के प्रतिनिधि न हों या सार्वजनिक प्राधिकारियों के समान लोकतांत्रिक नियंत्रण के अधीन न हों, और उनके पास संबंधित सांस्कृतिक या शैक्षिक संस्थानों का विशेषज्ञ ज्ञान न हो।

व्यक्तियों के निजता के अधिकार का सम्मान किया जाना चाहिए। सार्वजनिक जीवन में पद धारण करने वाले व्यक्ति अपनी निजता की सुरक्षा के हकदार हैं, सिवाय उन मामलों के जहां उनके निजी जीवन का उनके सार्वजनिक जीवन पर

प्रभाव पड़ सकता है। यह तथ्य कि कोई व्यक्ति सार्वजनिक पद पर है, उसे अपनी निजता के सम्मान के अधिकार से वंचित नहीं करता है।

संबंधित व्यक्तियों के अनुरोध पर, समाचार मीडिया को अपने द्वारा दी गई किसी भी झूठी या त्रुटिपूर्ण खबर या राय को स्वचालित रूप से और शीघ्रता से तथा सभी प्रासंगिक जानकारी प्रदान करके सही करना चाहिए। राष्ट्रीय कानून में उचित प्रतिबंधों और, जहां लागू हो, मुआवज़े का प्रावधान होना चाहिए। समाचार पत्र व्यवसाय में प्रकाशक, मालिक और पत्रकार एक साथ रहना चाहिए। इस उद्देश्य से, पत्रकारों और मीडिया के भीतर प्रकाशकों और मालिकों के बीच व्यावसायिक संबंधों को विनियमित करने के लिए संपादकीय कर्मचारियों के लिए नियम बनाए जाने चाहिए, जो श्रम संबंधों की सामान्य आवश्यकताओं से अलग हों। ऐसे नियमों में संपादकीय बोर्ड की स्थापना का प्रावधान हो सकता है।

समाज में कभी-कभी आतंकवाद, अल्पसंख्यकों के खिलाफ भेदभाव, विदेशी द्वेष या युद्ध जैसे कारकों के दबाव में तनाव और संघर्ष की स्थिति पैदा हो जाती है। ऐसी परिस्थितियों में मीडिया का नैतिक दायित्व है कि वह लोकतांत्रिक मूल्यों की रक्षा करे मानवीय गरिमा का सम्मान, शांतिपूर्ण, सहिष्णु तरीकों से समस्याओं का समाधान, और परिणामस्वप हिंसा और घृणा और टकराव की भाषा का विरोध करे तथा संस्कृति, लिंग या धर्म के आधार पर सभी भेदभाव को अस्वीकार करे।

फोटो पत्रकारिता में नैतिकता! हाँ, वे आपस में जुड़े हुए हैं। फोटो पत्रकारिता एक ऐसा पेशा है जिसमें नियमों और विनियमों का पालन आवश्यक है। एक लेखक या संपादक की तरह एक फोटो पत्रकार को जनता की विश्वसनीयता बढ़ाने के लिए कुछ नैतिकताओं का पालन करना पड़ता है। नियमों का पालन करने से उसकी तस्वीरें प्रामाणिक होंगी और दर्शकों को किसी घटना की सत्यता के बारे में आश्वस्त किया जा सकेगा।

फोटो जर्नलिज्म का उद्देश्य सड़क या किसी कार्यक्रम में वास्तविक माहौल और परिस्थिति को दर्शाने के लिए कैमरे में कैद करना है। फोटो जर्नलिज्म में, आपको शॉट लेने के बाद किसी खास दृश्य को बदलने या उसे अस्वाभाविक रूप से बदलने की अनुमति नहीं है। यदि आप ऐसा करते हैं, तो यह फोटो जर्नलिज्म की नैतिकता का उल्लंघन होगा। आम तौर पर, एक फोटो जर्नलिस्ट का दृष्टिकोण अलग-अलग घटनाओं और लोगों को अदृश्य रहते हुए कैंडिड शॉट लेने का होना चाहिए।

तस्वीरें लेने से पहले लोगों से अनुमति या सहमति नहीं लेनी चाहिए, क्योंकि इससे परिस्थिति की वास्तविकता खराब हो जाएगी। हालाँकि वह लोगों को पहले से सूचित कर सकता है, लेकिन सच्चाई यह है कि लोग सहज रूप से फोटोग्राफी के लिए तैयार हो जाते हैं जब उन्हें पता चलता है कि उनकी तस्वीर खींची जाएगी।

फोटो जर्नलिस्ट अपने सिद्धांतों में दृढ़ हो सकता है लेकिन अलग-अलग संस्कृतियों और देशों के कारण, उसके सभी सिद्धांत सभी को स्वीकार नहीं हो सकते हैं। उदाहरण के लिए, एक फोटो जर्नलिस्ट फोटो खींचने की अनुमति प्राप्त करने के लिए लोगों से संपर्क कर सकता है लेकिन वह जिस शैली का पालन करता है वह अलग-अलग स्थानों पर अलग-अलग होगी। एक फोटो जर्नलिस्ट के रूप में आपको लोगों की तस्वीरें लेने से पहले कुछ नैतिक बिंदुओं पर विचार करना चाहिए। इनमें सम्मान, गरिमा और जिम्मेदारी शामिल हैं।

उन लोगों के सम्मान और गरिमा पर विचार करना होगा जिनकी आप तस्वीरें लेना चाहते हैं। आपको फोटो के विषय और दर्शकों के प्रति अपनी जिम्मेदारी के बारे में सोचना होगा। आपकी मुख्य भूमिका दुनिया की विभिन्न घटनाओं और घटनाओं को ईमानदारी से रिपोर्ट करना है। आपको विषयों को इस तरह से चित्रित करना होगा कि यह दर्शकों के बीच विश्वसनीयता पैदा करे।

समाज का दस्तावेजीकरण करना और उसके इतिहास को दृश्यात्मक रूप से संरक्षित करना आपकी जिम्मेदारी है। फोटोग्राफी की शक्ति इतनी महान है कि आप इसके माध्यम से सत्य को चित्रित कर सकते हैं और झूठ, अपराध और अन्य बुरे कामों को उजागर कर सकते हैं। आप इस दृश्य शक्ति के साथ वैश्विक स्तर पर लोगों को प्रेरित और जोड़ भी सकते हैं।

4.8 फोटो पत्रकारिता में आचार संहिता

फोटो पत्रकारिता की आचार संहिता में व्यक्त भावना और उच्च मानकों को बनाए रखने के लिए उदाहरण और प्रभाव द्वारा प्रयास किया जा सकता है। जब ऐसी परिस्थितियों का सामना करना पड़े जिसमें उचित कार्रवाई स्पष्ट न हो, तो उन लोगों की सलाह लें जो पेशे के उच्चतम मानकों का प्रदर्शन करते हैं। फोटो जर्नलिस्टों को अपने शिल्प और इसे निर्देशित करने वाली नैतिकता का निरंतर अध्ययन करना चाहिए।

हर विज़ुअल पत्रकार और विज़ुअल न्यूज़ प्रोडक्शन के लिए ज़िम्मेदार अन्य लोगों को अपने रोज़ाना के काम में आचार संहिता का पालन करना चाहिए। आइए आपकी सुविधा के लिए इस आचार संहिता पर प्रकाश डालते हैं।

1. विषयों का चित्रण करते समय सटीक और समावेशी रहें।
2. मंचित फोटो शूट करते समय और विषयों को रिकॉर्ड करते समय खुद को पूर्ण और कोमल संदर्भ में रखें।
3. काम में किसी की पक्षपातपूर्णता को प्रदर्शित करने से बचने का प्रयास करें। लोगों के साथ सम्मान और गरिमा के साथ पेश आएं।

4. अपराध और त्रासदी के पीड़ितों को विशेष उपचार प्रदान करें। साथ ही, कमज़ोर लोगों पर विशेष ध्यान दें।

5. किसी क्षेत्र में तभी प्रवेश करें जब लोगों को आपसे मिलने की अत्यधिक आवश्यकता हो।

6. फोटोग्राफी के दौरान जानबूझकर घटनाओं से छेड़छाड़, उनका दोहन या उन पर प्रभाव न डालें।

7. विभिन्न प्रकार के फोटो संपादन के समय, आपको फोटो की सामग्री और संदर्भ की अखंडता पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए।

8. आपको ध्वनि को इस तरह से हेरफेर और संशोधित नहीं करना चाहिए जिससे दर्शकों का ध्यान भटक जाए और विषय गलत समझ में आ जाए।

9. सूचना या भागीदारी प्राप्त करने के लिए स्रोतों या विषयों को रिश्वत न दें। ऐसे लोगों से उपहार, अनुग्रह और अन्य मौद्रिक लाभ प्राप्त करने से बचें जो कवरेज को प्रभावित कर सकते हैं।

10. अन्य पत्रकारों के प्रयासों को नुकसान न पहुंचाएं।

11. सबसे महत्वपूर्ण बात, सहकर्मियों, अधीनस्थों और विषयों के साथ अप्रिय व्यवहार न करें।

12. अपने काम के दौरान सभी के साथ बातचीत करते समय अत्यधिक सम्मान, विनम्रता और व्यावसायिकता दिखाएं।

13. एक फोटो पत्रकार को पूरे दिल और आत्मा से प्रयास करना चाहिए ताकि फोटो पत्रकारिता की आचार संहिता का पूरी तरह से पालन किया जा सके।

यह वह आधार रेखा है जो फोटो पत्रकारिता के लिए आचार संहिता तैयार करती है। फोटोग्राफिक और वीडियो छवियां महान सत्य को उजागर कर सकती हैं, गलत कामों और उपेक्षा को उजागर कर सकती हैं, आशा और समझ को प्रेरित कर सकती हैं और दृश्य समझ की भाषा के माध्यम से दुनिया भर के लोगों को जोड़ सकती हैं। इसके विपरीत तस्वीरें बहुत नुकसान भी पहुंचा सकती हैं यदि वे बेरहमी से घुसपैठ करती हैं या उनमें हेरफेर किया जाता है। एक फोटोग्राफर को अपने कर्तव्यों का पालन करते समय सभी पत्रकारिता नैतिकता को लागू करना होता है ।

इसलिए एक फोटो पत्रकार को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि आचार संहिता का अधिकतम पालन किया जाए। इसलिए, आदर्श रूप से यह सुनिश्चित करने का प्रयास करना चाहिए कि जनता का काम सार्वजनिक रूप से हो। मनोविज्ञान, समाजशास्त्र, राजनीति और कला के छात्र के रूप में, एक अद्वितीय दृष्टि और प्रस्तुति विकसित करने के लिए सक्रिय रूप से सोचें। विषयों तक पूर्ण और अप्रतिबंधित पहुंच के लिए प्रयास करें, उथले या जल्दबाजी में प्राप्त अवसरों के लिए विकल्प सुझाएं, दृष्टिकोणों की विविधता की तलाश करें, तथा अलोकप्रिय या अनदेखे दृष्टिकोणों को

प्रदर्शित करने के लिए कार्य करें। ऐसे राजनीतिक, नागरिक और व्यावसायिक कार्यों या अन्य रोजगारों से बचें जो किसी की पत्रकारिता की स्वतंत्रता से समझौता करते हों या समझौता करने का आभास देते हों।

4.9 सारांश

सूचना क्रान्ति के इस युग में समाज, राष्ट्र व विश्व की घटनाओं से बेखबर व्यक्ति अपने आपको बहुत विलगित तथा कटा हुआ महसूस करता है। यदि वर्तमान स्थिति का अवलोकन करें तो हम पाते हें कि जिस राष्ट्र के पास सूचना के सर्वाधिक भण्डार व स्त्रोत हैं उसी ने अन्य राष्ट्रों पर अपना दबदबा कायम कर रखा है। वे इन सूचनाओं को अपने हित की पूर्ति के लिए इस्तेमाल करते हैं। आज यदि भारत के पास अपने शत्रु राष्ट्रों की सामरिक गतिविधियों की जानकारी है तो वह इसका इस्तेमाल अपनी सुरक्षा व्यवस्था सुदृढ़ करने में कर सकता है। पर्यावरण के बारे में कई सूचनाएँ व जानकारी प्राप्त कर हम उसे बेहतर बनाने का प्रयास कर सकते हैं। इस तरह जीवन के प्रत्येक क्षेत्र से जुड़ी सूचनाओं का भिन्न-भिन्न संदर्भों और स्थितियों में विशेष महत्त्व होता है जो मानव की प्रगति का रास्ता सुगम बनाती हैं तथा उसकी गतिविधियों की गुणवत्ता को भी प्रभावित करती है।

भाषायी तरंग का प्रभाव रेडियो और टीवी पर अधिक हुआ है। क्षेत्रीय भाषाओं के चैनल और भारतीय भाषायी पत्र तेजी से विकसित हो रहे हैं। धर्म और नैतिक शिक्षा का मानव समाज में गहरा असर है। ठीक इसी तरह से पत्रकारिता में भी नैतिकता और आचार संहिता की बात होती है और इसे गम्भीरता से देखा जाता है। व्यावसायिक मानदण्डों को बनाए रखने के लिए आवश्यक है कि प्रकाशक और सम्पादक अपने नैतिक उत्तरदायित्व का निर्वाह करें। प्रेस सामाजिक उत्तरदायित्व, वैधानिक, व्यावसायिक जिम्मेदारियों का पूर्ण पालन करें। इसके लिए अखिल भारतीय समाचार-पत्र सम्पादक सम्मेलन (1953 व 1968) द्वारा जारी आचार संहिता प्रेस परिषद् की गाइड लाइन प्रेस परिषद् के साम्प्रदायिक विषयों के बारे में जारी दिशा निर्देशन। संसद की राज्यसभा से जारी सामाजिक और नैतिक आचार संहिता के निर्देश। अन्तर्राष्ट्रीय कोड तथा औम्बड्समैन की स्वेच्छा से नियुक्ति पत्रकारिता की नैतिकता से सम्बन्धित महत्त्वपूर्ण आयाम है। इन सबका पालन भारतीय दर्शक एवं संस्कृति के मूल्यों को अक्षुण्ण रखने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। समाज के प्रति प्रेस के उत्तरदायित्व का बोध भी कराता है। जीवन- मूल्यों और भारतीय दर्शन जीवन पद्धति के आधार भूत तत्त्वों का समावेश ही भारतीय मीडिया की विषयवस्तु हो, इसके लिए सतत प्रयास की आवश्यकता है।

4.10 शब्दावली

- **फोटो पत्रकार -** फोटो पत्रकार का काम है कि वह समाज का दस्तावेजीकरण करें और छवियों के माध्यम से इसके इतिहास को संरक्षित करें।
- **नैतिकता-** फोटो पत्रकारिता एक ऐसा पेशा है जिसमें नियमों और विनियमों का पालन आवश्यक है।
- **औम्बड्समैन -** लोकसेवकों द्वारा की गई गलतियों और नियमों के उल्लंघनों की जांच करना।

4.11 सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. https//www.clippingpath.in/blog/a-code-of-ethics-in-photojournalism/
2. https//assembly.coe.int/nw/xml/XRef/Xref-XML2HTML-en.asp?fileid=16414
3. Neeraj Verma Neerpriy, 'Media and Issues (focused on journalism)' Publisher ' Anuradha Prakashan 2022
4. Rajakisora, 'Samakalina patrakarita, mulyankana aura mudde', Vani Prakasana 1994
5. Ashvasti Aur Ashanka, 'Hindi Patrakarita' Prabhat Prakashan PVT Limited 2021
6. Dr. mahender Kumar Mishra,'Hindi Patarkarita' K.K. Publications,2021
7. विजयदत्त श्रीधर, (2008), भारतीय पत्रकारिता कोश खंड 2, वाणी प्रकाशन, दिल्ली।
8. दुबे, एसके (2006), पत्रकारिता के नये आयाम, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद।

4.12 अभ्यास हेतु प्रश्न

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. फोटो ग्राफर और फोटो पत्रकार में क्या अन्तर है।
2. फोटो पत्रकारिता की प्रकृति तथा क्षेत्र की चर्चा कीजिए?

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. फोटो पत्रकारिता का अर्थ स्पष्ट कीजिए।
2. फोटो कैप्सन क्या है?

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

1. हेनरी कार्टियर ब्रेसन थे।

   (अ) फ्रांसीसी फोटो पत्रकार (ब) ब्रिटिश फोटो पत्रकार

2. गांधी की मृत्यु की घोषणा सम्बन्धी फोटोग्राफ है?

(अ) हेनरी कार्टियर ब्रेसन (ब) प्रशान्त पंजीयर

3. भारत के आरम्भिक प्रसिद्ध फोटोग्राफरों में से एक हैं?

(अ) रामानुज (ब) राजा दीनदयाल

अति लघु उत्तरीय प्रश्नों के उत्तर

1. (अ), 2. (अ), 3. (ब)

इकाई-5

कैमरे के विभिन्न प्रकार

पाठ संरचना

1.0 उद्देश्य

1.1 प्रस्तावना

- 1.1.1 फॉर्मेट के आधार पर
- 1.1.2 तकनीक के आधार पर
- 1.1.3 संरचना एवं उपयोग के आधार पर

1.2 कैमरा ओब्स्क्युरा

1.3 व्यू कैमरा

1.4 बॉक्स कैमरा

1.5 ट्विन लेंस रिफ्लेक्स कैमरा

1.6 पोलेरायड कैमरा

1.7 रेंज फाइंडर कैमरा

1.8 अंडर वाटर कैमरा

1.9 कॉम्पैक्ट कैमरा

1.10 एसएलआर कैमरा

1.11 डीएसएलआर कैमरा

- 1.11.1 बजट अथवा क्रॉप फैक्टर डीएसएलआर
- 1.11.2 फुल फ्रेम डीएसएलआर

1.12 मिररलेस कैमरा

1.13 सारांश

1.14 शब्दावली

1.15 सन्दर्भ ग्रन्थ

1.16 सम्बन्धित प्रश्न

1.0 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के उपरान्त आप

- कैमरों से परिचित हो सकेंगे

- कैमरों की कार्य प्रणाली को समझ सकेंगे

- विविध प्रकार के कैमरों को जान सकेंगे

- कैमरों की संरचना को समझ सकेंगे

- कैमरों के वर्गीकरण को समझ सकेंगे

- विविध कैमरा फॉर्मेट को समझ सकेंगे

- व्यू एवं बॉक्स कैमरा से परिचित हो सकेंगे

- पोलेरायड एवं अंडर वाटर कैमरा को जान सकेंगे

- विविध प्रकार के कॉम्पैक्ट कैमरा से परिचित हो सकेंगे

- ट्विन लेंस रिफ्लेक्स एवं रेंजफाइंडर कैमरा से परिचित हो सकेंगे

- एनालॉग एवं डिजिटल रिफ्लेक्स कैमरा को समझ सकेंगे

- मिररलेस कैमरा से अवगत हो सकेंगे

- एसएलआर एवं डीएसएलआर में अंतर स्पष्ट कर सकेंगे

- डीएसएलआर एवं मिररलेस कैमरा की कार्यप्रणाली में अंतर समझ सकेंगे ।

1.1 प्रस्तावना

फोटोग्राफी की दुनिया में कैमरा एक अत्यन्त महत्वपूर्ण उपकरण है, इसके बिना हम फोटोग्राफी की कल्पना नहीं कर सकते हैं। कैमरे की संरचना में समय-समय पर बदलाव होते रहे हैं, जिसका मूल उद्देश्य इसकी क्षमता में वृद्धि करना एवं तकनीकी दृष्टि से सशक्त करना है। एनालॉग कैमरा से लेकर डिजिटल कैमरा तक, कैमरा की संरचना, स्वरूप, तकनीक एवं कार्यक्षमता में काफी अन्तर देखने को मिलता है। लगभग 200 वर्षों के फोटोग्राफी के गौरवशाली इतिहास में कैमरे के अनेक मॉडल बाजार में आये हैं जो न सिर्फ आकार में भिन्न थे बल्कि कार्य करने की प्रक्रिया में विविध थे। कैमरा के आविष्कार से लेकर अब तक दर्जनों बार इसके मूल-स्वरूप में बदलाव किये जा चुके हैं और समय के सापेक्ष यह बदलाव निरन्तर जारी है। विज्ञान एवं तकनीकी क्षेत्र में हो रहे विकास का कैमरे की कार्यप्रणाली एवं कार्य क्षमता दोनों पर ही व्यापक असर पड़ा है। एनालाग से डिजिटल दुनिया का यह सफ़र श्वेत-श्याम रंगों को समेटे हुए हमारे जीवन के यादगार पलों को संजाने- संवारने के पथ पर निरन्तर अग्रसर है । अब न तो फिल्म रोल में उपलब्ध फ्रेम की बाध्यता है और न ही अंतिम परिणाम प्राप्त करने में लगने वाला समय ही धड़कने बढ़ाता है। आधुनिक कैमरों के संग हम पलक झपकते ही कई चित्र लेने में सक्षम हो चुके हैं। वर्तमान में मिररलेस कैमरों ने बहुत ही तेजी से बाज़ार में पकड़ बनाना शुरू कर दिया है जिससे डीएसएलआर कैमरों की माँग में गिरावट देखी गई है, स्मार्टफोन में कैमरों की उपलब्धता एवं गुणवत्तापूर्ण चित्र लेने की क्षमता ने कैमरे नामक उपकरण से अधिसंख्य जनता को परिचित करा दिया है, जिससे फोटोग्राफी की दुनिया में व्यापक विस्तार देखने को मिलता है। फोटोग्राफी की दुनिया में अब तक उपयोग किये गये कैमरे का वर्गीकरण मूलतः तीन प्रमुख आधार पर किया जा सकता है-

1. फॉर्मेट के आधार पर
2. तकनीक के आधार पर
3. संरचना एवं उपयोग के आधार पर

1.1.1 फॉर्मेट के आधार पर (On the basis of Format)-

फॉर्मेट के आधार पर कैमरा वर्गीकरण का मुख्य आधार उसमें उपयुक्त प्रकाश संवेदी पटल का स्वरूप होता है जो फिल्म रोल एवं सेंसर के रूप में अलग-अलग आकार का लगा होता है। इस आधार पर कैमरा को मुख्यतः तीन श्रेणियों में रखा जा सकता है।

क. 35 एमएम फॉर्मेट कैमरा
ख. मीडियम फॉर्मेट कैमरा
ग. लार्ज फॉर्मेट कैमरा

35 एमएम फॉर्मेट कैमरे में फिल्म की कुल चौड़ाई 35 एमएम होती है। हालाँकि केवल 24 एमएम ही प्रकाश संवेदी होता है, क्योंकि दोनों तरफ की स्ट्रिप 11 एमएम की होती है। इस प्रकाश से इन कैमरों में प्रकाश संवेदी क्षेत्र 24x36 एमएम होता है। इस श्रेणी के डीएसएलआर कैमरों में भी सेंसर का संवेदी क्षेत्र 24x36 एमएम होता है हालाँकि ऐसा सेंसर सिर्फ फुल फ्रेम डीएसएलआर में ही पाया जाता है, क्रॉप सेंसर कैमरा अर्थात बजट कैमरा में यह क्षेत्र 1.5 गुना छोटा होता है। मीडियम फॉर्मेट कैमरा में प्रयुक्त फिल्म रोल की चौड़ाई 60 एमएम होती है। ट्विन लेंस रिफ्लेक्स कैमरा में ज्यदातर इसी श्रेणी के थे। हैजलब्लेड नामक कम्पनी इस फॉर्मेट में डिजिटल कैमरा बनाती है जो गुणवत्ता की दृष्टि से 35 एमएम फॉर्मेट डिजिटल कैमरों से बेहतर परिणाम प्रदान करते हैं। प्रारम्भ में प्रयुक्त होने वाले व्यू कैमरा में 4x5 इंच अथवा 8x10 इंच के प्लेट लगाये जाते थे, इन कैमरों को लार्ज फॉर्मेट कैमरे की श्रेणी में रखा जाता था। वर्तमान समय में इस श्रेणी के कैमरे का उपयोग विशेष प्रकार की फोटोग्राफी के लिए किया जाता है जिसमें अपेक्षाकृत विशेष गुणवत्तापूर्ण परिणाम की आवश्यकता होती है। एलएस-911 नामक डिजिटल कैमरा मॉडल लार्ज फॉर्मेट में उपलब्ध है।

1.1.2 तकनीक के आधार पर (On the basis of Technology used)-

तकनीकी के आधार पर कैमरा को मुख्यतः दो श्रेणियों में रखा जा सकता है। एनॉलाग कैमरा एवं डिजिटल कैमरा के रूप में ये कैमरे मुख्य रूप से फिल्म आधारित एवं सेंसर आधारित होते हैं। एनॉलाग कैमरे में जहाँ फिल्म रोल प्रयुक्त होती है वहीं डिजिटल कैमरों में सेंसर के रूप में सीसीडी अथवा सीएमओएस का प्रयोग किया जाता है। प्रकाश-संवेदी पटल का आकार कैमरा मॉडल के ऊपर निर्भर करता है मोबाइल एवं उपभोक्ता डिजिटल कैमरों में अपेक्षाकृत छोटे सेंसर प्रयुक्त किये जाते हैं जबकि फुल फ्रेम कैमरा के सेंसर का आकार बड़ा होता है।

1.1.3 संरचना एवं उपयोग के आधार पर (On the basis of Structure and Use)-

संरचना एवं उपयोग के आधार पर बाजार में दर्जनों कैमरा मॉडल उपलब्ध हैं। विशेषीकृत फोटोग्राफी का क्षेत्र विशेष प्रकार के कैमरे की माँग करता है, साथ ही यह इस बात पर भी निर्भर करता है कि फोटोग्राफर कैमरे के लिए कितना धन खर्च करना चाहता है। सोनी, निकान, एवं कैनन जैसी बड़ी कम्पनियाँ विभिन्न संरचना वाले कैमरे बनाती हैं जिनका ग्राहक वर्ग भिन्न है। इस श्रेणी में मुख्य रूप से उपभोक्ता कैमरा, प्रोज्युमर कैमरा एवं प्रोफेशनल कैमरा को रखा जा सकता है। उपभोक्ता कैमरा जहाँ आकार में छोटे होते हैं वहीँ इनकी गुणवत्ता एवं मूल्य भी अन्य कैमरों की तुलना में कम होता है। वहीं प्रोज्युमर कैमरा उपभोक्ता एवं प्रोफेशनल कैमरा के बीच की कड़ी होते हैं जिनमें प्रोफेशनल श्रेणी के कैमरों के कुछ महत्वपूर्ण फीचर्स भी पाये जाते हैं। गुणवत्ता की दृष्टि से ये प्रोफेशनल कैमरों से पीछे होते हैं। बजट डीएसएलआर के आरम्भिक कैमरा मॉडल या इनसे नीचे के मॉडल को हम इस श्रेणी में रख सकते हैं। प्रोफेशनल कैमरों का न सिर्फ मूल्य अधिक होता है अपितु इनमें मैन्युअल के ढेर से विकल्प मौजूद होते हैं जो फोटोग्राफर को

अच्छी गुणवत्ता वाली फोटोग्राफ लेने में मदद करते हैं। इनके अतिरिक्त इस श्रेणी में हम विशेषीकृत कैमरा जैसे- अंडरवाटर कैमरा, पोलेरायड कैमरा इत्यादि को भी रख सकते हैं।

फोटोग्राफी की यात्रा में सम्मिलित कुछ प्रमुख कैमरों को हम निम्नवत समझ सकते हैं-

1.2- कैमरा आब्सक्यूरा (Camera Obscura)-

यह मूल रूप से कैमरा न होकर कैमरा जैसी तकनीकी की अवधारणा थी जिसके आधार पर आधुनिक कैमरा तकनीक की नींव पड़ी। इसे पिनहोल कैमरा भी कहा जाता है। कैमरा आब्सक्यूरा लैटिन शब्द से बना है जिसका अर्थ डार्क चैम्बर होता है। यह एक ऐसा सिस्टम होता था जिसमें एक पिनहोल की सहायता से किसी के बॉक्स की दीवार पर चित्र बनाया जाता था। इस प्रकार के सिद्धान्त की बात सबसे पहले अरस्तू ने की थी। इस प्रकार से देखा जाये तो कैमरा आब्सक्यूरा मूलतः बॉक्सनुमा एक संरचना होती थी, जिसके एक तरफ एक छोटा सा पिनहोल बनाया जाता था और दूसरी तरफ स्थित बॉक्स के दीवार पर पिनहोल के जरिये बॉक्स के अन्दर प्रवेश कर रहे प्रकाश की सहायता से चित्र प्राप्त किया जाता था। हालाँकि प्रारम्भिक समय में दीवार प्रकाश-संवेदी न होने के कारण बनने वाले चित्र को संचित करके रखने में अक्षम थी। कैमरे की यह संरचना एवं कार्य पद्धति आगे चलकर वैज्ञानिकों के लिए काफी महत्वपूर्ण साबित हुई। कैमरे की दुनिया में इसे पहले प्रयोग के रूप में देखा जाता है जिसने छायाचित्र लेने जैसी परिकल्पना को पंख देने का कार्य किया।

साभार: https://collections.tepapa.govt.nz/object/226170

1.3- व्यू कैमरा (View Camera)

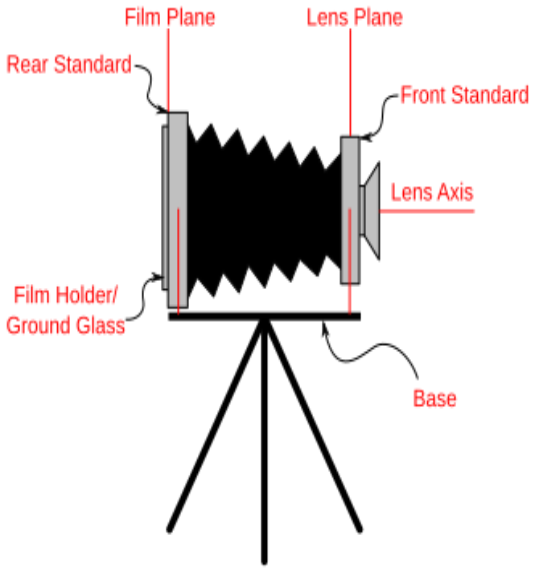

यह एक लार्ज फॉर्मेट कैमरा है जिसका प्रयोग काफी फोटोग्राफी के आरम्भिक दौर में किया जाता था । इस कैमरा के साथ प्रकाश संवेदी पटल के रूप में 4x5 अथवा 8x10 इन्च की प्लेट प्रयोग में लाई जाती थी । इस कैमरे का वजन काफी ज्यादा होता था जिसे एक जगह से दूसरे जगह ले जाना काफी कठिन था । इसी वजह से इन कैमरों का प्रयोग ज्यादातर लैब अथवा फोटो

स्टूडियो में होता था। वर्तमान समय में ये कैमरे प्रचलन में नहीं हैं। इस प्रकार के कैमरे में दो पैनल- फ्रंट एवं रीअर पैनल रबर की फ्लेक्सिबल बेलोज (एक प्रकार की मुड़ने वाली पतली चद्दर) से जुड़े होते थे। फ्रंट पैनल के साथ लेंस लगा होता था जबकि रीअर पैनल में ग्राउंड ग्लास एवं फिल्म होल्डर लगाया जाता था। ग्राउंड ग्लास को कम्पोजीशन के दौरान सब्जेक्ट को देखने के लिए व्यूफाइंडर के रूप में प्रयोग किया जाता था जिसे बाद में फिल्म होल्डर से बदल दिया जाता था। इसके बाद फिल्म होल्डर में प्रकाश संवेदी पटल के रूप में प्लेट को लगाया जाता था। ज़ूम-इन एवं ज़ूम-आउट के लिए स्लाइडर की मदद से दोनों पैनल को जोड़ने वाली बेलोज को आगे या पीछे किया जाता था। इस प्रक्रिया के दौरान इस बात का विशेष ध्यान रखना होता था कि प्लेट को फिल्म होल्डर में लगाते समय उस पर प्रकाश न पड़े। इसीलिये इस प्रक्रिया के दौरान फोटोग्राफर कैमरा सहित खुद को काले कपड़े से ढक लेता था। फोटोग्राफ लेते समय सब्जेक्ट का स्थिर होना भी जरूरी होता था जिससे सब्जेक्ट फ्रेम से बाहर न चला जाय अथवा फोटोग्राफ धुंधली न हो। इस कैमरा से गतिशील चित्र लेना सम्भव नहीं था।

फोटो साभार : https://en.wikipedia.org/wiki/View_camera

1.4- बॉक्स कैमरा (Box Camera)

बॉक्स कैमरा की संरचना बेहद ही साधारण थी जिसमें अपरचर एवं शटर स्पीड पहले से ही निर्धारित होती थी जिसमें किसी प्रकार का बदलाव सम्भव नहीं था। यह एक प्रकार के साधारण तकनीकी वाले उपभोक्ता कैमरा होते थे जिनका दाम अपेक्षाकृत कम होता था। सर्वप्रथम कोडक कम्पनी ने शुरुआत में एक बॉक्स कैमरा बनाया था। हालाँकि उस समय इस तरह का कैमरा, तकनीकी जटिलताओं की वजह से अधिक लोकप्रिय नहीं हुआ था। बाद में फिल्म आधारित बॉक्स कैमरा कई कम्पनियों द्वारा बनाये गये। यह पूर्णतया उपभोक्ता कैमरे होते थे जिनके संचालन के लिए तकनीकी कौशल की आवश्यकता नहीं होती थी। बेहद साधारण संरचना वाले इन कैमरों का मूल्य कम होने की वजह से आम लोगों के घरों तक इनकी पहुँच व्यापक स्तर पर थी। लेंस बदलने का विकल्प न होने एवं आवश्यक प्रकाश न होने की दशा में अच्छा परिणाम न देने के कारण गुणवत्ता की दृष्टि से यह अच्छे श्रेणी के कैमरा में नहीं आते थे। वर्तमान में यह कैमरा प्रचलन में नहीं है।

फोटो साभार : http://camera-wiki.org/wiki/Box_camera

1.5- रेंजफाइंडर कैमरा (Rangefinder Camera)

रेंजफाइंडर एक मीडियम फॉर्मेट कैमरा होता था जिसमें 60 एमएम फिल्म रोल का प्रयोग किया जाता था। इसमें कैमरे से सब्जेक्ट की दूरी बताने वाला एक ऑप्टिकल यंत्र लगा होता था। इस यंत्र की वजह से सब्जेक्ट को फोकस करने में मदद मिलती थी। इस कैमरे के व्यूफाइंडर में एक ही सब्जेक्ट के

दो चित्र दिखाई देते थे। कैमरे का क्लिक बटन दबाते ही लेंस के पास लगी रिंग तब तक घूमती थी जब तक दोनों चित्र आपस में मिलकर एक न बन जाये। इस प्रकार से यह कैमरा एक बेहतर परिणाम प्रस्तुत करता था जिसमें सब्जेक्ट साफ फोकस में होता था। इस कैमरा का प्रयोग एसएलआर के आने से पहले होता था। कुछ कैमरा मॉडल सेल्फ-टाइमर के साथ उपलब्ध थे। वर्तमान समय में इस तकनीकी पर आधारित कैमरा का प्रयोग नहीं किया जाता क्योंकि इस कैमरा में उपलब्ध सभी सुविधाएँ आधुनिक कैमरों की अभिन्न अंग हैं। फोटो साभार : https://petapixel.com/what-is-a-rangefinder-camera/

1.6- पोलेरायड कैमरा (Polaroid Camera)

इस प्रकार के कैमरों का प्रयोग त्वरित फोटोग्राफी (Instant Photography) के लिए किया जाता है। इन कैमरों की सबसे बड़ी विशेषता थी कि ये कैमरा खुद ही फोटोग्राफ को डेवलप करने में सक्षम थे। आरम्भिक कैमरों में पोलेरायड लैंड फिल्म प्रयुक्त की जाती थी जो अन्य फिल्म रोल से भिन्न थी। इस कैमरा तकनीकी की खोज सन 1947 में अमेरिका के डॉ० इडविन लैंड ने किया था। तुरन्त परिणाम देने की क्षमता रखने वाले यह कैमरे फोटोग्राफर को त्रुटि सुधारने का मौका उपलब्ध कराते थे और वह तुरन्त दूसरी फोटो ले सकता था। आधुनिक डिजिटल कैमरों, कम्प्युटर, एवं प्रिन्टर के आविष्कार से पहले त्वरित चित्र प्राप्त करने का यह एकमात्र विकल्प था। दो मिनट में चित्र प्रदान करने वाला यह कैमरा पोलेरायड बैक के साथ आता था। कैमरे का क्लिक बटन दबाते ही कैमरे के इस हिस्से में प्रासेसिंग का कार्य शुरू हो जाता था। इस श्रेणी में स्पीडलाइनर, द-700, एवं हाईलैंडर प्रमुख कैमरा थे। फोटो साभार : https://www.target.com/p/fujifilm-instax-mini-12-camera-mint-green/-/A-88075516

आधुनिक पोलेरायड कैमरे के साथ एक प्रिन्टर जुड़ा होता है। कैमरे का क्लिक बटन दबाते ही चित्र से जुड़ी सारी सूचनाएं प्रिन्टर तक पहुँच जाती हैं और प्रिन्टर के साथ पहले से लगे फोटो पेपर पर ये सूचनाएं प्रिन्ट हो जाती हैं। पर्यटन स्थलों पर इस प्रकार के आधुनिक कैमरों का प्रयोग ग्राहक को तुरन्त फोटोग्राफ उपलब्ध कराने के लिए फोटोग्राफरों द्वारा किया जाता है। हालाँकि पिछले कुछ वर्षों में इनकी माँग में काफी कमी आई है। कम्प्यूटर एवं प्रिन्टर की उपलब्धता होने के कारण फोटोग्राफर पोलेरायड कैमरों का प्रयोग कम करने लगे हैं। इसका मुख्य कारण अन्य आधुनिक कैमरों की तुलना में इन कैमरों की कम गुणवत्ता का होना है। वर्तमान समय में फुजीफिल्म के कई पोलेरायड कैमरा मॉडल बाजार में उपलब्ध हैं। इसके अलावा लाइका नामक कम्पनी भी ऐसे कैमरे बना रही है।

1.7- ट्विन लेंस रिफ्लेक्स कैमरा (Twin Lens Reflex Camera)

रिफ्लेक्स कैमरों की श्रेणी में सबसे पहले ट्विन लेंस रिफ्लेक्स का ही उपयोग किया गया। सिंगल लेंस रिफ्लेक्स कैमरा के दौर से पहले यह कैमरा अत्यधिक प्रचलन में था। एसएलआर के आने के बाद भी अच्छे परिणाम के लिए प्रोफेशनल फोटोग्राफर इस कैमरा का प्रयोग प्रमुखता के साथ करते थे। मीडियम फॉर्मेट की फिल्म रोल लगने के कारण

यह 35 एमएम सिंगल लेंस रिफ्लेक्स कैमरा से बेहतर परिणाम देता था। ट्विन लेंस कैमरा में समान फोकल लेंथ के दो लेंस प्रयुक्त होते थे। पहले लेंस का उपयोग फोकस एवं कम्पोजीशन के लिए किया जाता था जबकि दूसरा लेंस सब्जेक्ट को देखने के लिए उपयोग में लाया जाता था अर्थात एक लेंस चित्र लेने के लिए जबकि दूसरा लेंस सब्जेक्ट को देखने के लिए उपयोग में लाया जाता था। दोनों लेंस कैमरा में एक के ऊपर एक करके लगे होते थे।

फोटो साभार : https://www.35mmc.com/05/03/2021/twin-lens-reflex-cameras-making-my-case-for-the-quirky-design-by-alex-mitte/

35 एमएम कैमरे की तुलना में इनके साथ चित्र को इनलार्ज करने की समस्या नहीं थी परन्तु इन कैमरों के साथ पैरेलेक्स एरर की गुंजाइश बनी रहती थी। कैमरे में लगे एक नॉब की सहायता से फिल्म को आगे बढ़ाया जाता था। इस कैमरा में प्रायः 120 फिल्म रोल प्रयुक्त होती थी जिससे कुल 12 फ्रेम प्राप्त होते थे। अधिकांश कैमरा मॉडल में लेंस बदलने की सुविधा उपलब्ध नहीं थी। लेंस का स्थायी तौर पर जुड़ा होना, इन कैमरों की सबसे बड़ी समस्या थी जिससे फोटोग्राफर के पास सीमित विकल्प होते थे। इस श्रेणी में रोलिफ्लेक्स, ग्राफ्लेक्स, इकोफ्लेक्स, एवं कोनिफ्लेक्स काफी प्रमुख कैमरा मॉडल थे।

1.8- सिंगल लेंस रिफ्लेक्स कैमरा (Single Lens Reflex Camera)

सिंगल लेंस रिफ्लेक्स कैमरा ट्विन लेंस रिफ्लेक्स का परावर्धित रूप कहा जा सकता है। इसमें सिर्फ एक लेंस प्रयुक्त होता है। इस कैमरे की पहचान 35 एमएम फॉर्मेट कैमरे की है जिसमें 35 एमएम फिल्म रोल प्रयुक्त होती है। इस कैमरा में लेंस के ठीक पीछे 45 डिग्री पर एक मिरर लगा होता है जो लेंस से प्रवेश करने वाले प्रकाश को परावर्तित कर उसे पेंटाप्रिज्म को भेज देता है। पेंटाप्रिज्म प्रकाश रूपी सूचना को सीधा करने के बाद उसे व्यूफाइंडर की तरफ भेज देता है जिससे फोटोग्राफर व्यूफाइंडर में सब्जेक्ट को ठीक उसी रूप में देख पाता है जिस रूप में सब्जेक्ट होता है। पेंटाप्रिज्म होने की वजह से इस कैमरे में पैरेलेक्स एरर की गुंजाइश नहीं होती है अर्थात जो कम्पोजीशन हम व्यूफाइंडर में देखते हैं वही हमें परिणाम के रूप में प्राप्त होता है। इन कैमरों की सबसे बड़ी विशेषता इनमें आवश्यकतानुसार लेंस जोड़ने की सुविधा का होना है अर्थात लेंस माउंट की सहायता से इसके साथ किसी भी फोकल लेंथ का लेंस जोड़ा जा सकता है। लेंस में मौजूद अपरचर रिंग

प्रकाश की मात्रा सुनिश्चित करने में मदद करती है जिससे लेंस के अन्दर आवश्यकतानुसार मात्रा में ही प्रकाश जा सके। कैमरे में लगे हॉट शू की मदद से फ़्लैश लगाना भी सम्भव है जिससे कम प्रकाश होने की दशा में वाह्य फ़्लैश का उपयोग किया जा सके। फोटो साभार : http://licm.org.uk/livingImage/SLR-Camera.html

हैंगिंग मिरर के ठीक पीछे एक शटर कर्टेन होता है जिसे हम शटर स्पीड रिंग की मदद से नियन्त्रित करते हैं। शटर स्पीड रिंग शटर के खुलने एवं बन्द होने की अवधि सुनिश्चित करने के लिए प्रयोग में लाई जाती है, जिससे शटर कर्टेन के पीछे स्थित फिल्म रोल पर पड़ने वाले प्रकाश का समय निर्धारित किया जा सके। जैसे ही हम क्लिक बटन दबाते हैं, हैंगिंग मिरर ऊपर की तरफ चला जाता है और प्रकाश शटर कर्टेन की तरफ बढ़ जाता है जो कि हैंगिंग मिरर के ऊपर उठने के साथ ही खुलता है एवं मिरर के वापस अपने स्थान पर आने के साथ ही शटर कर्टेन बन्द हो जाता है। इस प्रकार से प्रकाश रूपी सूचना फिल्म पर रिकार्ड हो जाती है। कुछ कैमरा मॉडल बल्ब मॉड भी उपलब्ध कराते हैं जिनका प्रयोग इच्छानुसार शटर स्पीड रखने में की जाती है। यह कैमरा फोटोग्राफर को फोटोग्राफी के दौरान प्रक्रिया को नियन्त्रित करने के कई विकल्प उपलब्ध कराता है। डीएसएलआर के आने के बाद इसका प्रयोग न के बराबर हो रहा है। फिल्म रोल की अनुपलब्धता एवं महँगी तथा समय लेने वाली प्रक्रिया की वजह से लगभग 50 वर्षों तक प्रमुखता से उपयोग किया जाने वाला यह कैमरा वर्तमान समय में लगभग चलन से बाहर हो गया है। कैनन, निकान एवं पेंटाक्स जैसी बड़ी कम्पनियों के दर्जनों लोकप्रिय मॉडल इनकी सफलता की कहानी कहते हैं। फोटोग्राफी को प्रसिद्धि दिलाने एवं शौकिया रूप से फोटोग्राफी करने वाले लोगों के लिए यह एक महत्वपूर्ण कैमरा कहा जा सकता है।

1.9- अंडरवाटर कैमरा (Underwater Camera)- इस प्रकार के कैमरा का प्रयोग अंडरवाटर फोटोग्राफी के लिए किया जाता है। यह एक विशेषीकृत कैमरा होता है जिसकी संरचना अन्य आधुनिक कैमरों से अलग होती है। यह कैमरा पूर्णतः वाटरप्रूफ होता है जिससे फोटोग्राफी के दौरान कैमरे के अन्दर पानी न जा सके। इस प्रकार के कैमरे का संचालन विशेष तकनीकी कौशल की मांग करता है। इस कैमरे के साथ प्रायः वाइड एंगल लेंस अथवा मैक्रो लेंस का प्रयोग किया जाता है। इससे न सिर्फ सब्जेक्ट के नजदीक से फोकस करने एवं फोटोग्राफ लेने में मदद मिलती है बल्कि पानी के अन्दर रंगों के क्षरण की समस्या भी कम हो जाती है।

हम जानते हैं कि पानी के अन्दर जैसे-जैसे सब्जेक्ट दूर होता जाता है, रंगों का क्षरण बढ़ता जाता है। रंगों को पुनः प्राप्त करने के लिए अंडरवाटर कैमरा में एक विशेष प्रकार का फिल-इन फ़्लैश की सुविधा होती है। इस कैमरा द्वारा अंडरवाटर फोटोग्राफी के दौरान ऑटोमैटिक एक्सपोजर का प्रयोग बेहतर माना जाता है। इन कैमरों के साथ प्रायः प्राइम लेंस का प्रयोग किया जाता है क्योंकि अंडरवाटर फोटोग्राफी के दौरान ज़ूम एवं फोकस करना काफी कठिन होता है। इस श्रेणी में एन ए

डी- 600 एक प्रमुख कैमरा मॉडल है। वर्तमान समय में इस तकनीकी पर आधारित कैनन, निकान, एवं सोनी कम्पनी के दर्जनों मॉडल हैं जो कॉम्पैक्ट, डीएसएलआर एवं मिररलेस कैमरों के रूप में बाजार में उपलब्ध हैं।

फोटो साभार : https://www.ikelite.com/blogs/buying-guides/the-best-entry-level-compact-camera-housing-underwater-right-now

1.10- कॉम्पैक्ट कैमरा (Compact Camera)

कॉम्पैक्ट कैमरा छोटे आकार के उपभोक्ता कैमरे होते हैं जिन्हें आसानी से कहीं भी ले जाया जा सकता है। इनका मूल्य भी अपेक्षाकृत काफी काम होता है। इस प्रकार के कैमरा बहुत अधिक तकनीकी कौशल की माँग नहीं करते हैं अर्थात इनका संचालन अपेक्षाकृत आसान होता है। बाजार में विभिन्न कम्पनियों के इस श्रेणी में कई मॉडल उपलब्ध हैं। इन कैमरों में डिजिटल ज़ूम लेंस लगा होता है जिसे बदला नहीं जा सकता है। अच्छे मेगा-पिक्सल के साथ उपलब्ध इन कैमरों में छोटे आकार के सेंसर लगे होते हैं जिससे बहुत अच्छा परिणाम नहीं प्राप्त किया जा सकता है। संरचना एवं उपयोग के आधार पर कॉम्पैक्ट कैमरा को तीन श्रेणियों में रखा जा सकता है जो निम्नलिखित हैं-

1. प्रेस्टीज कॉम्पैक्ट कैमरा
2. सुपर ज़ूम कॉम्पैक्ट कैमरा
3. एक्सट्रीम कॉम्पैक्ट कैमरा

1.11- डिजिटल सिंगल लेंस रिफ्लेक्स कैमरा (Digital Single Lens Reflex Camera)

डिजिटल सिंगल लेंस रिफ्लेक्स कैमरा सेंसर आधारित कैमरा है जो 35 एमएम सिंगल लेंस रिफ्लेक्स कैमरा का आधुनिक रूप है। यह पूर्णतः आधुनिक कैमरा है जो फोटोग्राफर को चित्र लेने के दौरान पूरी प्रक्रिया पर काफी नियन्त्रण प्रदान करता है। डीएसएलआर में दो तरह के सेंसर सीसीडी अथवा सीएमओएस का प्रयोग किया जाता है जो कैमरा मॉडल के ऊपर निर्भर करता है। इसके कार्य करने की पद्धति एसएलआर कैमरों के समान ही है। एसएलआर कैमरों में जहाँ प्रकाश रूपी सूचना फिल्म रोल पर रिकॉर्ड होती है वहीं इसमें सेंसर के ऊपर रिकॉर्ड होती है। सेंसर प्रकाश रूपी सूचना को डिजिटल रूप में मेमोरी कार्ड को भेज देता है। इस प्रकार के कैमरों में व्यूफाइंडर के साथ-साथ एलसीडी पैनल भी होता है जो कम्पोजीशन के समय महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। व्यूफाइंडर के साथ लगी डायोप्टर एडजस्टमेंट रिंग कमजोर दृष्टि क्षमता वाले फोटोग्राफर की फोकस में मदद करती है। एलसीडी पैनल फोटोग्राफ का प्रिव्यू देखने की सुविधा भी प्रदान करता है

जिससे चित्र लेने के बाद तुरन्त उसे देखा जा सकता है। फोटो साभार : https://porontbekel.wordpress.com/2015/02/25/digital-single-lens-reflex-cameradslr/

डीएसएलआर फोटोग्राफर को चित्र लेते समय काफी विकल्प देता है। एक्सपोजर ट्राईएंगल के तीनों महत्वपूर्ण घटक अपरचर, शटर स्पीड एवं आईएसओ को इच्छानुसार बदलने की बात हो, व्हाइट बैलेंस की बात हो, एक्सपोजर मीटरिंग की बात हो या फिर विभिन्न सेटिंग्स का उपयोग करने की बात, यह कैमरा बहुत ही कम समय में पूरी प्रक्रिया को सम्पन्न करने की सुविधा देता है। विभिन्न मॉड जैसे ऑटो, मैनुअल, अपरचर प्रायोरिटी, शटर प्रायोरिटी इत्यादि के जरिये यह फोटोग्राफर को किसी मॉड को चुनने की आजादी देता है जिससे विभिन्न परिस्थितियों के दौरान चित्र लेने में मदद मिलती है । डीएसएलआर में प्रयुक्त सेंसर का आकार अन्य डिजिटल कैमरों की तुलना में बड़े होते हैं जिससे अच्छी गुणवत्ता वाली फोटो प्राप्त करना सम्भव हो पाता है। लगभग सभी डीएसएलआर फोटोग्राफी के साथ वीडियोग्राफी का भी विकल्प प्रदान करते हैं जो कि वर्तमान में काफी महत्वपूर्ण माना जाता है। पॉप-अप फ़्लैश के अलावा वाह्य फ़्लैश लगाने की सुविधा भी प्रदान करते हैं जिसका आवश्यकतानुसार प्रयोग किया जा सकता है । 35 एमएम फॉर्मेट में आज डीएसएलआर के दर्जनों मॉडल बाजार में उपलब्ध हैं। वर्तमान समय में कैनन एवं निकान डीएसएलआर बनाने वाली दो प्रमुख कम्पनी हैं। इन कैमरों में लगे सेंसर के आधार पर इन्हें हम दो श्रेणियों में रख सकते हैं-

1. बजट अथवा क्रॉप फैक्टर डीएसएलआर
2. फुल फ्रेम डीएसएलआर

1.11.1- बजट डीएसएलआर- यह एक 35 एमएम डीएसएलआर कैमरा है जिसमें अपेक्षाकृत छोटे आकार का सेंसर प्रयुक्त होता है । इन कैमरों में लगे सेंसर फुल फ्रेम डीएसएलआर में प्रयुक्त सेंसर से लगभग डेढ़ गुना छोटे होते हैं जिससे इन कैमरों द्वारा प्राप्त परिणाम गुणवत्ता की दृष्टि से बहुत अच्छे नहीं होते । इन कैमरों में लगे सेंसर का आकार अधिकतर 20.7x13.8 एमएम से लेकर 28.7x19.1 एमएम के बीच होता है । इन कैमरों में एपी एससी सेंसर का प्रयोग किया जाता है । सेंसर का आकार छोटा होने के कारण लेंस का एंगल ऑफ़ व्यू भी प्रभावित होता है । उदहारण के तौर पर यदि हम इस कैमरे के साथ 50 एमएम फोकल लेंथ का लेंस लगाते हैं तो वह लगभग 75 एमएम लेंस का परिणाम देता है । बजट डीएसएलआर का मूल्य भी अपेक्षाकृत कम होता है। वर्तमान में इस श्रेणी के कई कैमरा मॉडल 25 हजार से 90 हजार के बीच बाजार में उपलब्ध

हैं। कैनन-1300 डी एवं निकान डी 5400 जैसे कैमरा मॉडल इस श्रेणी में आते हैं । फोटो साभार : https://www.businessinsider.in/tech-buying-guides/best-budget-dslr-cameras-in-india/articleshow/77720408.cms

1.11.2- फुल फ्रेम डीएसएलआर- यह एक प्रकार का प्रोफेशनल कैमरा है जिसमें 36x24 एमएम आकार का सेंसर प्रयुक्त होता है। यह कैमरा बेहतरीन फोटो के साथ बहुत रोचक परिणाम प्रदान करता है। यह फोटोग्राफर को चित्र लेने की प्रक्रिया पर नियन्त्रण के कई विकल्प भी देता है जिससे अच्छा परिणाम प्राप्त किया जा सके। इनमें बहुत सारी सेटिंग्स होती हैं जिससे फोटोग्राफी की प्रक्रिया काफी आसान हो जाती है। मैन्युअल एवं ऑटो के ढेर सारे विकल्प होने से यह कैमरा फोटोग्राफर के बीच काफी लोकप्रिय है। इसके अलावा ये कम प्रकाश में भी अच्छे परिणाम देने की क्षमता वाला यह कैमरा विविध क्षेत्र में काम कर रहे प्रोफेशनल फोटोग्राफरों का पसन्दीदा कैमरा है। कैनन का 5डी मार्क-4 एवं निकान का डी-3 एस इस श्रेणी में लोकप्रिय कैमरा हैं। फोटो साभार : https://www.sony.co.in/electronics/full-frame-cameras

1.12 मिररलेस कैमरा-

मिररलेस कैमरा में रिफ्लेक्स कैमरा की तरह मिरर नहीं होता है जिससे इसके अन्दर 'मिरर बॉक्स' वाले स्थान की आवश्यकता नहीं होती है, साथ ही एसएलआर अथवा डीएसएलआर की तरह इसमें पेंटाप्रिज्म नहीं होता है । इससे इस कैमरे का वजन हल्का रहता है। मिररलेस कैमरा में इलेक्ट्रॉनिक व्यू फाइंडर की सुविधा होती है जिससे फोटोग्राफर फोटो लेने से पहले ही फ्रेम से जुड़े सभी सम्बंधित चीजें वास्तविक रूप में देख सकता है जिससे परिणाम में किसी प्रकार की त्रुटि की सम्भावना समाप्त हो जाती है। इसमें इन-बॉडी इमेज स्टेबलाइजर की सुविधा होती है जिससे कम शटर स्पीड का उपयोग करते समय फोटो ब्लर होने से बच जाती है या यूँ कहें कि हैण्डहेल्ड कैमरा संचालित समय अनावश्यक 'कैमरा शेक' से बचा जा सकता है । 'फोकस ट्रैकिंग सिस्टम' गतिमान विषय का फोटो लेते समय किसी विशेष बिंदु पर फोकस बनाये रखने में मदद करता है जो कि इस कैमरे में उपलब्ध विशेष सुविधा है। नृत्य अथवा खेल से सम्बंधित फोटो लेते समय हम फोकस को सब्जेक्ट के किसी विशेष हिस्से पर रख सकते हैं। इन कैमरों में फोटो क्लिक करते समय शटर की आवाज नहीं होती है जिससे फोटो लेते समय 'सब्जेक्ट' का अनावश्यक ध्यान कैमरे के तरफ नहीं जाता है। वर्तमान समय में मिररलेस कैमरा का उपयोग अत्यधिक किया जा रहा है। इस श्रेणी के

कैमरा न सिर्फ फोटोग्राफी के लिए उपयुक्त हैं अपितु समान रूप से वीडियोग्राफी के लिए भी उपयोग में लाये जा सकते हैं। सोनी अल्फ़ा, निकान जेड एवं कैनन आर श्रेणी के विविध कैमरा मॉडल बाजार में उपलब्ध हैं। फोटो साभार : https://www.dpreview.com/reviews/buying-guide-best-mirrorless-cameras

1.13 सारांश

फोटोग्राफी को एक रचनात्मक विधा के रूप में स्थापित करने में अनगिनत कारकों को देखा जा सकता है जिनमें से कैमरा एक महत्वपूर्ण कारक है। कभी आठ घंटे में छायाचित्र प्राप्त करने से शुरू हुई कैमरा की यात्रा वर्तमान समय में मात्र एक सेकंड में आठ से अधिक फोटो लेने के विकल्प के साथ उपलब्ध है। इस दौरान कैमरे की संरचना से लेकर तकनीकी में कई बार बदलाव हुए हैं जिसका मुख्य उद्देश्य कैमरा संचालन आसान करना एवं गुणवत्तायुक्त चित्र प्राप्त करना रहा है। विविध स्वरूपों के साथ कैमरा निरन्तर ही फोटोग्राफी की दुनिया का समृद्ध करता रहा है। इस दौरान कुछ कैमरा तकनीकी दृष्टि से अब उपयोग करने के लिए उपयुक्त नहीं है तो वहीं कुछ के मूल स्वरूप में बदलाव देखने को मिलता है। वर्तमान में मिररलेस कैमरा अधिक उपयोग हो रहे हैं तो वहीं डीएसएलआर धीरे-धीरे बाज़ार में अपनी मजबूत पकड़ छोड़ता जा रहा है।

पिछली सदी के अन्तिम दशक तक जहाँ एसएलआर कैमरों का प्रमुखता से प्रयोग किया जाता था वहीं इस सदी की शुरुआत में ही यह कैमरा लगभग चलन से बाहर हो गया। इसका मुख्य कारण है डीएसएलआर के रूप में एक नई तकनीकी का कैमरा विस्तार। हालाँकि विशेषज्ञों की राय है कि आगामी कुछ वर्षों में मिररलेस कैमरा सर्वाधिक उपयोग में लाये जायेंगे। समय के सापेक्ष न सिर्फ कैमरे की संरचना बदली है बल्कि कैमरे की कार्य क्षमता एवं परिणाम में भी व्यापक सुधार आया है। आज विविध संरचना एवं उपयोग वाले कैमरों की एक लम्बी श्रृंखला बाजार में उपलब्ध है।

1.14 शब्दावली

- **मिररलेस कैमरा-** एक प्रकार का डिजिटल कैमरा जिसमें मिरर नहीं होता है एवं लेंस के ठीक पीछे सेंसर होता है।
- **पेंटाप्रिज्म-** रिफ्लेक्स कैमरा में लगा पांच-पक्षीय प्रिज्म जो पैरेलेक्स इरर की समस्या को दूर कर देता है।
- **35 एमएम फॉर्मेट कैमरा-** वह कैमरा जिसमें 35 एमएम फिल्म रोल प्रयुक्त होती है।
- **कॉम्पैक्ट कैमरा-** कम बजट वाले छोटे आकार के डिजिटल उपभोक्ता कैमरा जिनमें छोटे आकार के सेंसर प्रयुक्त होते हैं।
- **पोलेरायड कैमरा-** अत्यन्त कम समय में फोटो प्रदान करने वाले कैमरे जिनमें फोटोग्राफी एवं प्रिंटिंग कार्य साथ-साथ सम्भव होता है।

1.15 सन्दर्भ ग्रन्थ

क- फोटोग्राफी : कला, तकनीकी एवं पत्रकारिता- डॉ० सुनील कुमार मिश्र, भारती प्रकाशन ।

ख- डिजिटल फोटोग्राफी- टॉम यंग, डीके पब्लिकेशन।

ग- बेसिक फोटोग्राफी- लैंगफोर्ड, फोकल प्रेस।

घ- द कम्पलीट डिजिटल फोटो मैन्युअल, कार्लटन बुक, लन्दन।

1.16 सम्बन्धित प्रश्न

क- विविध प्रकार के कैमरा एवं उनके उपयोग पर विस्तार पूर्वक चर्चा कीजिये।

ख- डिजिटल एवं एनालॉग कैमरा में अंतर स्पष्ट कीजिये।

ग- एसएलआर एवं डीएसएलआर में अंतर स्पष्ट कीजिये।

घ- मिररलेस कैमरा के बारे में लिखिए।

इकाई-6

फोटोग्राफी एवं लेंस

पाठ संरचना

1.0 उद्देश्य

1.1 लेंस एक परिचय

1.2 लेंस की उपयोगिता

1.3 लेंस एवं फोकल लेंथ

1.4 लेंस पर्सपेक्टिव

1.5 लेंस के हिस्से

1.6 लेंस के प्रकार

- 1.6.1 मैक्रो लेंस
- 1.6.2 वाइड एंगल लेंस
- 1.6.3 फिश आई एंगल लेंस
- 1.6.4 टेलीफोटो लेंस
- 1.6.5 प्राइम एवं जूम लेंस
- 1.6.6 फास्ट एवं स्लो लेंस
- 1.6.7 आप्टिकल जूम बनाम डिजीटल जूम

1.7 सारांश

1.8 शब्दावली

1.9 संदर्भ ग्रंथ

1.10 सम्बन्धित प्रश्न

1.0 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के उपरांत आप निम्न तथ्यों से अवगत हो सकेंगे-

- लेंस और उसके प्रकार
- लेंस का महत्व
- लेंस की कार्य प्रणाली
- लेंस को प्रभावशाली तरीके से नियंत्रित करना
- लेंस के हिस्से

1.1 लेंस एक परिचय

कैमरे के विभिन्न भागों में से एक भाग है लेंस। लेंस निश्चित रूप से किसी भी कैमरे का अति आवश्यक हिस्सा है। किसी भी कैमरे में हम या तो व्यू फाइंडर के द्वारा तस्वीर देखते हैं या फिर इसे कहीं पर अंकित करते हैं। कैमरे का व्यू फाइंडर हमारे लिए इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि इसमें दिखने वाली छवियों वैसी ही होती हैं जैसा लेंस इन्हें देखता है। इस प्रकार के किसी भी कार्य को करने के लिए हमारे लिए महत्वपूर्ण है कि हम उचित लेंस का प्रयाग करें। फोटोग्राफी में लेंस की कार्यक्षमता पर ही फोटोग्राफ की क्वालिटी निर्भर करती है। जिस किसी भी आब्जेक्ट की फोटोग्राफ हमें लेनी होती है उससे परावर्तित होकर ही प्रकाश लेंस के रास्ते इमेज सेंसर तक पहुंचता है जहां पर विभिन्न छवियों का निर्माण होता है। बेहतर छवियों के निर्माण के लिए आवश्यकतानुसार अलग-अलग तरह के लेंस का प्रयोग अच्छा माना जाता है।

1.2 लेंस की उपयोगिता

फोटोग्राफी न सिर्फ एक कला है बल्कि फोटोग्राफी पत्रकारिता का एक महत्वपूर्ण अंग है। इसीलिए फोटोग्राफी में उन सभी बातों का ध्यान रखना जरूरी है जिससे फोटोग्राफ का सौंदर्य बढ़े, साथ ही साथ फोटोग्राफ लोगों का ध्यान भी आकर्षित कर पाए। फोटोग्राफ की प्रभावशीलता न सिर्फ फोटोग्राफर पर निर्भर करती है बल्कि इस बात पर भी निर्भर करती है कि फोटोग्राफर को फोटोग्राफी तकनीक का कितना ज्ञान है। इस प्रकार अगर हमें फोटोग्राफी में अपनी महारत हासिल करनी हो तो उसके लिए हमारे लिए जरूरी है कि हम कैमरे के विभिन्न भागों से अवगत हों जिससे हम इनका सही तरीके से उपयोग कर सकें।

इस संदर्भ में लेंस हमारे लिए बहुत ही महत्वपूर्ण है। लेंस का सही उपयोग न सिर्फ फोटोग्राफ में सौंदर्य वृद्धि करता है बल्कि फोटोग्राफर की काबिलियत को भी दर्शाता है।

1.3 लेंस एवं फोकल लेंथ

किसी भी लेंस का फोकल लेंथ हमें तब पता चलता है जब लेंस किसी भीड़- भाड़ वाली जगह पर सकेंद्रित होता है। फोकल लेंथ हमें एंगल ऑफ व्यू के बारे में बताता है। यह हमें ये बताता है कि किसी भी दृश्य का कितना भाग फोटोग्राफ में आयेगा इसके साथ ही साथ तस्वीर कितनी बड़ी होगी। फोकल लेंथ को हम मिलीमीटर में मापते हैं। यह लेंस से वास्तविक दूरी पर निर्धारित न होकर ऑप्टिकल डिस्टेंस से निर्धारित होता है जहाँ पर किसी भी आब्जेक्ट से टकराकर कर प्रकाश की किरणें किसी तस्वीर का निर्माण करती हैं। जितना ज्यादा फोकल लेंथ होता है उतना ही संकीर्ण एंगल ऑफ व्यू होता है और उतना ही ज्यादा मैग्नीफिकेशन होता है।

1.4 लेंस पर्सपेक्टिव

लेंस पर्सपेक्टिव इस बात को इंगित करता है कि लेंस किस ढंग से फोटोग्राफ के खाली स्थान को निरूपित करता है। किसी भी प्रकार के चित्र की परिमाणिकता और गहनता कैमरे से सब्जेक्ट की दूरी और लेंस के प्रकार पर निर्भर करती है। इसलिए अलग-अलग प्रकार के लेंस का प्रभाव भी चित्र पर अलग-अलग पड़ता है। 50 एमएम या फिर 135 एमएम के लेंस का पर्सपेक्टिव भी अलग-अलग देखने को मिलता है।

1.5 लेंस के हिस्से (Parts of Lens)

किसी भी लेंस के प्रमुख हिस्से के बारे में जानना हमारे लिए इसलिए आवश्यक है ताकि हम इसका समुचित उपयोग कर सकें। लेंस के अलग-अलग हिस्से लेंस से अलग-अलग प्रकार का काम लेते हैं। लेंस के प्रमुख हिस्से इस प्रकार हैं-

फोकस रिंग- किसी भी लेंस का एक महत्वपूर्ण हिस्सा होता है फोकस रिंग। इस रिंग को घुमाने पर हम किसी भी विषय को फोकस में ला सकते हैं या फिर उसे डीफोकस कर सकते हैं। इस रिंग के सामने नंबर भी दिये गये रहते हैं जिससे यह पता चलता है कि सब्जेक्ट लेंस से कितनी दूरी पर है।

फिल्टर थ्रेड- फिल्टर थ्रेड किसी भी लेंस के सामने फिल्टर या फिर किसी और एसेसरीज को संबद्ध करने का एक मौका मुहैया कराती है। इसमें एक रिंग के साथ ही एक पेंच की चूड़ी लगी होती है जो एसेसरीज को संभाले

रखती है।

फोकल लेंथ रिंग- जिस किसी भी लेंस में जूमिंग की सुविधा होती है उस लेंस में एक फोकल लेंथ रिंग होता है जो सब्जेक्ट को जूम इन या फिर जूम आउट करने का एक मौका प्रदान करता है। जैसा कि हम जानते हैं कि लेंस को उसके फोकल लेंथ के लिए जाना जाता है। जैसे एक 70-300 एमएम का लेंस 70 एमएम के रेंज से लेकर 300 एमएम तक के फोकल लेंथ को सेट करने का एक मौका देता है।

अपर्चर रिंग- जैसा हम सभी जानते हैं कि अपर्चर प्रकाश को नियंत्रित करने के काम आता है। अपर्चर के द्वारा हम लेंस को इस बात के लिए निर्देशित करते हैं कि कैमरे का लेंस कितना खुले जिससे प्रकाश अंदर आ सके और छवियों का निर्माण हो सके। इससे यह भी निर्धारित किया जा सकता है कि किसी भी दृश्य का कितना हिस्सा फोकस में रहे। इस प्रकार लेंस के अधिकतम खुलने के आधार पर हम लेंस को फास्ट या फिर स्लो लेंस में वर्गीकृत कर सकते हैं। ज़ूम कैमरे का प्रयोग करना हमारे लिए एक आनंददायक अनुभव होता है। वहीं ऑप्टिकल ज़ूम सही अर्थों में उस लेंस की तरह है जिसका प्रयोग अक्सर हम फिल्म कैमरे के उपर देखते हैं। इस लेंस की क्वालिटी बेहतर होती है। अपर्चर रिंग लेंस के अपर्चर को निर्धारित करने का काम करती है। इससे लेंस में आने वाले प्रकाश की मात्रा को निर्धारित किया जा सकता है। अपर्चर के कम होने पर प्रकाश की ज्यादा मात्रा लेंस के अंदर आती है वही अपर्चर ज्यादा होने पर कम प्रकाश लेंस के अंदर प्रवेश करता है।

लेंस माउंट - लेंस माउंट लेंस को कैमरे के सामने लगाने के लिए एक सुनिश्चित स्थान मुहैया कराता है। अलग- अलग कैमरा बनाने वाली कंपनियां इसके लिए भिन्न-भिन्न प्रकार की लेंस माउंट रिंग मुहैया कराती हैं जिनकी आकृति अलग-अलग हो सकती है। कई बार यह एक रिंग की तरह कैमरे सामने लगा रहता है जिसपर कुछ बिंदु उभरे होते हैं वहीं लेंस पर भी कुछ बिंदु इस प्रकार से प्रदर्शित किये जात हैं जिससे लेंस को आसानी से लेंस माउंड के लिए निर्धारित जगह पर घुमाकर स्थापित किया जा सके।

लेंस हुड- लेंस हुड लेंस को सुरक्षित रखने का काम करता है इसे लेंस के ऊपर लगाने के बाद लेंस को सुरक्षित ढंग से लंबे समय तक रखा जा सकता है। लेंस हुड अलग-अलग प्रकार के आकर्षक डिजाइनों में आता है।

1.6 लेंस के प्रकार

कैमरा लेंस किसी भी प्रोफेशनल फोटोग्राफर के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण होते हैं। लेंस के अलग अलग प्रकार किसी भी फोटोग्राफर को एक विकल्प देते हैं कि वो किस तरीके से सबसे बेहतर फोटोग्राफ को खींचे। टेलीफोटो लेंस, मैक्रो लेंस, नॉर्मल लेंस, फास्ट लेंस या स्लो लेंस, वाइड एंगल लेंस, प्राइम और जूम लेंस या फिर फिश आई एंगल लेंस इस प्रकार के अनगिनत विकल्प हैं, जिसने फोटोग्राफी को और भी समृद्ध किया है।

1.6.1 मैक्रो लेंस

किसी भी लेंस की क्षमता को हम डायोप्टर में मापते हैं जिस लेंस की क्षमता जितनी ज्यादा होती है उस लेंस का फोकस उतना ही बेहतर होता है। जब हम किसी भी फोटोग्राफ को बहुत पास से खींचना चाहते हैं तो उस दशा में मैक्रो लेंस बहुत उपयोगी है क्योंकि इस दशा में हमें ऐसे लेंस की जरूरत पड़ती है जो बहुत पास से भी फोटोग्राफ को अच्छे से खींच सके और उसका फोकस भी सही हो। जैसे तितलियों का किसी फूल पर बैठना। मैक्रो लेंस में अपर्चर की मात्रा कम होती है जिससे प्रकाश की ज्यादा मात्रा अंदर आती है। कुछ सब्जेक्ट ऐसे भी हैं जिनके लिए हाई मैग्नीफिकेशन की जरूरत होती है जैसे किसी फूल की पंखुड़ियों को दिखाना या फिर किसी चींटी को दिखाना इस दशा में मैक्रो लेंस बहुत ही उपयोगी है।

1.6.2 वाइड एंगल लेंस

वाइड एंगल लेंस चित्र के खाली स्थान की दूरी को और बढ़ा देता है। इसलिए इस लेंस का प्रयोग सब्जेक्ट को इस तरह से एन्वायर्मेंट से जोड़ता है जिससे सब्जेक्ट उसके आगे बौना बन जाता है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि वाइड एंगल लेंस पर्सपेक्टिव को और भी संकुचित कर देता है। इससे ये फायदा होता है कि हम लेंस को डीप फोकस में रख सकते हैं। अगर वाइड एंगल लेंस का प्रयोग कर क्लोज अप शॉट लिया जाए तो कई बर यह चेहरे को थोड़ा विकृत कर देता है। इसका फोकल लेंथ 28 एमएम से कम होता है।

1.6.3 फिश आई एंगल लेंस

फिश आई एंगल लेंस का महत्व इस रूप में है कि यह किसी भी सब्जेक्ट को 180 डिग्री पर भी जाकर भी कैप्चर कर सकता है। इसलिए कई बार इसे एक्स्ट्रीम वाइड एंगल लेंस भी बोलते हैं। फिश आई एंगल का प्रयोग पैन और टिल्ट करने के दौरान बहुत ही उपयोगी होता है।

1.6.4 टेलीफोटो लेंस

टेलीफोटो लेंस का प्रयोग सब्जेक्ट की दूरी को कम कर हमें उसे और भी नजदीक से जोड़ता है। इस प्रकार यह लोगों को कैमरे के और भी करीब लाकर नजदीकी का एक एहसास कराता है। इस नजदीकी का एक दुष्परिणाम क्षीण डेप्थ ऑफ फिल्ड के रूप में देखने को मिलता है। इसका फोकल लेंथ 100-300 एमएम तक का होता है।

1.6.5 प्राइम एवं जूम लेंस

प्राइम लेंस- प्राइम लेंस वो लेंस है जिसका सिर्फ एक ही फोकल लेंथ हो वहीं जूम लेंस अपनी रेंज में अलग-अलग फोकल लेंथ पर काम करता है। प्राइम लेंस का वजन और कीमत भी जूम लेंस की अपेक्षा कम होती है। प्राइम लेंस प्रोफेशनल फोटोग्राफर का पसंदीदा लेंस हुआ करता था। उन्हें लगता था कि अगर-अलग अलग फोकल लेंथ के लिए अलग-अलग तरह का लेंस हो तो फिर प्राइम लेंस को हम मुख्यतया निम्नलिखित रूप में अभिव्यक्त कर सकते हैं-

1.6.6 फास्ट एवं स्लो लेंस

अपने अधिकतम अपर्चर ओपेनिंग के आधार पर लेंस को हम फास्ट या स्लो के नाम से वर्गीकृत कर सकते हैं। अपर्चर जो प्रकाश को नियंत्रित करता है इसके आधार पर हम किसी लेंस में अगर अधिकतम अपर्चर को प्रयोग करने का मौका दे तो उसे हम फास्ट लेंस कहते हैं वहीं अगर लेंस की क्षमता इस तरह की है जिसमें अपर्चर ओपनिंग कम हो तो हम इसे स्लो लेंस कहते हैं। जैसे 50 एमएम का लेंस जिसका अपर्चर एफ 1/1.2 उस लेंस की अपेक्षा ज्यादा फास्ट है जिसका अपर्चर एफ 1/1.8 है।

फास्ट लेंस का प्रयोग कर कम प्रकाश में भी एक अच्छी फोटोग्राफ खींच सकते हैं। फास्ट लेंस हमारे लिए इसलिए भी उपयोगी है क्योंकि फास्ट लेंस हमारे लिए एक ऐसा अवसर लेकर आता है जब हम किसी भी गतिमान वस्तु की फोटोग्राफ भी अच्छे तरीके से खींच सकते हैं। लेकिन अगर आप सही तरीके से अपर्चर का उपयोग नहीं कर पाये तो फिर इससे डेप्थ ऑफ फिल्ड सतही हो सकता है।

स्लो लेंस हम उस लेंस को कहते हैं जिस लेंस का अपर्चर कम होता है। लेंस का अपर्चर कम होने से यह लेंस ज्यादा प्रकाश को अपने अंदर नहीं ला पाता जिससे हम प्रकाश कम होने के दौरान फोटोग्राफ सही तरीके से

नहीं खींच पाते। स्लो लेंस का अपर्चर एफ/11 या फिर एफ/5.6 हो सकता है। स्लो लेंस होने पर कैमरे का वजन भी हल्का हो जाता है जिससे आप कैमरे को आसानी से हैण्डल कर सकते हैं। बहुत सारे प्रोफेशनल का कहना है कि स्लो लेंस ओवर एक्सपोजर जैसी समस्या को काफी हद तक कम कर देता है।

स्लो लेंस की कीमत कम होने के कारण यह आम लोगों के लिए ज्यादा उपयोगी होती है। स्लो लेंस के साथ ज्यादा प्रयोग की गुंजाइश न होने से फोटोग्राफर फोटोग्राफ के सौन्दर्य पर ज्यादा ध्यान दे सकता है जिससे फोटोग्राफ का प्रभाव बढ़ता है। फोटोग्राफ अगर आउटडोर खींचा जाए खासतौर पर जब सूरज की किरणें भी सही तरीके से आ रही हों उस दशा में स्लो लेंस हमारे लिए बहुत ही उपयोगी हो जाता है।

फास्ट लेंस और स्लो लेंस के बीच अगर चुनाव की नौबत आ जाए तो फिर यह चुनाव इस बात पर निर्भर करता है कि फाटोग्राफ किस मकसद से खींचा जाएगा और फोटोग्राफ को खींचने वाला कौन है। फास्ट लेंस की कीमत ज्यादा होती है वहीं स्लो लेंस की कीमत कम होती है। फास्ट लेंस का वजन ज्यादा होने से कैमरे का भी वजन बढ़ जाता है वहीं स्लो लेंस का वजन कम होने से कैमरे को आसानी से हैण्डल किया जा सकता है। फास्ट लेंस का प्रयोग गतिमान वस्तुओं को कैप्चर करने में बहुत ही उपयोगी होता है वहीं स्लो लेंस तब ज्यादा उपयोगी है जब प्रकाश की स्थिति सही हो।

1.6.7 आप्टिकल ज़ूम बनाम डिजिटल ज़ूम

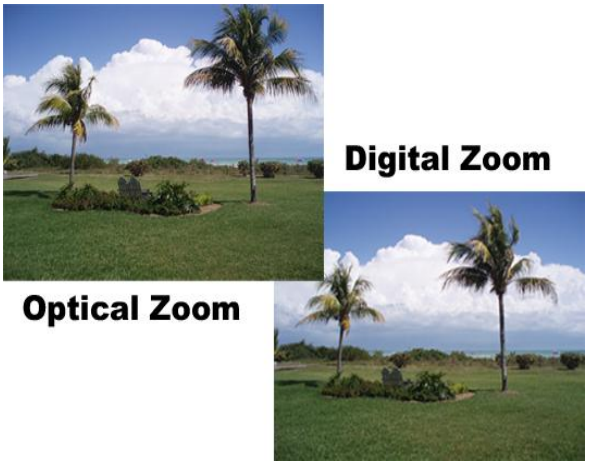

अधिकतर ऐसे लोग जिन्होंने 35 एमएम के कैमरे का प्रयोग किया होगा ये जरूर जानते होंगे कि ऑप्टिकल लेंस का प्रयोग कर हम सब्जेक्ट को करीब ला सकते हैं। अगर आप प्रोफेशनल हैं तो आप फोटोग्राफ की क्वालिटी को बेहतर रखने के लिए ऑप्टिकल ज़ूम लेंस का प्रयोग कर सकते हैं वहीं डिजिटल ज़ूम डिजिटल तकनीक की एक देन है। यह हमार लिए बिल्कुल भी अस्वाभाविक नहीं है कि हम 300 गुना से ज्यादा ज़ूम कर लें। जब आपको ये लगता है कि फोटोग्राफ में ज़ूम के साथ-साथ उसका रिज्योलूशन भी ज्यादा हो तो उस दशा में डिजिटल ज़ूम हमारे लिए लाभदायक होता है। इस तरह के फोटोग्राफिक ज़ूम को हम इमेज सॉफ्टवेयर के माध्यम से भी ठीक कर सकते हैं। एडोब फोटोशाप साफ्टवेयर इनमें से एक है जिसका प्रयोग हम इमेज एडिटिंग के लिए करते हैं।

1.7 सारांश

आज के इस तकनीकी युग के साथ आते-जाते परिवर्तनों के बीच हमें लेंस के उपयोग का ज्ञान होना अतिआवश्यक है। सही लेंस का प्रयोग न सिर्फ फोटोग्राफ के सौन्दर्य में वृद्धि करता है बल्कि छोटे से छोटे सब्जेक्ट को उसके अपने एनवायरनमेंट के साथ जोड़ने का काम करता है। फास्ट और स्लो लेंस का समुचित उपयोग किसी भी फोटोग्राफ को और भी अपीलिंग बनाता है। दूसरी तरफ ऑप्टिकल और डिजिटल लेंस प्रोफेशनल और नॉन प्रोफेशनल दोनों तरह के फोटोग्राफरों के लिए अपने जौहर दिखाने का एक मुहैया कराते हैं।

आजकल का हर क्षेत्र चाहे विज्ञापन, माडलिंग या फिर फिल्म ही क्यों न हो इन सभी में लेंस का समुचित उपयोग इन्हें और भी आकर्षक और प्रभावशाली बनाता है। लेंस ने फोटोग्राफी तकनीक और ज्यादा आसान और खूबसूरत बना दिया। अलग-अलग प्रकार के अलग-अलग प्रकार के भावभंगिमा को कैप्चर करने में सहायक होते हैं। वहीं जूम लेंस में जहाँ फिक्स्ड फोकल लेंथ न होकर फोकल लेंथ को आवश्यकतानुसार कम या ज्यादा किया जा सकता है। लेंस के प्रयोग के दौरान सबसे महत्वपूर्ण बात यह होती है कि फोटोग्राफ में फोकस कहाँ रखना है, सब्जेक्ट से लेंस के दूरी कितनी है, सब्जेक्ट किस तरह का है, सब्जेक्ट को एनवायरनमेंट के साथ दिखाना है या फिर उससे अलग करना है, प्रकाश की समुचित व्यवस्था है या नहीं। अगर हमने पहले ही इसके अनुसार अपनी तैयारी पूरी कर ली तो फिर कोई भी एक व्यक्ति एक अच्छा फोटोग्राफर बन सकता है।

1.8 शब्दावली

- **नार्मल लेंस-** नार्मल लेंस दूरी को बिना कम या अधिक किए सामान्य रूप में चित्र को दिखाता है।
- **वाइड एंगल लेंस-** यह लेंस एक तरह की दूरी को बढ़ा कर सब्जेक्ट को और भी बौना कर देता है।
- **टेलीफोटो लेंस-** टेलीफोटो लेंस सब्जेक्ट को और भी नजदीक ला देता है।
- **जूम लेंस-** जूम लेंस में फिक्स्ड फोकल लेंथ ना होकर फोकल लेंथ को आवश्यकतानुसार कम या ज्यादा किया जा सकता है। किसी भी दृश्य को आवश्यकतानुसार पास या फिर दूर किया जा सकता है।
- **लेंस-** लेंस पारदर्शी शीशे का बना एक आकार होता है जिसका बाहरी हिस्सा घुमावदार होता है। इसका प्रयोग कैमरे के फोकस रिंग करते हैं।
- **एफ स्टॉप-** एफ स्टॉप अपर्चर मापने की एक इकाई है। एफ स्टॉप की संख्या जितनी ज्यादा होती है अपर्चर उतना ही कम होता है।
- **नेचुरल लाइट-** नेचुरल लाइट फोटोग्राफी में प्रयोग किये गए उस प्राकृतिक प्रकाश से है जिसका श्रोत हो सकता है सूरज या फिर चांद की रोशनी।
- **एसएलआर कैमरा -** इसे हम सिंगल लेंस रिफ्लेक्स कैमरे के नाम से जानते हैं जो कि एक कैमरे का लोकप्रिय प्रकार है जिसमें हम गतिशील दर्पण या लेंस का प्रयोग कर सकते हैं साथ ही व्यू फाइंडर का प्रयोग दृश्य और लेंस के बीच एक सामंजस्य स्थापित करता है।
- **डिजिटल ज़ूम-** डिजिटल जूम में डिजिटल कैमरे के प्रयोग से हम फोटोग्राफ को क्रॉप या फिर एनलार्ज कर सकते हैं पर कई बार इसके कारण फोटोग्राफ की गुणवत्ता प्रभावित हो सकती है।

1.9 संदर्भ ग्रंथ

- ग्रेगरी हेलॉक स्मिथ, कैमरा लेंसेज फ्रॉम बॉक्स कैमरा टू डिजिटल
- एनके गॉय, द लेंस- ए प्रैक्टिकल गाइड फॉर द क्रिएटिव फोटोग्राफर
- बेन लंग, कम्प्लीट डिजिटल फोटोग्राफी,

- लेंगफोर्ड, बेसिक डिजिटल फोटोग्राफी
- माइकल फ्रीमैन, द फोटोग्राफर्स आई
- नेशनल जियोग्राफिक इमेज कलेक्शन, नेशनल जियोग्राफिक

1.10 अभ्यास हेतु प्रश्न

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न-

1. कैमरा लेंस से आप क्या समझते हैं? लेंस के विभिन्न प्रकारों को समझाइए।
2. वाइड एंगल लेंस क्या है? वाइड एंगल लेंस के विभिन्न प्रयोगों को समझाइए।
3. किसी लेंस के विभिन्न हिस्सों को समझाइए।
4. फास्ट और जूम लेंस से आप क्या समझते हैं? फास्ट और जूम लेंस की उपयोगिता बताइए।
5. स्लो लेंस से आप क्या समझते हैं? स्लो लेंस के विभिन्न प्रयोग को समझाइए।

लघु उत्तरीय प्रश्न-

1. मैक्रो लेंस क्या है?
2. टेलीफोटो लेंस के गुण बताइए?
3. प्राइम और जूम लेंस में क्या अंतर है?
4. डिजिटल जूम क्या है?
5. फास्ट लेंस के गुण बताइए?
6. ऑप्टिकल जूम और डिजिटल जूम में क्या अंतर है?

वस्तुनिष्ठ प्रश्न-

1. फोकल लेंथ ज्यादा होने पर-

क. एंगल ऑफ व्यू पहले कम और बाद में ज्यादा हो जाता है।
ख. एंगल ऑफ व्यू संकीर्ण होता है।
ग. एंगल ऑफ व्यू विस्तृत होता है।
घ. एंगल ऑफ व्यू पर कोई फर्क नहीं पड़ता है।

2. निम्नलिखित में से कौन लेंस नहीं है-

क. मैक्रो
ख. फिश आई एंगल
ग. टेलीफोटो
घ. व्यूफाइंडर

3. एफ स्टॉप नंबर ज्यादा होने पर-

क. प्रकाश लेंस में ज्यादा आता है
ख. प्रकाश लेंस में कम आता है
ग. प्रकाश पर कोई भी प्रभाव नहीं पड़ता

घ. इनमें से काई भी नहीं

4. निम्नलिखित में से इमेज एडिटिंग सॉफ्टवेयर है-

क. कोरल ड्रॉ

ख. कूल एडिट

ग. एफसीपी

घ. फोटोशॉप

वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के उत्तर -

1. ख **2.** घ **3.** ख **4.** घ

इकाई-7

फोटोग्राफी एवं फिल्टर

पाठ संरचना

7.0 उद्देश्य

7.1 फिल्टर

7.2 फिल्टर के प्रकार

- 7.2.1 अल्ट्रा वायलेट फिल्टर
- 7.2.2 पोलराइजिंग फिल्टर
- 7.2.3 नेचुरल डेन्सिटी फिल्टर
- 7.2.4 एनडी ग्रेजुएटेड फिल्टर
- 7.2.5 कलर अथवा कूलवार्म फिल्टर

7.3 फिल्टर का निर्माण

7.4 फिल्टर के उपयोग में सावधानी

7.5 सारांश

7.6 शब्दावली

7.7 संदर्भ ग्रंथ

7.8 अभ्यास हेतु प्रश्न

7.0 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययनोपरान्त आप निम्नलिखित तथ्यों और ज्ञान से परिपूर्ण हो जाएंगे।

1 फोटोग्राफी में फिल्टर का उपयोग क्यों किया जाता है

2 फिल्टर कैसे बनता है और काम करता है

3 डिजिटल फोटोग्राफी में विभिन्न प्रकार के फिल्टर का उपयोग

7.1 फिल्टर

फिल्टर एक प्रकार का फोटोग्राफिक उपकरण है जो विभिन्न काम जैसे लेन्स की सुरक्षा, अल्ट्रावायलेट प्रकाश को दूर करने या फिर खास रंग को उभारने आदि कामों के लिये उपयोग किया जाता है। यह एक प्रकार का रंगीन सीसा या प्लास्टिक होता है जिसे लेन्स के उपर लगा दिया जाता है। फिल्म फोटोग्राफी में फिल्टर वास्तव में एक निश्चित तरंगदैर्ध्य (wavelength) के प्रकाश को सोख (absorb) लेता है तथा बाकी के तरंगदैर्ध्य पर कोई फर्क नहीं पड़ता जिससे फोटो के रंग और टोन में अंतर आ जाता है। फोटो में रंग और टोन के अनुसार हम एक रंग का फिल्टर लगाकर मनचाहा फोटो प्राप्त करते हैं। वास्तव में रंगीन फिल्टर अपने रंग के समान रंग वाले प्रकाश को जाने देता है जबकि कलर स्पेक्ट्रम में दूर के रंग को सोख लेता है। किन्तु डिजिटल फोटोग्राफी में सामान्यतया रंगीन फिल्टर का प्रयोग नहीं किया जाता है क्योंकि डिजिटल फोटो के संपादन के समय आसानी से फिल्टर का प्रभाव डाला जा सकता है। चित्र के कलर स्पेक्ट्रम में अगर कैमरे में पीले रंग के फिल्टर का प्रयोग करने पर

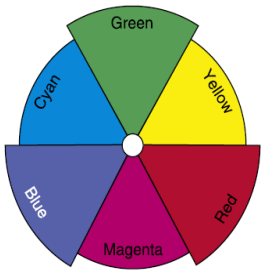

पीला, हरा और लाल रंग का तरंग दैर्ध्य पहले की तरह आर-पार हो जाएगा किन्तु नीला मैजेंटा और स्यान रंग आर-पार नहीं हो पाते, जिन्हे सेंसर अपने आप में समाहित कर लेता है। रंगीन फिल्टर के उपयोग से श्वेत-श्याम (Black and White) में ग्रेटोन के बीच संबंध को बदला जाता है।

7.2 फिल्टर के प्रकार

उपयोग के आधार पर फिल्टर विभिन्न प्रकार के होते हैं। जैसे

1 अल्ट्रा वायलेट फिल्टर

2 पोलराइजिन्ग फिल्टर

3 नेचुरल डेन्सिटी फिल्टर

4 एनडी ग्रेजुएटेड फिल्टर

5 कलर अथवा कूलवार्म फिल्टर

7.2.1 अल्ट्रा वायलेट फिल्टर (यूवी फिल्टर)

अल्ट्रा वायलेट या यूवी फिल्टर का प्रयोग डिजिटल फोटोग्राफी में लेन्स की सुरक्षा के लिए किया जाता है। कैमरे में लेन्स काफी महंगा होता है, जिसमें स्क्रैच लगने, टूटने, नमी लगने आदि से बचाया जा सकता। कई फोटोग्राफर अपने कैमरे में हमेशा यूवी फिल्टर लगा कर रखते हैं। यह बात अलग है कि यूवी फिल्टर लगाने से भी कई बार फायदा नहीं हो पाता क्योंकि अगर लेन्स गिरता है तो लेन्स और यूवी फिल्टर दोनों टूट सकते हैं। किन्तु अगर यूवी फिल्टर लगाया जाए तो अच्छी गुणवत्ता का ही प्रयोग करना चाहिये क्योंकि अच्छे लेन्स के सामने खराब गुणवत्ता का यूवी फिल्टर आपकी फोटो की गुणवत्ता पर असर डाल सकता है।

7.2.2 पोलराइजिंग फिल्टर

पोलराइजिंग फिल्टर, लैंडस्केप फोटोग्राफी के लिए बहुत उपयोगी माना जाता है क्योंकि पोलराइजिंग फिल्टर पानी या अन्य पारदर्शी चीजों के ग्लेयर को समाप्त करने के लिए उपयोग में लाया जाता है। इसके अलावा आसमान के रंग को ज्यादा नीला करने के लिये, पृथ्वी और आसमान के बीच कन्ट्रास्ट का अनुपात घटाने के लिये किया जाता है। पोलराइजिंग प्रभाव कैमरे का सूर्य के एंगल पर निर्भर करता है। सूर्य अगर कैमरे के ठीक उपर होगा तो पोलराइजिंग प्रभाव सबसे ज्यादा होगा। इसके अलावा पोलराइजिंग फिल्टर के नंबर को भी घटा-बढ़ाकर पोलराइजिंग प्रभाव पर नियंत्रण किया जा सकता है। पोलराइजिंग फिल्टर का प्रयोग सावधानी पूर्वक करना चाहिये क्योंकि यह 2 से 3 एफ-स्टाप तक प्रकाश को कम कर देता है।

पोलराइजिंग फिल्टर दो प्रकार के होते हैं पहला लीनियर दूसरा सर्कुलर। किन्तु डिजिटल फोटोग्राफी में लीनियर पोलराइजिंग फिल्टर का प्रयोग नही किया जाना चाहिये, क्योंकि लीनियर पोलराइजिंग फिल्टर में मीटरिंग त्रुटि आने की संभावना बनी रहती है। मीटरिंग त्रुटि में कैमरा का आवश्यक फोकस बिन्दु निर्धारित करने में गलती कर देता है। वाइड एंगिल लेंस के साथ भी पोलराइजिंग फिल्टर का उपयोग से बचना चाहिये।

7.2.3 नेचुरल डेन्सिटी फिल्टर (एनडी फिल्टर)

एनडी फिल्टर का प्रयोग ज्यादा प्रकाश को कम करने में किया जाता है जैसे अगर दिन के समय आप झरने की तस्वीर लेना चाहते है आप पानी में मिल्की प्रभाव (मिल्की प्रभाव में शटर स्पीड को धीमा करते हैं जिससे पानी की बूँदें फ्रीज न होकर दूधिया दिखायी देती हैं) लाना चाहते हैं। ऐसी परिस्थितियां जिसमें हमें ज्यादा एपरचर तथा स्लो शटर स्पीड की जरूरत होती है तथा प्रकाश ज्यादा होता है एनडी फिल्टर बहुत काम का होता है। लैन्डस्केप और फ्लैश फोटोग्राफी में एनडी फिल्टर का इस्तेमाल किया जाता है।

7.2.4 एनडी ग्रेजुएटेड फिल्टर

एनडी ग्रेजुएटेड फिल्टर आयताकार होते हैं जिनका आधा हिस्से में एनडी फिल्टर होता है तथा आधा भाग सामान्य सीसा होता है। इसके उपयोग से कन्ट्रास्ट के अन्तर के अनुपात को कम किया जाता है, जैसे नीले आकाश और नीचे के सब्जेक्ट में कन्ट्रास्ट का अनुपात ज्यादा होता है। फिल्टर के उपयोग से आकाश का रंग ज्यादा गहरा नीला हो जाता है, किन्तु नीचे के सब्जेक्ट का रंग नहीं बदलता है,

जिसके फलस्वरूप दोनों भाग के कन्ट्रास्ट का अन्तर कम हो जाएगा। एनडी ग्रेजुयेटेड फिल्टर एक होल्डर में लगा रहता है या फिर इसे हाथ से पकड़ कर रखना होता है।

7.2.5 कलर अथवा कूल और वार्म फिल्टर

कलर या फिर कूल और वार्म फिल्टर वास्तव में कैमरे के व्हाइट बैलेंस को बदलने का काम करते हैं, हालांकि इनका उपयोग डिजिटल फोटोग्राफी में सामान्यतया नहीं होता, क्योंकि फोटो के संपादन के समय अगर तस्वीर 'रा इमेज फार्मेट' में है तो आसानी से ठीक किया जा सकता है। यह दो प्रकार से काम करता है।

- पहले को कलर करेक्शन के माध्यम से किया जाता है जिसमें कलर करेक्सन व्हाइट बैलेंस से ठीक किया जा सकता है।
- दूसरा कलर सब्सट्रैक्शन विधि का उपयोग करता है जिसमें एक रंग को फिल्टर के माध्यम से सोख लिया जाता है बाकी रंग को जैसे के तैसे प्राप्त किया जाता है। गहरे रंग के फिल्टर को कन्ट्रास्ट फिल्टर कहा जाता है जिसका प्रयोग किसी खास भाग को उभारने तथा दूसरे को दबाने में किया जाता है। पीले रंग के फिल्टर को करेक्सन फिल्टर कहा जाता है।

7.3 फिल्टर का निर्माण

फिल्टर मुख्य रूप से तीन प्रकार के चीजों से बना होता है-

- सबसे सस्ता फिल्टर जिलेटिन या पोलिस्टर से बना होता है, जो कि बहुत पतला और लचीला होता है, जिससे आसानी से लेन्स के उपर फिट हो सकता है। लेन्स के उपर फिल्टर को सामान्यतया पकड़ने से काम हो जाता है। इस तरह के फिल्टर की सबसे बड़ी दिक्कत यह है कि इसमें बहुत ज्यादा स्क्रैच पड़ता है।
- दूसरे तरह का फिल्टर सीआर 39 (एलाइल डिग्लाइकोल कार्बोनेट) से बना होता है जिसमें फिल्टर को एक होल्डर में फिट किया जाता है। यह जिलेटिन से बने फिल्टर की तरह लचीला नहीं होता, जिससे गिरने पर टूटने का डर होता है किन्तु इसमें स्क्रैच नहीं लगता दूसरे इसे लेन्स के उपर फिट करना आसान होता है, क्योंकि इसमें एक होल्डर लगा होता है।

- तीसरे तरह का फिल्टर आप्टिकल सीसे से बना होता है जो कि सबसे महंगा होता है फिल्टर एक प्रकार के होल्डर में फिट होता है जिसे लेन्स के उपर लगाना बहुत आसान होता है क्योंकि फिल्टर में चूड़ी लगी होती है।

7.4 फिल्टर के उपयोग में सावधानी

अगर आप फोटोग्राफी कर रहे हैं तो आपको किसी भी प्रकार के फिल्टर का प्रयोग करते समय दो चीजों का ध्यान जरूर रखा जाना चाहिये-

- पहला- प्रकाश सबसे पहले फिल्टर से होकर गुजरता है जिससे फोटो में एक्सपोजर थोड़ा कम हो जाता है क्योंकि कुछ प्रकाश का हिस्सा फिल्टर खुद ही सोख लेता है।
- दूसरा फोकस करने के पहले फिल्टर फिट कर देना चाहिये क्योंकि फिल्टर की मोटाई के हिसाब से फोकस केन्द्र बदल सकता है।

7.5 सारांश

फिल्टर के उपयोग से फोटोग्राफी में रचनात्मक परिवर्तन लाए जा सकते हैं। फिल्म फोटोग्राफी में फोटोग्राफर विभिन्न प्रकार के रचनात्मक फोटोग्राफ के लिये उपयोग किया करते थे, किन्तु डिजिटल फोटोग्राफी में बहुत सारे रचनात्मक प्रभाव संपादन के समय पर या फोटोग्राफ लेने के पहले फोटोग्राफर कैमरे की सेंटिंग में बदलाव करके हासिल कर लेते हैं। इसके बावजूद डिजिटल फोटोग्राफी में फिल्टर का महत्व कम नहीं हुआ है।

7.6 शब्दावली

- फिल्म फोटोग्राफी- फोटोग्राफी जिसमें फिल्म का उपयोग किया जाता है।
- एक्सपोजर- फोटोग्राफ में प्रदर्शित प्रकाश की मात्रा।

- एफ-स्टाप- अपरचर को मापने के लिये प्रयोग होने वाला यूनिट।
- फिल्टर- एक प्रकार का फोटोग्राफिक उपकरण है जो विभिन्न काम जैसे लेन्स की सुरक्षा, अल्ट्रावायलेट प्रकाश को दूर करने या फिर खास रंग को उभारने आदि कामों के लिये उपयोग किया जाता है। यह एक प्रकार का रंगीन सीसा या प्लास्टिक होता है जिसे लेन्स के उपर लगा दिया जाता है।

7.7 संदर्भ ग्रन्थ

- Weston, Chris, Mastering Filters for Photography: The Complete Guide to Digital and Optical Techniques for High-Impact Photos.
- Frost, Lee, The Photographer's Guide to Filters.
- Darlow, Andrew, Focus and Filter: Professional Techniques for Mastering Digital Photography and Capturing the Perfect Shot.
- यादव, नरेन्द्र सिंह, फोटोग्राफी : तकनीक एवं प्रयोग।

7.8 अभ्यास हेतु प्रश्न

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. फिल्टर के विभिन्न प्रकार की विवेचना उनके गुण-दोष के आधार पर कीजिए?
2. फिल्टर क्या है, डिजिटल और फिल्म फोटोग्राफी में फिल्टर के उपयोग में क्या अन्तर है?

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. फिल्टर किन चीजों से निर्मित होता है?
2. फिल्टर के उपयोग में क्या सावधानियां बरतनी चाहिए?

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

1. फिल्टर को परिभाषित कीजिए?
2. आकाश के रंग को ज्यादा नीला करने के लिए किस फिल्टर का उपयोग किया जाता है?

3. लेन्स की सुरक्षा के लिए किस फिल्टर का उपयोग किया जाता है?

4. कूल वार्म फिल्टर का उपयोग लिखिए?

5. नेचुरल डेन्सिटी फिल्टर का क्या काम होता है?

इकाई-8

एक्सपोजर ट्राएंगल (प्रकाश निर्धारण)

पाठ संरचना

8.0 उद्देश्य

8.1 एक्सपोजर ट्राएंगल : संकल्पना एवं महत्व

8.2 शटर स्पीड

8.3 अपरचर

8.3.1 डेप्थ आफ फील्ड

8.4 आईएसओ

8.4.1 फिल्म या रील

8.4.2 कलर निगेटिव फिल्म

8.4.3 ब्लैक एन्ड व्हाइट फिल्म

8.4.4 कलर स्लाइड फिल्म

8.4.5 एपीएस फिल्म

8.4.6 फिल्म के बारे में जानकारी

8.4.7 फिल्म स्पीड

8.4.8 एक्सपायरी डेट

8.4.9 फोटो या एक्सपोजर की संख्या

8.5 सारांश

8.6 शब्दावली

8.7 संदर्भ ग्रंथ

8.8 अभ्यास हेतु प्रश्न

8.0 उद्देश्य

- प्रस्तुत अध्याय के अध्ययन के उपरान्त आप एक्सपोजर ट्राएंगल से परिचित हो जाएंगे।
- इसके अलावा शटर स्पीड और उसके उचित प्रयोग का उपयोग करना संभव हो सकेगा।
- अपरचर और उसके विभिन्न आयामों का रचनात्मक प्रयोग किया जा सकता है।
- डेप्थ आफ फील्ड और उसके प्रयोग की विधि का उपयोग किया जा सकेगा।
- आईएसओ और उसके उपयोग का कौशल प्राप्त करना संभव हो पाएगा।

8.1 एक्सपोजर ट्राएंगल : संकल्पना एवं महत्व

फोटोग्राफी में सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण अवयव 'एक्सपोजर ट्राएंगल' होता है - एक्सपोजर का शाब्दिक अर्थ 'प्रकाश' होता है। फोटोग्राफी में एक्सपोजर का तात्पर्य एक निश्चित समय में कैमरे के सेंसर तक पहुँचने वाले प्रकाश की मात्रा से

होता है। इसी प्रकार 'ट्राएंगल' का शाब्दिक अर्थ 'त्रिकोण' होता है जिसका फोटोग्राफी के सन्दर्भ में तात्पर्य एक्सपोजर या प्रकाश की आवश्यकता के लिए तीन कारकों से है जो कि शटर स्पीड, अपरचर और आईएसओ से होता है। एक्सपोजर ट्राएंगल कोई ऐसा टूल नहीं है जिसका उपयोग फोटोग्राफ लेते समय किया जा सके। वास्तव में यह एक संकल्पना है जिससे फोटोग्राफी में प्रकाश की मात्रा को नियंत्रित किया जाता है। जबकि शटर स्पीड, अपरचर और आईएसओ अलग-अलग टूल हैं जिनका फोटो लेते समय उपयोग किया जाता है, इन तीनों का उपयोग न केवल एक्सपोजर अर्थात प्रकाश की मात्रा निर्धारित की जाती है बल्कि इसके प्रयोग से विभिन्न कलात्मक और रचनात्मक प्रयोग से आप चित्रों में विभिन्न दृष्टिकोण और विभिन्न कहानियों को निरूपित कर पाते हैं। फोटोग्राफी में प्रकाश के मात्रा का निर्धारण सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण संकल्पना है इसको समझने के लिये फोटोग्राफी का तात्पर्य जानना आवश्यक है क्योंकि बिना प्रकाश के फोटोग्राफी का अस्तित्व ही नहीं है। फोटोग्राफी दो शब्दों से मिलकर बना है, ग्रीक भाषा में फोटो का अर्थ प्रकाश और ग्राफी का अर्थ चित्रण होता है इस प्रकार फोटाग्राफी की परिभाषा प्रकाश का चित्रण करना होता है। प्रकाश की मात्रा का निर्धारण शटर स्पीड, अपरचर और आईएसओ को नियंत्रित करके किया जाता है जिसे नीचे दिये गये चित्र से समझा जा सकता है।

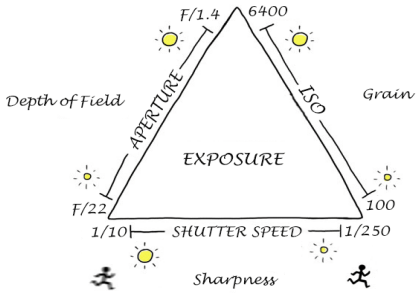

जैसा कि चित्र में आप देख पा रहे हैं कि एक्सपोजर के लिये तीनों कोनों पर तीन कारक मौजूद है जो अलग-अलग तरीके से प्रकाश का मात्रा को प्रभावित करते हैं। इसको अलग तरह से समझने के लिये आप एक कमरे (बन्द कमरा) का प्रारूप के बारे में सोच सकते है जिसमें अपरचर की संकल्पना दरवाजे के आकार से किया जा सकता है जितना बड़ा दरवाजा होगा उतना ज्यादा रोशनी अन्दर आएगी। इसी प्रकार से अगर फोटो में कम प्रकाश आ रहा है तो प्रकाश के दरवाजे या अपरचर को बड़ा किया जा सकता है। शटर स्पीड को समझने के लिये आप कल्पना कर सकते हैं कि दरवाजा कितनी देर के लिए खुलेगा, जितनी देर तक दरवाजा खुला रहेगा उतना ज्यादा प्रकाश भीतर कमरे में प्रवेश करेगा, उतना ज्यादा प्रकाश आपके चित्र में दृश्यमान होगा। इसको दूसरे तरीके से भी समझा जा सकता है कि कितने ज्यादा या कम गति से दरवाजा खुलता है, वह कैमरे की शटर स्पीड है जितना तेजी से दरवाजा खुलेगा उतना कम प्रकाश भीतर आ सकेगा। अब बात करते हैं कि आईएसओ की जिसके बारे में कल्पना किया जा सकता है, कमरे की उस दीवाल के जिसपर प्रकाश पड़ रहा है। आईएसओ उस दीवाल की संवेदनशीलता होती है, अगर दीवाल ज्यादा संवेदनशील होगी तो प्रकाश ज्यादा महसूस करेगी, उसी प्रकार आईएसओ सेंसर की संवेदनशीलता होती है और प्रकाश को आत्मसात करने और इमेज या चित्र को बनाने का काम सेंसर का होता है।

8.2 शटर स्पीड

ऊपर दिए गए कैमरे का उदाहरण शटर स्पीड को समझने में सहायक हो सकता है। वास्तव में शटर स्पीड कैमरे में चित्र बनाने के लिये पर्दे को कितने तेजी से खोलता और बन्द करता है, इससे ही शटर स्पीड का निर्धारण किया जाता है। सामान्य तौर पर शटर या पर्दा बन्द रहता है। जब शटर बटन को दबाया जाता है तो पर्दा खुलता है और प्रकाश को कैमरे के सेंसर को प्रकाशित किया जाता है और इस प्रकार एक फोटो खींची जाती है। शटर स्पीड को सामान्यतया सेकंड में मापा जाता है। प्रमुख रूप से शटर स्पीड प्रकाश की मात्रा को निर्धारित करने के लिए किया जाता है किन्तु इसके कई अन्य उपयोग किए जाते हैं। अगर शटर को कम समय के लिये जैसे कि 1/1000 सेकंड के लिये खोला जाता है तो बहुत कम समय के लिये प्रकाश सेंसर को प्रकाशित कर पाता है जिससे चित्र में कम प्रकाश दिखता है। कम प्रकाश वाले चित्र को अंडर एक्सपोस्ड चित्र कहा जाता है और चित्र में सम्बन्धित विवरण अस्पष्ट होते हैं। अंडर एक्सपोस्ड चित्र काला भी दिखता है।

शटर स्पीड सामान्यतया 1/4000 सेकंड से लेकर 30 सेकंड तक डीएसएलआर कैमरों में पाया जाता है। जहां 1/4000 बहुत तेज शटर स्पीड की श्रेणी में आयेगा जिससे एक्सपोजर या प्रकाशित करने का समय कम मिलेगा और चित्र काला या फिर ब्लर दिखायी पड़ेगा। किसी तेज गति से चल रही चीज का फोटो लेने के लिये तेज शटर स्पीड का प्रयोग किया जाता है और बाकी प्रकाश की कमी अपरचर या फिर आईएसओ से या फिर दोनों को संतुलित कर पूरा किया जा सकता है। धीमा शटर स्पीड का उपयोग रात में वाइल्ड लाइफ फोटोग्राफी आदि में किया जाता है। शटर के देर तक खुले रहने पर सब्जेक्ट के गति से ब्लर तस्वीर प्राप्त होती है। सामान्यतया ब्लर एक प्रकार की समस्या या न्वायस माना जाता है किन्तु कई बार फोटोग्राफर ब्लर इमेज का उपयोग कलात्मकता के लिये भी कर लेते है जैसे जल प्रपात की धार का चित्र थोडा धीमा शटर स्पीड एक प्रकार दूधिया चित्र प्रस्तुत कर सकता है।

8.3 अपरचर

अपरचर 'एक्सपोजर ट्राएंगल' के तीन अवयव में से सबसे महत्वपूर्ण भाग है। वास्तव में अपरचर लेंस के दरवाजे की साइज को नियंत्रित करने का उपक्रम है जिससे फोटोग्राफी के समय प्रकाश को अन्दर आने में प्रयोग किया जाता है। जैसा कि हमारी आंख में पुतली की साइज को बड़ा या छोटा करके ज्यादा या कम प्रकाश को हमारी आंख में आने देते हैं। उसी प्रकार अपरचर के साइज को बड़ा या छोटा करके ज्यादा या कम प्रकाश लिया जाता है। अपरचर को नापने का पैमाना या यूनिट को एफ-स्टाप (F-Stop) कहा जाता है।

जैसा कि नीचे के चित्र में दिखाया गया है, बायें से सबसे पहले चित्र में एफ स्टाप 16 है जिसमें प्रकाश को आने के लिये छिद्र का साइज बहुत छोटा है जिससे अपेक्षाकृत कम प्रकाश प्राप्त होगा उसके विपरीत एफ 1.4 में छिद्र का साइज सबसे बड़ा है जिससे ज्यादा प्रकाश प्राप्त होता है।

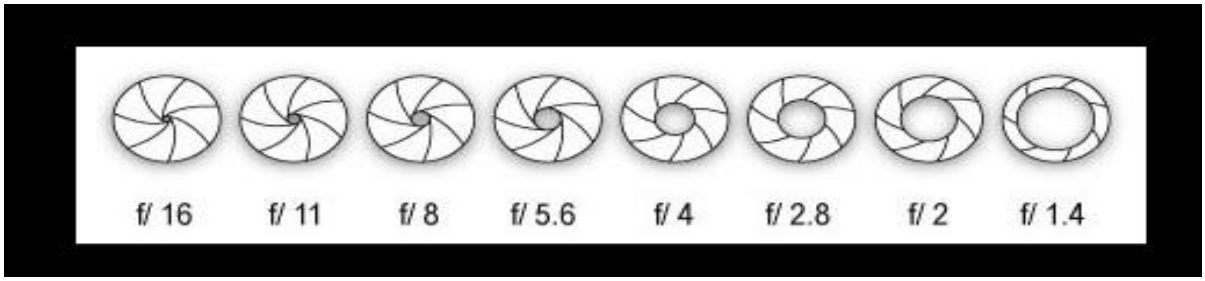

गौर करने की बात है कि एफ-16 से एफ-11 अपरचर करने पर एफ-16 से प्राप्त हो रहे प्रकाश का दुगुना प्रकाश मिलेगा और यह हर नंबर के घटने पर पहले वाले से दुगुना प्रकाश बढ़ता जायेगा। इस प्रकार एफ-16 में मिलने वाले प्रकाश की तुलना अगर एफ-5.6 से की जाय तो आठ गुना ज्यादा प्रकाश प्राप्त होगा। अपरचर को बदलने के लिये सामान्य तौर पर डायल मोड के आधार पर किया जा सकता है-अपरचर प्रायरिटी (AV mode) या फिर मैनुअल मोड (M)।

अपरचर प्रायरिटी में फोटोग्राफर अपरचर आवश्यकता के अनुसार रख सकते हैं जिससे बाकी चीजें जैसे आईएसओ और शटर स्पीड अपने आप बदल जातीं है जबकि मैनुअल मोड में सभी सेटिग में बदलाव फोटोग्राफर के अनुसार किया जा सकता है। कैमरे मे मैनुअल मोड या अपरचर प्रायरिटी मोड को बदलने के बाद फोटोग्राफर कम्पनी या माडल के अनुसार बदला जा सकता है।

8.3.1 डेप्थ आफ फील्ड

अपरचर प्रकाश को कम या ज्यादा करने के लिये प्रयोग किया जाता है किन्तु यह डेप्थ आफ फील्ड को भी नियंत्रित करने में किया जाता है। डेप्थ आफ फील्ड फोटोग्राफ में फोकस की वह मात्रा है जो सामने से लेकर पीछे तक फोकस में रहती है। सामान्यतया दो प्रकार के डेप्थ आफ फील्ड होते है - पहला डीप (गहरा) और दूसरा शैलो या फिर उथला। शैलो डेप्थ आफ फील्ड में केवल सब्जेक्ट फोकस में होता है बाकी का अगला और पिछला हिस्सा फोकस में नहीं होता है जिससे सब्जेक्ट उभरकर और ज्यादा स्पष्ट दिखायी पड़ता है। इस तरह की फोटो का चलन लगातार बढ़ता जा

रहा है। इस प्रकार की फोटो को प्राप्त करने के लिये एफ-स्टाप का नंबर कम रखना होगा जिससे ज्यादा प्रकाश आयेगा और साथ ही कम गहरा या शैलो डेप्थ आफ फील्ड प्राप्त होगा।

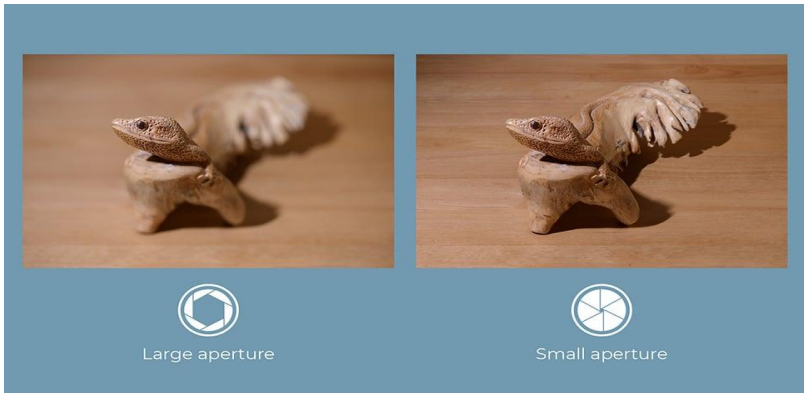

फलस्वरूप फोटोग्राफ का बैकग्राउंड और फोरग्राउंड ब्लर या धुंधला दिखायी पडता है। इस प्रकार कम गहराई के लिये एफ-स्टाप कम रखना होगा। इसके विपरीत कुछ तस्वीरों में डीप या गहरे डेप्थ आफ फील्ड की आवश्यकता होती है जिसमें सब्जेक्ट के साथ साथ बैकग्राउंड और फोरग्राउंड भी फोकस में रखना होता है। ऐसे चित्र के लिये अपरचर का नंबर ज्यादा रखा जाता है ज्यादा नंबर से लेंस के छिद्र का साइज छोटा हो जाता है और कम प्रकाश प्राप्त होता है साथ ही साथ डीप डेप्थ अर्थात फोटो में दिख रहे सब तत्व फोकस में होते हैं।

8.4 आईएसओ

आईएसओ, एक्सपोजर ट्रायंगल का एक प्रमुख भाग है, आईएसओ के साथ अपरचर और शटर स्पीड के संयोजन से एक प्रकाशित तस्वीर तैयार किया जाता है। आईएसओ फिल्म फोटोग्राफी में उपयोग होने वाली रील या फिल्म की संवेदनशीलता को व्यक्त करती है अर्थात जितना ज्यादा नंबर उतना ज्यादा संवेदनशील फिल्म। अगर फिल्म ज्यादा संवेदनशील होगी तो फोटो में ज्यादा प्रकाश प्राप्त होगा। आईएसओ-*इन्टरनेशनल आर्गनाइजेशन आफ स्टैण्डर्डाइजेशन* का संक्षिप्त रूप है। डिजिटल कैमरों के उपयोग में भी यह सेंसर की संवेदनशीलता को ही दर्शाता है। आईएसओ सामान्यतया 100 से शुरू होता है और 200 के बाद 400, 800 और दुगुना होते हुये 64000 और कुछ कैमरों में 128000 तक होता है किन्तु कुछ कैमरे बनाने वाली कम्पनियां 100 और 200 के बीच के नंबर में भी आईएसओ का बनाती है।

सबसे कम संख्या 100 सबसे कम संवेदनशील सेटिंग मानी जाती है, जिसमें सबसे कम प्रकाश की मात्रा प्राप्त होती है जैसे-जैसे नंबर दुगुना होता जायेगा प्रकाश की मात्रा भी बढ़ती जाएगी। खास परिस्थिति को छोड़कर फोटोग्राफी के दौरान सेंसर की संवेदनशीलता या यों कहें आईएसओ 100 या न्यूनतम ही रखना चाहिये। जैसे-जैसे आईएसओ को बढ़ाते जाते हैं, तस्वीर में एक शोर या समस्या दिखायी पड़ती है जिसे ग्रेन्स कहा जाता है। फोटो में दिखायी पड़ने लगता

है। ग्रेंस फोटो में दाने जैसी आकृति आने को कहते हैं। वैसे तो 400 या 800 तक ग्रेंस दिखाई नहीं पड़ता किन्तु इससे ज्यादा आईएसओ का उपयोग सावधानीपूर्वक करना चाहिये।

आईएसओ का ज्यादा नंबर तभी उपयोग किया जा सकता है जब एक्सपोजर ट्रायंगल के दूसरे उपादान जैसे शटर स्पीड और अपरचर के माध्यम से प्रकाश की उपलब्धता नहीं हो पा रही हो-उदाहरण के लिए आप एक चिड़िया की तस्वीर कम प्रकाश की उपलब्धता में करना चाहते हैं, ऐसे में शटर स्पीड आपको तीव्र करना होता है जिससे कम प्रकाश मिलेगा। अपरचर का उपयोग भी सीमित तरीके से किया जाना चाहिये अब या तो ब्लर फोटो प्राप्त किया जाय या फिर ग्रेन्स की चिंता किये बिना एक शार्प फोकसयुक्त प्रकाशित फोटो प्राप्त करने के लिये कैमरे में लगे सेंसर की संवेदनशीलता अर्थात आईएसओ को आवश्यकतानुसार बढ़ाया जाना चाहिये। यह महत्वपूर्ण है कि कुछ फोटोग्राफर ग्रेन्स का उपयोग भी कलात्मक फोटो को बनाने में करते हैं। जैसे किसी ब्लैक और वाइट या श्वेत-श्याम फोटो में ग्रेन्स का उपयोग कलात्मकता के लिए किया जाता है।

8.4.1 फिल्म या रील

अगर आप डिजिटल के अलावा फिल्म फोटोग्राफी के बारे में ज्यादा रुचि रखते हैं तो नीचे दिये गये फिल्म के बारे में अध्ययन समीचीन होगा। फिल्म एक लाइट टाइट बाक्स (जिसमें प्रकाश नहीं पहुंच सकता) में बन्द रहता है। इस कैसेट को कैमरे के फिल्म लोड करने वाले स्थान पर लोड कर दिया जाता है, जिससे फिल्म के पीछे का भाग लेन्स के संपर्क में आ सके। फोटोग्राफर के एक तस्वीर ले लेने के बाद अपने-आप अगला हिस्सा लेन्स के सामने आ जाता है इस प्रकार 24 या 36 जितने भी तस्वीर लेने की जगह होती है जब पूरी हो जाती है तो उसे अंधेरे स्थान में अनलोड अर्थात निकाला जाता है जिसे लैब में भेजकर प्रिंट या स्कैन के बाद डिजिटल रूप में प्राप्त किया जाता है। विभिन्न उपयोग के हिसाब से कई तरह के फिल्मों का उपयोग किया जाता है जिनमें से प्रमुख निम्नवत हैं-

1. कलर निगेटिव फिल्म

2. ब्लैक एवं वाइट फिल्म

3. कलर स्लाइड फिल्म

4. ब्लैक एवं वाइट स्लाइड फिल्म

5. एपीएस कलर निगेटिव

8.4.2 कलर निगेटिव फिल्म

इसका उपयोग सबसे ज्यादा किया जाता है इसमें 35 एमएम कैमरे के लिये विभिन्न प्रकार के आइएससो वाले फिल्म का उपयोग किया जाता है। कलर निगेटिव से कलर प्रिंट या ब्लैक एन्ड व्हाइट प्रिंट को सस्ते में तैयार किया जा सकता है। कलर लैब से फोटो को स्कैन करके डिजिटल रूप में सेव किया जा सकता है।

चित्रः कलर निगेटिव फिल्म

8.4.3 ब्लैक एन्ड व्हाइट फिल्म

ब्लैक एन्ड व्हाइट फिल्म में केवल दो रंग के संयोजन से तस्वीर बनती है कलर निगेटिव फिल्म से ब्लैक एन्ड व्हाइट चित्र से ज्यादा सस्ता ब्लैक एन्ड व्हाइट फिल्म का उपयोग होता है।

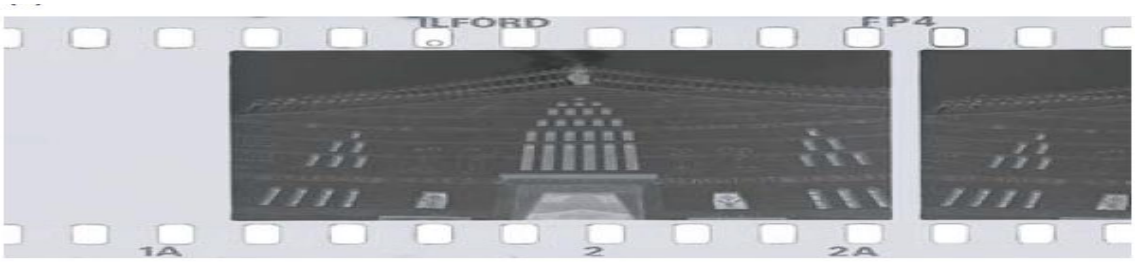

चित्रः ब्लैक एन्ड व्हाइट फिल्म

8.4.4 कलर स्लाइड फिल्म

कलर स्लाइड फिल्म इस प्रकार से बनाया जाता है जिससे कि निगेटिव की जगह पर पोजिटिव कलर चित्र बनाया जा सके। इन तस्वीरों को प्रोजेक्टर के माध्यम से स्लाइड प्रोजेक्ट किया जा सकता है। कलर स्लाइड फिल्म से कलर प्रिंट बनाना अपेक्षाकृत महंगा होता है। कलर स्लाइड से तस्वीर लेते समय प्रकाश का बहुत ध्यान रखने की जरूरत होती है।

8.4.5 एपीएस फिल्म

एपीएस का विस्तार एडवान्सड फोटो सिस्टम है। वर्ष 1996 में इसको बनाया गया था किन्तु आज इसका उपयोग बन्द कर दिया गया है। एपीएस फिल्म की चौड़ाई 24 मिलीमीटर होती थी जिसकी वजह से 35 मिलीमीटर कैमरे में फिट नहीं हो पाती थी। एपीएस फिल्म में पारदर्शी चुम्बकीय लेपन पर यह संदेश दर्ज रहता था कि फिल्म का एस्पेक्ट रेशिओ कितना होगा जिससे लैब में फोटो को बनाते समय 'एस्पेक्ट रेशिओ' के हिसाब से प्रिंट तैयार किए जाते थे।

8.4.6 फिल्म के बारे में जानकारी

फिल्म के बाक्स में फिल्म के बारे में सारी जानकारी दी गई होती है। फिल्म के प्रकार, उसके आकार, फिल्म स्पीड, एक्सपोजर की संख्या अर्थात फिल्म में कुल कितने चित्र लिये जा सकते हैं और एक्सपायरी डेट आदि की जानकारी बाक्स पर दर्ज होती है।

8.4.7 फिल्म स्पीड

फिल्म स्पीड को फिल्म के आइएसओ के आधार पर मापा जाता है। जितना ज्यादा आइएसओ होगा, फिल्म को उतना तेज माना जाता है, जिसके फलस्वरूप फिल्म ज्यादा संवेदनशील बनती है और फास्ट फिल्म या तेज फिल्म से कम प्रकाश में भी विवरण स्पष्ट दिखायी पड़ता है, लेकिन जितना ज्यादा फास्ट फिल्म होगी उतना ही चित्र में ग्रेन्स बढ़ जाता है जिससे चित्र की गुणवत्ता पर विपरीत असर डालती है।

फिल्म के आइएसओ को दुगना करने पर वही एक्सपोजर आधे प्रकाश में मिल जायेगा अर्थात ऐसी परिस्थिति जिसमें कम प्रकाश उपलब्ध हो फास्ट फिल्म का उपयोग किया जा सकता है। फास्ट फिल्म की कीमत भी ज्यादा होती है। इसके विपरीत स्लो फिल्म का उपयोग पर्याप्त प्रकाशित जगहों पर किया जाता है स्लो फिल्म में ग्रेन्स के आने का खतरा नहीं होता है और इनकी कीमत भी कम होती है। फास्ट फिल्म में कलर और टोन की विसंगति के आ जाने की आशंका बनी भी बनी रहती है। 100 आइएसओ तक की फिल्म को स्लो फिल्म माना जाता है। 200 से 400 तक आइएसओ को मीडियम माना जाता है जबकि 800 या उससे ज्यादा की फिल्म को फास्ट फिल्म माना जाता है।

8.4.8 एक्सपायरी डेट

फिल्म बाक्स में एक्सपायरी डेट दर्ज होती है जिसके बाद फिल्म की संवेदनशीलता घटती जाती है तथा उसके रंग और टोन में विसंगति आने की संभावना बढ़ जाती है। फिल्म को शीलन, अत्यधिक ताप आदि से बचाकर रखा जाना चाहिये जिससे उसे ज्यादा समय तक सही रूप में रखा जा सके।

8.4.9 फोटो या एक्सपोजर की संख्या

यहां पर एक्सपोजर दूसरे अर्थ में प्रयोग किया जाता है। एक्सपोजर की संख्या से तात्पर्य एक रील या फिल्म में लिये जाने वाले फोटो की संख्या से है। सामान्यतया 35 एमएम कैमरे के लिये एक रील में 24 या 36 फोटो को संख्या होती है। कुछ रील में फोटो की संख्या 12 ही होती है।

8.5 सारांश

एक्सपोजर ट्रायंगल फोटोग्राफी का सबसे महत्वपूर्ण अध्याय है जिसके कौशल के बिना प्रोफेशनल फोटोग्राफी संभव नहीं है। यद्यपि आज डिजिटल फोटोग्राफी का चारों ओर बोलबाला है, जिसमें आवश्यकता के अनुसार सभी चीजें कैमरा भांप कर उचित सेटिंग हमारे लिये उपलब्ध करा देता है किन्तु अपरचर, शटर स्पीड और आईएसओ की जानकारी से फोटोग्राफर विभिन्न कलात्मक तस्वीर ले सकता है। डिजिटल फोटोग्राफी में चित्र का सेंसर पर बनना, कैमरे के साफ्टवेयर में प्रोसेस होने और मेमोरी कार्ड में सेव होने के तीनों कार्यो के लिये फिल्म अकेले करता है। फिल्म फोटोग्राफी में एक्सपोजर की संख्या नीयत होने की वजह से फोटोग्राफर हमेशा सोच-समझ कर चित्र लेता है, जिसे लगातार करने से फोटोग्राफर प्रोफेशनल बनने में मदद करता है। इसलिये आईएसओ के साथ फिल्म की जानकारी भी महत्वपूर्ण हो जाती है।

8.6 शब्दावली

- **अपरचर -** अपरचर लेंस के दरवाजे की साइज को नियंत्रित करने का उपक्रम है जिससे फोटोग्राफी के समय प्रकाश को अन्दर आने में प्रयोग किया जाता है। अपरचर के साइज को बडा या छोटा करके ज्यादा या कम प्रकाश लिया जाता है। अपरचर को नापने का पैमाना या यूनिट को एफ-स्टाप (F-stop) कहा जाता है।

- **डेप्थ आफ फील्ड -** प्रकाश को कम या ज्यादा करने के लिये प्रयोग किया जाता है किन्तु यह डेप्थ आफ फील्ड को भी नियंत्रित करने में किया जाता है। डेप्थ आफ फील्ड फोटोग्राफ में फोकस की वह मात्रा है जो सामने से लेकर पीछे तक फोकस में रहती है।
- **आईएसओ** - एक्सपोजर ट्रायंगल का एक प्रमुख भाग है। आईएसओ के साथ अपरचर और शटर स्पीड के संयोजन से एक प्रकाशित तस्वीर तैयार किया जाता है। आईएसओ फिल्म फोटोग्राफी में उपयोग होने वाली रील या फिल्म की संवेदनशीलता को व्यक्त करती है।

8.7 संदर्भ ग्रंथ

- Smith, Dexter, Better Photography: Understanding the Exposure Triangle
- The Exposure Triangle: Ultimate Guide
- Mills, C.F. How Exposure Affects Your Photos a Beginners Guide

8.8 अभ्यास हेतु प्रश्न

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. फिल्म को परिभाषित कीजिये।

2. फिल्म के विभिन्न प्रकार की विवेचना कीजिये।

3. फिल्म में स्पीड या गति किसे कहते हैं?

4. एपीएस फिल्म क्यों बन्द हो गई, वर्णन कीजिये।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. डेप्थ ऑफ फील्ड क्या है।

2. कलर निगेटिव फिल्म को समझाइए।

3. कलर स्लाइड फिल्म के बारे में लिखिए।

4. डिजिटल फोटोग्राफी के बारे में लिखिए।

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

1. एक्सपोजर क्या है।

2. अपरचर क्या है।

3. आईएसओ का पूरा नाम क्या है।

4. एपीएस फिल्म क्या है।

इकाई-9

प्रकाश व्यवस्था एवं उपकरण

पाठ संरचना

9.0 उद्देश्य

9.1 प्रस्तावना

9.2 फोटोग्राफी में प्रकाश व्यवस्था का महत्त्व

9.3 मूल प्रकाश व्यवस्था

9.4 थ्री पॉइंट लाइटिंग एवं फोर पॉइंट लाइटिंग

9.5 परम्परागत प्रकाश व्यवस्था

9.6 प्रकाश उपकरण एवं उनके प्रकार

9.7 प्रकाश के सहायक उपकरण

9.8 सारांश

9.9 शब्दावली

9.10 सन्दर्भ ग्रन्थ

9.11 अभ्यास हेतु प्रश्न

9.0 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के उपरान्त आप

- प्रकाश एवं फोटोग्राफी के अन्तःसम्बन्ध को समझ सकेंगे।
- फोटोग्राफी के दौरान की जाने वाली प्रकाश व्यवस्था से परिचित हो सकेंगे।
- थ्री पॉइंट एवं फोर पॉइंट लाइटिंग व्यवस्था के तकनीकी एवं रचनात्मक पक्ष को जान सकेंगे।
- मूल प्रकाश व्यवस्था से परिचित हो सकेंगे।
- परम्परागत प्रकाश व्यवस्था एवं उसके विविध उपयोग को जान सकेंगे।
- विविध प्रकाश उपकरणों से परिचित हो सकेंगे।
- फोटोग्राफी के दौरान उपयोग किये जाने वाले प्रकाश सम्बन्धित सहायक उपकरणों के उपयोग को समझ सकेंगे।

9.1 प्रस्तावना

प्रकाश फोटोग्राफी प्रक्रिया का अनिवार्य अंग है, इसके बिना फोटोग्राफी की कल्पना नहीं की जा सकती। सही प्रकाश व्यवस्था न सिर्फ इच्छित परिणाम प्राप्त करने में सहायक होती है अपितु यह सजीव फोटो प्राप्त करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है जबकि प्रकाश व्यवस्था के समय की हुई कोई भी गलती परिणाम को ख़राब कर सकती है। प्रकाश का उचित प्रयोग किया जा सके, इसके लिए एक रचनात्मक एवं तकनीकी दृष्टि से उचित प्रकाश व्यवस्था जरूरी है । प्रकाश व्यवस्था वास्तव में विज्ञान एवं कला दोनों का सम्मिश्रण है अर्थात इस दौरान हमें न सिर्फ विज्ञान के सिद्धान्तों का पालन करना होता है अपितु प्रकाश को कलात्मक रूप में सब्जेक्ट के ऊपर डालना होता है । अच्छी प्रकाश व्यवस्था न सिर्फ इच्छित परिणाम प्राप्त करने के लिए आवश्यक है अपितु परिणाम को ग्राह्य एवं आकर्षक बनाने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

एक अच्छे फोटोग्राफर के लिए यह अति आवश्यक है कि उसे प्रकाश व्यवस्था का ज्ञान हो जिससे वह परिस्थिति अनुसार उसका उपयोग कर सके। प्रकाश को किस दिशा से, किस कोण से, कितनी दूरी से, एवं कितनी तीक्ष्णता के साथ सब्जेक्ट तक पहुँचाना है, का समुचित ज्ञान होना फोटोग्राफर के लिए अति आवश्यक है। जब भी हम फोटो लेने के लिए किसी स्थान पर जाते हैं, तो सबसे पहले उपलब्ध प्रकाश को निरीक्षण करना जरुरी होता है। यदि उपलब्ध प्रकाश अनुकूल नहीं है तो अन्य उपलब्ध विकल्प के बारे में सोचना होता है। इनडोर अर्थात स्टूडियो में प्रकाश व्यवस्था को पूरी तरह से नियन्त्रित करना संभव होता है जबकि आउटडोर फोटो शूट के समय यह कार्य काफी मुश्किल होता है एवं सामान्य तौर पर आंशिक रूप से ही हम इसे नियन्त्रित कर सकते हैं।

9.2 फोटोग्राफी में प्रकाश व्यवस्था का महत्त्व

फोटोग्राफी आवश्यक एवं इच्छित प्रकाश को कैमरे के सेंसर तक पहुँचाने की एक रचनात्मक विधा है जिसमें तार्किक प्रकाश व्यवस्था का महत्वपूर्ण योगदान होता है। फोटोग्राफी में अच्छी प्रकाश व्यवस्था की वही भूमिका है जो चित्रकारी में रंगों की होती है। जिस प्रकार से रंगों का सही चुनाव एवं उचित संयोजन चित्र में जान डाल देता है ठीक वैसे ही प्रकाश का सही चुनाव एवं विभिन्न लाइटिंग का उचित संयोजन फोटोग्राफ को सजीव बना देता है। जब भी हम तस्वीर लेने की योजना बनाते हैं तो उपलब्ध प्रकाश, योजना का अति आवश्यक अंग होता है। यदि उपलब्ध प्रकाश पर्याप्त नहीं होता है तो प्रकाश के किसी स्रोत के माध्यम से हम आवश्यक प्रकाश प्राप्त करते हैं। कुछेक अवसर पर हमें एक विशेष प्रकार की प्रकाश व्यवस्था करनी पड़ती है तो वहीं कभी-कभी आस-पास उपलब्ध प्रकाश का ही उचित एवं तार्किक प्रयोग करना होता है।

एक अच्छे चित्र को कैमरे में कैद करने के लिए एक उचित प्रकाश व्यवस्था जरुरी है। इस दौरान हमारे पास कलात्मक स्वतंत्रता तो होती है परन्तु वह भी वैज्ञानिक कसौटी पर खरी उतरनी चाहिए अर्थात कलात्मकता चित्र को आकर्षक एवं प्रभावी बनाये तो सही है जबकि यह चित्र की प्रभावशीलता कम करे तो यह सर्वथा अनुचित होगी। प्रकाश व्यवस्था की कुछ परम्परागत तकनीकी आज भी अवसर विशेष पर प्रयुक्त की जाती है, तो वहीं मूल प्रकाश व्यवस्था के रूप में 'की' 'फिल' एवं 'बैक' लाइट का सही संयोजन भी आकर्षक फोटो प्राप्त करने के लिए महत्वपूर्ण माना जाता है।

9.3 मूल प्रकाश व्यवस्था (Basic Lighting Technique)

मूल प्रकाश व्यवस्था के अन्तर्गत प्रायः 'थ्री पॉइंट लाइटिंग' की जाती है। इस प्रकार की प्रकाश व्यवस्था कृत्रिम प्रकाश स्रोत के साथ आसानी से की जा सकती है। इसमें 'की लाइट', 'फिल लाइट', एवं 'बैक लाइट' को विशेष रूप से व्यवस्थित किया जाता है जिससे फ्रेम में इच्छित प्रभाव उत्पन्न किया जा सके। स्टूडियो के अन्दर फोटोग्राफी के दौरान यह प्रकाश व्यवस्था एक बेहतर विकल्प मानी जाती है। फ्रेम के अन्दर किसी एक सब्जेक्ट के होने की दशा में यह प्रकाश व्यवस्था एक बेहतर परिणाम प्रदान करती है। यही कारण है कि पोर्ट्रेट फोटोग्राफी के दौरान इस प्रकाश

व्यवस्था को महत्व दिया जाता है। इस प्रकाश व्यवस्था के दौरान हम प्रकाश स्रोत की दिशा, कोण, दूरी, एवं तीक्ष्णता का विशेष रूप से ध्यान रखते हैं जिससे एक अच्छा चित्र प्राप्त किया जा सके। यह प्रकाश व्यवस्था न सिर्फ तकनीकी रूप से अच्छी मानी जाती है बल्कि रचनात्मक रूप से भी यह बेहतर परिणाम देने में सक्षम है। इस प्रकाश व्यवस्था को हम निम्नवत समझ सकते हैं-

9.3.1 की लाइट (Key Light)- 'की लाइट' 'थ्री पॉइंट लाइटिंग' अथवा 'फोर पॉइंट लाइटिंग' व्यवस्था में सबसे प्रमुख मानी जाती है। सामान्य तौर पर इसके लिए स्पॉट लाइट के उपकरण प्रयोग में लाये जाते हैं। इस लाइट का प्रयोग सब्जेक्ट को प्रकाशमय अथवा चिन्हांकित करने के लिए किया जाता है। यह लाइट सब्जेक्ट के सामने से लगभग 30-45 डिग्री के कोण से प्रयोग की जाती है। आउटडोर फोटोग्राफी के दौरान सूर्य की रौशनी को 'की लाइट' के रूप में प्रयुक्त किया जाता है। इनडोर फोटोग्राफी के दौरान हमारे पास कई विकल्प उपलब्ध हैं जिनका आवश्यकतानुसार प्रयोग किया जा सकता है। यह लाइट सब्जेक्ट के चेहरे के एक तरफ, नाक के बगल में, एवं गर्दन के निचले हिस्से में हल्की छाया उत्पन्न करती है जिसका ध्यान रखना आवश्यक होता है। आवश्यकतानुसार हम इसके प्रभाव को फ्रेम में रख सकते हैं अथवा समाप्त कर सकते हैं। आम तौर पर यह माना जाता है कि सब्जेक्ट का चेहरा पूरी तरह प्रकाशमय होना चाहिए परन्तु कई अवसरों पर यह धारणा सही नहीं होती, विशेष तौर पर पोर्ट्रेट फोटोग्राफी के दौरान ऐसे प्रभाव के साथ सब्जेक्ट का मूड एवं भाव स्पष्ट नहीं होता। ऐसी दशा में फोटोग्राफ नीरस एवं भाव-रहित दिख सकती है।

आउटडोर फोटोग्राफी हो या फिर इनडोर फोटोग्राफी, 'की लाइट' का तार्किक एवं रचनात्मक प्रयोग न सिर्फ सही एक्सपोजर के लिए जरूरी है बल्कि सब्जेक्ट को खुबसूरत दिखाने में भी इसकी महत्वपूर्ण भूमिका होती है। सामान्यतया इसे सब्जेक्ट के थोड़ा ऊँचा रखा जाता है परन्तु फोटोग्राफर आवश्यकतानुसार इसकी ऊँचाई का निर्धारण करने को स्वतन्त्र होता है।

9.3.2 फिल लाइट (Fill Light)- 'फिल लाइट' का प्रयोग मुख्य तौर पर फ्रेम में 'की लाइट' द्वारा उत्पन्न छाया को मिटाने के लिए किया जाता है। इसे 'की लाइट' के दूसरी तरफ उसी कोण पर रखते हैं जिस कोण से 'की लाइट' प्रयोग में लाई जाती है। यह 'थ्री पॉइंट लाइटिंग' अथवा 'फोर पॉइंट लाइटिंग' व्यवस्था में सहायक लाइट की भूमिका निभाती है। 'की लाइट' की तुलना में यह 'सॉफ्ट' होती है एवं आवश्यकतानुसार इसकी तीक्ष्णता को आधा, एक चौथाई,

अथवा उससे भी कम रखा जाता है। सामान्य तौर पर इसके लिए डिफ्यूज्ड लाइट के उपकरण प्रयुक्त किये जाते हैं। 'की लाइट' द्वारा उत्पन्न छाया को किस स्तर तक समाप्त करना है, का निर्धारण उपयोग की जाने वाली 'फिल लाइट' पर निर्भर करता है। स्टूडियो में प्रयोग किया जाने वाला अम्ब्रेला रिफ्लेक्टर हो या डिफ्यूजर या फिर सॉफ्ट बॉक्स, फिल लाइट प्राप्त करने के लिए कई विकल्प उपलब्ध हैं। आउटडोर फोटोग्राफी के दौरान इसके लिए सिल्वर अथवा गोल्डन रिफ्लेक्टर प्रयोग में लाये जा सकते हैं।

9.3.3 बैक लाइट (Back Light)-

'बैक लाइट' 'थ्री पॉइंट लाइटिंग' अथवा 'फोर पॉइंट लाइटिंग' का अहम हिस्सा है। इसे सब्जेक्ट के पीछे रखा जाता है। सामान्य तौर पर इस लाइट की ऊँचाई सब्जेक्ट से अधिक रखी जाती है अर्थात प्रकाश किरणें सब्जेक्ट पर थोड़ी ऊपर से पड़ती हैं। इससे प्रकाश स्रोत का फ्रेम में आने अथवा किसी प्रकार की बाधा उत्पन्न होने का खतरा भी समाप्त हो जाता है। कुछ विशेष प्रभाव उत्पन्न करने के लिए प्रकाश स्रोत को सब्जेक्ट के नीचे रखकर प्रयुक्त किया जाता है। बैक लाइट के अभाव में सब्जेक्ट के सिर की आउटलाइन स्पष्ट नहीं होती है। कभी- कभी इसे एक विशेष कोण से 'हेयर लाइट' के रूप में भी प्रयोग किया जाता है जिससे बालों को टेक्सचर प्रदान करने में मदद मिलती है। इस लाइट का प्रयोग करते समय इसकी तीक्ष्णता का विशेष रूप से ध्यान रखा जाना चाहिए अन्यथा यह 'की लाइट' के प्रभाव को कम करने के साथ ही फ्रेम में कालापन ला सकती है। यह लाइट सब्जेक्ट को पृष्ठभूमि से अलग करती है। इसीलिए इसे 'सेपेरेशन लाइट' भी कहा जाता है। इस लाइट के प्रयोग से फ्रेम में गहराई उत्पन्न करने एवं सब्जेक्ट को त्रि-आयामी रूप प्रदान करने में भी मदद मिलती है।

9.3.4 बैक ग्राउंड लाइट (Background Light)-

इस लाइट का प्रयोग 'फोर पॉइंट लाइटिंग' व्यवस्था में किया जाता है। जब किसी फ्रेम में सब्जेक्ट के अलावा उसकी पृष्ठभूमि में मौजूद तत्व भी प्रमुख होता है तो 'की' 'फिल', एवं 'बैक लाइट' के अलावा एक और लाइट को सब्जेक्ट के पीछे से बैक लाइट के उलट दिशा में रखकर प्रयोग किया जाता है। यह लाइट 'की लाइट' के प्रयोग से पृष्ठभूमि में उत्पन्न छाया को भी समाप्त करती है। 'क्रोमा' के साथ फोटो शूट करने की दशा में इस लाइट का

प्रमुखता से प्रयोग किया जाता है। विज्ञापन के लिए फोटो शूट करते समय अक्सर ही बैकग्राउंड लाइट का प्रयोग देखने को मिलता है जिससे फोटो-सम्पादन के समय मदद मिलती है। इस लाइट के प्रयोग से पृष्ठभूमि की तरफ ध्यानाकर्षित करने में मदद मिलती है। इसके अतिरिक्त यह लाइट विषय एवं पृष्ठभूमि को अलग करने में भी मदद करती है।

9.4 थ्री पॉइंट लाइटिंग एवं फोर पॉइंट लाइटिंग

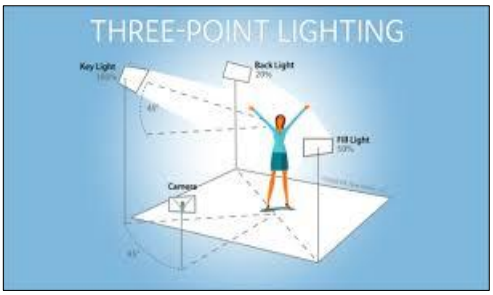

स्टूडियो के अन्दर किसी व्यक्ति की फोटो लेते समय हम मुख्य रूप से 'थ्री पॉइंट लाइटिंग' का उपयोग करते हैं। यह प्रकाश व्यवस्था सब्जेक्ट को आकर्षक रूप में प्रस्तुत करने में प्रभावी मानी जाती है। थ्री पॉइंट लाइटिंग में 'की लाइट' जहाँ मुख्य प्रकाश की भूमिका निभाती है वहीं 'फिल लाइट' का कार्य मुख्य प्रकाश स्रोत द्वारा उत्पन्न छाया को दूर करना होता है जबकि बैक लाइट का उपयोग सब्जेक्ट के पीछे उत्पन्न हो रहे छाया को दूर करने अथवा विशेष प्रभाव को उत्पन्न करने के लिए किया जाता है। 'पोर्ट्रेट' फोटोग्राफी के समय यह प्रकाश व्यवस्था सर्वाधिक महत्वपूर्ण मानी जाती है जो 'सब्जेक्ट' को उभारने के साथ ही उत्पन्न छाया को दूर करती है, साथ ही सब्जेक्ट के पिछले हिस्से को पार्श्व हिस्से में मिलने से बचाती है जिससे 'सब्जेक्ट' एवं बैकग्राउंड के बीच दूरी स्पष्ट करने में मदद मिलती है।

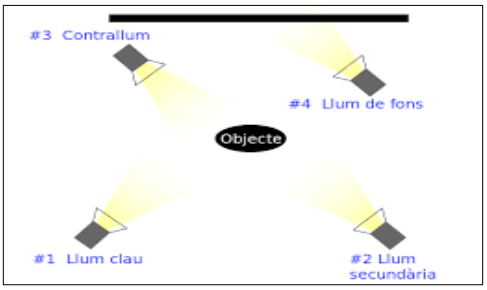

कभी-कभी हम 'फोर पॉइंट लाइटिंग' का भी उपयोग करते है। 'बैकग्राउंड' को उभारने के लिए 'थ्री पॉइंट लाइटिंग' के साथ एक अतिरिक्त 'लाइट' जोड़ दी जाती है अर्थात 'फोर पॉइंट लाइटिंग' में हम 'बैकग्राउंड' लाइट का भी प्रयोग करते हैं जिसका मूल उद्देश्य फ्रेम के पार्श्व हिस्से पर प्रकाश डालना होता है। यह प्रकाश व्यवस्था 'विज्ञापन फोटोग्राफी' के दौरान भी की जाती है जब हम 'क्रोमा की' का उपयोग करते हैं। इस दशा में 'सब्जेक्ट' के 'बैकग्राउंड' में लगे हरे रंग के पटल पर 'बैक ग्राउंड लाइट' डाली जाती है जिससे फ्रेम का यह हिस्सा भी आवश्यकतानुसार रौशन हो सके एवं चित्र को सम्पादित करते समय अनावश्यक समस्या का सामना न करना पड़े।

9.5 परम्परागत प्रकाश व्यवस्था (Traditional Lighting)

परम्परागत प्रकाश व्यवस्था एक सुनियोजित प्रकाश व्यवस्था है जिसमें फोटोग्राफर 'सब्जेक्ट' के चेहरे पर एक विशेष प्रभाव उत्पन्न करने की कोशिश करता है। इस प्रकाश व्यवस्था के अन्तर्गत हम कुछ ऐसे लाइटिंग पैटर्न की बात करेंगे जिनका प्रयोग पोर्टफोलियो बनाते समय या पोर्ट्रेट लेते समय किया जाता है। इस प्रकार की प्रकाश व्यवस्था सब्जेक्ट के किसी पक्ष को उभारने, छाया उत्पन्न करने अथवा किसी संरचना को दर्शाने में मददगार सिद्ध होती है। ऐसे प्रकाश व्यवस्था द्वारा प्राप्त परिणाम में सब्जेक्ट के रूप-स्वरुप की भी भूमिका होती है जिसका ध्यान रखना जरूरी होती है।

इस प्रकार की प्रकाश व्यवस्था का प्रभावी परिणाम हासिल करने के लिए फोटोग्राफर को अभ्यास की जरुरत होती है। ऐसे पैटर्न की लाइटिंग को हम निम्नवत समझ सकते हैं-

9.5.1 रेम्ब्रांट लाइटिंग (Rembrandt Lighting)- रेम्ब्रांट लाइटिंग का नाम डच पेंटर रेम्ब्रांट वान रेन के नाम पर पड़ा जो अपनी पेंटिंग्स में सब्जेक्ट के चेहरे पर ऐसी लाइटिंग दर्शाते थे। इस प्रकार की लाइटिंग का प्रयोग पोर्ट्रेट फोटोग्राफी के दौरान किया जाता है। इस प्रकार की लाइटिंग में मुख्य प्रकाश स्रोत को सब्जेक्ट के चेहरे से 45^0 पर दाएं या बाएं की तरफ थोड़ा ऊपर रखकर प्रयोग किया जाता है जिससे सब्जेक्ट के गाल पर (किसी एक तरफ) एक त्रिभुज आकार की रोशनी का निर्माण होता है। सब्जेक्ट के चेहरे पर दिखने वाला त्रिभुज वास्तव में सब्जेक्ट की नाक और गाल पर उत्पन्न छाया के आपस में मिलने से बनता है। इस प्रकार का प्रभाव प्रत्येक चेहरे पर प्राप्त करना काफी कठिन होता है। रेम्ब्रांट लाइटिंग का ऊचित प्रभाव प्राप्त करने के लिए हमें लम्बी नाक एवं पतले चेहरे वाले सब्जेक्ट का चुनाव करना चाहिए। प्रायः इस प्रकार की लाइटिंग का प्रयोग पोर्ट्रेट फोटोग्राफी के दौरान स्टूडियो के अन्दर किया जाता है।

9.5.2 बटर फ्लाई लाइटिंग (Butterfly Lighting)- यह प्रकाश व्यवस्था, परम्परागत प्रकाश व्यवस्था का एक प्रमुख रूप है। इसमें प्रकाश स्रोत को सब्जेक्ट के चेहरे के सामने कैमरे के पीछे एवं थोड़ा ऊपर रखा जाता है। इस लाइटिंग में यह ध्यान रखा जाता है कि लाइट सब्जेक्ट के ऊपरी हिस्से पर पड़े एवं सब्जेक्ट के नाक के ठीक नीचे छाया निर्मित हो। इस प्रकार से सब्जेक्ट के नाक के नीचे उत्पन्न छाया का आकार बिल्कुल एक तितली की तरह होता है, इसीलिए इसे 'बटरफ्लाई लाइटिंग' कहा जाता है। इस प्रकार की प्रकाश व्यवस्था सब्जेक्ट के आँखों के नीचे मौजूद निसान को कम करने में भी मदद करती है। कभी-कभी पोर्ट्रेट फोटोग्राफी के दौरान उम्रदराज सब्जेक्ट के लिए फोटोग्राफर द्वारा इस प्रकाश व्यवस्था का उपयोग देखने को मिलता है। फैशन फोटोग्राफी के दौरान इस प्रकार की लाइटिंग का प्रयोग अक्सर ही देखने को मिलता है। स्लिम चेहरे वाले मॉडल के लिए फैशन फोटोग्राफर विशेष तौर पर बटरफ्लाई लाइटिंग का प्रयोग करता है जिससे एक आकर्षक चित्र प्राप्त करने में मदद मिलती है। इसीलिए 'बटरफ्लाई लाइटिंग' को 'ग्लैमर लाइटिंग' की एक शैली के रूप में उपयोग किया जाता है

9.5.3 स्प्लिट लाइटिंग (Split Lighting)- इस प्रकार की लाइटिंग का प्रयोग भी पोर्ट्रेट फोटोग्राफी के दौरान अक्सर देखने को मिलता है। इस प्रकाश व्यवस्था में हम प्रकाश स्रोत को सब्जेक्ट के दाएं अथवा बाएं रखकर इस

प्रकार से उपयोग करते हैं कि सब्जेक्ट का एक हिस्सा प्रकाश से नहा उठता है जबकि सब्जेक्ट के दूसरे में गहरी छाया उत्पन्न हो जाती है। इस प्रकार की लाइटिंग से सब्जेक्ट का चेहरा दो हिस्सों बंटा प्रतीत होता है, इसी कारण से इसे स्प्लिट लाइटिंग कहा जाता है। इस लाइटिंग का प्रयोग करते समय इस बात का ध्यान रखना होता है कि सब्जेक्ट के एक ही हिस्से पर प्रकाश पहुँचे जबकि दूसरा हिस्सा प्रकाश के प्रभाव से दूर हो।

में

9.5.4 सिल्हूट लाइटिंग (Silhouette Lighting)- सिल्हूट लाइटिंग, प्रकाश व्यवस्था का वह तरीका है जिसमें

प्रकाश स्रोत को सब्जेक्ट के ठीक पीछे रखा जाता है अर्थात इस व्यवस्था में सब्जेक्ट की पृष्ठभूमि को तो रौशन करते हैं परन्तु सब्जेक्ट के अग्रभूमि को बिल्कुल अँधेरे में रखते हैं। इस प्रकार की प्रकाश व्यवस्था के द्वारा फोटो में सिर्फ सब्जेक्ट की आउटलाइन ही दिखलाई देती है जबकि सब्जेक्ट का विवरण अँधेरे में डूबा होने की वजह से दिखाई नहीं देता है। सिल्हूट लाइटिंग का प्रयोग कर फोटो लेते समय अपरचर का आकार अपेक्षाकृत छोटा रखा जाता है, साथ ही इस बात का ध्यान रखा जाता है कि सब्जेक्ट के सामने से कोई भी प्रकाश स्रोत प्रभावी न हो। इस दौरान भूलकर भी फ़्लैश का प्रयोग नहीं करना चाहिए। ऐसा करने से पूरी मेहनत ख़राब हो सकती है। सिल्हूट फोटोग्राफी के दौरान कैमरा की सेटिंग्स मैन्युअल मोड पर रखकर हम अच्छा प्रभाव प्राप्त कर सकते हैं। पृष्ठभूमि में उपयुक्त प्रकाश स्रोत जितनी चमक उत्पन्न करेगा, सब्जेक्ट के अग्रभाग को उतना ही अँधेरे में रखने में मदद मिलेगी। अक्सर सूर्यास्त के समय इस प्रकार का परिणाम लिया जाता है जिसमें किसी सब्जेक्ट की 'आउटलाइन' को हम 'सिल्हूट प्रभाव' के साथ प्राप्त करते हैं।

9.6 प्रकाश उपकरण (Lighting Equipment)

फोटोग्राफी के दौरान कृत्रिम प्रकाश प्राप्त करने के लिए विभिन्न प्रकार के उपकरणों का उपयोग किया जाता है। ये प्रकाश उपकरण मुख्यतः 'इंडोर फोटोग्राफी' के समय प्रभावी भूमिका निभाते हैं जबकि अवसर विशेष पर 'आउटडोर फोटोग्राफी' के दौरान भी उपयोग में लाये जाते हैं। वर्तमान समय में बाजार में अनेकों प्रकाश उपकरण उपलब्ध हैं जिनका उपयोग आवश्यकतानुसार किया जा सकता है। कृत्रिम प्रकाश उपकरणों की उपलब्धता ने न सिर्फ प्राकृतिक प्रकाश स्रोत पर हमारी निर्भरता को कम किया है बल्कि फोटोग्राफी की प्रक्रिया को आसान बनाने का कार्य भी किया है। इन उपकरणों की सहायता से हम आसानी से आवश्यक प्रकाश वातावरण तैयार कर सकते हैं एवं अँधेरे में भी फ्रेम के लिए आवश्यक प्रकाश जुटा सकते हैं। आधुनिक अविष्कारों ने इन उपकरणों की क्षमता एवं गुणवत्ता में निरन्तर

सुधार किया है। प्रकाश के लिए उपयुक्त होने वाले उपकरणों का आकार एवं भार भी पहले की अपेक्षा काफी कम हुआ है जिससे इन्हें एक स्थान से दूसरे स्थान तक ले जाना काफी आसान हो गया है। फोटोग्राफी के दौरान प्रयुक्त उपकरण को मुख्यतः तीन श्रेणियों में रखा जा सकता है जो निम्नवत हैं -

1. स्पीडलाइट लाइटिंग किट
2. कंटीन्यूअस लाइटिंग किट
3. मोनोलाइट स्ट्रोब लाइटिंग किट

9.6.1 स्पीड लाइट लाइटिंग किट (Speed light Lighting Kit)- यह एक प्रकार की बाहरी फ़्लैश यूनिट है

जिनका प्रयोग प्रायः अम्ब्रेला या सॉफ्ट-बॉक्स के साथ किया जाता है। अम्ब्रेला अथवा सॉफ्ट-बॉक्स का प्रयोग करने से प्रकाश के फैलाव में मदद मिलती है जिससे सब्जेक्ट के ऊपर एक सॉफ्ट लाइट डाली जा सके। सामान्य फ़्लैश की तुलना में इनके द्वारा प्रकाश उत्सर्जन की गति तेज होती है। इस प्रकार की लाइट को विभिन्न प्रकार की फोटोग्राफी के दौरान उपयोग में लाया जा सकता है। आजकल वेडिंग एवं इवेंट फोटोग्राफी के दौरान इनका प्रयोग खूब किया जा रहा है। इसे आसानी से कहीं भी ले जाया जा सकता है एवं आवश्यकतानुसार त्वरित उपयोग सम्भव है। बाजार में 'फोटोफ्लेक्स' स्पीडलाइट के अलावा कई अन्य ब्रांड भी उपलब्ध हैं। कैनन एवं निकान कम्पनी के इस श्रेणी के उपकरण भी बाजार में उपलब्ध हैं।

9.6.2 कंटीन्यूअस लाइटिंग किट (Continuous Lighting Kit)- यह एक उपयोगी प्रकाश उपकरण है जिसका प्रयोग फोटोग्राफी के दौरान किया जाता है। यह बाजार में बेहद कम मूल्य में आसानी से उपलब्ध है। इस प्रकार के उपकरण को आसानी से उपयोग में लाया जा सकता है। इस प्रकार के उपकरणों द्वारा प्रदत्त प्रकाश को समझना एवं संसोधन करना भी आसान होता है। यही कारण है कि फोटोग्राफी के क्षेत्र में प्रवेश कर रहे फोटोग्राफर इन उपकरणों का उपयोग आसानी पूर्वक कर लेते हैं। इस श्रेणी में तीन

प्रकार के उपकरण बाजार में उपलब्ध हैं जिनका आवश्यकतानुसार प्रयोग किया जा सकता है। फ्लूरोसेंट, टंगस्टन, एवं एलईडी बल्ब के रूप में उपलब्ध उपकरण काफी विविधता प्रदान करते हैं। वर्तमान समय में इस श्रेणी के एलईडी बल्ब का प्रयोग अधिक किया जा रहा है क्योंकि इनका प्रयोग काफी देर तक किया जा सकता है और ऐसे उपकरण गर्म नहीं होते हैं। 60 वाट की क्षमता वाली गोडोक्स एलईडी बाजार में आसानी से उपलब्ध है। इसके साथ ही 150 वाट अथवा 200 वाट के गोडोक्स एलईडी का उपयोग आवश्यकतानुसार किया जा सकता है।

9.6.3 मोनोलाइट्स (Mono-lights)- एक प्रकार की स्ट्रोब यूनिट होती हैं जिनमें स्टैंड, रिफ्लेक्टर, एवं पॉवर सोर्स

तीनों ही सन्निहित होती हैं। इसे मोनोब्लॉक्स भी कहा जाता है। इसको संचालित करने के लिए अलग से पॉवर की जरुरत नहीं पड़ती है। इस लाइट की सबसे महत्वपूर्ण बात है कि इसमें फ़्लैश और सभी नियंत्रण एक डिवाइस के अन्दर समेकित होते हैं। इस प्रकार के प्रकाश उपकरण को ज्यादातर स्टूडियो के अन्दर पोर्ट्रेट फोटोग्राफी के लिए उपयोग में लाया जाता है परन्तु इसे पोर्टफोलियो बनाने हेतु अन्यत्र भी प्रयोग किया जा सकता है। उपरोक्त उपकरणों के अलावा फोटोफ्लड्स, नियान लाइट, फ्लूरोसेंट पैनल एवं अत्यधिक शक्तिशाली एचएमआई लाइट का उपयोग भी कभी-कभार देखने को मिल जाता है परन्तु इनका उपयोग फोटोग्राफी के बजाय वीडियोग्राफी के लिए अधिक किया जाता है। जहाँ तक फोटोग्राफी में प्रयुक्त होने वाले प्रकाश उपकरणों की बात है तो हम घर में उपयोग किये जाने वाले बल्ब एवं ट्यूब का प्रयोग भी कर सकते हैं। हालाँकि ऐसे उपकरण प्रोफेशनल फोटोग्राफी के दौरान उपयोग में नहीं लाये जा सकते हैं। बाजार में कई प्रकार के मॉडलिंग लैम्प भी उपलब्ध हैं जिनका उपयोग प्रोफेशनल फोटोग्राफी के दौरान किया जाता है।

9.7 सहायक उपकरण (Lighting Accessories)

प्रकाश के सहायक उपकरण भले ही मूल प्रकाश व्यवस्था का अनिवार्य अंग नहीं होते हैं परन्तु इनका उपयोग आकर्षक परिणाम प्राप्त करने में उपयोगी होता है। प्रकाश के लिए उपयुक्त उपकरणों के अलावा आज दर्जनों सहायक उपकरण भी बाजार में उपलब्ध हैं जिससे फोटोग्राफी के दौरान न सिर्फ मदद मिलती है अपितु इच्छित परिणाम प्राप्त करना भी सम्भव हो पाता है। कुछ सहायक उपकरण अनिवार्य रूप से 'कैमरा किट' का हिस्सा होते हैं तो वहीं कुछ सहायक उपकरण अवसर विशेष पर 'कैमरा किट' में सम्मिलित किये जाते हैं। सहायक उपकरणों का उपयोग आवश्यकतानुसार 'इनडोर' एवं 'आउटडोर' फोटोग्राफी के दौरान किया जा सकता है। जहाँ तक लाइटिंग में उपयुक्त सहायक उपकरणों की बात है तो निम्नलिखित सहायक उपकरणों का प्रयोग विभिन्न प्रकार की फोटोग्राफी के दौरान मुख्य रूप से किया जाता है-

1. लाइट मीटर
2. स्नूट
3. ब्यूटी डिश
4. बैकग्राउंड रिफ्लेक्टर
5. गोल्डेन/ सिल्वर रिफ्लेक्टर
6. डिफ्यूजर
7. कलर फ़िल्टर

8. कलर जेल्स
9. ट्रिगर
10. सॉफ्ट बॉक्स
11. स्ट्रिप बॉक्स
12. अम्ब्रेला
13. पारदर्शी अम्ब्रेला
14. आक्टा बॉक्स
15. हनीकाम्ब/ ग्रिड
16. गोबो
17. फ्लैग
18. लाइट स्टैंड
19. रिफ्लेक्टर स्टैंड
20. ग्रे कार्ड
21. डिमर
22. फ्लैश

उपरोक्त सहायक उपकरण प्रकाश व्यवस्था के दौरान फोटोग्राफर का काम आसान करते हैं या यूँ कहें कि फोटोग्राफी प्रक्रिया को आसान बनाने में मदद करते हैं। कुछेक अवसरों पर तो इन सहायक उपकरणों के बिना कार्य करना अत्यन्त कठिन होता है।

9.8 सारांश

फोटोग्राफी एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें प्रकाश रुपी सूचना को प्रकाश संवेदी सतह पर संचित किया जाता है। प्रकाश जिस रूप में प्रकाश संवेदी सतह पर पहुंचेगा, प्राप्त चित्र का स्वरुप भी वैसा ही होगा। फोटोग्राफर द्वारा प्रकाश व्यवस्था के समय की हुई छोटी सी गलती परिणाम पर नकारात्मक असर डाल सकती है तो वहीं चयनित गलत उपकरण इच्छित परिणाम प्राप्त करना कठिन बना सकता है।

एक कुशल एवं अनुभवी फोटोग्राफर प्रकाश उपकरणों एवं सहायक उपकरणों की अच्छी समझ रखता है, साथ ही वह यह जानता है कि किस प्रकार की परिस्थिति में वह किस उपकरण एवं सहायक उपकरण से इच्छित परिणाम प्राप्त कर सकता है। वह उपलब्ध प्रकाश को पढ़ना जानता है, साथ ही 'सब्जेक्ट' के अनुसार आवश्यक एवं तार्किक प्रकाश व्यवस्था की समझ भी रखता है। वह उचित प्रकाश व्यवस्था के कौशल में निपुण होता है तो वहीं प्रकाश व्यवस्था के साथ प्रयोग करने से भी नहीं हिचकता है। 'थ्री पॉइंट लाइटिंग' हो या फिर 'फोर पॉइंट लाइटिंग', इनमें प्रयुक्त प्रकाश उपकरणों के सकारात्मक एवं नकारात्मक पक्ष की समझ होना अत्यन्त आवश्यक है। मूल प्रकाश व्यवस्था में यह

अत्यन्त महत्वपूर्ण होता है कि फोटोग्राफर अपने 'सब्जेक्ट' को ध्यान में रखकर यथोचित प्रकाश व्यवस्था का निर्धारण करे वहीं परम्परागत प्रकाश व्यवस्था में वह फ्रेम में एक विशेष प्रभाव उत्पन्न करने की कोशिश करता है। तकनीकी के क्षेत्र में हो रहे बदलाव ने प्रकाश उपकरणों एवं सहायक उपकरणों की संरचना एवं कार्य क्षमता पर भी असर डाला है जिससे फोटोग्राफी के दौरान आवश्यक प्रकाश व्यवस्था निर्धारित करना और भी अधिक सुगम हुआ है।

9.9 शब्दावली

- **की लाइट-** वह लाइट जिसका उपयोग सब्जेक्ट को प्रकाशमय अथवा चिन्हांकित करने के लिए किया जाता है। यह लाइट सब्जेक्ट के सामने से लगभग $30\text{-}45^0$ के कोण से प्रयोग की जाती है।
- **फिल लाइट-** वह लाइट जिसे मुख्य तौर पर फ्रेम में 'की लाइट' द्वारा उत्पन्न छाया को मिटाने के लिए उपयोग में लाया जाता है। इसे 'की लाइट' के दूसरी तरफ उसी कोण पर रखते हैं जिस कोण से 'की लाइट' प्रयोग में लाई जाती है।
- **बैक लाइट-** फोटोग्राफी के दौरान सब्जेक्ट के पीछे से उपयोग की जाने वाली वह लाइट जो सब्जेक्ट एवं बैकग्राउंड के बीच अंतर स्पष्ट करने में प्रभावी भूमिका निभाती है।
- **बैकग्राउंड लाइट-** फ्रेम में सब्जेक्ट के पार्श्व हिस्से में निहित पटल पर प्रकाश डालने के लिए उपयोग की जाने वाली लाइट जिससे 'बैकग्राउंड' को उभारने में मदद मिलती है।
- **सिल्हूट लाइटिंग-** एक विशेष प्रकार की प्रकाश व्यवस्था जिसमें प्रकाश स्रोत को सब्जेक्ट के ठीक पीछे रखा जाता है एवं सब्जेक्ट के अग्रभूमि को बिल्कुल अँधेरे में रखा जाता है जिससे प्राप्त चित्र में 'सब्जेक्ट' की 'आउटलाइन' प्रभावी रूप से दिखलाई देती है।
- **प्रकाश उपकरण-** फोटोग्राफी के दौरान आवश्यक प्रकाश व्यवस्था के लिए उपयुक्त मूल उपकरण जिन्हें फोटोग्राफर कृत्रिम प्रकाश प्राप्त करने के लिए उपयोग में लाता है।
- **सहायक उपकरण-** सहायक उपकरणों से तात्पर्य उन उपकरणों से है जो फोटोग्राफी के दौरान इच्छित प्रकाश व्यवस्था में सहायक होते हैं।

9.10 सन्दर्भ ग्रन्थ

1. फोटोग्राफी : कला, तकनीकी एवं पत्रकारिता- डॉ० सुनील कुमार मिश्र, भारती प्रकाशन।
2. डिजिटल फोटोग्राफी- टॉम यंग, डीके पब्लिकेशन।
3. बेसिक फोटोग्राफी- लैंगफोर्ड, फोकल प्रेस।
4. द कम्पलीट डिजिटल फोटो मैन्युअल, कार्लटन बुक, लन्दन।

9.11 अभ्यास हेतु प्रश्न

1. 'थ्री पॉइंट लाइटिंग' से आप क्या समझते हैं ?
2. फोटोग्राफी के दौरान उपयुक्त होने वाले प्रकाश उपकरणों पर चर्चा कीजिए ?
3. मूल प्रकाश व्यवस्था पर चर्चा कीजिए ?
4. परम्परागत प्रकाश व्यवस्था पर प्रकाश डालिये ?

इकाई-10

प्रकाश व्यवस्था : गुणवत्ता एवं महत्त्व

-

पाठ संरचना

10.0 उद्देश्य

10.1 प्रस्तावना

10.2 प्रकाश के स्रोत

10.3 प्रकाश के प्रकार

10.4 प्रकाश अनुपात

10.5 प्रकाश के भौतिक गुण

10.6 विशेष प्रकाश तकनीकी

10.7 प्रकाश व्यवस्था का डीएडीआई सिद्धांत

10.8 सारांश

10.9 शब्दावली

10.10 सन्दर्भ ग्रन्थ

10.11 अभ्यास हेतु प्रश्न

10.0 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के उपरान्त आप

- प्रकाश के प्राकृतिक एवं कृत्रिम स्रोत के बारे में जान सकेंगे।

- प्रकाश के प्रकार से परिचित हो सकेंगे।

- प्रकाश के भौतिक गुणों को जान सकेंगे।

- प्रकाश अनुपात एवं उसके महत्त्व से परिचित हो सकेंगे।

- विशेष प्रकाश तकनीकियों से अवगत हो सकेंगे।

- प्रकाश के डीएडीआई सिद्धांत एवं उसके तकनीकी महत्त्व को समझ सकेंगे।

10.1 प्रस्तावना

जिस प्रकार से प्रकाश हमारे लिए किसी वस्तु को देखने के लिए अनिवार्य है ठीक वैसे ही यह कैमरे द्वारा किसी वस्तु की फोटो लेने के लिए भी अनिवार्य है। बिना न्यूनतम प्रकाश के हम कोई भी तस्वीर नहीं ले सकते हैं। तस्वीर की गुणवत्ता, उसकी दृश्य प्रभावशीलता, एवं सब्जेक्ट के रूप- स्वरुप पर प्रयुक्त प्रकाश महत्वपूर्ण रूप से असर डालता है। रंग का सीधा सम्बन्ध प्रकाश अथवा रौशनी से होता है, प्रकाश का प्रयोग करते समय हमें इस बात का भी ध्यान रखना होता है। प्रकाश की अपनी भाषा होती है। यह न सिर्फ सब्जेक्ट को चिन्हांकित करता है बल्कि सब्जेक्ट के मूड एवं भावनाओं को भी स्पष्ट करता है।

कभी फ्रेम से छाया समाप्त करना होता है तो वहीं कभी-कभी हम एक विशेष प्रकाश व्यवस्था के द्वारा फ्रेम में छाया रखकर सब्जेक्ट के प्रभाव को स्पष्ट कर सकते हैं। देखा जाय तो

प्रकाश फोटोग्राफी का प्राणतत्व है जिसकी वजह से ही फोटोग्राफी की प्रक्रिया संचालित होती है। यदि कैमरा के सेंसर तक प्रकाश आवश्यक मात्रा में नहीं पहुंचेगा तो इच्छित परिणाम भी प्राप्त नहीं होगा। इसलिए प्रकाश की गुणवत्ता एवं महत्व का समग्र ज्ञान होना प्रत्येक फोटोग्राफर के लिए जरूरी हो जाता है या यूँ कह लें कि फोटोग्राफी के क्षेत्र में कोई तब तक महारथ हासिल नहीं कर सकता है जब तक कि वह प्रकाश को अच्छी तरह से न समझ ले। फोटोग्राफर द्वारा ली जा रही फोटो को वास्तविक स्वरुप प्रकाश के स्वरुप पर ही निर्भर करता है अर्थात हम जिस समय फोटो ले रहे हैं उस समय उपलब्ध प्रकाश का रूप एवं स्वरुप क्या है ? साथ ही उसे कैमरे के लेंस में प्रवेश करने से पहले विषय के सापेक्ष किस दिशा, कोण, दूरी, एवं तीक्ष्णता के साथ निर्धारित किया गया है। चित्र लेते समय कृत्रिम प्रकाश प्रयुक्त हो रहा है या फिर प्राकृतिक प्रकाश के साथ परिणाम प्राप्त करना है ? इनका निर्धारण अत्यन्त आवश्यक है अन्यथा अपेक्षित परिणाम प्राप्त नहीं हो सकता। उपलब्ध प्रकाश स्रोत एवं उसकी प्रकृति को जाने बिना अच्छी फोटोग्राफी सम्भव नहीं है।

10.2 प्रकाश के स्रोत (Sources of Light)

प्रकाश के स्रोत को मूलतः दो श्रेणियों में रखा जा सकता है। फोटोग्राफी अथवा वीडियोग्राफी के दौरान आवश्यक प्रकाश के लिए हम इन्हीं दो प्रकाश स्रोत पर निर्भर करते हैं। प्राकृतिक स्रोत (Natural Source) एवं कृत्रिम स्रोत (Artificial Source) के रूप में यह स्रोत फोटोग्राफी प्रक्रिया को पूरी करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। प्राकृतिक स्रोत जैसे- सूर्य एवं चन्द्रमा पर फोटोग्राफर का नियन्त्रण नहीं होता है जबकि कृत्रिम स्रोत जैसे- ट्यूबलाइट, बल्ब, फ़्लैश, एवं फ्लड लाइट इत्यादि स्रोत पूरी तरह से फोटोग्राफर के नियन्त्रण में होते हैं। प्राकृतिक स्रोत की दिशा, कोण, एवं कलर टेम्परेचर समय के सापेक्ष बदलते रहते हैं। अतः प्राकृतिक प्रकाश स्रोत के साथ फोटो लेते समय उपयुक्त समय का ध्यान रखना अति आवश्यक है। ज्यादातर फोटोग्राफर दिन के समय सूर्य की रौशनी का प्रभावी उपयोग करने के लिए सुनहरे समय (Golden Hour) को प्राथमिकता देते हैं। यह सुनहरा समय सूर्योदय के ठीक बाद एवं सूर्यास्त के ठीक पहले होता है। इस दौरान लिए गये चित्र बेहद ही खुबसूरत होते हैं। सामान्य तौर पर इस समय की कुल लम्बाई इस बात पर निर्भर करती है कि आप किस स्थान पर फोटो शूट कर रहे हैं और वहाँ का मौसम कैसा है ? सूर्योदय के ठीक बाद एवं सूर्यास्त के ठीक पहले का प्रकाश किसी भी अन्य प्रकाश से भिन्न होता है जिसे दोहराया नहीं जा सकता है।

कुछेक अवसर पर प्राकृतिक स्रोत से प्राप्त प्रकाश का प्रभावी एवं आवश्यक उपयोग के लिए हम फ़िल्टर अथवा रिफ्लेक्टर जैसे सहायक उपकरणों का प्रयोग कर सकते हैं। इस दौरान सूर्य की किरणों को सीधे लेंस के अन्दर प्रवेश देने से बचना जरुरी होता है जो चित्र में

'फ्लेयर' जैसी समस्या उत्पन्न कर सकती हैं। दोपहर का समय जब सूर्य सब्जेक्ट के ठीक ऊपर होता है, फोटोग्राफी के लिए अनुपयुक्त माना जाता है। इनडोर फोटोग्राफी के दौरान भी प्राकृतिक प्रकाश का रचनात्मक तरीके से उपयोग किया जा सकता है। खिड़की से आ रहे प्रकाश को हम कलात्मक ढंग से उपयोग कर एक प्रभावी चित्र प्राप्त कर सकते हैं। प्राकृतिक प्रकाश स्रोत का उपयोग करते समय हमें स्रोत की दिशा, एवं कोण का विशेष रूप से ध्यान रखना होता है, साथ ही आवश्यक कलर टोन प्राप्त करने के लिए उपयुक्त समय का ध्यान रखना भी जरूरी है। प्राकृतिक स्रोत से प्राप्त प्रकाश का प्रभावी उपयोग तकनीकी कौशल से ज्यादा कलात्मक दृष्टिकोण की माँग करता है। इस दौरान फोटोग्राफर अपने अनुभव एवं अवलोकन के आधार पर निर्णय लेता है, साथ ही फ्रेम की जरुरत का भी ध्यान रखता है जिससे फ्रेम में आवश्यक प्रभाव उत्पन्न किया जा सके।

कृत्रिम स्रोत से प्राप्त प्रकाश को पूरी तरह से नियन्त्रित करना सम्भव होता है जिसका ज्यादातर प्रयोग हम इनडोर फोटोग्राफी के दौरान करते हैं। प्रकाश स्रोत की दिशा, कोण, दूरी, एवं तीक्ष्णता को नियन्त्रित करके हम इच्छित परिणाम प्राप्त कर सकते हैं। पूरी तरह से फोटोग्राफर के नियन्त्रण वाला यह स्रोत किसी भी समय उपयुक्त किया जा सकता है। प्राकृतिक स्रोत की भांति हमें अनुकूल समय का इन्तजार नहीं करना होता है। आज विभिन्न क्षमता वाले मानव निर्मित अनेकों कृत्रिम प्रकाश स्रोत बाजार में उपलब्ध हैं जिनका आवश्यकतानुसार प्रयोग किया जा सकता है। सहायक उपकरण डीमर का प्रयोग करके हम प्रकाश उपकरण के तीक्ष्णता को भी नियन्त्रित कर सकते हैं। स्टूडियो के अन्दर फोटो शूट करने के लिए यह प्रकाश स्रोत सबसे उपयुक्त माना जाता है। इस प्रकार के प्रकाश उपकरणों को आवश्यकतानुसार व्यवस्थित करना बेहद ही आसान होता है जिससे इच्छित परिणाम आसानी से प्राप्त किया जा सकता है। आजकल कृत्रिम स्रोत पर हमारी निर्भरता बढ़ती जा रही है। तकनीकी क्षेत्र में हो रहे नये अविष्कार फोटोग्राफी की दुनिया को निरन्तर आसान बना रहे हैं। कृत्रिम प्रकाश स्रोत न सिर्फ कलात्मक दृष्टिकोण की माँग करते हैं अपितु तकनीकि कौशल भी इनके उपयोग को प्रभावी बनाने के लिए जरुरी होता है। सब्जेक्ट एवं फ्रेम की माँग के अनुसार, कृत्रिम प्रकाश स्रोत के उपकरणों को व्यवस्थित करना बेहद आसान है जिससे आसानी से इच्छित कलात्मक प्रभाव उत्पन्न किया जा सकता है। आउटडोर फोटोग्राफी के दौरान भी कृत्रिम प्रकाश स्रोत का उपयोग सहायक प्रकाश स्रोत के रूप में किया जा सकता है। यह इस बात पर निर्भर करता है कि आउटडोर फोटोग्राफी के दौरान प्राकृतिक स्रोत से प्राप्त होने वाले प्रकाश की स्थिति क्या है ?

10.3 प्रकाश के प्रकार (Types of Light)

फोटोग्राफी अथवा वीडियोग्राफी में प्रयुक्त प्रकाश को मूलतः दो श्रेणियों में रखा जा सकता है। पहली श्रेणी 'हार्ड लाइट' की होती है जबकि दूसरी श्रेणी 'सॉफ्ट लाइट' की होती है। हम आवश्यकतानुसार दोनों का अथवा इनमें से किसी एक का प्रयोग कर सकते हैं जिससे इच्छित परिणाम प्राप्त किया जा सके।

हार्ड लाइट को प्राप्त करने के लिए प्रायः स्पॉट लाइट अथवा डायरेक्शनल लाइट वाले उपकरण प्रयुक्त किये जाते हैं जबकि सॉफ्ट लाइट को प्राप्त करने के लिए डिफ्यूज्ड अथवा फ्लड लाइट के उपकरणों को उपयोग में लाया जाता है। फ्लैश हमेशा हार्ड लाइट उत्पन्न करता है जिसे हम बाउंस कराकर सॉफ्ट लाइट में बदल सकते हैं। हार्ड लाइट का प्रयोग फ्रेम में छाया उत्पन्न कर सकती है जिसे दूर करने के लिए सॉफ्ट लाइट अथवा विशेष प्रकार के सहायक उपकरणों जैसे- रिफ्लेक्टर अथवा डिफ्यूजर का प्रयोग किया जा सकता है। हार्ड लाइट का प्रयोग किसी सब्जेक्ट को 'रफ लुक' देने अथवा उम्रदराज सब्जेक्ट की उम्र को दर्शाने अथवा उसके चेहरे पर मौजूद झुर्रियों को उभारने के लिए किया जाता है। यह सब्जेक्ट के चेहरे पर मौजूद दाग- धब्बों को स्पष्ट कर देती है। प्रकाश स्रोत का आकार एवं सब्जेक्ट से उसकी दूरी भी प्रकाश की कठोरता को प्रभावित करती है। प्रकाश स्रोत का आकार जितना बड़ा होगा वह उतनी ही सॉफ्ट लाइट प्रदान करेगा जबकि स्रोत का आकार छोटा होने पर यह हार्ड लाइट उत्पन्न करेगा।

हार्ड लाइटिंग को बहुत अधिक कंट्रास्ट लाइटिंग के साथ भी जोड़ा जा सकता है अर्थात चित्र में कंट्रास्ट उत्पन्न करने के लिए भी हार्ड लाइट को प्रमुखता दी जाती है। फैशन एवं पोर्ट्रेट फोटोग्राफी में हार्ड लाइट का प्रयोग प्रमुखता से किया जाता है। हार्ड लाइट में शैडो के किनारे बिल्कुल स्पष्ट होते हैं और हल्की सी चमक वाली सतह भी रिफ्लेक्टिव होती है जबकि सॉफ्ट लाइट में शैडो के किनारे बिल्कुल मुलायम अथवा हल्के रूप में स्पष्ट होते हैं। सॉफ्ट लाइट के प्रयोग के दौरान अत्यन्त कम अथवा न के बराबर छाया उत्पन्न होती है। इसीलिए किसी बच्चे अथवा कम उम्र की महिला का चित्र लेते समय प्रायः सॉफ्ट लाइट का प्रयोग किया जाता है जिससे 'स्किन बर्न' होने की समस्या से बचा जा सकता है। यह लाइट चित्र में उम्र के प्रभाव को भी कम करने में मदद करती है। सेलेब्रिटीज की फोटो लेते समय ज्यादातर सॉफ्ट लाइट का प्रयोग देखने को मिलता है। सॉफ्ट लाइट का प्रयोग फ्रेम में उत्पन्न छाया को समाप्त करने के लिए भी किया जाता है। फोटोग्राफर सब्जेक्ट के अनुसार हार्ड अथवा सॉफ्ट लाइट के उपयोग का निर्णय लेता है।

10.4 प्रकाश अनुपात (Lighting Ratio)

फोटोग्राफी के दौरान उपयुक्त 'की लाइट' एवं 'फिल लाइट' के अनुपात को ही प्रकाश अनुपात कहा जाता है। यह अनुपात फोटोग्राफ में प्रकाश अन्तर अथवा 'कंट्रास्ट' स्पष्ट करता है। प्रकाश अनुपात मूलतः इस बात पर निर्भर करता है कि फोटोग्राफर 'फिल लाइट' की तुलना में 'की लाइट' को कितना महत्व देता है। फोटोग्राफी में दोनों लाइट को बराबर महत्व देने की स्थिति में 'फ्लैट' परिणाम प्राप्त होता है जो सब्जेक्ट का विवरण सही ढंग से प्रस्तुत नहीं करता है। सामान्यतया हम 2:1 के प्रकाश अनुपात का प्रयोग करते हैं परन्तु चित्र में कंट्रास्ट पैदा करने के लिए 4:1 अथवा 8:1 का भी प्रयोग किया जाता है। फ्रेम में सब्जेक्ट को उभारने एवं आकर्षक बनाने के लिए उचित प्रकाश अनुपात का उपयोग अत्यन्त आवश्यक होता है। फोटोग्राफर सब्जेक्ट एवं आवश्यकता के अनुसार प्रकाश अनुपात रखता है जिससे उसे इच्छित परिणाम प्राप्त हो सके। उपयुक्त प्रकाश अनुपात किसी भी प्रकार की फोटोग्राफी के दौरान परिणाम को प्रभावित करने की क्षमता रखता है। हम फोटोग्राफी के किसी भी क्षेत्र से जुड़े हों, सही प्रकाश अनुपात का

अनुसरण हमारे कार्य की प्रभावशीलता बढ़ाने में अहम भूमिका निभाता है। कई बार हम प्रयोगात्मक प्रकाश अनुपात का प्रयोग किसी विशेष सब्जेक्ट अथवा परिस्थिति के लिए करते हैं।

10.5 प्रकाश के भौतिक गुण (Physical Properties of Light)

हम जो कुछ भी देखते हैं वह प्रकाश के कारण ही सम्भव हो पाता है। प्रकाश की किरणें हमेशा यात्रा करती रहती हैं और जब ये किरणें किसी वस्तु से टकराकर हमारी आँखों के रेटिना पर पहुँचती हैं तो हमें उस वस्तु के रूप एवं स्वरुप का बोध होता है। हम जानते हैं कि फोटोग्राफी की प्रक्रिया बिना प्रकाश के पूरी नहीं हो सकती है एवं चित्र प्राप्त करने के लिए प्रकाश की एक न्यूनतम मात्रा का फोटो-संवेदी सतह पर रिकॉर्ड होना जरुरी है। इसलिए फोटोग्राफर को प्रकाश के भौतिक गुणों से परिचित होना भी जरुरी है जो कि फोटोग्राफी प्रक्रिया को प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करते हैं। प्रकाश के भौतिक गुण निम्नलिखित हैं-

1. परावर्तन
2. अपवर्तन
3. प्रसार एवं प्रकीर्णन
4. तीक्ष्णता
5. कलर टेम्परेचर

10.5.1 परावर्तन (Reflection)- परावर्तन प्रकाश का सबसे महत्वपूर्ण गुण है। यह न सिर्फ दृष्यबोध का कारण है अपितु वस्तु के रूप एवं स्वरुप के निर्धारण में भी अहम भूमिका निभाता है। कोई वस्तु कैसी दिखेगी ? का निर्धारण उस वस्तु पर पड़ने वाले प्रकाश के परावर्तन पर भी निर्भर करता है। प्रकाश के परावर्तन के गुण को हम परावर्तन के नियम से समझ सकते हैं। प्रत्येक परावर्तक पृष्ठ में प्रकाश को परावर्तित करने की क्षमता होती है। जब प्रकाश की कोई किरण किसी परावर्तक सतह से टकराती है तो वह उसी कोण से वापस लौट जाती है अर्थात आपतन कोण परावर्तन कोण के बराबर होता है।

10.5.2 अपवर्तन (Refraction)- जब प्रकाश एक माध्यम से दूसरे माध्यम में प्रवेश करता है तो उसका अपवर्तन हो जाता है अर्थात जब प्रकाश की किरणें एक माध्यम से दूसरे माध्यम में जाती हैं तो उनके मार्ग में बदलाव देखने को मिलता है। अतः ऐसी परिस्थिति में फोटोग्राफर को विशेष ध्यान रखने की जरुरत होती है। कभी-कभी प्रकाश के इस गुण को एक रचनात्मक परिणाम प्राप्त करने के लिए भी उपयोग में लाया जाता है। जब हम पानी से भरे शीशे के ग्लास में रखी पेंसिल की फोटो लेते हैं तो फोटो में पेंसिल टेढ़ी दिखलाई पड़ती है। ऐसा प्रकाश के अपवर्तन के कारण होता है।

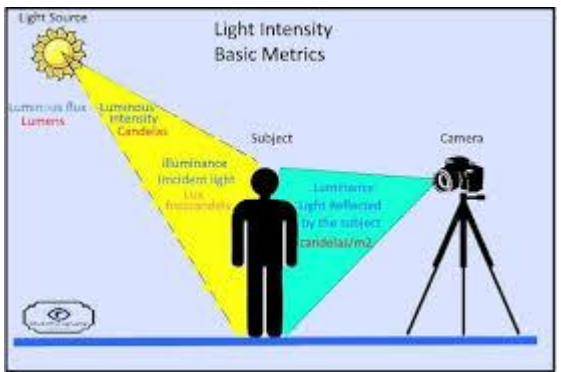

10.5.3 प्रसार एवं प्रकीर्णन (Dispersion and Scatter)- किसी भी प्रकाश का उसके संघटक रंगों (Component Color) में विघटन की प्रक्रिया ही प्रकाश का प्रसार अथवा फैलाव कहलाती है। जब सफ़ेद दिख रहा प्रकाश किसी प्रिज्म से होकर गुजरता है तो वह सात रंगों बैगनी, नीला, आसमानी, हरा, पीला, नारंगी एवं लाल रंग में विघटित हो जाता है। परिस्थिति विशेष में संघटक रंगों में से कोई एक ज्यादा प्रभावी हो सकता है। प्रकाश के प्रसार के गुण के कारण ही हमें इन्द्रधनुष देखने को मिलता है। जब सूर्य का प्रकाश वायुमंडल से होकर गुजरता है तो वायु में उपस्थित गैस अथवा सूक्ष्म कणों के कारण उसका प्रकीर्णन हो जाता है।

10.5.4 तीक्ष्णता (Intensity)- प्रकाश की तीक्ष्णता प्रकाश का एक अहम भौतिक गुण है। एक्सपोजर का निर्धारण करते समय प्रकाश के इस गुण पर विशेष ध्यान रखना होता है। यह सब्जेक्ट के मूड एवं टेक्सचर को निर्धारित करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। हार्ड एवं सॉफ्ट लाइट के निर्धारण में भी प्रकाश के इस गुण की भूमिका स्पष्ट रूप से नजर आती है। कृत्रिम प्रकाश स्रोत की तीक्ष्णता को पूरी तरह से नियंत्रित किया जा सकता है जबकि प्राकृतिक प्रकाश स्रोत की तीक्ष्णता को नियंत्रित करना सम्भव नहीं है। आवश्यकता से अधिक तीक्ष्णता वाला प्रकाश 'स्किन बर्न' या 'फ्लेयर' जैसी समस्या उत्पन्न कर सकता है, जिसका ध्यान प्रत्येक फोटोग्राफर को रखना होता है।

10.5.5 कलर टेम्परेचर (Color Temperature)- कलर टेम्परेचर प्रकाश का सबसे महत्वपूर्ण भौतिक गुण है जिसे फोटोग्राफी के समय ध्यान रखना होता है। कलर टेम्परेचर प्रकाश की विशेषताओं को मापने का एक प्रमुख मानक है। कलर टेम्परेचर को आमतौर पर प्रकाश के रंग के रूप में समझा जाता है। इसे केल्विन स्केल पर मापा जाता है। अलग- अलग प्रकाश स्रोत अलग- अलग रंग की रोशनी पैदा करते हैं। कम कलर टेम्परेचर पैदा करने वाले प्रकाश स्रोत नारंगी अथवा पीला रंग प्रदान करते हैं जबकि अधिक कलर टेम्परेचर पैदा करने वाले प्रकाश स्रोत नीला रंग प्रदान करते हैं। कम कलर टेम्परेचर के प्रकाश को 'वार्म कलर' जबकि अधिक कलर टेम्परेचर के प्रकाश को 'कूल कलर' के श्रेणी में रखा जाता है।

10.6 विशेष प्रकाश तकनीकी

आधुनिक फोटोग्राफी में कुछ विशेष फोटोग्राफी तकनीकी का उपयोग भी किया जा रहा है जिससे कुछ विशेष प्रभाव के साथ चित्र प्राप्त किया जा सके। स्मार्टफोन एवं अत्याधुनिक कैमरों में उपलब्ध एच० डी० आर० तकनीक जहाँ लैंडस्केप फोटोग्राफी के दौरान प्रभावी चित्र लेने में सहायक है वहीं अत्यन्त कम शटर स्पीड के साथ प्राप्त चित्र लोगों को सहज ही आकर्षित करता है। ये दोनों ही तकनीक फोटोग्राफी करने वाले को लुभाती हैं, एवं वह अवसर विशेष पर इनका प्रयोग करता है।

10.6.1 उच्च डायनमिक रेंज तकनीक (High Definition Range Technique)

उच्च डायनमिक रेंज आज सभी आधुनिक कैमरों में उपलब्ध है, यहाँ तक कि यह लगभग सभी स्मार्टफोन में उपलब्ध एक प्रमुख फीचर है। लैंडस्केप फोटोग्राफी के दौरान इस तकनीक के प्रयोग से परिणाम को बेहतर बनाने में मदद मिलती है। साथ ही साथ ट्रैवल फोटोग्राफी में भी इस तकनीक का प्रयोग किया जा सकता है। एच डी आर मोड में कैमरा सब्जेक्ट के गहरे एवं चमकीले क्षेत्र की विस्तृत सूचना कैद करता है। यही कारण है कि सब्जेक्ट डार्क एवं बैकग्राउंड चमकीला होने की दशा में यह तकनीक बेहतर चित्र प्राप्त करने में मदद करती है। मोबाइल फोटोग्राफी में इस तकनीक का खूब प्रयोग किया जा रहा है। इस तकनीक का प्रयोग करके फोटो लेने पर कैमरा अलग-अलग एक्सपोजर के साथ तीन अथवा अधिक फोटो लेता है एवं उपलब्ध एप्लिकेशन की मदद से सभी को मिलाकर एक परिणाम प्रस्तुत करता है। कम रौशनी की दशा में इस तकनीक का प्रयोग फोरग्राउंड को उभारने में मदद करती है। इस तकनीक का प्रयोग करने के दौरान कैमरा अपेक्षाकृत अधिक समय लेता है। अतः इस तकनीक का प्रयोग करते समय कैमरा को आवश्यक रूप से स्थिर रखना चाहिए क्योंकि 'कैमरा शेक' परिणाम को प्रभावित कर सकता है। अधिक रौशनी एवं चमकीले फ्रेम को कैद करते समय इस तकनीक का प्रयोग अच्छा माना जाता है।

10.6.2 लाइट पेंटिंग (Light Painting)

कैमरा द्वारा किसी गहरे रंग की सतह पर तेज रौशनी प्रदान करने वाले उपकरण से अपना नाम लिखते हुए फोटो लेना हो या फिर किसी विशेष आकृति को उकेरते हुए कैमरे में कैद करना हो, लाइट पेंटिंग की प्रक्रिया एक आकर्षक चित्र लेने में हमारी मदद करती है। यह वह तरीका है जिसमें प्रकाश स्रोत द्वारा किसी पृष्ठ पर कोई संरचना बनाने की प्रक्रिया को कैमरे में कैद किया जाता है। इस प्रक्रिया के दौरान हम फ्रेम में अँधेरा रखते हैं एवं साथ ही धीमी शटर गति का प्रयोग करते हैं। लाइट पेंटिंग के दौरान हम बल्ब मोड का प्रयोग कर सकते हैं। ओवर एक्सपोजर से बचने के लिए अपरचर को भी अपेक्षाकृत छोटा रखा जाता है। इस दौरान आई एस ओ 100 अथवा कम से कम रखा जाता है जबकि फोकस को मैन्युअल रखा जाता है जिससे आउट ऑफ़ फोकस जैसी समस्या से बचा जा सके। देखा जाय तो लाइट पेंटिंग लॉन्ग एक्सपोजर का ही एक रूप है परन्तु लॉन्ग एक्सपोजर फोटोग्राफी में हम जहाँ प्रकाश स्रोत के साथ कोई प्रयोग नहीं करते हैं वहीं लाइट पेंटिंग के दौरान हम प्रकाश स्रोत को संरचना बनाने वाले उपकरण के रूप में उपयोग करते हैं।

10.7 प्रकाश व्यवस्था का डीएडीआई सिद्धांत (D.A.D.I. Principle of Lighting Arrangement)

प्रकाश की दिशा, कोण, सब्जेक्ट से दूरी, एवं तीक्ष्णता का प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से फोटो पर प्रभाव पड़ता है। यह चारों कारक न सिर्फ परिणाम को प्रभावित करते हैं अपितु इनका सही एवं रचनात्मक प्रयोग एक बेहतरीन चित्र प्राप्त करने की बुनियाद रखता है। जब भी हम कैमरे में चित्र कैद करने जाते हैं, इन कारकों पर मंथन जरुर कर लेना चाहिए।

इस सिद्धांत का अनुपालन प्रकाश का सही प्रयोग सुनिश्चित करता है। आउटडोर फोटोग्राफी के दौरान हमें प्रकाश की दिशा एवं कोण पर विशेष रूप से ध्यान देना होता है जबकि इनडोर फोटोग्राफी के दौरान चारों कारकों पर ध्यान देना होता है।

जब भी हम फोटोग्राफी के लिए कहीं जाते हैं एवं सब्जेक्ट का चुनाव करते हैं तो सबसे पहले यह सुनिश्चित करना होता है कि सब्जेक्ट के ऊपर पड़ने वाला प्रकाश सब्जेक्ट के किस दिशा से आ रहा है या फिर प्रकाश को सब्जेक्ट के किस दिशा से डालना है। सामान्य तौर पर हम सब्जेक्ट के अगले हिस्से को उभारने के लिए प्रकाश को सामने की दिशा से सब्जेक्ट पर फेंकते अथवा प्रयोग करते हैं। इनडोर फोटोग्राफी में प्रकाश की दिशा का चुनाव करना काफी आसान होता है क्योंकि हम प्रकाश स्रोत को आसानी से इच्छित दिशा में रख सकते हैं। आउटडोर फोटोग्राफी के दौरान हम सब्जेक्ट को प्रकाश की दिशा के अनुसार व्यवस्थित करते हैं या फिर प्रकाश स्रोत को इच्छित दिशा में जाने तक इंतजार करते हैं।

फोटोग्राफी के दौरान प्रयुक्त प्रकाश सब्जेक्ट के ऊपर किस कोण से पड़ रहा है, इसका ध्यान रखना भी अत्यन्त आवश्यक है। विभिन्न कोण से पड़ रहा प्रकाश किसी सब्जेक्ट में संरचनात्मक बदलाव का कारक हो सकता है जिससे एक ही सब्जेक्ट अलग-अलग स्वरुप में दिखलाई पड़ सकता है। फैशन फोटोग्राफी एवं मॉडलिंग के दौरान भी विभिन्न कोण से प्रकाश का उपयोग किया जाता है वहीं किसी व्यक्ति का 'पोर्टफोलियो' तैयार करते समय भी फोटोग्राफर प्रकाश कोण के साथ प्रयोग करता हुआ दिखाई देता है। इंडोर फोटोग्राफी के दौरान हम प्रकाश कोण का इच्छानुसार चुनाव करने को स्वतन्त्र होते हैं जबकि आउटडोर फोटोग्राफी के दौरान इच्छित प्रकाश कोण प्राप्त करना मुश्किल होता है।

सब्जेक्ट से प्रकाश स्रोत की दूरी भी परिणाम को प्रभावित कर सकती है, जिसका ध्यान रखना जरूरी होता है। विशेष तौर पर प्रकाश के कृत्रिम स्रोत का प्रयोग करते समय हम सब्जेक्ट एवं प्रकाश स्रोत के बीच की दूरी का आँकलन जरूर करते हैं ताकि प्रकाश का ऊचित एवं प्रभावी प्रयोग किया जा सके। इस दौरान हम 'इन्वर्स स्क्वायर लॉ' का अनुपालन कर सकते हैं। इस नियम के अनुसार, जब हम सब्जेक्ट से प्रकाश स्रोत की दूरी को दोगुना करते हैं तो सब्जेक्ट पर पड़ने वाले प्रकाश की मात्रा एक चौथाई रह जाती है। फ़्लैश का प्रयोग करते समय इस नियम का विशेष ध्यान रखा जाता है। प्रकाश की तीक्ष्णता का भी सब्जेक्ट पर प्रभाव पड़ता है। अतः प्रकाश स्रोत का प्रयोग करते समय स्रोत द्वारा प्रदत्त तीक्ष्णता का ध्यान रखना भी आवश्यक हो जाता है। कम उम्र के सब्जेक्ट पर यह नकारात्मक असर डाल सकता है,

विशेष तौर पर जब हम अधिक तीक्ष्णता प्रदत्त करने वाले किसी बल्ब का प्रयोग करते हैं तो वह परिणाम में 'स्किन बर्न' जैसी समस्या उत्पन्न करता है।

10.8 सारांश

एक अच्छा फोटोग्राफर बनने के लिए प्रकाश को समझना उतना ही आवश्यक है जितना कि कैमरा की समझ। प्रकाश के स्रोत को जानना, उसकी प्रकृति को समझना, एवं उपलब्ध प्रकाश के प्रभाव एवं दुष्प्रभाव का आंकलन अत्यन्त महत्वपूर्ण माना जाता है। एक अच्छा फोटोग्राफर वही है जो पलक झपकते ही उपलब्ध प्रकाश का आंकलन कर ले, साथ ही वह उपलब्ध प्रकाश स्रोत का रचनात्मक एवं तार्किक रूप से प्रयोग कर सके। प्रकाश के भौतिक गुण न सिर्फ फोटोग्राफी प्रक्रिया को प्रभावित करते हैं अपितु इनकी अच्छी समझ एक अच्छा चित्र प्राप्त करने में सहायक हो सकती है। उपलब्ध प्रकाश स्रोत को 'हार्ड लाइट' रूप में उपयोग करना है या फिर उसे 'सॉफ्ट लाइट' के रूप में उपयोग में लाना है, सब्जेक्ट को ध्यान में रखकर इनका उपयोग आवश्यक होता है। एक से अधिक 'लाइट' का उपयोग करते समय यथोचित प्रकाश अनुपात रखना भी अत्यन्त आवश्यक है अन्यथा इच्छित परिणाम प्राप्त नहीं हो सकता। कई बार फोटोग्राफर प्रकाश स्रोत एवं प्रकाश अनुपात को समझने में छोटी सी गलती कर देता है जिससे उसकी सारी मेहनत पर पानी फिर जाता है। फोटोग्राफर को प्रकाश स्रोत की दिशा, उसके कोण, सब्जेक्ट से दूरी, एवं उसकी तीक्ष्णता आदि का भी ध्यान रखना चाहिए जिससे प्रकाश के दुष्प्रभाव से बचा जा सके। हालाँकि कई बार वह रचनात्मक प्रयोग के लिए स्वतंत्र होता है परन्तु यह रचनात्मक स्वतंत्रता भी प्रकाश की अच्छी समझ एवं सही उपयोग पर निर्भर करती है।

10.9 शब्दावली

- **प्रकाश अनुपात-** फोटोग्राफी के दौरान उपयुक्त 'की लाइट' एवं 'फिल लाइट' के अनुपात को ही प्रकाश अनुपात कहा जाता है।
- **कलर टेम्परेचर-** कलर टेम्परेचर प्रकाश की विशेषताओं को मापने का एक प्रमुख मानक है। इसे आमतौर पर प्रकाश के रंग के रूप में समझा जाता है। इसे केल्विन स्केल पर मापा जाता है।
- **एचडीआर-** आधुनिक कैमरा में उपलब्ध वह तकनीक जिसमें कैमरा अलग-अलग एक्सपोजर के साथ तीन अथवा अधिक फोटो लेता है एवं उपलब्ध एप्लिकेशन की मदद से सभी को मिलाकर एक परिणाम प्रस्तुत करता है।
- **व्हाइट बैलेंस-** किसी प्रकाश व्यवस्था के अन्तर्गत वस्तु के वास्तविक रंग से कैमरा को पहचान कराने के लिए एक प्रक्रिया का अनुपालन किया जाता है जिसे हम 'व्हाइट बैलेंस' कहते हैं।

- **बल्ब मोड-** अत्यन्त कम शटर स्पीड का निर्धारण करने के लिए प्रयुक्त कैमरे में उपलब्ध वह मोड जिसमें फोटोग्राफर जितनी देर तक कैमरे का क्लिक बटन दबा कर रखेगा उतनी देर तक प्रकाश, प्रकाश संवेदी सतह पर रिकॉर्ड होता रहेगा।

10.10 सन्दर्भ ग्रन्थ

1. फोटोग्राफी : कला, तकनीकी एवं पत्रकारिता- डॉ० सुनील कुमार मिश्र, भारती प्रकाशन
2. डिजिटल फोटोग्राफी- टॉम यंग, डी के पब्लिकेशन
3. बेसिक फोटोग्राफी- लैंगफोर्ड, फोकल प्रेस
4. द कम्पलीट डिजिटल फोटो मैन्युअल, कार्लटन बुक, लन्दन

10.11 अभ्यास हेतु प्रश्न

1. प्रकाश के भौतिक गुणों से आप क्या समझते हैं ?
2. प्रकाश अनुपात क्या है ?
3. प्रकाश के विभिन्न प्रकार के बारे में लिखिए।
4. प्रकाश के डीएडीआई सिद्धांत को समझाइये।

इकाई-11

शाट्स के प्रकार और फोकस

पाठ संरचना

11.0 उद्देश्य

11.1 शाट

11.2 एक्सट्रीम क्लोज अप

11.3 क्लोज-अप

11.4 मिड शाट

11.5 मिड क्लोज अप

11.6 मिड लांग शाट या मिड वाइड शाट

11.7 लांग शाट या वाइड शाट

11.8 एक्सट्रीम लांग शाट

11.9 फोकस

11.10 डेप्थ आफ फील्ड

11.11 डेप्थ नियंत्रण

11.12 फोकस मोड

11.13 फोकस चुनाव

11.14 रैक फोकस

11.15 उपसंहार

11.16 शब्दावली

11.17 अभ्यास हेतु प्रश्न

11.18 संदर्भ ग्रंथ व पुस्तकें

11.0 उद्देश्य

- प्रस्तुत अध्याय के अध्ययन से आप विभिन्न प्रकार के शाट से परिचित हो जाएंगे।
- विभिन्न प्रकार के शाट की उपयोगिता का ज्ञान हो पाएगा।
- फोकस और डेप्थ के बारे में जानकारी ले पाएंगे।

11.1 शाट

फोटोग्राफी की भाषा में शाट को फोटो, इमेज (छाया) अथवा फ्रेम बोला जाता है फोटोग्राफर जब एक चित्र लेने जाता है तो वह तय करता है कि उसके एक फ्रेम में क्या-क्या रखा जाय अथवा क्या न रखा जाय। इसके निर्णय के लिये फोटोग्राफर कम्पोजिसन विजुअल ग्रामर के नियमों के आधार पर निर्णय करता है। इस प्रकार फोटोग्राफर द्वारा एक चित्र लेने के लिये जिन विभिन्न अवयवों का रखने का निर्णय किया जाता है उसके संयुक्त रूप को शाट बोला जाता है। सामान्य भाषा में एक फोटोग्राफ एक शाट कहलाता है। विजुअल ग्रामर के आधार पर शाट को कई प्रकार से बांटा जाता है।

मुख्य रूप से शाट को तीन प्रमुख भागों में बांटा जाता है

- **क्लोज अप-** क्लोज अप को तीन भागों में बांटा जाता है जिसे एक्सट्रीम क्लोज अप, मिड क्लोज अप और क्लोज अप।
- मिड शाट।
- **वाइड शाट -**वाइड शाट को भी तीन भागों में बांटा जाता है एक्सट्रीम वाइड शाट, मिड वाइड शाट और वाइड शाट

11.2 एक्सट्रीम क्लोज अप

ईसीयू को एक्ससीयू भी कहा जाता है। ऐसे शाट जिसमें सब्जेक्ट के किसी खास अंग को ही फ्रेम में रखा जाता है जैसे आंख और मुंह का चित्र। इस चित्र में एक्सट्रीम क्लोज अप शाट लिया गया है जिसमें सब्जेक्ट के भाव और मुद्रा को मुख्य रूप से उद्घाटित करने का प्रयास होता है। जब फोटोग्राफर के फ्रेम में सब्जेक्ट के एक खास अंग को दर्शाया जाता है तो उस अंग के बड़ा भाग दिखायी पड़ता है जिससे चित्र के ज्यादातर भाग दृश्यमान होता है उदाहरण के तौर पर आंख के नीचे के काले घेरे और तिल आदि दिखायी स्पष्ट रूप से दिखाने के लिये किया जाता है। इसके अलावा इस तरह के शाट नाटकीयता को दिखाने के लिये भी किये जाते हैं। सब्जेक्ट को कैमरे के नजदीक करने और फोकल लेन्थ को अधिकतम करके इस प्रकार के शाट बनाये जाते है इस तरह के चित्र लेने में सामान्यतया चित्र का पर्सपेक्टिव (परिप्रेक्ष्य) बदल जाता है। उदाहरण के तौर पर चित्र में सब्जेक्ट वातावरण के साथ अनुपात बदलने से पर्सपेक्टिव बदल गया है। फोटो में दिखाया गया है कि कैसे एक्सट्रीम क्लोज अप से पर्सपेक्टिव (परिप्रेक्ष्य) बदल रहा है।

11.3 क्लोज अप

क्लोज अप शाट में सब्जेक्ट के किसी एक निश्चित अंग या भाग को फ्रेम में रखा जाता है जैसे इस फोटो में सिर से लेकर ठुड्डी तक के भाग को रखा जाता है। इस प्रकार के शाट का प्रयोग बहुत किया जाता है क्योंकि सामान्यतया छोटी स्क्रीन (चित्र के सापेक्ष) में सब्जेक्ट के विवरण स्पष्ट दिखायी देता है। साथ ही चित्र में कौन दिखायी दे रहा है इसकी भी पहचान किया जाता है जबकि एक्सट्रीम क्लोज अप फ्रेम में व्यक्ति या सब्जेक्ट की पहचान हो पाना मुश्किल होता है। लोगों की फोटो लेने में क्लोज अप का सबसे ज्यादा उपयोग किया जाता है। क्लोज अप में फोटो का परिप्रेक्ष्य (पर्सपेक्टिव) में ज्यादा बदलाव नहीं होता है। मोबाइल फोटोग्राफी के दौर में क्लोजअप शाट की उपयोगिता बहुत बढ़ गयी है क्योंकि मोबाइल की स्क्रीन की साइज तौर पर छोटी होती है और छोटी स्क्रीन पर सामान्यतया छोटा चित्र ज्यादा प्रभावपूर्ण होता है। सामान्यतौर पर देखा गया है कि मनुष्य की आंखें जिस पर्सपेक्टिव में देखती हैं उससे ऊब जातीं है क्लोज अप शाट आंखों के चित्र के मुकाबले थोड़ा अलग दिखने से इसकी उपयोगिता बढ़ाने में मदद करती हैं।

11.4 मिड शाट

मिड शाट का प्रयोग सामान्य जानकारी देने के लिये किया जाता है जिसमें चित्र में देखने वाले को सब्जेक्ट के साथ अन्य जानकारी जैसे चित्र किस स्थान, समय और परिस्थिति में लिया गया है। कमर से लेकर सिर का चित्र मिड शाट कहलाता है। मिड शाट में भाव पर ज्यादा ध्यान नहीं दिया जाता है, बल्कि चित्र में सूचना को ज्यादा ध्यान दिया जाता है। इस प्रकार के चित्र में पर्सपेक्टिव में सामान्य होता है। उदाहरण के तौर पर एक चित्र दृष्टिगोचर हो रहा है कि राजस्थान के कलाकार का चित्र है जिसमें बैकग्राउंड भी दिख रहा है।

11.5 मिड क्लोज अप (एमसीयू)

मिड क्लोज अप में सिर से लेकर सीने तक का चित्र लिया जाता है जो कि थुड्डी से नीचे और कमर से उपर तक का भाग होता है। यह मिड शाट और क्लोज अप के बीच का तरीका होता है।

11.6 मिड लांग शाट (एमएलएस) या मिड वाइड शाट

मिड शाट और लांग शाट के बीच में लिया गया फोटो मिड लांग शाट कहलाता है इस तरह की फोटो में चेहरे के अलावा हाथ की स्थिति दिखायी पड़ती है। इसे थ्री क्वार्टर शाट भी कहा जाता है। घुटने से उपर सिर तक की फोटो को मिड वाइड शाट माना जाता है। मिड शाट में सामान्यतया दो तीन लोगों की फोटो दिखायी जाती है। वातावरण से सब्जेक्ट के संबंध को दर्शाया जाता है।

11.7 लांग शाट (एलएस) या वाइड शाट

लांग शाट या वाइड शाट या फुल शाट में सब्जेक्ट का पैर से लेकर सिर तक चित्र लिया जाता है इस प्रकार के चित्र में पैर के नीचे और सिर के उपर थोडी जगह और दी जानी चाहिये क्योंकि सिर और पैर के साथ रखने में चित्र स्वाभाविक नजर नहीं आता है। लांग शाट में इमोशन (भाव) से ज्यादा एक्शन (क्रियाकलाप) को महत्व दिया जाता है।

मिड लांग शाट का उपयोग सब्जेक्ट के साथ साथ किस वातावरण में चित्र लिया गया है इसकी जानकारी दी जाती है। अपेक्षाकृत कम फोकल लेन्थ और आब्जेक्ट से कैमरे की दूरी को बढा कर मिड लांग शाट लिया जा सकता है। फोटो पत्रकारिता में लांग शाट का उपयोग किया जा सकता है इसके अलावा लैडस्केप फोटोग्राफी में लांग शाट का उपयोग किया जाता है, जहां पर वातावरण और परिस्थिति ज्यादा महत्वपूर्ण हो जाता है। पर्सपेक्टिव की दृष्टि से भी लांग शाट

का उपयोग महत्वपूर्ण है जिसमें फोटोग्राफर कई रचनात्मक प्रयोग कर सकते हैं जैसे जिस सब्जेक्ट का चित्र लेना है उसे कैमरे के लेंस के पास ले आते है और एक चौथाई से लेकर आधे फ्रेम तक (आवश्यकता के अनुसार) से सब्जेक्ट को भर देते हैं बाकी के हिस्से में दूर बैकग्राउंड रख कर पर्सपेक्टिव तथा सब्जेक्ट और बैकग्राउंड के संबंध को रचनात्मक तरीके से दर्शाया जा सकता है।

11.8 एक्सट्रीम लांग शाट (ईएलएस)

जैसा कि नाम से प्रतीत होता है कि ईएलएस में सब्जेक्ट से ज्यादा वातावरण महत्वपूर्ण होता है इस तरह की फोटो मे भी परिप्रेक्ष्य में बदलाव आता है, किन्तु इसका प्रभाव क्लोजअप के मुकाबले कम प्रतीत होता है। लैडस्केप में इस प्रकार के फोटो का उपयोग बहुत किया जाता है। जैसे-जैसे तकनीकी विकास हो रहा है और कैमरे का रिजोलूशन बढ़ता जा रहा है वैसे-वैसे एक्सट्रीम लांग शाट की महत्ता बढ़ती जा रही है क्योंकि आवश्यकतानुसार बाद में किसी खास भाग को बड़ा करके देखा जा सकता है। फोरेंसिक फोटोग्राफी में भी ईएलएस का उपयोग किया जा सकता है।

11.9 फोकस

फोटोग्राफी में जब भी फोकस की बात की जाती है इसे फोटो की शार्पनेस से जोड़ा जाता है। जो तस्वीर शार्प (तीव्र या गहरा) है उसे फोकस माना जाता है। इसके विपरीत जो फोटो ब्लर होती है, उसे आउट आफ फोकस माना जाता है। वास्तव में हमारी आंखों में फोकस करने की क्षमता मस्तिस्क से होकर जाती है। जिस जगह पर हम फोकस करना चाहते हैं वह बड़े फ्रेम के छोटे से सब्जेक्ट पर ध्यान केन्द्रित कर देते हैं। इस चित्र में सूखी लकड़ी पर ज्यादा फोकस किया गया है।

11.10 डेप्थ आफ फील्ड (डीओएफ)

डेप्थ आफ फील्ड किसी फोटो में शार्पनेस की वह रेंज होती है जिसमें तस्वीर के हिस्से सामान्यतया फोकस में होता है अर्थात एक फोटो में कितना ज्यादा या कम हिस्सा (रेंज) शार्प है। यह जानकारी हमें डेप्थ आफ फील्ड से मिलती है। सामान्यतया एक फोटो में बैकग्राउंड, फोरग्राउंड एवं मिडल ग्राउंड होता है जैसा कि नीचे के चित्र में फोटो का पूरा

हिस्सा शार्प है जिससे इस फोटो को डीप डेप्थ (ज्यादा डेप्थ) वाला फोटो कहलाता है। इसके विपरीत ऐसी फोटो जिसमें फोटो के किसी हिस्से में ही फोकस होता है बाकी हिस्सा ब्लर होता है ऐसी फोटो को शैलो (कम डेप्थ) की फोटो कहलायेगा।

- **शैलो डेप्थ**

शैलो डेप्थ आफ फील्ड का प्रयोग सब्जेक्ट को बैकग्राउंड से अलग करने के लिये किया जाता है जिससे सब्जेक्ट को प्रमुखता मिलती है। आडियंश का ध्यान केन्द्रित करने में यह अहम भूमिका निभाता है। इस प्रकार के फोटो का आजकल बहुतायत से प्रयोग किया जा रहा है।

- **डीप डेप्थ**

डीप डेप्थ आफ फील्ड का प्रयोग सामान्यतया लैन्डस्केप या किसी भी प्रकार की फोटो जिसमें सब कुछ फोकस में रखने की जरूरत होती है किया जाता है। दोनों तरह के फोटो की आवश्यकता होती है जरूरत के हिसाब से हम दोनों का उपयोग कर सकते हैं। यह ज्ञान लगातार फोटोग्राफी करने से कोई भी कुशलता हासिल कर सकता है। कुशलता हासिल करने के लिये फोटोग्राफर को अन्य फोटोग्राफर

के तस्वीरों को ज्यादा गहराई से देखने की जरूरत होती है।

11.11 डेप्थ नियंत्रण

डेप्थ को नियंत्रित करने के तीन प्रमुख कारक हैं। अपरचर, फोकल लेन्थ और दूरी। इसके अलावा कुछ और तत्व है जिनसे डेप्थ को नियंत्रित किया जाता है। फिलहाल हम यहां पर उपरोक्त तीन बिन्दुओं पर ध्यान केन्द्रित या फोकस करेंगे।

- **अपरचर**

अपरचर के माध्यम से प्रकाश के मार्ग को बड़ा या छोटा किया जाता है जितना बड़ा मार्ग होगा उतना कम डेप्थ फोटो में आयेगी उदाहरण के तौर पर हमने कैमरे में अपरचर 4 और अपरचर 22 रख कर दो फोटो बनायी जिसमें से अपरचर 22 में मार्ग कम होगा और डेप्थ ज्यादा होगा जिससे फोटो के बैकग्राउंड, मिड ग्राउंड व फोर ग्राउंड फोकस में होगा वही दूसरी ओर अपरचर 4 रखने पर अपेक्षाकृत ज्यादा मार्ग से प्रकाश प्रवेश करेगा फलतः डेप्थ कम हो जायेगी और फोटो का केवल एक हिस्सा ही फोकस में होगा बाकी का हिस्सा ब्लर हो जायेगा।

- **फोकल लेन्थ**

लेन्स की फोकल लेन्थ फोटो के डेप्थ या फोकस क्षेत्र को नियंत्रित करने का प्रमुख साधन होता है। फोकल लेन्थ, लेन्स से इमेज सेंसर के बीच की दूरी होती है। जूम लेन्स में फोकल लेन्थ की एक रेंज (जैसे 18-55 मिलीमीटर) होती है। जबकि प्राइम लेन्स में फोकल लेन्थ निश्चित (जैसे 50 मिलीमीटर) होता है।

जितना ज्यादा फोकल लेन्थ होगा उतना डेप्थ कम होगी जैसे अगर हम किसी फोटो के किसी खास भाग पर फोकस करना चाहते हैं और बाकी हिस्से को ब्लर करना चाहते हैं तो हमें फोकल लेन्थ को ज्यादा करना होगा। किन्तु लैडस्केप फोटो में जिसमें हम पूरी फोटो को फोकस करना चाहते है हमें फोकल लेन्थ को कम करना होगा।

- **सब्जेक्ट से दूरी**

सब्जेक्ट के जिस क्षेत्र को फोकस किया जा रहा है वह प्लेन आफ फोकस कहा जाता है। प्लेन आफ फोकस के जितने नजदीक जाएंगे उतना ही कम डेप्थ होगी।

11.12 फोकस मोड

सभी कम्पनी के डीएसएलआर में फोकस के लिये लगभग एक तरह का सिस्टम लगा होता जैसे निकान के डीएसएलआर में AF-S तथा AF-C लिखा होता है उसी प्रकार कैनन के डीएससलआर में one shot तथा AL-Servo लिखा होता है। कैनन का one shot या निकान का AF-S दोनों ऐसे सब्जेक्ट के लिये उचित होते हैं जो स्थिर हों किन्तु अगर आपका सब्जेक्ट गतिमान है तो निकान में AF-C तथा कैनन में AL-Servo का उपयोग किया जाना चाहिये।

11.13 फोकस चुनाव

उपरोक्त मुख्य दो फोकस मोड के अलावा सभी डीएसएलआर में आटो फोकस और मैनुअल फोकस में से एक चुनने की आजादी होती हैं। सामान्यतया ऐसी परिस्थिति जिसमें फोटोग्राफर के पास कम समय होता है। आटो फोकस का चुनाव किया जाता है, जिसमें कैमरे का सिस्टम आपके लिये फोकस का चुनाव करता है। अगर आपके पास पर्याप्त समय है तो मैनुअल फोकस चुनना चाहिये जिसके तहत फोकस रिंग को घुमाकर आप जिस आब्जेक्ट या आब्जेक्ट के हिस्से को फोकस में रखना चाहते है रख सकते हैं। हमें हमेशा आटो फोकस नहीं रखना चाहिये क्योंकि कई बार आप फोकस प्वाइंट वह नहीं रखना चाहते जिसे कैमरा फोकस कर रहा होता है। इसके अलावा मैनुअल फोकस से आप ज्यादा शार्प तस्वीर ले सकते हैं।

11.14 रैक फोकस

रैक फोकस का प्रयोग डीएसएलआर में फोकस प्वाइंट को बदले बिना ही कम्पोजिसन बदलने पर किया जाता है जैसे नीचे दिये गये पहले चित्र में हमने खास तत्व पर फोकस किया था शटर बटन को आधा दबाये रखने से फोटो का वह केन्द्र फोकस में आ गया इसके बाद शटर बटन को आधा दबाये रखते हुये हमने फोटो को रिकम्पोज किया जिससे हमारा फोकस केन्द्र नहीं बदला किन्तु कम्पोजिशन बदल गया और शटर बटन को पूरा दबाकर हमने फोटो ले लिया। रैक फोकस करने के लिये कई बार डीएसएलआर में लगे एएफ बटन का प्रयोग भी किया जाता है जैसे पहले हमने फोटो को कम्पोज किया और फोकस केन्द्र सेट कर दिया इसके बाद कैमरे के पीछे का बटन दबाकर फोकस को सुरक्षित कर लिया बाद में कम्पोजिसन बदलने पर हमारा फोकस केन्द्र नहीं बदलता है।

11.15 उपसंहार

फोटोग्राफी में कम्पोजिशन और लाइटिंग के प्रयोग से कुशल फोटोग्राफर बना जा सकता है। यह दोनों तत्व रचनात्मक और गुणात्मक फोटोग्राफी की जरूरत बन गये हैं। रचनात्मक से तात्पर्य यहां ऐसा फोटो संचार या कम्युनिकेशन है जिसमें आदर्श रूपकों और सिम्बल्स का प्रयोग प्रभावी कम्युनिकेशन के लिये किया जाता है। फोटोग्राफी की गुणात्मकता से तात्पर्य है कि फोटोग्राफर जो संदेश देना चाह रहा है वह आदर्श गुणवत्ता के साथ प्रदर्शित करने में सक्षम हो सके। शाट के प्रयोग की समझ कम्पोजिशन का महत्वपूर्ण अंग है जिसको सीखने का तरीका प्रसिद्ध फोटोग्राफर के चित्रों को गहराई से देखना और उसका विश्लेषण करने से हो सकता है। फोकस का उपयोग फोटोग्राफी में अपरिहार्य है इसके बिना प्रोफेशनल फोटोग्राफी के बारे में कल्पना करना कठिन है। हालांकि शैलो डेप्थ आफ फील्ड

का प्रयोग आजकल बहुत ज्यादा किया जा रहा है विशेषकर पोट्रेट फोटोग्राफी में। किन्तु कुछ लोगों का मत है कि शैलो डेप्थ का प्रयोग सभी जगहों पर नहीं किया जाना चाहिये।

11.16 शब्दावली

- **सिम्बल्स -** प्रतीक या चिन्ह।
- **फोकल लेन्थ -** लेन्स की कैमरे के आप्टिकल बिन्दु से दूरी।
- **आब्जेक्ट -** जिसकी तस्वीर लिया जाना होता है।
- **डेप्थ आफ फील्ड -** फोटो में शार्पनेस की रेंज है जिसमें तस्वीर के हिस्से फोकस में होता है।
- **अपरचर -** प्रकाश के मार्ग को बड़ा या छोटा किया जाता है।
- **रैक फोकस -** इसका प्रयोग डीएसएलआर में फोकस प्वाइंट को बदले बिना ही कम्पोजिसन बदलने पर किया जाता है।

11.17 अभ्यास हेतु प्रश्न

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

1. वाइड शाट को इस्टैबिलिंसिग शाट क्यों कहा जाता है।

2. मिड शाट को परिभाषित कीजिये।

3. क्लोज अप शाट को परिभाषित कीजिये।

4. रैक फोकस को परिभाषित कीजिये।

5. अल सर्वो फोकस किसे कहते हैं।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. क्लोज अप किसे कहते हैं ? इसके विभिन्न प्रकार का वर्णन कीजिये।

2. मिड शाट और वाइड शाट के पर्सपेक्टिव में अंतर लिखिये।

3. फोकस को परिभाषित कीजिये। फोकस के महत्व पर प्रकाश डालिये।

4. विभिन्न फोकस मोड की चर्चा कीजिये।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. शाट्स के विभिन्न प्रकार की विवेचना कीजिये। सामान्य तौर पर विभिन्न शाटस का प्रयोग कहां किया जाता है?

2. डेप्थ आफ फील्ड क्या है? शैलो डेप्थ और डीप डेप्थ आफ फील्ड का वर्णन कीजिये।

3. डेप्थ आफ फील्ड को नियंत्रित करने वाले कारकों की विवेचना कीजिये।

11.18 संदर्भ ग्रंथ व पुस्तकें

- The Film Editing Room Handbook How to Tame the Chaos of the Editing Room, 4th Edition, Norman Hollyn
- Video Production Handbook, 4THEdition, Gerald Millerson C.Eng MIEE MSMPTE, Nov 2007
- The Videomaker Guide to Video Production, Fourth Edition, Videomaker and John Burkhart, Nov 2007
- The Shut Up and Shoot Documentary Guide A Down Dirty DV Production, Anthony Q. Artis, Sep 2007
- Film and Video Budgets, 4th Edition, Kindle Edition, Jan 2006

इकाई-12

फोटो एडिटिंग, फोटो प्रोसेसिंग और प्रिंटिंग

पाठ संरचना

12.0 उद्देश्य

12.1 फोटो एडिटिंग एवं प्रोसेसिंग

12.2 फोटो एडिटिंग का महत्व

12.3 फोटो शॉप - संक्षिप्त परिचय

12.4 फोटो शॉप के टूल

12.5 क्लोन टूल

- 12.5.1 एयरब्रश
- 12.5.2 पेन्ट ब्रश
- 12.5.3 स्मज एवं ब्लर
- 12.5.4 मॉड्स
- 12.5.5 कर्व्स - शार्पनेस को कंट्रोल
- 12.5.6 कलर पिकर- किसी भी तरह
- 12.5.7 कलर पैलेट
- 12.5.8 फिल्टर
- 12.5.9 फोटो प्रिंटिंग

12.6 सारांश

12.7 शब्दावली

12.8 संदर्भ ग्रंथ

12.9 अभ्यास हेतु प्रश्न

12.0 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के उपरांत आप निम्नांकित तथ्यों से अवगत होंगे-

- फोटो एडिटिंग और उसका महत्व
- फोटो एडिटिंग साफ्टवेयर-फोटोशाप
- फोटोशाप के प्रमुख टूल
- फोटो प्रिंटिंग

12.1 फोटो एडिटिंग एवं प्रोसेसिंग

फोटो संपादन फोटोग्राफ के निखारने और उसे और भी आकर्षक और बेहतर बनाने का एक तरीका है। फोटो फोनिया, लाइटरूम और फोटोशाप जैसे साफ्टवेयर कुछ ऐसे सॉफ्टवेयर हैं जिनका प्रयोग फोटो संपादन में होता है। किसी भी फोटोग्राफ के कैप्चर करने के दौरान कई बार फोटोग्राफ में कुछ कमियां परिलक्षित होती हैं, इस तरह की कमियां होती हैं जैसे फोटोग्राफ का ब्लर होना, फोटोग्राफ में कलर टोन का सही न होना, फोटोग्राफ के बैकग्राउंड को या फिर फोरग्राउंड को बदलना या फिर कलर फोटोग्राफ को ब्लैक एण्ड वाइट बनाना या फिर ब्लैक एण्ड वाइट फोटोग्राफ को कलरफुल बनाना। प्रोफेशनल फोटोग्राफर भी आजकल फैशन फोटोग्राफी से लेकर ट्वेल फोटोग्राफी में भी इसका धड़ल्ले से प्रयोग कर रहे हैं। विज्ञापन उद्योग में भी फोटो संपादन विधा का बखूबी प्रयोग किया जाता है।

12.2 फोटो एडिटिंग का महत्व

फोटो एडिटिंग अथवा संपादन का महत्व आजकल दिनोदिन बढ़ता जा रहा है। फोटोसंपादन ने फोटोग्राफ की क्वालिटी में एक क्रंतिकारी परिवर्तन ला दिया है। कई बार फोटोग्राफ दिखने में सामान्य सी लगती है लेकिन फोटो संपादन से निखरने के बाद फोटोग्राफ नज़रों के सामने से हटाने का मन ही नहीं करता। फोटो संपादन फोटोग्राफ की क्वालिटी को न सिर्फ निखारता है बल्कि फोटोग्राफ में समय बीतने के साथ-साथ होने वाले किसी भी प्रकार की खराबी को भी दूर करता है, इसके कुछ प्रमुख उदाहरण हैं फोटोग्राफ का फेड होना, फोटोग्राफ के रंग में बदलाव आदि। वहीं दूसरी तरफ फोटो संपादन का प्रयोग फोटोग्राफ में से किसी अवांछित तत्व को निकालने या फिर फोटोग्राफ में किसी और आवश्यक तत्व के संयोजित करने के लिए भी किया जाता है। जैसे विवाह समारोह में किसी पारिवारिक सदस्य का फोटोग्राफ में न होना, इस दशा में भी फोटो संपादन करके उस सदस्य को भी फोटोग्राफ में लाया जा सकता है या फिर किसी को हटाया भी जा सकता है। इस प्रकार के परिवर्तन से फोटोग्राफ की प्रभावशीलता में न सिर्फ वृद्धि होती है बल्कि फोटोग्राफ की प्रासंगिकता में भी वृद्धि होती है।

12.3 फोटो शॉप: संक्षिप्त परिचय

एडोब कंपनी द्वारा निर्मित साफ्टवेयर फोटोशाप इमेज एडिटिंग का एक बहुत ही लोकप्रिय साफ्टवेयर है। इसके प्रयोग से एक अच्छा प्रोफेशनल फोटोग्राफर न सिर्फ फोटोग्राफ बना सकता है बल्कि उसे एक मनचाहा रंग दे सकता है। फोटोशाप के प्रयोग से कई बार हम अपनी गलतियों को छुपा भी सकते हैं या फिर अगर हम चाहें तो किसी की पहचान भी छुपा सकते हैं। फोटोशॉप के प्रयोग से कलर फोटोग्राफ को ब्लैक एण्ड वाइट और ब्लैक एण्ड वाइट फोटोग्राफ को कलरफुल बनाया जा सकता है।

12.4 फोटो शॉप के टूल

फोटोशॉप में अलग- अलग टूल टूल पैलेट में होते हैं या फिर इन्हें हम मीनू में जाकर कर चयनित करते हैं। इस तरह के अलग- अलग टूल का उपयोग हम फोटोग्राफ की कापी बनाने, रंग बदलने या फिर उन्हें एक मनचाहा आकार देने के लिए करते हैं।

12.5 क्लोन टूल

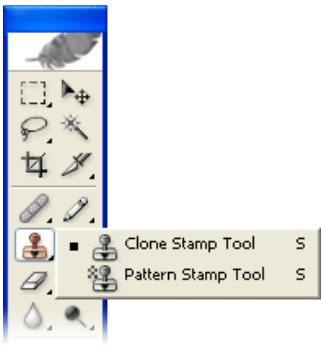

इसका प्रयोग क्लोनिंग के लिए किया जाता है। इसका प्रयोग कर फाटोग्राफ के किसी हिस्से की दूसरी कॉपी की जा सकती है। क्लोन टूल दो तरह का होता है एक से हम फोटोग्राफ के किसे हिस्से जैसे हाथ या फिर चेहरे जैसा कुछ हिस्सा हुबहू बना सकते हैं वहीं दूसरी ओर हम इससे पैटर्न की कॉपी भी कर सकते हैं। क्लोन करने के लिए पहले आप ओरिजनल फोटोग्राफ के उस हिस्से को आल्टर की प्रेस करने के साथ कर्सर को उस हिस्से के पास ले जाते हैं उस हिस्से के सिलेक्ट होते ही कर्सर की शक्ल बदल जाती है इसके पश्चाम कर्सर को उसके

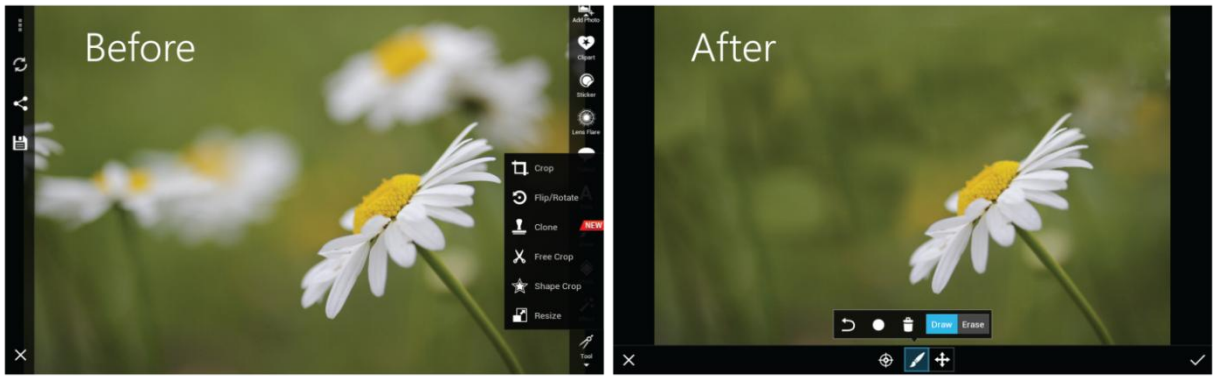

लिए निर्धारित स्थान पर ले जाकर उसके जैसी एक और प्रति बना देते हैं।

12.5.1 एयरब्रश- फोटोशाप इमेज एडिटिंग के लिए दो तरह के पेन्टिंग टूल उपलब्ध कराती है ब्रश टूल और पेंसिल टूल। इसके लिए आप माउस का प्रयोग कर उसका बायां बटन प्रेस करते हैं और टूल पैलेट से ब्रश को चुनते हैं। ब्रश का चुनाव आप अपनी आवश्यकता के अनुसार करते हैं। एयर ब्रश टूल का प्रयोग पारंपरिक ब्रश के समान कर सकते हैं जिसका एक क्रमिक टोन होता है।

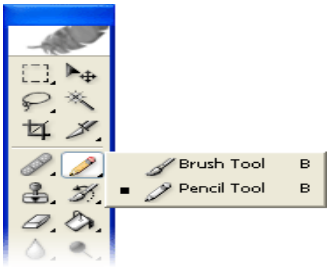

12.5.2 पेन्ट ब्रश- पेंसिल टूल भी ब्रश की तरह ही होता है लेकिन इसका प्रभाव तेज होता है और इससे किनारे ज्यादा अच्छे दिखते हैं लेकिन यह एयर ब्रश की तरह काम नहीं करता और यह आटोमेटिक इरेज का आप्शन भी देता है।

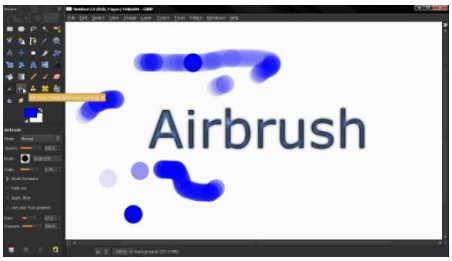

12.5.3 स्मज एवं ब्लर

ब्लर टूल के द्वारा हम किसी फोटोग्राफ की शार्पनेस को कम कर सकते हैं। इस प्रयोग के बाद कई बार ऐसा भी लगने लगता है कि जैसे ब्लर किया गया हिस्सा आउट ऑफ फोकस हो। इसके प्रयोग से कई बार हम अनिधृकित चीजों को फोटोग्राफ के प्रमुख हिस्से से कुछ अलग दिखा सकते हैं।

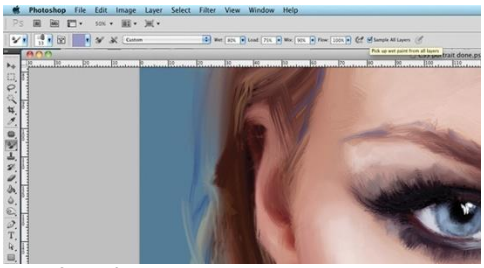

स्मज टूल भी ब्लर टूल के समान ही होता है अंतर सिर्फ इतना ही होता है कि स्मज टूल विभिन्न रंगों को आपस में मिश्रित करने या फिर फैलाने केा काम करता है। यह साथ के फोटोग्राफ के कलर को भी ब्लर टूल के प्रयोग से कई बार एक मिरर इमेज क्रिएट होती है। वहीं शार्पेन टूल का प्रयोग कर किनारों को शार्प किया जा सकता है। ब्लर टूल के प्रयोग से फोटोग्राफ की शार्पनेस भी कम की जा सकती है।

12.5.4 मॉड्स

कलर मॉड्स के अंतर्गत विभिन्न रंगों को स्थापित किया जाता है। इनके संयोजन का प्रकार फोटोग्राफ के प्रारूप जैसे सीएमवाइके, बिटमैप या फिर आरजीबी पर निर्भर करता है। कलर माड्स में सीएमवाइके (स्यान, मेजेंटा, यलो, ब्लैक) का प्रयोग

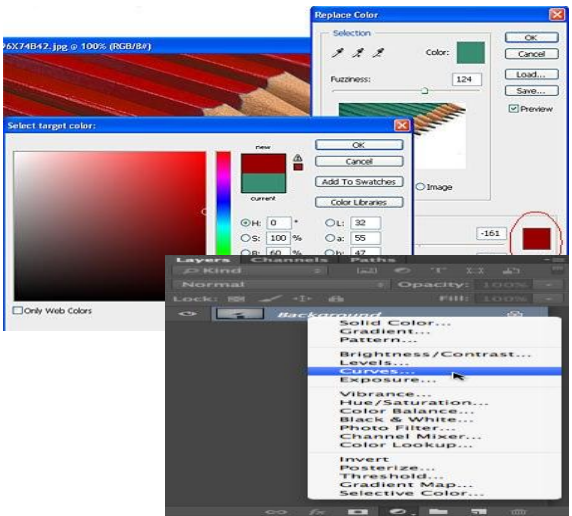

प्रिंट के लिए करते हैं वहीं आरजीबी (रेड, ग्रीन, ब्ल्यू) का प्रयोग कम्प्यूटर या फिर टेलीविजन स्क्रीन के लिए सही होता है।

12.5.5 कर्व्स

शार्पनेस को नियंत्रित करने के लिए हम कर्व टूल का उपयोग करते हैं। कर्व टूल के उपयोग से हम शैडो या को नियंत्रित कर सकते हैं दूसरी तरफ कर्व के उपयोग कर हम शैडो को कम करने के साथ ही साथ कंट्रास्ट भी बढ़ा सकते हैं।

12.5.6 कलर पिकर- आईड्रापर का प्रयोग कर किसी भी तरह के फोरग्राउंड से कलर लेकर हम उसी कलर की एक रेंज निर्धारित कर सकते हैं। कलर पिकर कलर की एक पूरी रेंज लेकर आता है जोकि डार्क कलर से होकर लाइट कलर हो सकता है। यह आरजीबी जैसे विभिन्न कलर प्रारूपों में भी सभी रंगों के लिए एक मानक अंक निर्धारित करता है।

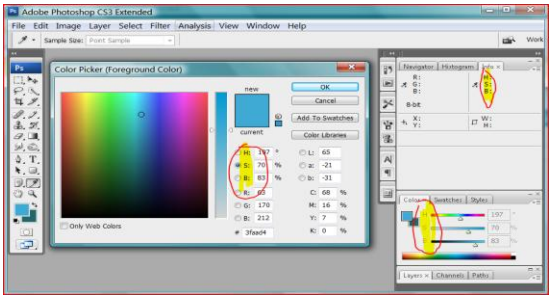

12.5.7 कलर पैलेट- कलर पैलेट विभिन्न प्रकार के रंगों का एक एंगठन है जहा कलर पैलेट के द्वारा हम किसी भी फोटोग्राफ के बैकग्राउंड और फोरग्राउंड कलर को बदलते हैं इसके लिए हम ब्रश का प्रयोग करते हैं। ब्रश का प्रयोग कर हम मनचाहा रंग चुनते हैं।

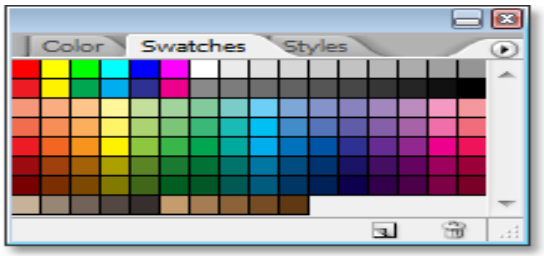

12.5.8 फिल्टर- किसी भी छवि के आकार और एपीयरेंस को बदलने का काम हम फिल्टर से करते हैं। इसके लिए हम फिल्टर गैलरी में जाकर मनचाहे फिल्टर का प्रयोग कर सकते हैं। यहा पर फिल्टर लेयर्स सहित कई तरह के विकल्प मिलते हैं। उदाहरण के लिए ब्लर फिल्टर किसी भी छवि के उस भाग को ब्लर या धूमिल करता है जिसे हम नहीं दिखाना चाहते हैं कई बार हम किसी ब्यक्ति की पहचान छुपाने के लिए भी ऐसा करते हैं। दूसरी तरफ शार्पेन फिल्टर किसी भी

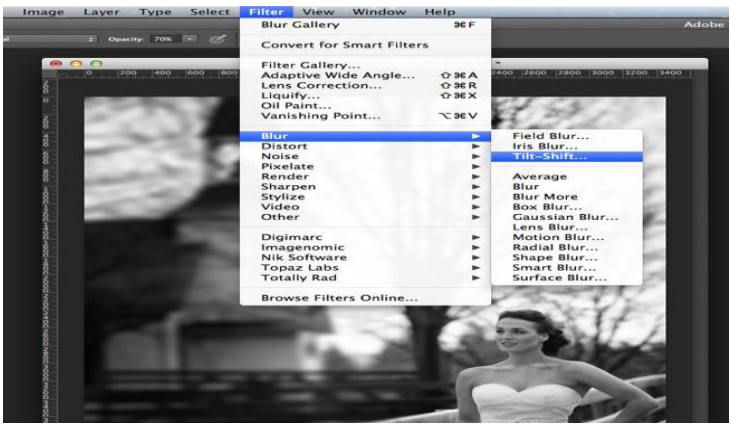

फोटोग्राफ को और अधिक शार्पेन या फिर तेज करता है। वहीं न्वायज फिल्टर किसी पुराने धूलधूसरित या ख़राब फोटोग्राफ को ठीक करने के काम आता है।

12.5.9 फोटो प्रिंटिंग-

फोटो प्रिंटिंग, फोटो को भौतिक रूप में लेने का एक तरीका है। यह किसी भी रूप में हो सकता है, उदाहरण के लिए-कागज, कैनवस, धातु या किभी भी अन्य माध्यम के उपर। उच्च गुणवत्ता वाले प्रिंट एक अच्छी छवि का सही प्रतिनिधित्व करते हैं। गुणवत्ता सुनिश्चित करने के लिए निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना आवश्यक है-

- **इमेज रिज्योलूशन-** एक अच्छी फोटोग्राफ के लिए रिज्योलूशन के मानक स्तर को ध्यान में रखना अति आवश्यक है। अधिकतर इसके लिए 300 पिक्सेल प्रति इंच (पीपीई) की सिफारिश की जाती है।

- **रंग प्रबंधन**- रंगों के प्रयोग में इस बात का ध्यान रखना अति आवश्यक होता है कि हम अगर प्रिंट के माध्यम से प्राप्त करें उस दशा में भी रंग उभर कर आयें साथ ही ये सटीक भी हों।
- **काग़ज के प्रकार-** सही काग़ज का चुनाव भी एक अच्छे प्रिंट के लिए आवश्यक है। इस संदर्भ कुछ प्रमुख कारक इस प्रकार हैं- काग़ज का प्रकार जैसे-चमकदार, मैट, साटन और काग़ज का वजन।
- **प्रिंट साइज़ और ऑस्पेक्ट रेशियो-** मूल चित्र के अनुसार गुणवत्ता सुनिश्चित करने के लिए यह आवश्यक है कि प्रिंट के साइज के अनुसार ऑस्पेक्ट रेशियो को रखा जाए। इसके अंतर्गत आवश्यकता पड़ने पर आकार को बदलना या फिर क्राप भी करना पड़ता है।
- **सही प्रिंट पद्धति का चुनाव-** आज कई प्रकार की प्रिंट पद्धति प्रयोग में लाई जाती है, इस बात को ध्यान में रखकर इंकजेट, लेज़र, डाई सब्लिमेशन का चुनाव किया जाता है। प्रत्येक पद्धति की अपनी विशेषतायें होती है इस बात को ध्यान में रखकर ही सही पद्धति का प्रयोग करना होता है। इससे ही हमें वांछित परिणाम मिल सकते हैं। इसके अलावा प्रिंट फिनिशिंग का सही प्रयोग भी फोटोग्राफ को आकर्षक बनाने में सहायक होता है। लेमिनेशन और उपयुक्त फ्रेमिंग से इसे हम लंबे समय तक सही बनाये रख सकते हैं।
- **प्रिंटर का रखरखाव-** प्रिंटर का रखरखाव आवश्यक है। इस संदर्भ में प्रिंटर की नियमित साफ-सफाई, कार्टिज और स्याही का बदलते रहना आवश्यक है।

इस प्रकार से हम कह सकते हैं कि प्रिंट लेने से पूर्व ही हमें यह ध्यान में रखना चाहिए कि फोटोग्राफ में कहीं किसी भी प्रकार की कमी तो नहीं रह गई है।

12.6 सारांश

फोटो एडिटिंग किसी भी फोटोग्राफ को और भी प्रभावशाली बनाने का एक तरीका है। इस संदर्भ में कई प्रोफेशनल साफ्टवेयर उपलब्ध हैं जिनमें सबसे लोकप्रिय है-फोटोशाप, फोटोशाप एक ऐसा इमेज एडिटिंग साफ्टवेयर है जो कि एडोब कंपनी द्वारा निर्मित है, यह किसी भी फोटोग्राफ को और भी बेहतर और आकर्षक बनाने में सहायक होता है। इसके अलग-अलग टूल फोटोग्राफ को भिन्न-भिन्न प्रकार से निरूपित करने में सहायक होते हैं। फोटोशाप फोटोग्राफ को आकर्षक बनाने के साथ ही साथ उसे एक मनचाहा स्वरूप प्रदान करता है। फोटोशॉप का प्रयोग कर हम कलर फोटोग्राफ को ब्लैक एण्ड वाइट और ब्लैक एण्ड वाइट फोटोग्राफ को कलरफुल बना सकते हैं, इसके द्वारा फोटोग्राफ का बैकग्राउंड या सब्जेक्ट भी आसानी से बदला जा सकता है। यह कई बार फोटोग्राफी के दौरान किसी भी प्रकार की कमी को भी बहुत हद तक दूर कर देता है। इस प्रकार से हम कह सकत हैं कि यह आम लोगों के साथ ही साथ प्रोफेशनल लोगों के लिए भी बहुत ही उपयोगी है। एक अच्छी छवि होने के साथ-साथ उसका प्रिंट भी सही आये इस बात को भी ध्यान में रखना अति आवश्यक है जिसमें रिज्योलूशन, फ्रेमिंग सहित प्रिंटर के सही रख रखाव की भी आवश्यकता पड़ती है। इस कार्य में एडिटिंग का एक बहुत ही महत्वपूर्ण योगदान है।

12.7 शब्दावली

- **ब्लर टूल-** ब्लर टूल का उपयोग किसी भी फोटोग्राफ के चयनित स्थान को ब्लर करने के लिए करते हैं।
- **बर्न टूल**- इसका उपयोग हम किसी भी छवि के किसी भाग को और गहरा करने के लिए करते हैं।
- **कलर पैलेट**- कलर पैलेट किसी भी इमेज फाइल के बैकग्राउंड और फोरग्राउंड कलर को प्रदर्शित करने के साथ ही साथ उन्हें अलग-अलग रंगों में बदलने का एक मौका भी मुहैया कराती है।
- **क्राप टूल-** क्राप टूल किसी भी फोटोग्राफ के चयनित स्थान को हटाने के लिए उपयोग किया जाता है। यह टूल कई बार इस मामले में उपयोगी होता है कि यह टूल हमें अवांछनीय चीजों को फोटोग्राफ से अलग करने एक मौका मुहैया कराता है।
- **टीआइएफएफ-** टैग्ड इमेज फाइल फॅारमेट।

12.8 संदर्भ ग्रंथ व पुस्तकें

- स्कॅाट केल्बी,द एडोब फोटोशॉप सीसी बुक फॅार डिजिटल फोटोग्राफर, कैल्बी वन।
- बेन लंग, कम्प्लीट डिजिटल फोटोग्राफी।

- लेंगफोर्ड, बेसिक डिजिटल फोटोग्राफी।
- माइकल फ्रीमैन, द फोटोग्राफर्स आई।
- नेशनल जियोग्राफिक इमेज कलेक्शन, नेशनल जियोग्राफिक।

12.9 अभ्यास हेतु प्रश्न

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न-

1. फोटोशॉप क्या है?
2. फोटोशॉप में आप रंगों को किस प्रकार चयनित करते हैं?
3. फोटोशॉप की उपयोगिता बताइए?

लघु उत्तरीय प्रश्न-

1. किसी भी फोटोग्राफ की न्वायज कैसे कम करते हैं?
2. फोटो संपादन के महत्व को समझाइए?
3. फिल्टर क्या है?

अति लघु उत्तरीय प्रश्न -

1. आरजीबी क्या है-
    क. रेक्टर ग्राफिक बेसिक
    ख. रेयर ग्राफिक बेसिक
    ग. रेड ग्रीन ब्ल्यू
    घ. रेयर ग्रीन ब्ल्यू
2. क्लोन टूल क्या करता है-
    क. किसी छवि की प्रतिकृति तैयार करता है
    ख. किसी छवि को मिटाता है।
    ग. किसी छवि में रंग भरता है।
    घ. किसी छवि को शार्प करता है।

अति लघु उत्तरीय प्रश्नों के उत्तर-

1.ग 2. क

इकाई- 13

ट्रैवल फोटोग्राफी

पाठ संरचना

13.0 उद्देश्य

13.1 प्रस्तावना

13.2 **ट्रैवल फोटोग्राफी : परिचय**

13.3 फोटोग्राफी का महत्व

13.4 **ट्रैवल** फोटोग्राफी की शैली

13.5 **ट्रैवल** फोटोग्राफी : जुनून या व्यवसाय

13.5.1 पल को कैद करने का महत्व

13.5.2 यात्रा फ़ोटोग्राफ़ी से प्रेरणा

13.6 **ट्रैवल** फोटोग्राफी में सब्जेक्ट और स्टोरी-टेलिंग का महत्व

13.7 सोशल मीडिया एवं ट्रेवल फोटोग्राफी

13.8 **ट्रैवल** फोटोग्राफी के उपकरण

13.9 यात्रा के दौरान फोटो एडिटिंग

13.10 **रोजगार के अवसर**

13.11 सारांश

13.12 शब्दावली

13.13 संदर्भ ग्रंथ

13.14 अभ्यास हेतु प्रश्न

13.0 उद्देश्य

इस इकाई का अध्ययन करने के उपरांत आप निम्नांकित तथ्यों से परिचित हो सकेंगे-

1- **ट्रैवल** फोटोग्राफी क्या है एवं इसका संक्षिप्त इतिहास क्या है?
2- **ट्रैवल** फोटोग्राफी का महत्त्व
3- **ट्रैवल** फोटोग्राफी के क्षेत्र में रोज़गार के अवसर

13.1 प्रस्तावना

एक तस्वीर बहुत कुछ बयां कर सकती है। वह आपको चकित या आनंदित कर सकती है। यही नहीं, अगर तस्वीर खींचने वाला यानी फोटोग्राफर कल्पनाशील और क्रिएटिव हो, उसके पास एस्थेटिक सेंस हो, तो वह संसार में मौजूद कई अद्भुत चीजों को कैमरे में कैद कर सकता है। फोटोग्राफी के ही कई स्वरूपों में से एक है ट्रैवल फोटोग्राफी। जिन युवाओं को नौ से पांच ड्यूटी करने के बजाय कैमरे से देश-दुनिया को एक्सप्लोर करने में आनंद आता है, उनके लिए यह एक परफेक्ट फील्ड हो सकता है। आज युवाओं को यह प्रोफेशन काफी अपील कर रहा है। दो ग्रीक शब्दों (photo+graph) से बना 'फोटोग्राफी' का अर्थ है 'फोटो' यानी प्रकाश (Light) की मदद से 'ग्राफ' यानी चित्र तैयार करना। बेसिकली, इसमें होता यह है कि वस्तु से टकराकर (reflect होकर) लौटने वाली किरणें लेंस के जरिए कैमरे के अंदर नेगेटिव-फिल्म या डिजिटल सेंसर तक पहुंचती है और वस्तु की तस्वीर बनती है। नेगेटिव फिल्म में तस्वीर केमिकल प्रॉसेस से (फिल्म पर लगे फोटो-सेंसिटिव केमिकल के कारण) बनती है। जबकि, डिजिटल कैमरे में यही काम इलेक्ट्रॉनिक विधि से इमेज सेंसर करता है।

फोटोग्राफी में आपको जो भी करना है प्रकाश यानी लाइट की मदद से करना है। चित्रकार अपनी चित्रकारी '**रोशनी में**' करता है, लेकिन फोटोग्राफर अपनी चित्रकारी '**रोशनी से**' करता है। फोटोग्राफी में रोशनी एक रॉ-मटीरियल (कच्चा माल) की तरह है जिसका इस्तेमाल कर फोटो बनाई जाती है। इस तरह फोटोग्राफी रोशनी के उपयोग की कला है। आप लाइट यूज करने का स्किल जितना विकसित करेंगे आपकी फोटोग्राफी उतनी विकसित होगी। आम तौर पर एक नया फोटोग्राफर यही सोचता है कि बढ़िया फोटो वह है जो शार्प हो और जिसमें भरपूर डीटेल्स हों। लेकिन नहीं, सही मायने में एक बढ़िया फोटो वह होती है जो देखने वाले के ऊपर प्रभावी असर पैदा करती है। 'फोटोग्राफी क्या है' इस सवाल के जवाब में हमारा मानना है कि फोटोग्राफी केवल किसी वस्तु का हू-ब-हू चित्र खींच लेना नहीं है, बल्कि यह एक मीडियम (माध्यम) है जिसके जरिए अपनी बात कही जा सकती है, अपनी भावनाओं को अभिव्यक्त किया जा सकता है; वस्तु, व्यक्ति या दृश्य के सौंदर्य को दर्ज किया जा सकता है और किसी परिस्थिति या घटना के सच को दुनिया के सामने लाया जा सकता है। इस तरह, फोटोग्राफी एक आर्ट-फॉर्म है, एक कला है, एक मीडियम।

13.2 ट्रैवल फोटोग्राफी : परिचय

यह फोटोग्राफी का ही एक अंग है, जिसमें किसी खास क्षेत्र के लैंडस्केप, आबादी, संस्कृति, रीति-रिवाज या इतिहास का डॉक्यूमेंटेशन होता है। एक ट्रैवल फोटो वह इमेज होती है, जिसमें हम किसी स्थान या समय की अनुभूति करते हैं, जो किसी इलाके के लोगों, वहां की संस्कृति या प्राकृतिक सौंदर्य से हमारा परिचय कराती है। एक ट्रैवल फोटोग्राफर

देश-दुनिया की सैर कर, अलग-अलग प्रकार की तस्वीरें खींचता है और फिर उन्हें ट्रैवल बुक पब्लिशर्स, पोस्टकार्ड कंपनीज, मैग्जीन्स, होटल्स, न्यूजपेपर्स, वेबसाइट्स आदि को बेचता है। वह प्रोफेशनल या एमेच्योर दोनों हो सकता है।

13.3 ट्रैवल फोटोग्राफी का महत्व

ट्रैवल फ़ोटोग्राफ़ी दुनिया को लोगों तक लाने और उन्हें यह बताने के बारे में है कि वहां और क्या है। यह लोगों को अन्य संस्कृतियों के रीति-रिवाजों के बारे में शिक्षित करने, उन्हें यह दिखाने के बारे में है कि वे उनकी अपनी संस्कृतियों से कैसे भिन्न हैं। दुनिया हमारे आस-पास के क्षेत्र की तुलना में कहीं अधिक भव्य और सुंदर भिन्नताओं से भरपूर है। प्रकृति की महिमा को लोगों तक पहुंचाना, इस ग्रह की विविधता को प्रेरित और बढ़ावा देता है और दूसरों को महान आउटडोर देखने और देखने के लिए प्रोत्साहित करने में मदद करता है।

एक अच्छी यात्रा तस्वीर एक आयत में कैद किए गए समय के एक टुकड़े से कहीं अधिक होगी। यह एक कहानी सुनाएगा और भावनाएं व्यक्त करेगा। यात्रा फोटोग्राफी प्रेरणा का एक स्रोत है और हमारी दुनिया की सर्वश्रेष्ठ पेशकश को देखने और अनुभव करने का माध्यम है। इसके बाद, यह सर्वश्रेष्ठ को सामने लाता है। एक सफल ट्रेवल फोटोग्राफर वही है जो चीजों को केवल प्रेक्षक (Observer) के नजरिए से नहीं बल्कि एक कलाकार के नजरिए से भी देखे। यही है फोटोग्राफी का सार-तत्व। इसलिए एक कलाकार बेहद साधारण कैमरे से भी बेहतरीन तस्वीर का निर्माण कर सकता है जबकि एक सामान्य फोटोग्राफर तस्वीर के शार्पनेस, चमक, लाइट और डीटेल्स में ही उलझा रह जाता है। इसलिए एक बढ़िया और सार्थक फोटोग्राफर बनने के लिए चित्रकला का अध्ययन करना चाहिए। उसके सिद्धांतों को समझना चाहिए और कलाकार वाली नजर पैदा करनी चाहिए।

13.4 ट्रैवल फोटोग्राफी की शैली

ट्रैवल फ़ोटोग्राफ़ी फ़ोटोग्राफ़ी की एक शैली है जिसमें किसी क्षेत्र के परिदृश्य, लोगों, संस्कृतियों, रीति-रिवाजों और इतिहास का दस्तावेज़ीकरण शामिल हो सकता है। फ़ोटोग्राफ़िक सोसाइटी ऑफ़ अमेरिका एक यात्रा फ़ोटो को एक ऐसी छवि के रूप में परिभाषित करती है जो किसी समय और स्थान की भावना को व्यक्त करती है, किसी भूमि, उसके लोगों या किसी संस्कृति को उसकी प्राकृतिक स्थिति में चित्रित करती है, और जिसकी कोई भौगोलिक सीमाएँ नहीं होती हैं। एक शैली के रूप में यात्रा फोटोग्राफी अपने द्वारा कवर किए जाने वाले विषयों के संदर्भ में सबसे अधिक खुली शैलियों में से एक है। कई यात्रा फ़ोटोग्राफ़र फ़ोटोग्राफ़ी के एक विशेष पहलू जैसे यात्रा चित्र, परिदृश्य या वृत्तचित्र फ़ोटोग्राफ़ी के साथ-साथ यात्रा के सभी पहलुओं की शूटिंग में विशेषज्ञ होते हैं। आज की अधिकांश यात्रा फ़ोटोग्राफ़ी शैली स्टीव मैककरी जैसे फ़ोटोग्राफ़रों के नेशनल जियोग्राफ़िक पत्रिका जैसी पत्रिकाओं में शुरुआती काम से ली गई है। फोटोग्राफी की इस शैली में विभिन्न उपलब्ध परिस्थितियों में विभिन्न प्रकार के विषयों की शूटिंग शामिल है, जैसे घर के अंदर कम रोशनी में फोटोग्राफी, इमारतों और स्मारकों के बाहरी हिस्सों के लिए उपलब्ध परिवेश प्रकाश फोटोग्राफी, सड़कों पर शूटिंग जहां कभी-कभी परिस्थितियां प्रतिकूल हो सकती हैं, उन क्षणों को कैप्चर करना जो शायद ही कभी दोहराए जाते हैं, परिदृश्य की शूटिंग के दौरान प्रकाश के जादू को कैप्चर करना आदि। यात्रा फ़ोटोग्राफ़ी

महज़ एक बेहतरीन छवि कैप्चर करने से कहीं आगे तक जाती है। यह एक कहानी बताने, शिक्षित करने और प्रेरित करने के लिए है।

13.5 ट्रैवल फोटोग्राफी : जुनून या व्यवसाय

हर किसी को यात्रा करना पसंद है, और खूबसूरत यात्रा फोटोग्राफी के रूप में अपनी यात्रा की एक छोटी-सी स्मृति रखने से बेहतर कुछ नहीं है। यात्रा फोटोग्राफी की शक्ति हमें समय के उस क्षण में वापस ले जाने की क्षमता में निहित है, जिससे हमें ऐसा महसूस होता है जैसे हम वहीं वापस आ गए हैं, इसे फिर से अनुभव कर रहे हैं।

हर तस्वीर एक कहानी बताती है, और यह यात्रा फोटोग्राफी के लिए विशेष रूप से सच है। चाहे वह एक आश्चर्यजनक परिदृश्य हो या स्थानीय लोगों के दैनिक जीवन के बारे में स्पष्ट शॉट, प्रत्येक तस्वीर में भावनाओं और यादों को जगाने की शक्ति है जो हमेशा आपके साथ रहेगी। इस लेख में, हम यह पता लगाएंगे कि यात्रा फोटोग्राफी इतनी महत्वपूर्ण क्यों है और ये तस्वीरें हमें दुनिया भर की विभिन्न संस्कृतियों और अनुभवों से जुड़ने में कैसे मदद कर सकती हैं। तो अपना कैमरा पकड़ें और आइए यात्रा फोटोग्राफी की अद्भुत दुनिया में गोता लगाएँ

13.5.1 पल को कैद करने का महत्व

यात्रा फोटोग्राफी केवल सुंदर तस्वीरें लेने के बारे में नहीं है, बल्कि यह उस क्षण को कैद करने के बारे में भी है। प्रत्येक तस्वीर में बताने के लिए एक कहानी है, और प्रत्येक तस्वीर एक अलग कहानी कहती है। इन क्षणों को कैद करने के महत्व को कम करके नहीं आंका जा सकता क्योंकि वे क्षणभंगुर हैं और एक बार चले जाने के बाद, उन्हें दोबारा उसी तरह से अनुभव नहीं किया जा सकता है। फोटोग्राफर के रूप में यह हम पर निर्भर है कि हम समय को स्थिर रखें और उन यादों को हमेशा के लिए सुरक्षित रखें।

जब तक हम पीछे मुड़कर तस्वीरें नहीं देखते तब तक हमें यह एहसास नहीं होता कि एक पल विशेष क्या है। यहीं पर भाषण का अलंकार चलन में आता है। यात्रा फ़ोटोग्राफ़ी केवल छवियों से कहीं अधिक कैप्चर करती है; यह भावनाओं और अनुभवों को पकड़ता है और स्थायी यादें बनाता है जो हमेशा आपके साथ रहेंगी। चाहे वह किसी प्रतिष्ठित स्थल के सामने खड़े होकर विस्मय की भावना हो या किसी विदेशी देश में पहली बार नए खाद्य पदार्थों को चखने का उत्साह हो, तस्वीरें आपको उन क्षणों में वापस ले जाने की शक्ति रखती हैं, जब वे बीत चुके होते हैं।

आज के सोशल मीडिया और डिजिटल शेयरिंग प्लेटफॉर्म के युग में, दुनिया भर में दूसरों को प्रेरित करने और शिक्षित करने के लिए यात्रा फोटोग्राफी तेजी से महत्वपूर्ण हो गई है। दुनिया के सभी कोनों से सुंदर परिदृश्य, विविध संस्कृतियों और अद्वितीय अनुभवों को प्रदर्शित करके, यात्री सांस्कृतिक समझ और प्रशंसा को बढ़ावा देते हुए दूसरों में घूमने की लालसा को प्रेरित कर सकते हैं। इसके अलावा, कार्यशालाओं या ऑनलाइन पाठ्यक्रमों जैसे शैक्षिक कार्यक्रमों के माध्यम से, फोटोग्राफर अपनी निजी तकनीकों का ज्ञान साझा करते हुए दूसरों को बेहतर तस्वीरें लेना सिखा सकते हैं।

तो अगली बार जब आप कहीं नई यात्रा कर रहे हों या सिर्फ अपने गृहनगर की खोज कर रहे हों, तो उन क्षणों को कैद करना याद रखें क्योंकि वे अंततः आपकी सबसे कीमती संपत्तियों में से कुछ बन सकते हैं। और कौन जानता है? आपकी यात्रा फ़ोटोग्राफ़ी किसी अन्य व्यक्ति को भी अपना साहसिक कार्य शुरू करने के लिए प्रेरित कर सकती है।

13.5.2 यात्रा फ़ोटोग्राफ़ी से प्रेरणा

एक तस्वीर किसी स्थान, उसके लोगों और उसके जीवन के तरीके के बारे में बहुत कुछ बता सकती है। यात्रा फोटोग्राफी में दूसरों को प्रेरित करने और उन्हें दुनिया भर की विभिन्न संस्कृतियों के बारे में सिखाने की शक्ति है।

आश्चर्यजनक छवियों को कैप्चर करने के माध्यम से, ट्रैवल फ़ोटोग्राफ़र ऐसी कहानियाँ बताने में सक्षम होते हैं जो भाषा की बाधाओं और भौगोलिक सीमाओं को पार करती हैं।

यात्रा फ़ोटोग्राफ़ी की ख़ूबसूरती यह है कि यह हमें उन स्थानों को देखने की अनुमति देती है जहाँ हमें कभी जाने का अवसर नहीं मिला होता। किसी और द्वारा ली गई तस्वीरों को देखकर, हमें दुनिया के दूसरे हिस्से में एक खिड़की मिलती है - जो कि हम जो इस्तेमाल करते हैं उससे काफी अलग हो सकती है। ये तस्वीरें हमें विभिन्न संस्कृतियों और जीवन जीने के तरीकों के बारे में और अधिक जानने के लिए प्रेरित कर सकती हैं। वे हमें दुनिया के अन्य हिस्सों में उन मुद्दों के बारे में शिक्षित करने में भी मदद करते हैं जिनके बारे में हम अन्यथा नहीं सुन सकते।

13.6 ट्रैवल फोटोग्राफी में सब्जेक्ट और स्टोरीमहत्व का टेलिंग-

आमतौर पर लोग यह समझते हैं कि बढ़िया महंगे कैमरा और लेंस से ली गई साफ-सुथरी चमचमाती हाई क्वालिटी फोटो बेहतरीन फोटोग्राफी का नमूना होती है। लेकिन बात दरअसल ऐसी नहीं है। टेक्निकली फोटो कितनी भी हाई क्वालिटी की हो लेकिन उसमें यदि व्यूअर के लिए कोई संदेश ही न हो तो सब बेकार है। फोटो में सब्जेक्ट का महत्व होता है। फोटो की सुंदरता, बढ़िया एक्सपोजर, लाइट, चमक और डीटेल्स ये सारी बातें बाद में आती हैं। अपनी तस्वीर के जरिए आप क्या दिखा रहे हैं यह महत्वपूर्ण होता है।

यात्रा फोटोग्राफी कहानी कहने का एक अविश्वसनीय अवसर प्रदान करती है। प्रत्येक तस्वीर समय के एक विशेष क्षण के बारे में एक अनूठी कहानी बताती है और उन भावनाओं और अनुभवों को कैद करती है जिन्हें अकेले शब्द व्यक्त नहीं कर सकते। यात्रा फोटोग्राफी में कहानी कहने की भूमिका महत्वपूर्ण है - इन कहानियों के माध्यम से हम अन्य संस्कृतियों के बारे में जानकारी प्राप्त करते हैं और यह समझना शुरू करते हैं कि हमारा अपना जीवन मानवता के व्यापक संदर्भ में कैसे फिट बैठता है।

जैसा कि हम यात्रा फोटोग्राफी में कहानी कहने के महत्व को गहराई से समझते हैं, आइए कुछ उदाहरण देखें कि कैसे इस शक्तिशाली माध्यम का उपयोग पूरे इतिहास में दुनिया भर के लोगों को जोड़ने के लिए किया गया है।

साधारण कैमरे, यहां तक कि साधारण स्मार्ट फोन से भी ली गई तस्वीर धूम मचा सकती है यदि उसका आधार कोई दमदार सार्थक सब्जेक्ट हो या जिसके पीछे कोई मजबूत कहानी हो, या कोई ऐसा भाव या कोई ऐसा सौंदर्य जो देखने वाले के मन को छू ले। तस्वीर ऐसी होनी चाहिए जिसमें कोई स्टोरी हो, या जिसे देखकर व्यूअर को भावनात्मक अनुभूति मिले, या कुछ ऐसा जो जीवन के किसी अनदेखे पक्ष को उजागर करता हो।

फोटोग्राफी को औजार बनाकर ऐसा बहुत कुछ किया जा सकता है, जिससे दर्शक को जीवन और जगत से जुड़ने की प्रेरणा मिले। फोटोग्राफी के जरिए सामाज और पर्यावरण की समस्या की तरफ लोगों का ध्यान खींचा जा सकता है। फोटोग्राफी के जरिए व्यक्ति और समाज के जीवन में बदलाव लाया जा सकता है, सार्थक संदेश दिया जा सकता है, और यह फोटोग्राफी की सबसे बड़ी ताकत भी है।

13.7 सोशल मीडिया एवं ट्रैवल फोटोग्राफी

सोशल मीडिया ने हमारे अनुभवों को दूसरों के साथ साझा करने के तरीके में क्रांति ला दी है और यात्रा फोटोग्राफी भी इसका अपवाद नहीं है। यात्रा फोटोग्राफी और कहानी कहने पर सोशल मीडिया के प्रभाव को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता है, क्योंकि इसने हमारे कारनामों को कैद करने और दुनिया के सामने पेश करने के तरीके को बदल दिया है। उदाहरण के लिए, बहुत से लोग अपनी यात्रा को प्रदर्शित करने के लिए इंस्टाग्राम का उपयोग आश्चर्यजनक तस्वीरें पोस्ट करके करते हैं जो किसी स्थान की सुंदरता को दर्शाती हैं या उनकी यात्रा के बारे में कहानी बताती हैं।
सोशल मीडिया प्लेटफ़ॉर्म ने यात्रियों के लिए कहानीकार बनने और दुनिया भर के दर्शकों के साथ अपने अद्वितीय दृष्टिकोण साझा करने का अवसर बनाया है। यात्रा फोटोग्राफी उन लोगों में घूमने की लालसा को प्रेरित कर सकती है जो इसे देखते हैं और साथ ही विभिन्न समुदायों के बीच सांस्कृतिक आदान-प्रदान और समझ को भी बढ़ावा देते हैं। जैसे-जैसे अधिक लोग अपनी यात्राओं का ऑनलाइन दस्तावेजीकरण करना जारी रखेंगे, यात्रा फोटोग्राफी निस्संदेह यह तय करने में और भी बड़ी भूमिका निभाएगी कि हम अन्य देशों और संस्कृतियों को कैसे देखते हैं।
यात्रा फोटोग्राफी की शक्ति न केवल सुंदर परिदृश्यों को कैद करने की क्षमता में निहित है, बल्कि दुनिया के सभी कोनों से लोगों को जोड़ने की क्षमता में भी निहित है। सोशल मीडिया यात्रियों के लिए अपनी कहानियाँ साझा करने के लिए एक मंच के रूप में काम कर रहा है, इस कला रूप का विकास और महत्व लगातार बढ़ रहा है। अपनी सोशल मीडिया उपस्थिति को वेतन में बदलें! अभी जुड़ें और फेसबुक, ट्विटर और यूट्यूब पर प्रत्येक पोस्ट, ट्वीट या वीडियो के लिए कमाई शुरू करें!
यात्रा फोटोग्राफी को सोशल मीडिया पर बहुत अधिक ध्यान और प्रतिक्रिया मिलती है। लोग उन स्थानों की सुंदर, सुरम्य छवियों को लाइक और साझा करना पसंद करते हैं जहां वे जाना पसंद करते हैं। एक ट्रैवल फ़ोटोग्राफ़र के रूप में, अपने लाभ के लिए सोशल मीडिया का लाभ उठाना सीखें। एक या अधिकतम दो सोशल मीडिया प्लेटफ़ॉर्म चुनें और अपनी सारी ऊर्जा नियमित रूप से उच्च गुणवत्ता वाले पोस्ट साझा करने पर केंद्रित करें। उन लोगों के साथ बातचीत करें जो आपके काम पर टिप्पणी करते हैं और उसे साझा करते हैं और अपने प्रशंसक बनाते हैं। बाज़ार के रुझान, काम की गुणवत्ता और सुधार के क्षेत्रों को समझने के लिए लाइक, शेयर और टिप्पणियों के मैट्रिक्स को देखें।

- **इंस्टाग्राम (Instagram)**

इंस्टाग्राम, दृश्य कहानी कहने का एक पावरहाउस, एक वर्ग पहलू अनुपात का समर्थन करता है। 1:1 अनुपात वाली तस्वीरें इंस्टाग्राम पर निर्बाध रूप से काम करती हैं, जिससे एक सुसंगत और सौंदर्यपूर्ण रूप से मनभावन ग्रिड लेआउट की अनुमति मिलती है। वर्गाकार रचनाएँ सामंजस्य की भावना पैदा करती हैं, जिससे यह क्यूरेटेड फ़ीड के लिए एक आदर्श विकल्प बन जाता है। इंस्टाग्राम के लिए अनुशंसित आकार: 1080×1080 पिक्सल! इंस्टाग्राम फोटोग्राफरों के लिए अपना काम साझा करने का पसंदीदा मंच बनकर उभरा है। ट्रैवल फोटोग्राफी इंस्टाग्राम पर विशेष रूप से लोकप्रिय है, जहां कई हब पेज ट्रैवल फोटोग्राफी को बढ़ावा देते हैं। एक ट्रैवल फ़ोटोग्राफ़र के रूप में सफलता पाने के लिए इंस्टाग्राम पर फ़ोटोग्राफ़ी हैशटैग का उपयोग करना सीखें।

- **फेसबुक**

फेसबुक आपकी कहानी कहने में लचीलापन प्रदान करते हुए, पहलू अनुपात की एक श्रृंखला को समायोजित करता है। हालाँकि, समाचार फ़ीड में इष्टतम प्रदर्शन के लिए, 16:9 पहलू अनुपात एक सुरक्षित शर्त है। यह अनुपात सुनिश्चित करता है कि आपकी तस्वीरें दर्शकों की स्क्रीन के एक बड़े हिस्से पर कब्जा कर लेती हैं, और विविध सामग्री के बीच ध्यान आकर्षित करती हैं। फेसबुक के लिए अनुशंसित आकार: 1200×675 पिक्सेल (16:9 पहलू अनुपात)

- **ट्विटर**

ट्विटर, अपने तेज़ गति वाले फ़ीड के साथ, परिदृश्य-उन्मुख छवियों पर आधारित सोशल मीडिया प्लेटफार्म है। 16:9 आस्पेक्ट रेशियो ट्विटर के लिए उपयुक्त है, जो यह सुनिश्चित करता है कि आपकी तस्वीरें अलग दिखें और टाइमलाइन में तेजी से अपना विवरण प्रस्तुत करें। ट्विटर के लिए अनुशंसित आकार: 1200×675 पिक्सेल (16:9 पहलू अनुपात)

- **पिनट्रेस्ट**

पिनट्रेस्ट, खोज के लिए बनाया गया एक मंच, ऊर्ध्वाधर रचनाओं का पक्षधर है। 2:3 या 1:2.3 पहलू अनुपात वाली लंबी छवियां अच्छा प्रदर्शन करती हैं, जिससे आपके दृश्यों का प्रभाव अधिकतम हो जाता है क्योंकि उपयोगकर्ता अपने प्रेरणा बोर्डों पर स्क्रॉल करते हैं। पिनट्रेस्ट के लिए अनुशंसित आकार :600×900 पिक्सेल या 1000×1500 पिक्सेल)2:3 पहलू अनुपात(

अपनी पोर्टफ़ोलियो वेबसाइट में एक यात्रा फ़ोटोग्राफ़ी ब्लॉग जोड़ें। दृश्य कहानियाँ बताना शुरू करें, यात्रा फ़ोटोग्राफ़ी युक्तियाँ साझा करें, और अपनी यात्रा के पर्दे के पीछे की अंतर्दृष्टि साझा करें। जिन स्थानों पर आप जा रहे हैं उनकी फोटो कहानियां बनाएं। संस्कृति, अनुभवों के बारे में बात करें और अपने ब्लॉग पोस्ट के माध्यम से अपने अन्वेषण साझा करें। आपका ब्लॉग धीरे-धीरे प्रशंसकों और संभावित ग्राहकों को समान रूप से आकर्षित करने के लिए एक चुंबक बन जाएगा

सप्ताहांत में किसी बढ़िया थीम वाले रेस्तरां में मित्र यात्रा फोटोग्राफरों के साथ मेलजोल बढ़ाने के बारे में आपका क्या ख़याल है? आप एक-दूसरे को जानते हैं, साहसिक फोटोग्राफी में साझा रुचियों को जोड़ते हैं, अत्याधुनिक तकनीकी तरकीबें सीखते हैं, और सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि वरिष्ठ पेशेवरों द्वारा ग्राहकों को सिफारिश की जाती है। नेटवर्क बनाएं, अपने समुदाय के साथ सकारात्मक भावनाएं साझा करें और अपने काम के लिए ट्रैवल फ़ोटोग्राफ़रों के समुदाय में पहचान पाएं। कई ऑनलाइन ट्रैवल फ़ोटोग्राफ़ी समुदाय भी हैं जिनसे आप जुड़ सकते हैं। साथी यात्रा फ़ोटोग्राफ़र जिन स्थानों पर गए हैं, उनके बारे में अंदरूनी जानकारी देकर एक-दूसरे की मदद करने में बहुत खुश हैं।

यात्रा फोटोग्राफी सिर्फ कैमरे के बारे में नहीं है। यह लोगों, स्थानों, संस्कृतियों, भूगोलों और व्यावहारिक रूप से उन सभी सड़कों की खोज करने के बारे में है जो आपके रास्ते में आती हैं। आप जहां भी जाएं प्रत्येक स्थान को आत्म-प्रचार के साथ चिह्नित करें। नेक कार्यों से जुड़ें और खुद को सामाजिक अभियानों से जोड़ने पर ध्यान दें। उदाहरण के लिए, आप लुप्तप्राय प्रजातियों और विलुप्त होने के कगार पर मौजूद जानवरों के बारे में जानकारी फैलाने के लिए वन्यजीव फोटोग्राफी में अपना हाथ आज़मा सकते हैं। लोगों से मिलने-जुलने की आपाधापी के बीच, कहीं से भी नए ग्राहक और नए कार्यभार सामने आएँगे।

13.8 ट्रैवल फोटोग्राफी के उपकरण

पैकिंग करते समय और नए गियर की खरीदारी करते समय आपको कुछ बातें ध्यान में रखनी चाहिए। सबसे पहले, याद रखें कि यात्रा फोटोग्राफी में बहुत कुछ शामिल होता है... यात्रा। तो कहने की जरूरत नहीं है कि बोझ जितना हल्का होगा, आपका जीवन उतना ही आसान होगा। कभी-कभी उस सटीक शॉट को प्राप्त करने का मतलब कुछ

जंगल में पैदल यात्रा करना या कुछ समय के लिए बाहर डेरा डालना हो सकता है, और आपकी रीढ़ हल्के या कम गियर लाने के लिए लंबे समय तक आपको धन्यवाद देगी। स्टूडियो के लिए भारी उपकरण छोड़ें। विदेश में किसी साहसिक यात्रा पर जाने वाले किसी भी फोटोग्राफर के लिए यहां आवश्यक चीजें दी गई हैं।

1. कैमरा

जाहिर है, सबसे पहली चीज जिसकी आपको आवश्यकता होगी वह है आपका कैमरा। किसी भी बजट के लिए कई कैमरे हैं, लेकिन यहां मुख्य बात यह सोचना है कि आप कितना ले जाने को तैयार हैं। कुछ पेशेवर दो कैमरे भी ले सकते हैं: एक चौड़े लेंस वाला और दूसरा लंबे लेंस वाला ताकि लेंस बदलने के लिए रुके बिना किसी भी स्थिति के लिए तैयार रहें। हालाँकि, यदि आप पहले से ही जानते हैं कि आप किस प्रकार की छवियां कैप्चर करना चाहते हैं, तो उचित गियर को सीमित करना आसान है।

उदाहरण के लिए, एक भारी डीएसएलआर कैमरा और अतिरिक्त लेंस ले जाना कम रोशनी की स्थिति में स्पष्ट तस्वीरें खींचने के लिए बहुत अच्छा है, लेकिन वे भारी होते हैं। याद रखें, आपका कैमरा आपके शस्त्रागार में सिर्फ एक उपकरण है। अन्य कारक जो एक आश्चर्यजनक फोटो बनाते हैं जैसे रचना, प्रकाश व्यवस्था, फोकस इत्यादि। आप पर निर्भर हैं. विभिन्न यात्रा कैमरों के बारे में अधिक जानने के लिए यहां क्लिक करें।

2. तिपाई

आपका तिपाई हल्का होना चाहिए (अभी तक एक सामान्य विषय पर ध्यान दें?) लेकिन यात्रा के दौरान अपरिहार्य टूट-फूट का सामना करने के लिए पर्याप्त मजबूत होना चाहिए। आम तौर पर, कार्बन फाइबर ट्राइपॉड अधिक महंगे होते हैं, लेकिन हल्के, मजबूत होंगे और आपकी गति धीमी नहीं करेंगे। एल्युमीनियम तिपाई उतने मजबूत नहीं होते हैं, लेकिन यदि आपका बजट है, तो वे कम अग्रिम लागत में काम पूरा कर देंगे। बस इसके साथ बहुत अधिक संलग्न न हों या यह अपेक्षा न करें कि यह कई यात्राओं के बाद भी कायम रहेगा। यहां आपको कुछ यात्रा-अनुकूल तिपाई मिलेंगे। स्मार्टफोन ट्राइपॉड कहीं भी ले जाने के लिए काफी छोटा है आप जहां भी जाएं अपना पूरा सेटअप अपने साथ ले जाना अच्छा रहेगा - आपका डीएसएलआर, आपके बड़े ट्राइपॉड और आपके सभी लेंस। वे घर के नजदीक शानदार तस्वीरें लेने के लिए बहुत अच्छे हैं, लेकिन साथ

में यात्रा करने के लिए वे यथार्थवादी नहीं हैं। फ़ोन कैमरे हर साल अपग्रेड हो रहे हैं, और उनमें से अधिकांश अब पेशेवर-गुणवत्ता वाली तस्वीरें लेने में सक्षम हैं। हालाँकि, उनमें से सर्वोत्तम प्राप्त करने के लिए, आपको एक स्थिर मंच की आवश्यकता है जहाँ से आप अपनी यात्रा की तस्वीरें ले सकें।

जब आप तिपाई के बारे में सोचते हैं, तो आप शायद एक बड़ी भारी चीज की कल्पना करते हैं जिसे जमीन पर स्थापित करने की आवश्यकता होती है। पिक्सी संग्रह के साथ, यह सच्चाई से अधिक दूर नहीं हो सकता। इन पूरी तरह से पोर्टेबल सेल फोन तिपाई का उपयोग आश्चर्यजनक तस्वीरें लेने के लिए तैयार आपके स्मार्टफोन को स्थिर करने के लिए किया जा सकता है। आप दूरी पर भी एक सेट अप कर सकते हैं और अपने फ़ोन पर टाइमर फ़ंक्शन का उपयोग करके स्वयं की शानदार तस्वीरें ले सकते हैं। अब अजनबियों को आपके लिए शॉट लेने के लिए अजीब तरह से नहीं कहना पड़ेगा।

एक मिनी ऑल-इन-वन स्मार्टफ़ोन समाधान

अब हम आपको हमारे एक गुप्त हथियार - ट्विस्टग्रिप से परिचित कराना चाहते हैं। स्मार्टफोन एक्सेसरीज़ के शस्त्रागार में एक आवश्यक टुकड़ा, यह स्मार्टफोन ट्राइपॉड का आदर्श विकल्प है। यूनिवर्सल स्मार्टफोन क्लैंप को आपके फोन को ट्राइपॉड से कनेक्ट करने के लिए डिज़ाइन किया गया है जो आमतौर पर डीएसएलआर के साथ उपयोग के लिए आरक्षित होता है। यह आपकी जेब में रखने के लिए काफी छोटा है, और निश्चित रूप से इटली में उच्च गुणवत्ता के साथ बनाया गया है। अपने फ़ोन कैमरे की क्षमताओं को बढ़ाने के और तरीकों के लिए, बेझिझक हमारी विशेषज्ञ स्मार्टफ़ोन एक्सेसरी ख़रीदने की मार्गदर्शिका देखें।

छोटी एलईडी जो बहुत अधिक रोशनी देती हो

सूची में तीसरा सहायक उपकरण वह है जिसे आप एक उज्ज्वल विचार कह सकते हैं। ल्यूमिम्यूज एलईडी किसी भी विषय या सेटिंग को रोशन करने के लिए मौजूद हैं। वे किसी भी यात्रा पर ले जाने के लिए पर्याप्त पोर्टेबल हैं, और मूड बदलने के लिए अलग-अलग रंग के फिल्टर के साथ भी आते हैं। ये आश्चर्यजनक छोटे एलईडी 4 अलग-अलग संस्करणों में आते हैं, सबसे बड़े में ब्लूटूथ कनेक्टिविटी भी शामिल है। इसे अपने डीएसएलआर, ट्राइपॉड या ट्विस्टग्रिप पर लगाएं और उन यात्रा चित्रों को शूट करें।

3. फिल्टर

सनी शॉट्स के लिए बिल्कुल सही फ़िल्टर है। एक बार जब आप अंधेरे स्थितियों के लिए अपनी रोशनी व्यवस्थित कर लेते हैं, तो आपको उन धूप छुट्टियों पर अपने कैमरे की क्षमताओं को बढ़ाने के लिए कुछ की

आवश्यकता होगी। जिसे सर्कुलर पोलराइज़िंग फ़िल्टर कहा जाता है, वह नीले आसमान के रंग संतृप्ति और कंट्रास्ट को बढ़ाएगा, साथ ही उन प्रतिबिंबों को भी कम करेगा जो आप आमतौर पर पानी या कांच की अपनी तस्वीरों में देख सकते हैं। यह उन उज्ज्वल दिनों में काम आएगा जिन्हें अकेले आपके लेंस से कैद नहीं किया जा सकता।

ये कुछ प्रकार के फ़िल्टर हैं जो आमतौर पर यात्रा के दौरान लाए जाते हैं:

यूवी फिल्टर - फिल्म कैमरा का उपयोग करते समय ये फिल्टर एक अत्यंत आवश्यक हैं। इसके बिना, विकास के बाद फ़ोटो का रंग नीला हो जाएगा। लेकिन भले ही आप डिजिटल रूप से काम कर रहे हों, एक यूवी फ़िल्टर आपके लेंस को दीर्घकालिक क्षति से बचाएगा - एक योग्य निवेश, यह देखते हुए कि उनकी लागत हजारों डॉलर हो सकती है।

तटस्थ घनत्व (एनडी) फिल्टर - यदि आप दिन में शूटिंग करते हैं, तो एक तटस्थ घनत्व फिल्टर पैक करें। वे ओवर-एक्सपोज़र को खत्म करने के लिए उज्ज्वल प्रकाश को बेअसर करने में मदद करते हैं, खासकर यदि आप ऐसे प्रभाव बनाने की योजना बनाते हैं जिनके लिए व्यापक एपर्चर या धीमी शटर गति की आवश्यकता होती है।

सर्कुलर पोलराइजिंग फिल्टर (सीपीएल) - ध्रुवीकरण फिल्टर आपके शॉट्स में सूरज की चमक को खत्म कर देंगे और विशेष रूप से हरे और नीले रंग में रंग और कंट्रास्ट जोड़ देंगे। इससे पोस्ट-प्रोडक्शन बहुत आसान हो जाता है, खासकर यदि आप संपादन में नए हैं या आपके पास समय की कमी है।

4. एकाधिक मेमोरी कार्ड/हार्ड ड्राइव (एचडीडी)

किसी भी यात्रा के दौरान एक बड़ी (भंडारण आकार के संदर्भ में), पोर्टेबल हार्ड ड्राइव लाना बेहद महत्वपूर्ण है। कच्ची डिजिटल तस्वीरें बहुत अधिक जगह लेती हैं और विदेशों में क्लाउड स्टोरेज के लिए स्थानीय वाईफाई पर निर्भर रहना कभी भी अच्छा विचार नहीं है। अपने कैमरे के मेमोरी कार्ड से अपनी तस्वीरों को लैपटॉप या 1TB+ स्पेस वाले पोर्टेबल हार्ड ड्राइव में स्थानांतरित करने से आप भविष्य में सिरदर्द से बच जाएंगे। बस एक टिकाऊ प्राप्त करने के लिए अपना शोध करना सुनिश्चित करें - एचडीडी आमतौर पर गिरने, धूल या तरल पदार्थ आदि के संपर्क में आने पर टूट जाएंगे।

मेमोरी कार्ड के लिए भी यही बात लागू होती है. अनेक मेमोरी कार्ड लाएँ क्योंकि आप कभी नहीं जानते कि कोई चीज़ कब विफल हो जाएगी। और सुनिश्चित करें कि वे तेज़ हों और उनकी भंडारण क्षमता बड़ी हो। यह आपको फ़ील्ड में त्वरित और बर्स्ट शॉट कैप्चर करने देगा और लंबी अवधि के भंडारण का समय आने पर फ़ोटो को अधिक तेज़ी से स्थानांतरित करने देगा।

विविध महत्वपूर्ण यात्रा फोटोग्राफी गियर

विविध का मतलब वैकल्पिक नहीं है, इसलिए इन आवश्यक वस्तुओं को अपने लिए खरीदने और लाने में लापरवाही न बरतें:

- **कैमरा बैग -** एक गुणवत्ता वाला कैमरा बैग आपके सबसे महत्वपूर्ण उपकरणों में से एक हो सकता है। यह आरामदायक, हल्का, टिकाऊ होना चाहिए और इसमें आपके सभी उपकरणों के लिए क्षमता होनी चाहिए। स्थिति

के आधार पर विभिन्न प्रकार के बैगों के अपने फायदे हो सकते हैं। अतिरिक्त सामान ले जाने के लिए जंगल में लंबी पैदल यात्रा के लिए एक बड़ा बैग अच्छा हो सकता है, लेकिन शहर में भीड़भ-ाड़ वाली शूटिंग के लिए यह व्यावहारिक नहीं हो सकता है। आरंभ करने के लिए इस मार्गदर्शिका को देखें.

- **बैटरियां -** हर शूट के लिए हमेशा कम से कम दो पूरी तरह चार्ज बैटरी अपने साथ रखें। आप कभी नहीं जानते कि आप कितने समय तक बाहर रहेंगे और आखिरी चीज जो आपको चाहिए वह है कुछ घंटों के लिए पैदल चलना, सही स्थान पर पहुंचना और बैटरी खत्म हो जाने के कारण वापस मुड़ना।
- **सफाई सामग्री -** आपका कैमरा उपकरण महंगा है। इसके लिए कोई दो तरीके नही हैं। इसलिए यदि आप अपने उपकरण का अधिकतम उपयोग करने की योजना बना रहे हैं तो इसकी अच्छी देखभाल करना अत्यंत महत्वपूर्ण है। यात्रा फोटोग्राफी का अभ्यास करते समय, आपका गियर अनिवार्य रूप से तत्वों के संपर्क में आ जाएगा और अनुचित सफाई सामग्री का उपयोग करने से और अधिक नुकसान होगा।
- **मौसम से सुरक्षा -** जैसा कि उल्लेख किया गया है, आपके उपकरण महंगे हैं और यात्रा का मतलब तत्वों के संपर्क में आना है। चाहे धूल हो या बारिश, आपको तैयार रहना होगा।
- **आउटलेट एडाप्टर -** दिन के अंत में, आपको अपनी बैटरी और कंप्यूटर को चार्ज करने की आवश्यकता होगी। जब भी आप विदेश यात्रा करें, तो पता करें कि उनकी इमारतों में किस प्रकार के विद्युत आउटलेट का उपयोग किया जाता है ताकि आप उचित प्लग एडाप्टर ला सकें।

अंत में, इन सभी उपकरणों का क्षेत्र में होना अत्यंत महत्वपूर्ण है, लेकिन जब शूटिंग समाप्त हो जाती है और आपकी कलाकृति को जीवंत बनाने का समय आ जाता है, तो विकास, फ़्रेमिंग और प्रदर्शन प्रक्रियाएं उतनी ही महत्वपूर्ण होती हैं। आख़िरकार, आपको एक घटिया तैयार उत्पाद बनाने के लिए इतना प्रयास नहीं करना पड़ा।

13.9 यात्रा के दौरान फोटो एडिटिंग

फोटोग्राफी के लिए कैमरे का बेसिक नॉलिज होना जरूरी है। डॉटोमैटिक डिजिटल कैमरे में एवरेज वैल्यू के मुताबिक आपके लिए सारी सेटिंग्स कैमरे की इनबिल्ट सॉफ्टवेयर द्वारा कर दी जाती है। लेकिन, बेहतर फोटोग्राफी के लिए आपको मैनुअल तरीके से सबकुछ खुद से सेट करना पड़ता है। इसके लिए आपको कैमरे का मेकैनिज्म पता होना चाहिए और साथ ही एक्सपोजर सेटिंग, फोकस सेट करने के तरीके, फ्लैश के इस्तेमाल सहित अन्य तकनीकों का ज्ञान होना चाहिए।

सब्जेक्ट पर पड़ने वाली रोशनी की मात्रा, आईएसओ, कैमरे की शटर स्पीड और लेंस के अपर्चर (Aperture) की समझ से सही एक्सपोजर हसिल करने में मदद मिलती है। फोटो को ठीक-ठीक एक्सपोज करने पर फोटोग्राफी की सफलता निर्भर करती है। यह फोटोग्राफर का एक अनिवार्य कौशल है। एक्सपोजर कितना हो, कैसा हो और दृश्य या ऑब्जेक्ट का कौन सा हिस्सा कितना एक्सपोज हो इसका कोई फिक्स फॉर्म्युला नहीं है। यह पूरी तरह फोटोग्राफर की जरूरत, समझ और उसकीयात्रा फोटोग्राफी संपादन आपके द्वारा यादगार यात्रा से ली गई तस्वीरों में से सर्वश्रेष्ठ को सामने लाता है। जबकि यात्रा फोटोग्राफी किसी स्थान के सार को दर्शाती है, यह तो बस शुरुआत है। अपनी यात्रा की तस्वीरों को सही मायने में अलग दिखाने के लिए संपादन की कला में महारत हासिल करना आवश्यक है। इस गाइड

में, यात्रा फोटोग्राफी संपादन की जटिलताओं का पता लगाएं। जहां भी आपका रोमांच आपको ले जाए, अपनी तस्वीरों को बेहतर बनाने के लिए अंतर्दृष्टि, युक्तियां और तकनीक प्राप्त करें। कलात्मक रुझान पर निर्भर करता है।

सही संपादन सॉफ्टवेयर चुनना

जब आपके यात्रा फोटोग्राफी संपादन को उन्नत करने की बात आती है, तो सॉफ्टवेयर का चुनाव एक चित्रकार के लिए सही ब्रश का चयन करने के समान है। बाज़ार विकल्पों से भरा हुआ है, प्रत्येक में फोटोग्राफरों की समझदार ज़रूरतों को पूरा करने के लिए तैयार की गई अनूठी विशेषताएं हैं। असंख्य विकल्पों में से, तीन प्रमुख रूप से सामने आते हैं: एडोब लाइटरूम, कैप्चर वन, और डीएक्सओ फोटोलैब।

एडोब लाइटरूम (Adobe Light room)

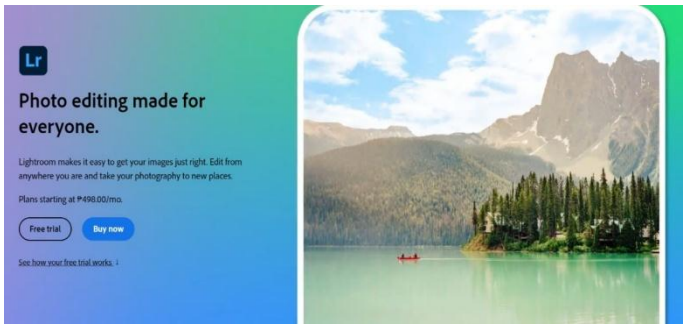

व्यापक रूप से उद्योग मानक के रूप में माना जाने वाला एडोब लाइटरूम एक व्यापक और उपयोगकर्ता के अनुकूल संपादन उपकरण है। इसका सहज ज्ञान युक्त इंटरफ़ेस एडोब के क्रिएटिव क्लाउड के साथ सहजता से एकीकृत होता है, जो शुरुआती और अनुभवी फोटोग्राफर दोनों के लिए एक सहज वर्कफ़्लो प्रदान करता है। लाइटरूम की व्यापक सुविधाओं में शक्तिशाली रंग सुधार, बहुमुखी प्रीसेट और मजबूत संगठन उपकरण शामिल हैं। क्लाउड-आधारित प्लेटफ़ॉर्म के रूप में, यह कई डिवाइसों पर निर्बाध संपादन की अनुमति देता है, जिससे यह उन लोगों के लिए पसंदीदा विकल्प बन जाता है जो लचीलेपन और पहुंच को महत्व देते हैं।

लाइट रूम मोबाइल (Light Room Mobile)

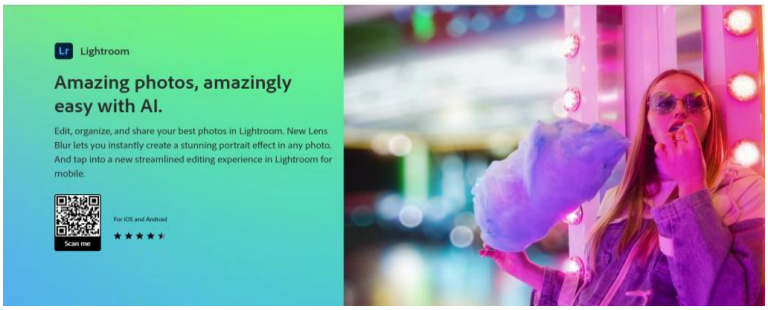

लाइटरूम मोबाइल एडोब के प्रसिद्ध डेस्कटॉप संपादन सॉफ्टवेयर की शक्ति को आपके स्मार्टफोन तक निर्बाध रूप से विस्तारित करता है। यह ऐप अपनी सिंक्रोनाइज़ेशन क्षमताओं के लिए फोटोग्राफरों के बीच पसंदीदा है, जो मोबाइल ऐप पर किए गए संपादनों को डेस्कटॉप संस्करण में निर्बाध रूप से स्थानांतरित करने की अनुमति देता है। लाइटरूम मोबाइल पेशेवर-ग्रेड संपादन टूल के साथ उपयोगकर्ता-अनुकूल सादगी को जोड़ता है, जिससे यह अपने संपादन वर्कफ़्लो में लचीलापन और स्थिरता चाहने वाले ट्रैवल फोटोग्राफरों के लिए एक आदर्श विकल्प बन जाता है।

लाइट रूम मोबाइल की मुख्य विशेषताएं:

- सभी डिवाइसों में सिंक करें अपने :स्मार्टफ़ोन पर संपादित करें, और आपके परिवर्तन स्वचालित रूप से आपके डेस्कटॉप पर सिंक हो जाते हैं।
- उन्नत रंग ग्रेडिंगट्यून करें-सटीकता के साथ रंगों को फाइन :, यह सुनिश्चित करते हुए कि आपकी तस्वीरें अपनी प्राकृतिक जीवंतता बनाए रखें।

- व्यावसायिक प्रीसेटकुशल औ :र सुसंगत संपादन के लिए प्रीसेट की विशाल लाइब्रेरी तक पहुंचें या अपना स्वयं का प्रीसेट बनाएं।
- RAW संपादन सीधे अपने मोबाइल डिवाइस से उच्च गुणवत्ता वाली :RAW फ़ाइलें संपादित करें।

कैप्चर वन (Capture One)

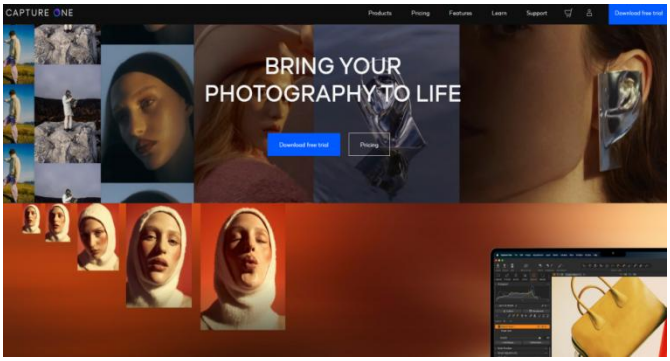

पेशेवर फ़ोटोग्राफ़रों के बीच पसंदीदा कैप्चर वन, छवि गुणवत्ता पर अपने अद्वितीय नियंत्रण के लिए मनाया जाता है। अपनी असाधारण रंग ग्रेडिंग क्षमताओं के लिए जाना जाने वाला, कैप्चर वन सटीकता का एक स्तर प्रदान करता है जो विवरण पर गहरी नजर रखने वाले फोटोग्राफरों को पूरा करता है। सॉफ़्टवेयर की टेथरिंग क्षमताएं इसे स्टूडियो और व्यावसायिक फोटोग्राफी के लिए पसंदीदा विकल्प बनाती हैं। यदि आपकी संपादन प्रक्रिया में सावधानीपूर्वक समायोजन और असम्बद्ध छवि गुणवत्ता पर समझौता नहीं किया जा सकता है, तो कैप्चर वन आपकी आवश्यकताओं के लिए आदर्श फिट हो सकता है।

डीएक्सओ फोटो लैब (DxO Photo Lab)

डीएक्सओ (DxO) फोटोलैब संपादन प्रक्रिया को सुव्यवस्थित करने के लिए कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) की शक्ति का उपयोग करके खुद को अलग करता है। यह सॉफ़्टवेयर छवियों को स्वचालित रूप से बढ़ाने के लिए उन्नत एल्गोरिदम का उपयोग करता है, जिससे यह उन लोगों के लिए एक उत्कृष्ट विकल्प बन जाता है जो न्यूनतम मैन्युअल हस्तक्षेप के साथ प्रभावशाली परिणाम प्राप्त करना चाहते हैं। DxO की असाधारण विशेषता इसकी स्मार्ट लाइटिंग तकनीक है, जो समझदारी से एक्सपोज़र और कंट्रास्ट को अनुकूलित करती है। यदि दक्षता और स्वचालन का स्पर्श आपकी संपादन शैली को पसंद आता है, तो DxO PhotoLab एक आकर्षक समाधान प्रदान करता है।

कलर करेक्शन (Color Correction)

रंग के महत्व को बढ़ा-चढ़ाकर नहीं बताया जा सकता। यह वह भाषा है जिसके माध्यम से भावनाएँ, वातावरण और आख्यान जीवंत होते हैं। इसलिए, उचित रंग सुधार यह सुनिश्चित करता है कि आपकी तस्वीरें आपकी यात्रा के दौरान देखी गई सुंदरता को प्रामाणिक रूप से कैप्चर करें। रंग केवल एक दृश्य घटक नहीं है; यह एक शक्तिशाली संचारक है। सूर्यास्त के गर्म, सुनहरे रंग गर्मी, उदासीनता और शांति की भावना पैदा करते हैं, जबकि पहाड़ी परिदृश्य के ठंडे स्वर शांति और महिमा की भावना व्यक्त करते हैं। दर्शकों को एक पल के सार से जोड़ने का लक्ष्य रखने वाले फोटोग्राफर के लिए इस दृश्य भाषा को समझना आवश्यक है। रंग सुधार, इसके मूल में, एक तस्वीर में रंगों को ठीक करने और

समायोजित करने की प्रक्रिया है ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि वे दृश्य के प्रति वफादार हैं जैसा कि मानव आंख द्वारा देखा जाता है। इसमें कैप्चर या पोस्ट-प्रोसेसिंग चरणों के दौरान पेश किए गए किसी भी विचलन या अशुद्धि को ठीक करना शामिल है। लक्ष्य सिर्फ सटीकता नहीं है बल्कि छवि के भावनात्मक प्रभाव को बढ़ाना भी है।

कंट्रास्ट और संतृप्ति

कंट्रास्ट किसी छवि के सबसे गहरे और सबसे हल्के हिस्सों के बीच की सीमा है। यह किसी तस्वीर की दृश्य गहराई और प्रभाव को परिभाषित करता है। कंट्रास्ट का प्रभावी उपयोग नाटकीयता जोड़ता है, विवरणों पर ज़ोर देता है और रचना में जान फूंक देता है। दूसरी ओर, संतृप्ति, किसी छवि में रंगों की तीव्रता या शुद्धता को संदर्भित करती है। यह वह तत्व है जो हरे-भरे जंगल को जीवंत या सूर्यास्त के आकाश को मनमोहक रूप से उज्ज्वल बनाता है। नियंत्रित संतृप्ति मूड को बढ़ाती है, प्रमुख तत्वों पर ध्यान आकर्षित करती है, और समग्र दृश्य आकर्षण में योगदान करती है।

13.10 रोजगार के अवसर

ट्रैवल फोटोग्राफर्स किसी ऑर्गेनाइजेशन के साथ जुड़कर या फ्रीलांसिंग कर अच्छी कमाई कर सकते हैं। अगर आपके पास प्रभावशाली राइटिंग स्किल भी है, तो फोटोग्राफी के साथ-साथ ट्रैवल राइटिंग में भी हाथ आजमा सकते हैं। नेशनल ज्योग्राफिक और आउटलुक ट्रैवलर्स में हमेशा क्वॉलिटी प्रोफेशनल्स की डिमांड रहती है। इसके अलावा, किसी स्टूडियो में या सीनियर फोटोग्राफर के असिस्टेंट के रूप में भी आप काम शुरू कर सकते हैं। फोटोग्राफी में कॉम्पिटिशन काफी टफ हो गया है। स्टॉक सेलिंग का ट्रैंड जोरों पर है। लेकिन ट्रैवल मैग्जीन, ब्लॉग्स, टूर कंपनीज और ट्रैवल पोर्टल्स के आने से ट्रैवल फोटोग्राफर्स की मार्केट में डिमांड बढ़ी है। ऐसे में जिनमें फोटोग्राफी का पैशन है, जों चीजों को परखने का आर्ट जानते हैं, वे इसमें करियर का आगाज कर सकते हैं।

13.11 सारांश

एक तस्वीर बहुत कुछ बयां कर सकती है। वह आपको चकित या आनंदित कर सकती है। यही नहीं, अगर तस्वीर खींचने वाला यानी फोटोग्राफर कल्पनाशील और क्रिएटिव हो, उसके पास एस्थेटिक सेंस हो, तो वह संसार में मौजूद कई अद्भुत चीजों को कैमरे में कैद कर सकता है। फोटोग्राफी के ही कई स्वरूपों में से एक है ट्रैवल फोटोग्राफी। जिन युवाओं को नौ से पांच ड्यूटी करने के बजाय कैमरे से देश-दुनिया को एक्सप्लोर करने में आनंद आता है, उनके लिए यह एक परफेक्ट फील्ड हो सकता है। आज युवाओं को यह प्रोफेशन काफी अपील कर रहा है। दो ग्रीक शब्दों (photo+graph) से बना 'फोटोग्राफी' का अर्थ है 'फोटो' यानी प्रकाश (Light) की मदद से 'ग्राफ' यानी चित्र तैयार करना। यह फोटोग्राफी का ही एक अंग है, जिसमें किसी खास क्षेत्र के लैंडस्केप, आबादी, संस्कृति, रीति-रिवाज या इतिहास का डॉक्यूमेंटेशन होता है। एक ट्रैवल फोटो वह इमेज होती है, जिसमें हम किसी स्थान या समय की अनुभूति करते हैं, जो किसी इलाके के लोगों, वहां की संस्कृति या प्राकृतिक सौंदर्य से हमारा परिचय कराती है। यह एक कहानी सुनाएगा और भावनाएं व्यक्त करेगा। यात्रा फोटोग्राफी प्रेरणा का एक स्रोत है और हमारी दुनिया की सर्वश्रेष्ठ पेशकश

को देखने और अनुभव करने का माध्यम है। इसके बाद, यह सर्वश्रेष्ठ को सामने लाता है। यात्रा फोटोग्राफी कहानी कहने का एक अविश्वसनीय अवसर प्रदान करती है। प्रत्येक तस्वीर समय के एक विशेष क्षण के बारे में एक अनूठी कहानी बताती है और उन भावनाओं और अनुभवों को कैद करती है जिन्हें अकेले शब्द व्यक्त नहीं कर सकते।

13.12 शब्दावली

- **ट्रैवल फोटो :** वह इमेज होती है, जिसमें हम किसी स्थान या समय की अनुभूति करते हैं, जो किसी इलाके के लोगों, वहां की संस्कृति या प्राकृतिक सौंदर्य से हमारा परिचय कराती है।
- **ट्रैवल फोटोग्राफर :** यह देशदुनिया की सैर कर-, अलगप्रकार की तस्वीरें खींचता है और फिर उन्हें अलग-ट्रैवल बुक पब्लिशर्स, पोस्टकार्ड कंपनीज, मैग्जीन्स, होटल्स, न्यूजपेपर्स, वेबसाइट्स आदि को बेचता है।
- **यूवी फिल्टर :** फिल्म कैमरा का उपयोग करते समय ये फिल्टर एक अत्यंत आवश्यक हैं। इसके बिना, विकास के बाद फ़ोटो का रंग नीला हो जाएगा।
- **लाइटरूम मोबाइल :**एडोब के प्रसिद्ध डेस्कटॉप संपादन सॉफ्टवेयर की शक्ति को स्मार्टफोन तक निर्बाध विस्तारित करता है। यह ऐप अपनी सिंक्रोनाइज़ेशन क्षमताओं के लिए फोटोग्राफरों के बीच पसंदीदा है।

13.13 संदर्भ ग्रंथ

- Travel Photography Editing: Perfecting Your Photos Anywhere - Photogpedia
- The Must-Have Items In Your Travel Photography Gear - Tru Vue, Inc (tru-vue.com)
- Travel pictures, 4 accessories to take the best ones (manfrotto.com)
- The 2 Best Photo Editing Apps for Android and iOS of 2024 | Reviews by Wirecutter (nytimes.com)
- The Power of Travel Photography: Every Picture Tells a Story | LinkedIn

13.14 अभ्यास हेतु प्रश्न

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. ट्रैवल फोटोग्राफी क्या है? टिप्पणी करते हुए लेख लिखिए?
2. ट्रैवल फोटोग्राफी एवं यात्रा वृतांत में क्या अंतर है?
3. ट्रैवल फोटोग्राफी करने के लिए बातों को ध्यान रखना चाहिए?
4. ट्रैवल फोटोग्राफी पर एक निबंध लिखिए?

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. कैमरा क्या है? टिप्पणी करते हुए लिखिए?
2. तिपाई की जरूरत पर प्रकाश डालिए?
3. फोटो एडिटिंग के लिए बातों को ध्यान रखना चाहिए?
4. लाइट रूम मोबाइल के बारे में लिखिए?

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

1. कलर करेक्शन क्या है?
2. कंट्रास्ट पर प्रकाश डालिए?
3. डीएक्सओ क्या है?
4. मेमोरी कार्ड के बारे में लिखिए?

इकाई – 14

नेचर फोटोग्राफी

पाठ संरचना

14.0 उद्देश्य

14.1 प्रस्तावना

14.2 नेचर फोटोग्राफी का अर्थ और महत्व

14.3 नेचर या लैंडस्केप फोटोग्राफी के प्रकार

14.3.1 पर्वतीय फोटोग्राफी

14.3.2 समुद्री और नदियों की फोटोग्राफी

14.3.3 तटीय फोटोग्राफी

14.3.4 जल प्रपात-फोटोग्राफी

14.3.5 रेगिस्तान फोटोग्राफी

14.3.6 तूफ़ान और साइक्लोन की फोटोग्राफी

14.3.7 आकाशीय फोटोग्राफी

14.3.8 क्लाउड स्केप फोटोग्राफी

14.3.9 वन फोटोग्राफी

14.3.10 प्राकृतिक आपदा की फोटोग्राफी

14.4 सारांश

14.5 शब्दावली

14.6 अभ्यास हेतु प्रश्न

14.7 सन्दर्भ ग्रंथ व पुस्तकें

14.0 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के उपरान्त आप निम्नाकिंत तथ्यों को आसानी से समझ सकते हैं-

- नेचर फोटोग्राफी का अर्थ और महत्व
- नेचर फोटोग्राफी के प्रकार
- नेचर फोटोग्राफी का तकनीकी पक्ष
- नेचर फोटोग्राफी के गुण

14.1 प्रस्तावना

फोटोग्राफी एक कला के साथ-साथ दृश्य माध्यम है जो लोगों को सूचना देने में सहायक होता है। इसमें बौद्धिक रचनात्मकता के साथ-साथ कैमरे की तकनीकी समझ होना भी आवश्यक है। किसी भी वस्तु, वातावरण एवं स्थितियों की विजुअल सेन्स के साथ फोटो खींचना तस्वीर को बेहद आकर्षक और खूबसुरत बना देती है। फोटोग्राफर अपने रुचि और मांग के अनुसार अलग-अलग तरह की फोटोग्राफ लेते रहते हैं। फोटोग्राफी एक पेशा के रूप में भी विकसित है, कई लोग शौखिया भी फोटो लेना पसंद करते हैं। फोटोग्राफी को विषय के अनुरूप अलग-अलग बांटा गया है जैसे कि फैशन फोटोग्राफी, स्पोर्ट्स फोटोग्राफी, वाइल्ड लाइफ फोटोग्राफी, स्ट्रीट फोटोग्राफी, पोर्ट्रेट फोटोग्राफी एवं नेचर फोटोग्राफी। इस अध्याय में हम नेचर फोटोग्राफी को समझाने का प्रयास करेंगे।

14.2 नेचर फोटोग्राफी का अर्थ और महत्व

प्रकृति की सुन्दर रचना को कैमरे से कैद करके तस्वीरों के माध्यम से लोगों तक पहुंचाना ही नेचर या लैंडस्केप फोटोग्राफी है. प्रकृति के स्वरूप में आ रहे बदलाव और वातावरण को फोटोग्राफर तस्वीरों में उतारकर पाठकों तक एक सूचना के रूप में प्रेषित करता है। नेचर फोटोग्राफी करने से पहले प्रकृति को समझना आवश्यक है। हमारी पृथ्वी का मौसम और वातावरण समय के साथ बदलता रहता है। दुनिया के किसी हिस्से में तापमान 50 डिग्री तो कहीं शून्य से भी कम बना रहता है। अरेबियन देश में मरुधर तो अटलांटिका में बर्फ ही बर्फ। दुनिया अलग-अलग भौगोलिक हिस्से में प्रकृति के अनेक रूप को देखने को मिल जाते हैं। ईश्वर की सुंदर और बेहतरीन रचना हमेशा ही लोगों के लिए आकर्षण का केंद्र बना रहा है। हमारी आँखें जब प्रकृति के सुंदर मनमोहक

दृश्यों को निहारती हैं तो बेहद सुकून मिलती है। इस भाग में जो फोटो दिख रहा है वह हिमाचल प्रदेश के सांगला हिमालय की चोटियों का है जिसे डॉ सूर्य प्रकाश ने बेहद खूबसूरती से कैमरे में उतारा है। नेचर फोटोग्राफी का उपयोग समाचार पत्रों, पत्रिका, फोटो फीचर सहित वेबसाइट सहित चैनलों में किया जाता है। इसके अलावा सजावट सामग्री पोस्टर, वाल पोस्टर, विज्ञापन, कैलंडर के माध्यम से पर्यटकों को आकर्षित करने में भी इन तस्वीरों का उपयोग किया जाता है।

सूर्य प्रकाश के इस फोटो में हिमाचल प्रदेश के नारकंडा स्थित हाटू शिखर से हिमालय की चोटियाँ का अवलोकन करते पर्यटक। ये बेहद खूबसूरत नजारा पेश कर रहा है। नदी और सागर का किनारा हो या फिर हिमालय की बर्फ से ढकी चोटियाँ, सभी दृश्य हमें बेहद लुभावने लगते हैं। नेचर फोटोग्राफर में खुबसुरत दृश्य कैमरे से कैद किया जाता है। पल भर में बदलते हुए मौसम और उस वातावरण को कैद करना एक रोमांचकारी जॉब है। अलग-अलग मौसम, समय और स्थान को विषय बनाकर पृथ्वी की सुन्दरता को कैद करना ही नेचर फोटोग्राफी कहलाती है।

14.3 नेचर या लैंडस्केप फोटोग्राफी के प्रकार

नेचर या लैंडस्केप फोटोगार्फी को भौगोलिक और वातावरण के आधार पर अलग अलग बांटा जा सकता है,पहले भी इस बात का उल्लेख किया गया है कि प्रकृति के अनेक रूप हमारी धरती पर देखने को मिल जाती है। इन्हीं रूप के आधार पर हम नेचर फोटोग्राफी को अलग-अलग तरीके से बाँट सकते हैं :

14.3.1 पर्वतीय फोटोग्राफी

भारत में दुनिया की सबसे ऊँची चोटी एवरेस्ट से लेकर हिमालय की श्रृखला के अलावा कंचनजंघाअरावली क ,ी पहाड़ियांपर्वत , काराकोरम रेंज ,सतपुडा पर्वतमाला ,माला नार्थ ईस्ट राज्यों में स्थित गारो खासी पर्वत माला हमेशा से पर्यटकों और फोटोग्राफरों के लिए आकर्षण का केंद्र रहा है। सभी पर्वत श्रृखला की अपनी एक खासियत है। सागरतल से हजारों मीटर की उंचाई पर स्थित सभीपर्वत

माला अपनी उंचाईबनावट और तापमान के कारण उनकी विशेष पहचान है। इन पर्वतीय वातावरण को , कैमरे में कैद करने के लिए अनेक दुर्गम घाटियों से गुजरना जोखिम भरा और रोमांचकारी जॉब है। ये मनोरम तस्वीर हिमाचल के कल्पा की है।

पर्वतों पर हमेशा मौसम तेजी से बदलते रहते है ऐसे वातावरण में पर्वतीय फोटोगार्फी करना रोमांच से भरा काम है। पर्वतों की चोटी तक पहुंचने के लिए दुर्गम और खतरनाक दर्रे से गुजरना पड़ता है। पर्वतीय फोटो खींचते समय मौसम के अनुकूल किट, कैमरा और विभिन्न प्रकार के लेंस की आवश्यकता होती है। हिमाचल प्रदेश के कल्पा से हिमालय की चोटियों का फोटो डॉ सूर्य प्रकाश ने अपने कैमरे में कैद किया। लैडस्केप फोटोग्राफर को हल्के और कम सामान के साथ यात्रा करनी चाहिए। बेहतर शाट लेने के लिए अपने फ्रेम और फोकस का विशेष ख्याल रखते हुए उन दृश्य को कैद करना चाहिए जो बरबस आँखों को आकर्षित करता हो। पर्वतों और पहाड़ों की तस्वीर लेते समय एक सहूलियत यह होती है कि पर्वत स्थिर होते हैं इसलिए इन्हें आसानी से कैमरे में कैद किया जा सकता है। पर्वत के पीछे से उगते या अस्त होते सूर्य को कैद करना में समय का विशेष ख्याल रखना चाहिए। हिमाचल प्रदेश के सुदूर सांगला से हिमालय की चोटियों के दर्शन काफी मनोहारी होते हैं।

14.3.2 समुद्री और नदियों की फोटोग्राफी

भारत देश एक तरफ हिन्द महासागर और प्रशांत महासागर से घिरा है वहीं दूसरी तरफ गंगायमुना के – कावेरी सहित असंख्य नदियों ,नर्मदा ,अलावा ब्रह्मपुत्र की लहरोंहमेशा से फोटो लेने के लिए आकर्षित करती रहती हैं। समुंद्र और नदियों की गतिशीलता के कारण फोटोग्राफर एक ही स्थान से कई कोण और फ्रेम के साथ फोटो उतार सकता है। समुद्र का किनारानदियों के तट ,, नाव का लहरों के साथ अठखेलियाँ करनाउगते और , अस्त होते सूर्य को कैद करना भी काफी रोमांचकारी है। इस फोटो में सूर्य प्रकाश ने गोवा के एक तट का नजारा

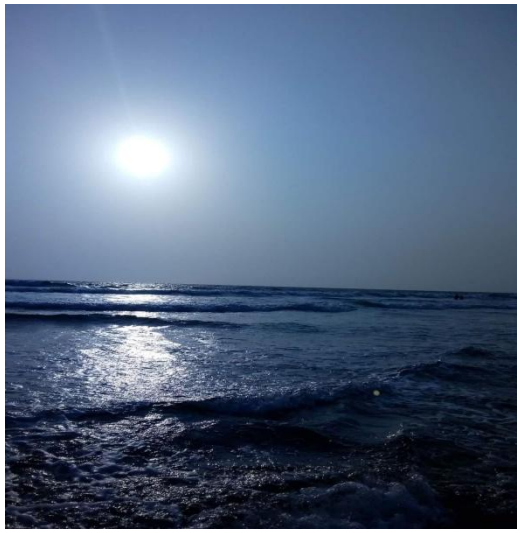

अपने कैमरे में कैद किया है।

कई बार फोटोग्राफर अंडर वाटर भी तस्वीरें उतारता है। अंडर वाटर फोटोग्राफी एक अलग विधा है। आजकल हाईटेक कैमरों और मोबाइल फोन ने भी अंडरवाटर फोटोग्राफी को सुगम बना दिया है। सागर की गहराइयों में उतर कर जलदृश्यों को कैद करना बेहद कठिन कार्य है। सागर तल के वनस्पतिजन्तुओं –चट्टानों और जीव , की तस्वीरें बेहद आकर्षक लगती हैं। ऐसी फोटोग्राफी के लिए शटर स्पीड का विशेष ध्यान रखने की आवश्यकता होती है।

14.3.3 तटीय फोटोग्राफी

हिन्द महासागर और प्रशांत महासागर से घिरे तटीय क्षेत्र फोटोग्राफर को अक्सर आमंत्रित करते हैं। तटीय फोटोग्राफी का सबसे उपयुक्त समय सुबह और शाम माना जाता है। सागर और नदियों के तट के किनारे घंटों खड़े होकर बेहतर फोटो खींचा जा सकता है। गोवा, गुजारतउड़ ,पुरी ,ीसा के तट हो या फिर साउथ के राज्यों से सटा सागर तट, बंगाल का सुंदरवन का डेल्टा क्षेत्र भी तटीय फोटोग्राफी के लिए बेहद उपयुक्त माना जाता है। मध्य प्रदेश के रीवा स्थित बीहर नदी के एक तट का फोटो डॉ सूर्य प्रकाश ने बेहद खूबसूरती से अपने कैमरे में उतारा। मौसम के अनुरूप तटीय तस्वीरों को उतारा जा सकता है। सागर किनारे चट्टानों से टकराती जल की तस्वीरें बेहद अद्भुत नजर आती हैं। कहीं सागर किनारे ताड़ के पेड़कहीं , अलग एंगल से उतारा जा सकता है। इसके अलावा कुछ क्लोज और ज़ूम शाट का प्रयोग -चट्टान को अलग तकरके शानदार तस्वीर उ ारी जा सकती हैं।

14.3.4 जलप्रपात फोटोग्राफी-

दुनिया भर में नियाग्रा सहित भारत में भी अनेक जलप्रपात हैं। अपने देश में छत्तीसगढ़ के बस्तर में स्थित -देवदारी -यूपी के मिर्जापुर में राजदारी ,पुरवा ,रीवा में चचाई ,मध्यप्रदेश के जबलपुर का भेडाघाट ,काचित्रकोट सहित भारतके अनेक राज्यों में काफी जल-प्रपात और झरने देखने को मिल जाते हैं। बरसात प्रपात की छठा अदभुत होती -के मौसम में जल है। बरसात में जब नदियां पानी के उफान पर प्रपातों में जल -होती हैं तब इस प्रकार के जल का प्रवाह भी चरम पर होता है। बरसात के

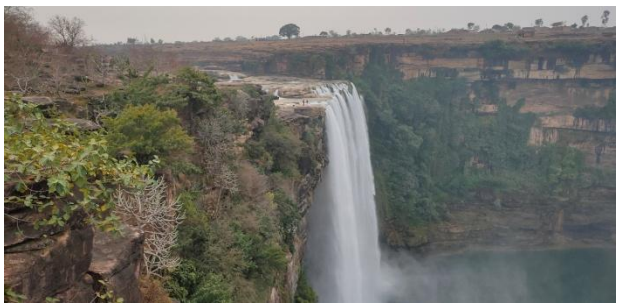

प्रपातों म-में जल मौसम ि ि फोटोग्राफर तस्वीर लेने के लिए यात्रा पर निकल जाते हैं। मध्य प्रदेश के रीवा स्थित केवटी जल प्रपात की फोटो डॉ सूर्य प्रकाश ने अपने कैमरे में कैद की। हजारों फुट उंचाई से गिरते जल और उससे उठते धुंध को कैमरे में कैद करने की होड़ लग जाती है। उस वक्त प्रपात बेहद सुंदर और अदभुत लगते हैं। जल ,प्रपात की फोटो लेने के लिए उपयुक्त स्थान का चयन करना चाहिए। सही स्थान के चयन-बेहतर और हैवी लेन्स की मदद से वाइल्ड एंगल शॉट से आकर्षक फोटो लिए जा सकते हैं।

14.3.5 रेगिस्तान फोटोग्राफी

दुनिया में सहारा रेगिस्तानगोबी रेगिस्तान के अ ,लावा भारत के राजस्थान राज्य में थार के मरुधर और कच्छ का रण भी काफी गर्म स्थान है। रेगिस्तान गर्म वातावरण में सुनहरे रेत की फोटोग्राफी करना एक कठिन कार्य है। गर्म वातावरण के संग तपते बालू और रेत के टीले में फोटो उतारना चुनौतीपूर्ण के साथसाथ खतरे से - खाली भी नहीं होता है। गर्म रंग पैलेट, साइकेडेलिक आकार और अलगअलग तरह की रेत की बनावट की - तस्वीर के संग कैक्टस और रेगिस्तानी जंतु की तस्वीर बेहद आकर्षक होती है। गर्म हवाओं और तेज धूप कारी और समय का ध्याफोटोग्राफर के लिए विषम परिस्थति खड़ी कर देती है। मौसम की सही जानन रख कर रेगिस्तान की फोटोग्राफी किया जा सकता है।

14.3.6 तूफ़ान और साइक्लोन की फोटोग्राफी

विश्व भर में तूफ़ान और तूफानी मौसम , साइक्लोन और चक्रवाती तूफ़ान आते तूफ़ान और बवंडर ,रहते हैं। इन हवाओं का कोई तय समय नहीं होता है। इस वातावरण की फोटो खींचने के लिए फोटोग्राफरको लंबे समय के इंतजार से गुजरना होता है। इस वातावरण का न तो इसका स्थान तय होता है और न ही समय। फिर भी कुछ फोटोग्राफर के लिए साइक्लोन आकर्षण का केंद्र रहता है। जान जोखिम में डालने के साथसाथ कैमरा को - -स्थिर रखना भी बेहद कठिन काम है। धूल रेत बारिश से भरे वातावरण में तूफ़ान या साइक्लोन की फोटो पाठक या दर्शकों को बेहद अतुल्य लगती है। सत्या शाह ने ब्रिटेन स्थित एक भवन की यह ड्रोन तस्वीर पेश की है। आजकल ड्रोन का भी इस्तेमाल तेजी से बढ़ गया है। ड्रोन की मदद से काफी हद तक हवाई फोटोग्राफी सुगम बन गया है। ड्रोन का

संचालन करना बेहद आसान काम है, थोड़े- से अभ्यास से ड्रोन से बेहतर तस्वीरों को क्लिक किया जा सकता है।

14.3.7 आकाशीय फोटोग्राफी

धरती के सुंदर नजारें को आकाशीय की तस्वीरे लेना हवाई फोटोग्राफी के अधीन आता है। हवाई फोटोग्राफी एक खर्चीला शौक है। आकाश मार्ग से फोटो खीचने के लिए फोटोग्राफर को उतनी स्वतन्त्रता नहीं मिल पाती है जितनी धरती पर सीमित स्थान से ही विषय पर फोकस किया जा सकता है। टेली लेंस की मदद से हवाई फोटो खीचने में काफी आसानी होती है!

14.3.8 क्लाउड स्केप फोटोग्राफी

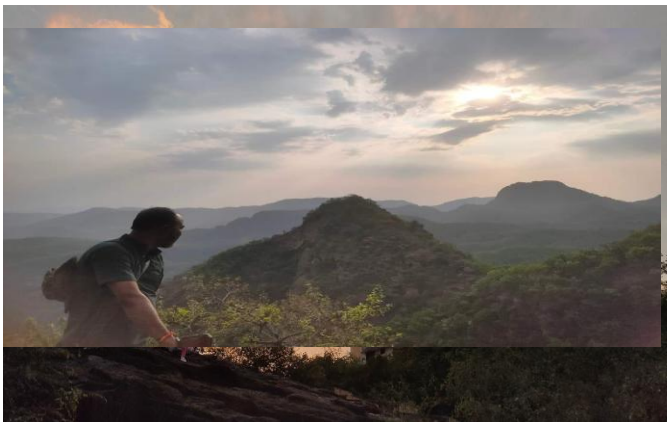

बादलों के बदलते रंगत और आकर को अलग अलग मौसम और समय पर-तस्वीर को उतारना क्लाउड स्केप फोटोग्राफी कहलाती है। दिन के समय सूरज का बादलों संग लुकाछिपी और ऐसे ही रात में बदरी में चाँद का आना या छुप जाना जैसे नजारों को तस्वीर उतारना फोटोग्राफर को पसंद आता रहा है। मध्यप्रदेश के पचमढ़ी स्थित चौरागढ़ से सतपुड़ा पहाड़ियों का अवलोकन डॉ सूर्य प्रकाश ने अपने कैमरे से किया। बादलों के दृश्यों को शूट करते समय लाइटिंग का विशेष ध्यान रखना चाहिए। ऐसी फोटो को लेते समय उपयुक्त फ़िल्टर का बखूबी प्रयोग किया जा सकता है।

14.3.9 वन फोटोग्राफी

अमेजन के जंगल के अलावा भारत के विभिन्न राज्यों में लगभग लाख वर्ग 7 किलोमीटर तक जंगल फैले हुए हैं। जंगल अनेक तरह के जैविक संपदाओं से परिपूर्ण फारेस्ट फोटोग्राफी के दृष्टिकोण से काफी आकर्षक होता है। घने जंगल में पौधे -अनेक तरह की वनस्पति और पेड़ फोटोग्राफी के नजरिये से विषय है। मध्य

प्रदेश के बांधवगढ़ स्थित जंगल की तस्वीर डॉ सूर्य प्रकाश ने अपने कैमरे में उतारी । जंगली जानवरों के हमले के डर के बीच प्रकाश का उतारचढाव को ध्यान में रख कर जंगल की फोटो लेना एक रोमांचकारी - जॉब है।

14.3.10 प्राकृतिक आपदा की फोटोग्राफी

दुनिया भर मानव को अनेक बार प्राकृतिक आपदाओं का सामना करना पड़ता है। आपदाएं अनिश्चित होने के साथसाथ जानलेवा होती हैं। - दुनिया के कुछ हिस्से में ज्वालामुखी आग उगलती रहती है तो कई स्थानों में सुनामी का खतरा बना रहता है। इस प्राकृतिक वातावरण की स्थिति की तस्वीर से दर्शकों और पाठकों के अन्दर एक अदभुत रोमांच पैदा होता है।

14.4 सारांश

नेचर फोटोग्राफी एक कला है इस कला के मदद से हम नेचर को उजागर किया जाता है। इसके विभिन्न स्वरूप जैसे लैंडस्केप, क्लाउड, वाइल्ड, फारेस्ट फोटोग्राफी के माध्यम से धरती के स्वरूप को दर्शाया जाता है। नेचर फोटोग्राफी एक अदभुत रोमांचकारी कार्य है। नेचर फोटोग्राफी के लिए अनेक दुर्गम स्थानों की यात्रा के साथ साथ कई बार सुगम या अनेक बार विषम परस्थितियों में कार्य करना पड़ता है।

14.5 शब्दावली

- **लैंडस्केप**प्राक्रतिक स्थल का फोटोग्राफी या चित्रकला में उपयोग किया जाता है। :
- **क्लाउड स्केप**बादलों की तस्वीर को : उतारना।
- **ड्रोन** हवाई फोटोगार्फी में प्रयोग होने वाला उपकरण। :
- **साइकेडेलिक** अनुभव को व्यक्त मन का प्रकटीकरण फोटोग्राफी में घूमते रंग पैटर्न को दर्शाती तस्वीर। :
- **वाइल्ड एंगल शॉट :** व्यापक क्षेत्रफल को कवर करने वाला शॉट।
- **फोकस :** कैमरा द्वारा सब्जेक्ट पर केन्द्रित करना।
- **एंगल :** कैमरा से सब्जेक्ट परविभिन्न कोणसे बनाकर तस्वीर लेना।

- **शॉट :** कैमरा से तस्वीर या विजुअल को लेने की प्रक्रिया।
- **फ्रेम :** किसी विजुअल का वह हिस्सा जो कैमरे के व्युफाइंडर में दिखता है। फ्रेम के भीतर दिखने वाली सभी चीजें एक दूसरे के साथ कैसे सामंजस्य स्थापित कर रही है वह कंपोजिशन कहलाता है।
- **ऑब्जेक्ट :** विषय या सब्जेक्ट जिसकी तस्वीर ली जानी है।

14.6 अभ्यास हेतु प्रश्न

लघुउत्तरीय प्रश्न

1. लैंडस्केप क्या है।
2. क्लाउड स्केप के बारे में लिखिए।
3. ड्रोन उपकरण के बारे में समझाइए।
4. फोकस को परिभाषित कीजिए।
5. एंगल के बारे में लिखिए।
6. शॉट को समझाइए।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. नेचर फोटोग्राफी से क्या तात्पर्य हैनेचर फोटोग्राफी के महत्व पर चर्चा कीजिए ?!
2. नेचर फोटोग्राफी के विभिन्न प्रकार का उल्लेख कीजिए ?
3. नेचर फोटोग्राफी करते समय किन किन बातों का ख्याल रखना चाहिए!
4. नेचर फोटोग्राफी की तकनीकी पक्ष का उल्लेख कीजिए!
5. आपदा की फोटोग्राफी के वक्त क्या सावधानी रखनी होगी।

14.7 सन्दर्भ ग्रंथ व पुस्तकें

- Vipin Chopal : Capturing the Essence of India,2017 प्रकाशक: Notion Press, Incorporated
- Joan Myers,William De Buys : The Jungle at the Door -A Glimpse of Wild India , 2012 प्रकाशक George F.Thompson Publishing
- John and Barbara Gerlach : Digital Nature Photography- The Art and the Science,2012 प्रकाशक:Taylor & Francis
- Michael Freeman, Nigel Sitwell : Wildlife & Nature Photography 1981 प्रकाशक Croom Helm

इकाई-15

फ़ैशनफ़ोटोग्राफ़ी

पाठ संरचना

15.0 उद्देश्य

15.1 प्रस्तावना

15.2 फ़ैशनफ़ोटोग्राफ़ी

15.3 फ़ैशनफ़ोटोग्राफ़ीके प्रकार

15.3.1 संपादकीय फ़ैशनफ़ोटोग्राफ़ी

15.3.2 व्यावसायिक फ़ैशन फ़ोटोग्राफ़ी

15.3.3 हाई फ़ैशन फ़ोटोग्राफ़ी

15.3.4 स्ट्रीट फ़ैशन फ़ोटोग्राफ़ी

15.3.5 रनवे फ़ैशनफ़ोटोग्राफ़ी

15.3.6 कैटलॉग फ़ैशन फ़ोटोग्राफ़ी

15.4फ़ैशन फ़ोटोग्राफ़ी की तकनीक

15.4.1 विषय की मुद्रा, सहायक सामग्री और दृश्य तत्वों के माध्यम से रचना

15.4.2 प्रकाश तकनीक

15.4.3 विषय की मुद्राएँ या पोज़िंग तकनीक

15.4.4 कैमरा सेटिंग्स और उपकरण

15.4.5 संपादन या पोस्ट-प्रोसेसिंग तकनीकें

15.5 सारांश

15.6शब्दावली

15.7 सन्दर्भ ग्रन्थ

15.8 अभ्यास हेतु प्रश्न

15.0 उद्देश्य

इस इकाई का अध्ययन करने से आप निम्नलिखित तथ्यों से परिचित हो सकेंगे:

- फ़ैशन फ़ोटोग्राफ़ी में प्रकाश व्यवस्था, संरचना, पोज़िंग सहित आवश्यक तकनीकों की व्यापक समझ।
- फ़ैशन फ़ोटोग्राफ़ी के विभिन्न प्रकारों और उसके अनुप्रयोगों का ज्ञान।
- फ़ैशन आधारित वस्त्रों को प्रभावी रूप से दिखाने और वांछित वातावरण बनाने के लिए प्राकृतिक और कृत्रिम प्रकाश का प्रभावी ढंग से उपयोग।
- फ़ैशन फ़ोटोग्राफ़ी की आधारभूत तकनीकों का ज्ञान।

15.1 प्रस्तावना

फ़ैशन फ़ोटोग्राफ़ी एक आकर्षक और जटिल कला है, जो फ़ैशन और फ़ोटोग्राफ़ी के क्षेत्रों को मिलाकर बनी हुई है। यह अध्याय फ़ैशनफ़ोटोग्राफ़ी की बहुमुखी दुनिया पर प्रकाश डालता है। यह गतिशील क्षेत्र तकनीकों, अवधारणाओं और

रचनात्मक प्रक्रियाओं का संयोजन है। इस फ़ोटोग्राफ़ी का लक्ष्य है छवियों के माध्यम से एक कहानी को प्रदर्शित करना। यह केवल वस्त्र और सहायक फ़ैशन सामग्रियों को प्रदर्शित करने से कहीं आगे जाता है। यह फ़ैशन के माध्यम से व्यापक सांस्कृतिक और सामाजिक रुझानों को भी दर्शाता है। इस शैली के लिए फोटोग्राफरों को विषय पर गहरी नज़र रखने, प्रकाश व्यवस्था व संरचना की समझ, मॉडल, स्टाइलिस्ट, मेकअप कलाकारों और अन्य रचनात्मक पेशेवरों के साथ प्रभावी ढंग से कार्य करने की क्षमता की आवश्यकता होती है। इस अध्याय में हम उन मूलभूत तकनीकों का पता लगाएंगे जो सफल फ़ैशनफ़ोटोग्राफ़ी को रेखांकित करती हैं।

15.2 फ़ैशनफ़ोटोग्राफ़ी

फ़ैशन फ़ोटोग्राफ़ी एक आकर्षक और कलात्मक शैली है जो विषय के वस्त्र, सहायक उपकरण और सौंदर्य उत्पादों को एक सुन्दर तरीके से प्रदर्शित करने के लिए कला, वाणिज्य और रचनात्मकता को जोड़ती है। फ़ैशन उद्योग में निहित फ़ोटोग्राफ़ी का यह रूप विज्ञापन, संपादकीय और ब्रांड मार्केटिंग का अभिन्न अंग है। यह केवल आकर्षक कपड़ों में विषय की छवियों को कैद करने के बारे में नहीं है, बल्कि एक ऐसी कहानी तैयार करने के बारे में है जो एक विशेष जीवनशैली, भावना या आकांक्षा को उजागर करती है। फ़ैशन फ़ोटोग्राफ़ी के पीछे की कलात्मकता कपड़े और डिज़ाइन को एक विचारोत्तेजक दृश्यात्मक कहानी में बदलने की क्षमता में रखती है।

20वीं सदी की शुरुआत में फ़ैशन फ़ोटोग्राफ़ी में काफी विकास हुआ है। मूल रूप से, इसका उद्देश्य वाणिज्यिक कैटलॉग और फ़ैशन पत्रिकाओं के लिए कपड़ों के डिज़ाइन का दस्तावेजीकरण करना था। जैसे-जैसे उद्योग बढ़ता गया, वैसे-वैसे फ़ैशन के अधिक कलात्मक और कल्पनाशील प्रतिनिधित्व की आवश्यकता भी बढ़ी। 1920 और 1930 के दशक में एडवर्ड स्टीचेन और सेसिल बीटन जैसे फ़ोटोग्राफ़रों ने अपने काम में नाटकीयता और लालित्य की भावना भरना शुरू किया, जिससे आधुनिक फ़ैशन फ़ोटोग्राफ़ी के लिए मंच तैयार हुआ जिसे हम आज देख रहे हैं। यह विकास दशकों तक जारी रहा, जिसे रिचर्ड एवेडन, हेल्मुट न्यूटन और इरविंग पेन जैसे फ़ोटोग्राफ़रों ने जारी रखा। फ़ैशन फ़ोटोग्राफ़ी का मुख्य बिन्दु सहयोग है। यह एक सामूहिक प्रयास है जिसमें डिज़ाइनर, स्टाइलिस्ट, मॉडल, मेकअप कलाकार और फ़ोटोग्राफ़र एक साथ मिलकर एक सामंजस्यपूर्ण दृष्टिकोण बना कर एक उत्कृष्ट फोटो के लिए काम करते हैं। इसमें फ़ोटोग्राफ़र की भूमिका महत्वपूर्ण है क्योंकि उन्हें एक ऐसी छवि बनाने के लिए इन तत्वों में सामंजस्य स्थापित करना होगा जो न केवल कपड़ों को उजागर करती है बल्कि एक मनोदशाया कहानी भी बताती है। इसके लिए प्रकाश व्यवस्था, संरचना और फ़ोटोग्राफ़ी के तकनीकी पहलुओं की गहरी समझ के साथ-साथ फ़ैशनके रुझान और सौंदर्यशास्त्र की सहज समझ की आवश्यकता होती है।

फ़ैशन फ़ोटोग्राफ़ी में प्रकाश एक मूलभूत घटक है। इसमें प्रकाश का इस प्रकार उपयोग किया जाता है कि कपड़े, त्वचा और सहायक उपकरण के साथ मिलकर छवि को नाटकीय रूप से बदला जा सकता है। प्राकृतिक प्रकाश एक वास्तविक एहसास प्रदान करता है, जिसका उपयोग अक्सर अधिक तीव्र और आकर्षक रूप पर जोर देने के लिए आउटडोर शूट में किया जाता है। दूसरी ओर स्टूडियो लाइटिंग नियंत्रण और परिशुद्धता प्रदान करती है, जिससे फोटोग्राफरों को उच्च-कंट्रास्ट व परिष्कृत छवियां मिलती हैं। यह कपड़ों और सहायक उपकरण की जटिलताओं को उजागर करती हैं। बैकलाइटिंग, साइड लाइटिंग, रिफ्लेक्टर और डिफ्यूज़र का उपयोग जैसी तकनीकें फोटोग्राफरों को छाया और हाइलाइट्स में हेरफेर करने में सक्षम बनाती हैं, जिससे उनके काम में गहराई और आयाम जुड़ जाता है।

फ़ैशन फ़ोटोग्राफ़ी में प्रायः संरचना की फ़्रेमिंग और रूल ऑफ़ थर्ड्स के बुनियादी सिद्धांतों के अपवाद भी मिलते हैं। फ़ैशन फ़ोटोग्राफ़ी में दृश्य सामंजस्य बनाए रखते हुए कपड़ों व प्रॉप्स या सहायक सामग्री पर ध्यान आकर्षित करने के लिए फ्रेम के भीतर तत्वों का सावधानीपूर्वक संतुलन किया जाता है। इसमें सहायक सामग्री का युक्तिपूर्ण स्थान, रूल ऑफ़ थर्ड्स का उपयोग और रचनात्मक कोण को शामिल करके तस्वीर के समग्र

https://commons.wikimedia.org/wiki/File:Kerala_fashion_league_image.jpg

सौंदर्य को बढ़ाते हैं। विषयवस्तु की पृष्ठभूमि भी एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, चाहे वह न्यूनतम स्टूडियो सेटिंग हो या एक विस्तृत प्राकृतिक स्थान जो शूट की थीम को पूरा करता हो।

इसके साथ ही फ़ैशन फ़ोटोग्राफ़ी में पोज़ देना और कैमरे के प्रति मॉडल या विषयवस्तु का व्यवहार महत्वपूर्ण है। एक अच्छे फ़ैशन फोटोग्राफर को वांछित अभिव्यक्तियों और गतिविधियों को कैद के लिए अपने मॉडल को प्रभावी ढंग से निर्देशित करना चाहिए। इसके साथ ही इस बात पर भी ध्यान दिया जाता है कि शारीरिक भाषा और विभिन्न मुद्राएँ कपड़ों के डिज़ाइन को कैसे निखार सकती हैं। मॉडल को अक्सर किसी चरित्र या भावना को चित्रित करने की भी आवश्यकता होती है, जिससे उनका यह प्रदर्शन कहानी कहने की प्रक्रिया में एक महत्वपूर्ण तत्व बन जाता है। मॉडल और फ़ोटोग्राफ़र के बीच का अच्छा तालमेल फ़ैशन शूट को बेहतर बना सकता है।

फ़ैशन उद्योग तेजी से आगे बढ़ रहा है और फ़ैशन फोटोग्राफरों को नयी-नयी तकनीक, उपकरणों और फ़ैशन उद्योग के नवाचारोंसे अवगत रहना आवश्यक है। इसका अर्थ है कि कैमेरा उपकरणों, उभरते डिजाइनरों और उपभोक्ता की प्राथमिकताओं में बदलाव के बारे में जागरूक होना। फ़ैशन फ़ोटोग्राफ़र अक्सर समकालीन और ऐतिहासिक दोनों प्रकार की छवियां बनाने के लिए कला, संस्कृति और प्रचलित फ़ैशन रुझानों सहित विभिन्न स्रोतों से प्रेरणा लेते हैं।

फ़ैशन फ़ोटोग्राफ़ी ब्रांड की पहचान और मार्केटिंग में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यह विज्ञापन अभियानों, लुकबुक, सोशल मीडिया और ई-कॉमर्स प्लेटफ़ॉर्म के लिए उच्च गुणवत्ता वाली छवियां बनाते हैं। वे एक ब्रांड की दृश्यात्मक पहचान स्थापित करने और लक्षित दर्शकों तक उसके मूल्यों और सौंदर्य को संप्रेषित करने में मदद करते हैं। फ़ैशन फ़ोटोग्राफ़र अक्सर मार्केटिंग टीमों के साथ मिलकर काम करते हैं ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि ब्रांड के संदेश और रणनीति के साथ छवियां संरेखित हो।

पोस्ट-प्रोसेसिंग फ़ैशन फ़ोटोग्राफ़ी का एक अभिन्न अंग है। एडोब फोटोशॉप और लाइटरूम जैसे संपादन सॉफ्टवेयर का उपयोग छवियों को बेहतर व सुन्दर बनाने, खामियों को ठीक करने और तस्वीरों की एक श्रृंखला में सुसंगत रूप बनाने के लिए किया जाता है। इस प्रक्रिया में त्वचा को सुधारना, रंगों और कलर कंट्रास्ट को समायोजित करना और कभी-कभी वांछित प्रभाव प्राप्त करने के लिए संरचना में बदलाव करना भी शामिल हो सकता है। पोस्ट-प्रोसेसिंग एक छवि के अंतिम परिणाम को महत्वपूर्ण रूप से बढ़ा सकती है। मॉडल और कपड़ों का अवास्तविक प्रभाव बनाने से बचने के लिए संतुलन बनाए रखना महत्वपूर्ण है।

फ़ैशन फ़ोटोग्राफ़ी में नैतिकता बनाए रखना एक महत्वपूर्ण विषय है। सोशल मीडिया और सार्वजनिक धारणा पर छवियों के प्रभाव के बढ़ने से फोटोग्राफरों और उद्योगों पर विविधता और सकारात्मकता को बढ़ावा देने की जिम्मेदारी बढ़ गई है। जैसे-जैसे उद्योग विकसित हो रहा है फ़ैशन फ़ोटोग्राफ़ी में संयोजन और प्रामाणिकता की ओर अधिक जोर दिया जा रहा है।

फ़ैशन फ़ोटोग्राफ़ी केवल एक पेशा नहीं है बल्कि एक कला है जिसमें तकनीकी विशेषज्ञता, रचनात्मकता और विस्तार के लिए गहरी नज़र की आवश्यकता होती है। यह फ़ैशन के मूलतत्त्व को गृहीत करने और इसे एक दृश्य कथा में परिवर्तित करने के बारे में है जो दर्शकों को पसंद आता है। चाहे वह एक सुंदर पृष्ठों वाली पत्रिका में प्रकाशित हाई-फ़ैशन संपादकीय हो, एक व्यावसायिक विज्ञापन होया एक कैंडिड शॉट, फ़ैशन फ़ोटोग्राफ़ी में सांस्कृतिक सौंदर्यशास्त्र को प्रेरित, प्रभावित और परिभाषित करने की शक्ति है।

निष्कर्षतः, फ़ैशन फ़ोटोग्राफ़ी एक बहुआयामी अभ्यास है जो कला, वाणिज्य और फ़ैशन को जोड़ता है। इसके लिए उच्च स्तर के तकनीकी कौशल, रचनात्मक दृष्टि और विविध टीम के साथ मिलकर काम करने की क्षमता की आवश्यकता होती है। जैसे-जैसे इसका विकास जारी है, इसमें नवीन आयामों का जुड़ना जारी है। एक फ़ैशन फ़ोटोग्राफ़र के नज़रिए से आकर्षक वस्त्र और सहायक उपकरण अपने भौतिक रूप से आगे निकल कर एक बड़े आख्यान का हिस्सा बन जाते हैं, जो दर्शकों की कल्पना और आकांक्षाओं को कैद कर लेता है।

15.3 फ़ैशनफ़ोटोग्राफ़ीके प्रकार

फ़ैशन फ़ोटोग्राफ़ी एक जीवंत और बहुआयामी शैली है, जो कपड़े, प्रॉप्स या सहायक उपकरण और सुंदरता को आकर्षक तरीके से प्रदर्शित करती है। यह केवल फ़ैशन के दस्तावेज़ीकरण से आगे बढ़कर एक कला रूप बन गया है जो रचनात्मकता, तकनीकी कौशल और फ़ैशन रुझानों की गहरी समझ को जोड़ता है। विभिन्न प्रकार की फ़ैशनफ़ोटोग्राफ़ी को समझने से इसकी दुनिया को परिभाषित और प्रभावित करने वाले विविध दृष्टिकोण और तकनीकों की जानकारी मिलती है। इस खंड में हम फ़ैशनफ़ोटोग्राफ़ी के कुछ प्रमुख प्रकारों का अध्ययन करेंगे।

15.3.1 संपादकीय फ़ैशनफ़ोटोग्राफ़ी

संपादकीय फ़ैटोग्राफ़ी एक मनमोहक शैली है जो फ़ैशन को कहानी कहने के साथ जोड़ती है, जिसके परिणामस्वरूप अक्सर पत्रिकाओं और फ़ैशन प्रकाशनों में आकर्षक कहानियां मिलती हैं। व्यावसायिक फ़ैशनफ़ोटोग्राफ़ी के विपरीत, जो मुख्य रूप से उत्पादों को बेचने पर केंद्रित है, संपादकीय फ़ैशनफ़ोटोग्राफ़ी का उद्देश्य भावनाओं को जगाना, रचनात्मकता को प्रेरित करना और फ़ैशन को एक कलात्मक और विषयगत संदर्भ में प्रस्तुत करना है। इस प्रकार की फ़ोटोग्राफ़ी वैचारिक दृष्टिकोण से बाकी प्रकारों से अलग है, इसमें

https://www.pinterest.com/pin/302937512436767990/

प्रत्येक फोटोशूट एक विशिष्ट विषय, कहानी या विचार से प्रेरित होता है। इस प्रकार की छवियों की एक सामंजस्यपूर्ण श्रृंखला है जो एक कहानी बताती है, ये अक्सर संस्कृति, समाज और कला से संबंधित गहरे विषयों की खोज करती है। संपादकीय फ़ैशन फ़ोटोग्राफ़ी एक कलात्मक और कथा-संचालित दृष्टिकोण है, जो फ़ैशन को दृश्य कहानी में कहता है। रचनात्मकता और विषयगत गहराई पर इसका जोर इसे जटिल विचारों को व्यक्त करने और फ़ैशन रुझानों को प्रभावित करने का एक शक्तिशाली माध्यम बनाता है, जिससे फ़ैशन फ़ोटोग्राफ़ी के क्षेत्र में इसका महत्वपूर्ण योगदान होता है।

15.3.2व्यावसायिक फ़ैशन फ़ोटोग्राफ़ी

व्यावसायिक फ़ैशन फ़ोटोग्राफ़ी फ़ैशन उद्योग का एक महत्वपूर्ण खंड है, जो उच्च गुणवत्ता वाली छवियां बनाने पर ध्यान केंद्रित करता है। संपादकीय फ़ैशन फ़ोटोग्राफ़ी के विपरीत व्यावसायिक फ़ैशन फ़ोटोग्राफ़ी मुख्य रूप से उत्पाद-उन्मुख होती है। इसका मुख्य लक्ष्य उपभोक्ताओं को आकर्षित करना और बिक्री बढ़ाना है, जिससे यह विज्ञापन अभियानों, कैटलॉग, लुकबुक और ई-कॉमर्स वेबसाइटों का एक महत्वपूर्ण घटक बन जाता है। इस फ़ोटोग्राफ़ी का लक्ष्य सबसे आकर्षक और विपणन योग्य तरीके से फ़ैशन उत्पादों की विशेषताओं और अपील को उजागर करने की क्षमता में निहित है। इसके लिए प्रकाश व्यवस्था, संरचना और स्टाइल के प्रति सावधानीपूर्वक दृष्टिकोण की आवश्यकता होती है। फोटोग्राफरों को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि उत्पादों को स्पष्ट और आकर्षक ढंग से प्रस्तुत किया जाए। अक्सर वस्तुओं की स्थित, रूप, शैली और उपयोगिता प्रदर्शित करने के लिए मॉडल या व्यक्तियों का उपयोग किया जाता है। उत्पादों पर ध्यान केंद्रित रखने के लिए विषय की पृष्ठभूमि आमतौर पर साफ और सुव्यवस्थित होती है। इसके साथ ही बनावट, रंग और विवरण को बढ़ाने के लिए प्रकाश व्यवस्था को सावधानीपूर्वक तरीके से नियंत्रित किया जाता है। व्यावसायिक फ़ैशन फ़ोटोग्राफ़ी का एक प्रमुख पहलू निरंतरता है। ब्रांड एक सामंजस्यपूर्ण दृश्य शैली पर चाहते हैं, जो उनकी पहचान और मार्केटिंग रणनीतियों के साथ संरेखित होती है। इसमें अक्सर रचनात्मक निर्देशकों, मेकअप कलाकारों और ग्राफिक डिजाइनरों के साथ मिलकर काम करना शामिल होता है।ऐसा करने से ऐसी छवियां तैयार की जा सकें जो ब्रांड के सौंदर्य को प्रतिबिंबित करती हैं और अपने लक्षित दर्शकों को आकर्षित करती हैं।

डिजिटल प्रौद्योगिकी की प्रगति ने व्यावसायिक फ़ैशन फ़ोटोग्राफ़ी को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित किया है। उच्च-रिज़ॉल्यूशन वाले कैमरे, परिष्कृत संपादन सॉफ़्टवेयर और डिजिटल रीटचिंग तकनीकें फोटोग्राफरों को दोषरहित छवियां बनाने में सहायता देती हैं, जो उपभोक्ताओं को मंत्रमुग्ध कर देती हैं। हालाँकि, इस क्षेत्र में एक नैतिक आयाम भी है, जिसे ध्यान रखना आवश्यक है। चित्र में अत्यधिक सुधार से सुंदरता और फ़ैशन का अवास्तविक चित्रण हो सकता है। व्यावसायिक फ़ैशन फ़ोटोग्राफ़ीफ़ैशन उद्योग के लिए एक आवश्यक उपकरण है, जो उत्पादों को बेचने और ब्रांड पहचान बनाने वाली छवियों का उत्पादन करने के लिए रचनात्मक प्रस्तुति के साथ तकनीकी सटीकता का संयोजन करती है।

https://pxhere.com/en/photo/1531679

15.3.3हाई फ़ैशन फ़ोटोग्राफ़ी

हाई फ़ैशन फ़ोटोग्राफ़ी एक सम्मोहक शैली है जो अति मूल्यवान फ़ैशन सम्बन्धी सामान और आकर्षक डिज़ाइन प्रदर्शित करने पर केंद्रित है। अक्सर अति प्रतिष्ठित फ़ैशन पत्रिकाओं, विज्ञापन अभियानों और विशेष लुकबुक में प्रकाशित फ़ोटोग्राफ़ी की इस शैली का उद्देश्य आकर्षक छवियां बनाना है जो लालित्य, परिष्कार और आकांक्षा को उजागर करती हैं। हाई फ़ैशन फ़ोटोग्राफ़ी केवल मूल्यवान कपड़े या फ़ैशन सम्बन्धी सामान प्रदर्शित करने के बारे में नहीं है, बल्कि एक काल्पनिक दुनिया बनाने के बारे में है जो सभी को आकर्षित करती है। इस क्षेत्र के फ़ोटोग्राफ़र शीर्ष मॉडलों, डिज़ाइनरों, स्टाइलिस्टों और मेकअप कलाकारों के साथ मिलकर शानदार व आकर्षक स्टाइल वाले शूट तैयार करते हैं, जो हाई-एंड फ़ैशन की विशिष्टता को उजागर करते हैं। इसमें प्रकाश व रचना से लेकर मुद्रा और अभिव्यक्ति तक सावधानीपूर्वक योजना बनाई जाती है।

https://photoai.com/photo/sharp-and-trendy-man-in-milan-wearing-high-fashion-attire-in-front-of-a-classi-7580765?bot=1

हाई फ़ैशन फ़ोटोग्राफ़ी में प्रकाश एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, जिसे अक्सर नाटकीय व उच्च-कंट्रास्ट सेटअप के साथ उपयोग किया जाता है। यह कपड़ों की बनावट और रंगों के आकर्षण को और बढ़ाते हैं। इस शैली में निर्मित छवियां केवल सुन्दर कपड़ों के बारे में नहीं हैं, बल्कि संपूर्ण सौंदर्यबोध और भावनाओं के प्रदर्शन पर आधारित है। स्टूडियो लाइटिंग इन प्रभावों को बनाने के लिए आवश्यक उपकरण है, जबकि ऑन-लोकेशन शूट छवियों में प्रामाणिकता और गहराई जोड़ सकते हैं। छाया, प्रतिबिंब और नवीन प्रकाश तकनीकों का उपयोग चित्रों में नाटकीयता और कौतुहल की भावना पैदा कर सकता है, जिससे छवियां अलग दिखती हैं। हाई फ़ैशन फ़ोटोग्राफ़ी फ़ैशन फ़ोटोग्राफ़ी का एक ग्लैमरस और उच्च शैली वाला रूप है, जो विलासिता और उच्च-स्तरीय मूल्यवान डिज़ाइन

प्रदर्शित करता है। अपनी सम्मोहक प्रस्तुति और कलात्मकता के माध्यम से हाई फ़ैशन फ़ोटोग्राफ़ी फ़ैशन जगत के सौंदर्यशास्त्र को प्रभावित और परिभाषित करती रहती है।

15.3.4स्ट्रीट फ़ैशन फ़ोटोग्राफ़ी

स्ट्रीट फ़ैशन फ़ोटोग्राफ़ी एक सक्रिय और सहज शैली है, जो शहरी परिवेश और व्यक्तिगत अभिव्यक्ति को दर्शाती है। स्टूडियो फ़ोटोग्राफ़ी जिसे अक्सर सावधानीपूर्वक, योजनाबद्ध और नियंत्रित वातावरण में किया जाता है,उसके विपरीतस्ट्रीट फ़ैशन फ़ोटोग्राफ़ी सड़कों की अप्रत्याशितता और आकस्मिक परिवेश को प्रदर्शित करती है। यह विधा समकालीन शैली का एक कच्चा और प्रामाणिक दृश्य प्रदर्शित करते हुए, वास्तविक लोगों और उनके रोजमर्रा के फ़ैशन विकल्पों का दस्तावेजीकरण करने पर केंद्रित है। स्ट्रीट फ़ैशन फ़ोटोग्राफ़ी वास्तविक अभिव्यक्तियों को कैद करने की क्षमता रखती है। इस क्षेत्र के फ़ोटोग्राफ़र अक्सर दिलचस्प विषयों की तलाश में शहरी परिवेश में घूमते रहते हैं और विषय की तलाश में रहते हैं। इसमें वो विषय प्रमुख हैं जो नवीनतम फ़ैशन रुझानों को अपनाते हैं या एक अद्वितीय व्यक्तिगत शैली प्रदर्शित करते हैं। इस विधा की छवियां अक्सर वास्तविक और प्राकृतिक होती हैं, जो फोटो खींचे जा रहे लोगों की व्यक्तित्व और रचनात्मकता को उजागर करती हैं। स्ट्रीट फ़ैशन फ़ोटोग्राफ़ी का एक प्रमुख तत्व प्रामाणिकता है, क्योंकि यह फ़ैशन की वास्तविक दुनिया के अनुप्रयोग को दर्शाता है।

https://www.manfrotto.com/us-en/buying-guides/street-style-photography-tips-for-london-fashion-week/

इसमें प्रकाश व्यवस्था आमतौर पर प्राकृतिक होती है, क्योंकि फ़ोटोग्राफ़र सम्मोहक चित्र बनाने के लिए उपलब्ध प्रकाश के साथ काम करते हैं। इसमें अनियंत्रित प्रकाश की स्थिति और मौसम जैसी चुनौतियाँ हैं, पर अद्वितीय और सहज क्षणों को कैद करने के अवसर भी हैं। निरंतर बदलता शहरी परिदृश्य एक समृद्ध पृष्ठभूमि प्रदान करता है, जो कि तस्वीरों में संदर्भ और गहराई जोड़ता है। बाज़ार के दृश्य, भित्तिचित्र, वास्तुकला और भीड़-भाड़ भरी सड़क जैसे सभी दृश्य कथा में योगदान करते हैं, जो छवियों के समग्र प्रभाव को बढ़ाते हैं। स्ट्रीट फ़ैशन फ़ोटोग्राफ़ी भी मुख्यधारा के फ़ैशन रुझानों को प्रभावित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। फ़ैशन ब्रांड और डिज़ाइनर अक्सर प्रेरणा के लिए स्ट्रीट शैली की ओर देखते हैं, क्योंकि यह वर्तमान रुझानों और सांस्कृतिक बदलावों की नब्ज का प्रतिनिधित्व करता है।

15.3.5रनवे फ़ैशन फ़ोटोग्राफ़ी

रनवे फ़ैशन फ़ोटोग्राफ़ी एक विशेष शैली है जो फ़ैशन-शो की गतिशील ऊर्जा और जटिल विवरणों को कैद करने पर केंद्रित है। यह फ़ोटोग्राफ़ी डिजाइनरों के नवीनतम संग्रहों का दस्तावेजीकरण करने के लिए महत्वपूर्ण है, जिसमें दिखाया जाता है कि रनवे (फ़ैशन-शो के लिए निर्मित मंच) पर चलते समय मॉडल पर वह वस्त्र कैसे दिखते हैं। रनवे फ़ैशन फ़ोटोग्राफ़ी का प्राथमिक उद्देश्य फ़ैशन-शो का एक दृश्य रिकॉर्ड प्रदान करना, मुख्य भागों और समग्र विषयों को उजागर करना और उन्हें मीडिया व सोशल मीडिया के प्लेटफार्मों के माध्यम से व्यापक दर्शकों तक पहुंच बनाना है। फ़ैशन शो का माहौल तीव्र गति वाला और चुनौतीपूर्ण होता है, जिसके लिए फ़ोटोग्राफ़रों को त्वरित प्रतिक्रिया और विवरण पर गहरी नज़र रखने की आवश्यकता होती है।

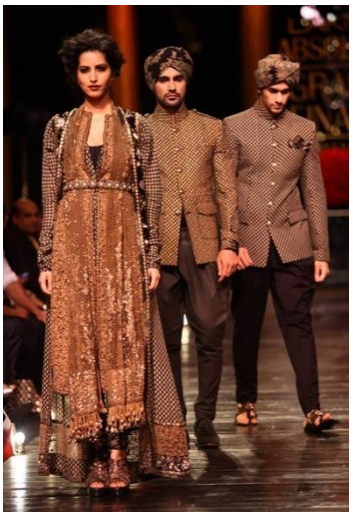

https://commons.wikimedia.org/wiki/File:In_SabyaSachi_Couture_at_Lakme_Fashion_Week%27s_Grand_Finale,_by_SouBoyy,_Sourendra_Kumar_Das.jpg

इस फ़ोटोग्राफ़ी में प्रकाश आम तौर पर नाटकीय और आकर्षक होता है। फ़ोटोग्राफ़रों को इन परिस्थितियों के अनुरूप ढलना होता है। इसमें अक्सर तेज़ गति और उतार-चढ़ाव वाली रोशनी के बावजूद स्पष्ट छवियों को कैद करने के लिए हाई-स्पीड कैमरों और विशिष्ट सेटिंग्स का उपयोग करना होता है। कैमरे का स्थान भी रनवे फ़ैशन फ़ोटोग्राफ़ी का एक महत्वपूर्ण पहलू है। आमतौर पर फ़ोटोग्राफ़रों के पास मॉडलों के सामने से फोटो लेने के लिए एक स्थान रनवे के अंत में निर्दिष्ट होते हैं। हालाँकि, रचनात्मक और विभिन्न कोणों से लिए गए शॉट्स भी दिलचस्प दृष्टिकोण जोड़ सकते हैं और विभिन्न प्रकार से डिजाइनर के काम को उजागर कर सकते हैं।

15.3.6 कैटलॉग फ़ैशन फ़ोटोग्राफ़ी

कैटलॉग फ़ैशन फ़ोटोग्राफ़ी फ़ैशन उद्योग का एक महत्वपूर्ण पहलू है, जो प्रिंट और ऑनलाइन कैटलॉग (विपरण-पुस्तिका) के लिए कपड़ों और एक्सेसरीज़ या सहायक सामग्री की स्पष्ट, विस्तृत और देखने में आकर्षक छवियां तैयार करने पर केंद्रित है। इसका प्राथमिक लक्ष्य उत्पादों को इस तरह से प्रस्तुत करना है, जो उनकी विशेषताओं और कपड़े के प्रकार को दिखाता है। इससे वे संभावित खरीदारों के लिए आकर्षक बन जाते हैं। इस प्रकार की फ़ोटोग्राफ़ी अक्सर स्पष्ट और उत्पाद-उन्मुख होती है। प्रत्येक छवि को कैटलॉग की समग्र शैली और ब्रांडिंग के साथ एकरूप होना चाहिए, जिससे सभी चित्रों को एक समान रूप प्रदान किया जा सके। ऐसा करने से ग्राहकों को विभिन्न उत्पादों के बीच तुलना करने में आसानी हो। आम तौर पर उत्पादों पर ध्यान बनाए रखने के लिए पृष्ठभूमि सरल, सादे या सफेद होते हैं। विषय पर पड़ रही छाया को खत्म करने के लिए प्रकाश को सावधानीपूर्वक नियंत्रित किया जाता है, जिससे कपड़ों या सहायक सामग्री के रंग और बनावट का सटीक प्रदर्शन हो।

https://www.behance.net/gallery/23349285/Fashion-Photography-Catalog-Brochure

कैटलॉग फ़ैशन फ़ोटोग्राफ़ी में मॉडल एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, क्योंकि वे यह प्रदर्शित करने में मदद करते हैं कि कपड़े एक वास्तविक व्यक्ति पर कैसे दिखते हैं। परिधानों को आगे, पीछे और बगल के विभिन्न कोणों से प्रदर्शित करने के लिए मॉडल की मुद्रा को आम तौर पर सरल और प्राकृतिक रखा जाता है। यह व्यापक प्रदर्शन संभावित खरीदारों को खरीदारी का निर्णय लेने से पहले उत्पाद की स्पष्ट समझ प्राप्त करने में मदद करता है। तकनीकी प्रगति ने कैटलॉग फ़ैशन फ़ोटोग्राफ़ी को महत्वपूर्ण रूप से बढ़ाया है। नवीन उपकरण चित्र में ज़ूम-इन क्षमताओं और 360-डिग्री दृश्यों जैसी सुविधाओं को जोड़ने की भी अनुमति देते हैं, जो ग्राहकों को एक वृहद खरीदारी अनुभव प्रदान करते हैं। कैटलॉग फ़ैशन फ़ोटोग्राफ़ी एक विशेष क्षेत्र है जो फ़ैशन उत्पादों को स्पष्ट और आकर्षक ढंग से प्रस्तुत करने पर केंद्रित है।

15.4 फ़ैशन फ़ोटोग्राफ़ी की तकनीक

फ़ैशन फ़ोटोग्राफ़ी में विभिन्न प्रकार की तकनीकें शामिल हैं जो वस्त्रों, सहायक सामग्री और शैली को आकर्षक तरीके से कैद करने में मदद करती हैं। फ़ैशन फ़ोटोग्राफ़ी में उपयोग की जाने वाली कुछ आवश्यक तकनीकें निम्नलिखित हैं:

15.4.1 विषय की मुद्रा, सहायक सामग्री और दृश्य तत्वों के माध्यम से रचना

फ़ैशन फ़ोटोग्राफ़ी में दृष्टिगत रूप से सम्मोहक और प्रभावशाली छवियां बनाने के लिए रचना महत्वपूर्ण है। मॉडल की शारीरिक मुद्रा और भाव भंगिमाएं तस्वीर के मनोदशा और संदेश को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित कर सकती है। अभिव्यंजक मुद्राएँ जो भावना, दृष्टिकोण या किसी कहानी को व्यक्त करती हैं, छवियों को अधिक आकर्षक और प्रासंगिक बना सकती हैं। साथ ही मॉडल की मुद्रा के माध्यम से गति की भावना का परिचय छवि में ऊर्जा और गतिशीलता जोड़ता है। यह मॉडल को चलते-फिरते या बातचीत करते हुए कैद करके प्राप्त किया जा सकता है।

विभिन्न एंगल या कोण से ली गयी तस्वीर मुद्रा को बेहतर बना सकती है। लो-एंगल मॉडल को अधिक प्रभावशाली और शक्तिशाली दिखा सकते हैं, जबकि हाई-एंगल नाजुकता या शक्तिहीन की भावना को पैदा कर सकते हैं।विभिन्न दृष्टिकोणों के साथ प्रयोग करने से सम्मोहक तस्वीरें प्राप्त हो सकती हैं।इसी के साथ प्रॉप्स या फ़ैशन सम्बन्धी सहायक

सामग्री किसी फ़ैशन फ़ोटोग्राफ़ में गहराई और संदर्भ जोड़ सकते हैं। उन्हें मुख्य विषय पर अधिक प्रभाव डाले बिना शूट के कपड़ों और समग्र विषय का पूरक होना चाहिए। कभी-कभी प्रॉप्स का उपयोग विषय के व्यक्तित्व का समर्थन करने या छवि में कार्यक्षमता को जोड़ने के लिए किया जाता है।

दृश्य तत्व में पृष्ठभूमि का चयन एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, जोकि चित्र के परिवेश व भावना को प्रदर्शित करता है। चाहे वह स्टूडियो में स्पष्ट, न्यूनतम पृष्ठभूमि हो या जीवंत, भीड़-भाड़ वाली सड़क का दृश्य, पृष्ठभूमि को प्रदर्शित किए जा रहे फ़ैशन का पूरक होना चाहिए। पृष्ठभूमि का चयन शूट के समग्र प्रसंग और शैली के अनुरूप होना चाहिए। मॉडल के वस्त्रों, प्रॉप्स और दृश्य तत्वों के बीच रंग सामंजस्य सुनिश्चित करने से एक मनभावन रचना तैयार की जा सकती है। एक-दूसरे के पूरक रंग समग्र सौंदर्य को बढ़ा सकते हैं।

15.4.2प्रकाश तकनीक

फ़ैशन फ़ोटोग्राफ़ी में प्राकृतिक प्रकाश का उपयोग एक सौम्य व आकर्षक प्रभाव पैदा कर सकता है। यह आउटडोर शूटिंग में स्पष्ट प्रदर्शन के लिए एकदम उचित है। सूर्योदय के ठीक बाद या सूर्यास्त से पहले की सुनहरी अवधि एक गर्म, विसरित रोशनी प्रदान करती है जो विषय की उपस्थिति को प्रमुखता से प्रदर्शित कर सकती है।

कृत्रिम प्रकाश जिसमें प्रमुखतः सॉफ्टबॉक्स, छतरियां और रिंग लाइट सहित स्टूडियो प्रकाश व्यवस्था होती है। इससे प्रकाश की तीव्रता और दिशा पर नियंत्रण किया जा सकता है। यह नाटकीय प्रभाव पैदा करने, छाया को खत्म करने और कपड़ों और मॉडल की विशिष्ट विशेषताओं को उजागर करने के लिए आवश्यक है।

इसके साथ ही फ़ैशन फ़ोटोग्राफ़ी में मिश्रित प्रकाश व्यवस्था का भी गहरा योगदान है। प्राकृतिक और कृत्रिम प्रकाश के संयोजन से तस्वीरों में गहराई और आयाम को जोड़ा जा सकता है। फ़ोटोग्राफ़र प्राथमिक स्रोत के रूप में प्राकृतिक प्रकाश का उपयोग कर सकते हैं और छाया भरने या तत्वों को उजागर करने के लिए कृत्रिम प्रकाश को पूरक की तरह प्रयोग कर सकते हैं।

15.4.3 विषय की मुद्राएँ या पोज़िंग तकनीक

विषय या मॉडल द्वारा दी गईं मुद्राएं या पोज़ फ़ैशन फ़ोटोग्राफ़ी का एक प्रमुख बिन्दु है। इसमें सर्वप्रथम आते हैं गतिशील पोज़। यह मॉडलों को गतिशील और ऊर्जावान मुद्रा में कैद करता है, जिससे गति और ऊर्जा की भावना पैदा होती है। इसके साथ ही फ़ैशन फ़ोटोग्राफ़ी में प्राकृतिक मुद्राएँ भी महत्वपूर्ण हैं। मॉडल के अधिक आरामदायक और प्रामाणिक रूप के लिए प्राकृतिक मुद्राएँ अपनाई जा सकती हैं। यह दृष्टिकोण जीवनशैली और स्ट्रीट फ़ैशन फ़ोटोग्राफ़ी

में विशेष रूप से लोकप्रिय है, जहाँ इसका उद्देश्य वास्तविक जीवन के परिदृश्यों को चित्रित करना है। फ़ैशन फ़ोटोग्राफ़ी में भावात्मक मुद्राएँ भी महत्वपूर्ण हैं। फ़ैशन ब्रांड के संदेश और पहचान के अनुरूप भावनाओं और दृष्टिकोण को व्यक्त करने के लिए चेहरे के भाव और शारीरिक भाषा का उपयोग करते हुए चित्रों को कैद किया जाता है।

15.4.4कैमरा सेटिंग्स और उपकरण

फ़ैशन फ़ोटोग्राफ़ी के लिए उच्च-रिज़ॉल्यूशन कैमरों का उपयोग यह सुनिश्चित करता है कि छवियां स्पष्ट और विस्तृत हैं, जो फ़ैशन की वस्तुओं के जटिल विवरणों को कैप्चर करने के लिए महत्वपूर्ण है। प्राइम लेंस जो अपनी बेहतर तीक्ष्णता और व्यापक एपर्चर के लिए जाने जाते हैं, उथले गहराई वाले क्षेत्र के प्रभाव को बनाने के लिए आदर्श माने जाते हैं। इसके द्वारा पृष्ठभूमि को धुंधला करते हुए विषय पर फोकस बनाए रखा जाता है। इसके साथ ही ज़ूम लेंस का प्रयोग प्रायः फ़ैशन शो आदि में किया जाता है।

15.4.5संपादन या पोस्ट-प्रोसेसिंग तकनीकें

पोस्ट-प्रोसेसिंग में सबसे प्राथमिक है, चित्रों के रंग में सुधार। संपादन के समय तस्वीरों के रंग में इस प्रकार से समायोजन करना चाहिए कि यह सुनिश्चित हो सके कि वे सटीक और सुसंगत हों। कपड़ों के असली रंगों को दर्शाने के लिए फ़ैशन फ़ोटोग्राफ़ी में यह महत्वपूर्ण है। इसके बाद रीटचिंग के माध्यम से त्वचा को चिकना करना, विशेषताओं को बढ़ाना और खामियों को ठीक करना होता है। जबकि सम्पादन के बाद अप्राकृतिक चित्र से बचने के लिए री-टचिंग सावधानी से की जानी चाहिए, यह सम्पादित छवियों को अच्छा बनाने का एक अनिवार्य हिस्सा है। इसी के साथ संपादन में विशेष प्रभाव या स्पेशल इफ़ेक्ट का भी प्रयोग किया जाता है। इसमें एक विशिष्ट कलात्मक दृष्टि प्राप्त करने के लिए रचनात्मक प्रभाव जैसे फ़िल्टर या ओवरले तकनीक का प्रयोग किया जाता है। इसका उपयोग छवियों के भावदशा और सौंदर्य को बढ़ाने के लिए किया जा सकता है।

15.5 सारांश

निष्कर्षतः फ़ैशन फ़ोटोग्राफ़ी एक गतिशील और बहुआयामी प्रकार है, जिसमें तकनीकी कौशल, कलात्मक दृष्टि और सावधानीपूर्वक योजना के मिश्रण की आवश्यकता होती है। इस पूरे अध्याय में, हमने विभिन्न तकनीकों और

दृष्टिकोणों का पता लगाया, जो सम्मोहक और प्रभावशाली फ़ैशन छवियां बनाने में योगदान करते हैं। प्रकाश व्यवस्था और रचना के महत्व को समझने से लेकर पोज़िंग, प्रॉपिंग और दृश्य तत्वों को एकीकृत करने की कला में महारत हासिल करने तक, प्रत्येक पहलू एक फ़ैशन शूट की समग्र सफलता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। फ़ैशन फ़ोटोग्राफ़ी का उद्देश्य एक कहानी बताने और दृश्य के माध्यम से भावनाओं को जगाने की क्षमता में निहित है। चाहे वह उच्च फ़ैशन की भव्यता, जीवनशैली शूट की सापेक्षताया रनवे शो की गतिशील ऊर्जा को कैद करना हो, फोटोग्राफर का लक्ष्य ऐसी छवियां बनाना है जो दर्शकों के मन-मस्तिष्क पर प्रभाव डालती है। प्रकाश व्यवस्था का कलात्मक प्रयोग परिधानों को दिखाने और छवियों में गहराई जोड़ने में मदद करता है। इन सभी तत्वों का सावधानीपूर्वक चयन और एकीकरण एक साधारण छवि को एक सम्मोहक कहानी में बदल सकता है। अंततः फ़ैशन फ़ोटोग्राफ़ी की शक्ति महज़ दस्तावेज़ीकरण से परे जाकर कलात्मक अभिव्यक्ति का एक रूप बनने की क्षमता में निहित है।

15.6 शब्दावली

- **पोज़ या मुद्रा:** मॉडल या विषय द्वारा एक विशिष्ट रूप बनाने या किसी विशेष भावना को व्यक्त करने के लिए शरीर की स्थिति और गति। परिधानों को आकर्षक रूप में उजागर करने के लिए पोज़ देना महत्वपूर्ण है।
- **पोर्टफोलियो:** एक फोटोग्राफर के सर्वोत्तम कार्य या छवियों का संग्रह जो उनकी शैली, कौशल और बहुमुखी प्रतिभा को प्रदर्शित करता है। यह ग्राहकों को आकर्षित करने व कार्य को प्रदर्शित करने का माध्यम है।
- **फ़ैशन संपादकीय:** छवियों की एक श्रृंखला जो एक सुसंगत कहानी या विषय बताती है, जिसे अक्सर फ़ैशन पत्रिकाओं में दिखाया जाता है।
- **लुक बुक:** लुक बुक एक फ़ैशन ब्रांड के नवीनतम संग्रह को प्रदर्शित करने वाली तस्वीरों का एक आधिकारिक संग्रह है, जिसे नई शैलियों और रुझानों को एक सामंजस्यपूर्ण तरीके से प्रस्तुत करने के लिए डिज़ाइन किया गया है। आमतौर पर इसका उपयोग विपणन और प्रचार उद्देश्यों के लिए किया जाता है।

15.7 सन्दर्भ ग्रन्थ

- Filippo, B. (2014). *Fashion Photography: A Complete Guide to the Tools and Techniques of the Trade*. Watson-Guptill.
- Lindbergh, P. (2019). *Peter Lindbergh: On Fashion Photography*. Taschen.

- Smith, L. (2016). *The Photographer's Guide to Posing: Techniques to Flatter Everyone*. Rocky Nook.
- Mears, P. (2014). *The World of Fashion*. Abbeville Press.

15.8 अभ्यास हेतु प्रश्न

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1.फ़ैशन फ़ोटोग्राफ़ी में प्रयुक्त विभिन्न प्रकाश तकनीकों की व्याख्या करें और वे फ़ैशन सामग्रियों के भावदशा, लहज़े और प्रस्तुति को कैसे प्रभावित करती हैं?

2.फ़ैशन फ़ोटोग्राफ़ी के अंतर्गत शूट की योजना बनाने और निर्देशन से लेकर मॉडल, स्टाइलिस्ट और टीम के अन्य सदस्यों के साथ सहयोग करने तक विभिन्न जिम्मेदारियों पर प्रकाश डालें।

3.फ़ैशन फ़ोटोग्राफ़ी के विभिन्न प्रकारों की चर्चा करें तथा यह एक सम्मोहक छवियां बनाने में कैसे योगदान करते हैं।

4. फ़ैशन छवियों को बेहतर बनाने के लिए उपयोग की जाने वाली सामान्य संपादन तकनीकों का वर्णन करें।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1.व्यावसायिक फ़ोटोग्राफ़ी को उदाहरण देकर लिखिए।

2.हाई फ़ैशन फ़ोटोग्राफ़ी के अंतर्गत शूट की योजना बनाने पर प्रकाश डालें।

3.फ़ैशनफ़ोटोग्राफ़ी में कैमरा सेटिंग के बारे में लिखिए।

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

1.पोर्टफोलियो क्या हैं?

2.पोस्ट-प्रोसेसिंग तकनीक क्या है?

इकाई-16

पोर्ट्रेट फ़ोटोग्राफ़ी

पाठ संरचना

16.0 उद्देश्य

16.1 प्रस्तावना

16.2 पोर्ट्रेट फ़ोटोग्राफ़ी

16.3 पोर्ट्रेट फ़ोटोग्राफ़ी के प्रकार

16.3.1 पारंपरिक पोर्ट्रेट फ़ोटोग्राफ़ी

16.3.2 समूह पोर्ट्रेट

16.3.3 कैंडिड और स्ट्रीट पोर्ट्रेट

16.3.4 स्व-चित्रण अथवा सेल्फ़-पोर्ट्रेट फ़ोटोग्राफ़ी

16.3.5 जीवनशैली अथवा लाइफ स्टाइल फ़ोटोग्राफ़ी

16.3.6 ग्लैमर पोर्ट्रेट फ़ोटोग्राफ़ी

16.3.7 पर्यावरण संबंधी पोर्ट्रेट

16.4 पोर्ट्रेट फ़ोटोग्राफ़ी सम्बन्धी तकनीक

16.4.1 चित्र संरचना तकनीक

16.4.2 प्रकाश तकनीक

16.4.3 विषय की मुद्रा या पोज़िंग तकनीक

16.4.4 सम्पादन तकनीकें

16.5 सारांश

16.6 शब्दावली

16.7 सन्दर्भ ग्रन्थ

16.8 अभ्यास हेतु प्रश्न

16.0 उद्देश्य

इस इकाई का अध्ययन करने से आप निम्नलिखित तथ्यों से परिचित हो सकेंगे:

- संरचना, प्रकाश व्यवस्था, विषयवस्तु व संपादन सहित पोर्ट्रेट फ़ोटोग्राफ़ी के बुनियादी सिद्धांतों और तकनीकों की व्यापक समझ।
- प्राकृतिक प्रकाशतथास्टूडियो प्रकाश तकनीकों की समझ।
- पोर्ट्रेट तस्वीरों की संरचना को बढ़ाने और दृष्टि से आकर्षक छवियां बनाने के लिए विभिन्न नियमों का अन्वेषण।
- पोर्ट्रेट छवियों को परिष्कृत और आकर्षक करने के लिए रीटचिंग, रंग सुधार और शार्पनिंग जैसी आवश्यक पोस्ट-प्रोसेसिंग तकनीकों का ज्ञान।
- पोर्ट्रेट छवियों सम्बन्धी संपादन कला का गहरा ज्ञान।

16.1 प्रस्तावना

पोर्ट्रेट फ़ोटोग्राफ़ी एक मनोरम शैली है जो केवल लोगों की तस्वीरें लेने से कहीं आगे जाती है। यह एक कला का रूप है जो अपने विषयों के सार, व्यक्तित्व और भावनाओं को कैमरे से कैद करने के लिए समर्पित है। यह अध्याय पोर्ट्रेट फ़ोटोग्राफ़ी की दुनिया पर प्रकाश डालता है, इसके प्रकार, मौलिक तकनीकों और इस शिल्प में महारत हासिल करने के लिए आवश्यक सूक्ष्म कौशल की खोज करता है। विषय की आत्मा को प्रकट करने वाले अंतरंग व्यक्तिगत चित्रों से लेकर संबंधों और अंतःक्रियाओं को प्रदर्शित करने वाले गतिशील समूह शॉट्स तक, पोर्ट्रेट फ़ोटोग्राफ़ी रचनात्मक अभिव्यक्ति के लिए अनंत संभावनाएं प्रदान करती है। चाहे आप अनुभवी पेशेवर हों या उभरते उत्साही, यह अध्याय आपको सम्मोहक और विचारोत्तेजक चित्रों को कैद करने की आपकी क्षमता को बढ़ाने के लिए अंतर्दृष्टि और प्रेरणा प्रदान करेगा।

16.2 पोर्ट्रेट फ़ोटोग्राफ़ी

पोर्ट्रेट या रूपचित्र का इतिहास अत्यंत ही प्राचीन है। फ़ोटोग्राफ़ी के आविष्कार से बहुत पहले से ही पोर्ट्रेट मौजूद थे। प्राचीन समय में, जब तस्वीर लेने के लिए कैमरा भी नहीं होता था, तब शासक और राजा अपने स्वयं के चित्र बनाने के लिए चित्रकारों को नियुक्त करते थे। पोर्ट्रेट पेंटिंग चित्रकला की एक शैली है जो एक विशिष्ट व्यक्ति, व्यक्तियों के समूह आदि को दर्शाती है। यह चित्रकला शैली विशेष रूप से चेहरे को दर्शाती है तथा इसके साथ ही विषयवस्तु की समता, व्यक्तित्व और उसके भावों पर ध्यान केंद्रित करती है। आज इस परंपरा का स्थान पोर्ट्रेट फ़ोटोग्राफ़ी ने ले लिया है।इसके साथ ही पोर्ट्रेट फ़ोटोग्राफ़ी में व्यक्तियों या वस्तुओं की तस्वीरें खींचने के अलावा और भी बहुत कुछ शामिल होता है। फ़ोटोग्राफ़ी की यह शैली अद्वितीय क्षणों को कैद करने और उन्हें भावी पीढ़ियों के लिए संरक्षित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।छायाचित्रण की विभिन्न शैलियों में पोर्ट्रेट फ़ोटोग्राफ़ी सबसे जटिल शैलियों में से एक है, जिसमें एक फोटोग्राफर को महारत हासिल करनी होती है।

पोर्ट्रेट फ़ोटोग्राफ़ीया छायाचित्रण फ़ोटोग्राफ़ी की एक शैली है, जो किसी व्यक्ति या लोगों के समूह की सदृशता, व्यक्तित्व और मनोदशा को दर्शाने करने पर केंद्रित होती है। इसका प्राथमिक उद्देश्य विषय को आकर्षक और अभिव्यंजक तरीके से चित्रित करना है तथा उसके साथ ही उनके चेहरे की विशेषताओं, भावों और भावनाओं को उजागर करना होता है।पोर्ट्रेट छायाचित्रकार आकर्षक छवियां बनाने के लिए विभिन्न तकनीकों, प्रकाश व्यवस्था और रचनाओं का उपयोग करते हैं, जिससे वे वांछित संदेश या एक विशेष भावना को दर्शा पाते हैं। पोर्ट्रेट फ़ोटोग्राफ़ी को नियंत्रित स्थान जैसे स्टूडियोजहाँ प्रकाश व्यवस्था उसके अनुरूप हो तथा इसके साथ ही इसे स्टूडियो के बाहर प्राकृतिक क्षणों के बीच भी किया सकता है।

पोर्ट्रेट फ़ोटोग्राफ़ी का उपयोग विभिन्न उद्देश्यों के लिए किया जा सकता है, जिसमें व्यक्तिगत और पारिवारिक पोर्ट्रेट, व्यावसायिक या कॉर्पोरेट पोर्ट्रेट, संपादकीय या विज्ञापन अभियान शामिल हैं। यह छायाचित्रण का एक बहुमुखी रूप है, जो छायाचित्रकारों को अपने विषयों की अनूठी विशेषताओं और कहानियों का पता लगाने की अनुमति देता है।

16.3 पोर्ट्रेट फ़ोटोग्राफ़ी के प्रकार

पोर्ट्रेट फ़ोटोग्राफ़ी का उद्देश्य रचना, प्रकाश व्यवस्था और विषयवस्तु के स्थान जैसी फ़ोटोग्राफ़ी तकनीकों का उपयोग करके किसी विषय की पहचान, व्यक्तित्व और विषयवस्तु के मूलतत्व को दर्शाना है। पोर्ट्रेट फ़ोटोग्राफ़ी विभिन्न प्रकार की होती है जो पोर्ट्रेट के विषय के साथ-साथ शैली पर भी निर्भर होती है। उदाहरण के लिए, कुछ चित्र व्यावसायिक उपयोग और प्रकाशन के लिए अधिक पारंपरिक और औपचारिक हैं। अन्य प्रकार के चित्र अधिक अनौपचारिक होते

हैं जैसे कि जीवनशैली चित्रण जो विषयवस्तु के दिनचर्या को दर्शाता है। पोर्ट्रेट फ़ोटोग्राफ़ी विभिन्न प्रकार के होती है, जिसमें से कुछ निम्नलिखित हैं:

16.3.1 पारंपरिक पोर्ट्रेट फ़ोटोग्राफ़ी

पोर्ट्रेट फ़ोटोग्राफ़ी का पहला प्रकार पारंपरिक पोर्ट्रेट फ़ोटोग्राफ़ी होता है। पारंपरिक पोर्ट्रेट में कैमरे द्वारा जब चित्रों को लिया जाता है, वे अधिक औपचारिक और पारम्परिक प्रकार के होते हैं। सामान्यतः इसमें विषयवस्तु को स्टूडियो में पृष्ठभूमि के सामने रखकर शूट किया जाता है। वह विषय या व्यक्ति जिसका पोर्ट्रेट लेना है वो सीधे कैमरे की ओर देख रहा होता है। अक्सर, इन चित्रों को पूरे शरीर के बजाय विषय के सिर और कंधों को ही दर्शाया जाता है।

जो फोटोग्राफर पारंपरिक चित्र लेते हैं उनका लक्ष्य उस व्यक्ति के भावों और अभिव्यक्तियों को कैद करना होता है जिसे वे शूट कर रहे हैं। इस प्रकार में लोकप्रिय संस्कृति, राजनीति और इतिहास की सबसे प्रतिष्ठित हस्तियों के पारंपरिक चित्र कैद किये जाते हैं।इस प्रकार का उद्देश्य विषयों को उनके सर्वोत्तम और सबसे प्रामाणिक स्वरूप में कैद करना है, जिसके लिए विषयवस्तु के भावों, प्रकाश व्यवस्था, कैमरे में देखने के तरीके, और कैमरे के किस शॉट का प्रयोग हो ये सभी का बेहतर उपयोग किया जाता है।

16.3.2 समूह पोर्ट्रेट

अधिकांश रूप से पोर्ट्रेट फ़ोटोग्राफ़ी को एक ही विषयवस्तु या व्यक्ति पर केंद्रित किया जाता है, वहीदूसरी ओर एक समूह पोर्ट्रेट में कई विषयों या व्यक्तियों को कैद किया जाता है।फ़ोटोग्राफ़ी की यह शैली व्यक्तिगत चित्रण या पारंपरिक पोर्ट्रेट फ़ोटोग्राफ़ी से अलग है, क्योंकि इसमें एक ही फ्रेम के भीतर कई विषयों की परस्पर क्रिया शामिल होती है। समूह पोर्ट्रेट को अक्सर वैवाहिक कार्यक्रमों में वर-वधू के चित्र लेते समय,परिवार के सदस्य, मित्र, सहकर्मी या पेशेवर साझेदारों की तस्वीरें लेते समय प्रयोग किया जाता है।

समूह चित्रों का लक्ष्य विषयवस्तु के मध्य संबंध और उनकी प्रगाढ़ता को दर्शाना होता है। वहीँजब समूह पोर्ट्रेट में व्यक्तियों

की संख्या अधिक हो जैसे पारिवारिक समूह चित्र तो उसका लक्ष्य एकता को कैद करना होता है। चूँकि समूह चित्र हमेशा कई विषयों के साथ लिए जाते हैं, इसलिए अपने विषयों के बीच संबंधों पर ध्यान देना महत्वपूर्ण है।एक सफल समूह चित्र की कुंजी विषयवस्तु के संयोजन में निहित है। छायाचित्रकार को अपने विषयों को इस तरह से व्यवस्थित करना चाहिए जो समूह के भीतर संबंधों और गतिशीलता को दर्शाने के साथ-साथ संतुलित और सौंदर्यपूर्ण भी दिखाई दे। इसके लिए इस बात पर सावधानीपूर्वक विचार करने की आवश्यकता है कि विषय को कहाँ पर स्थान दिया गया है और वे एक-दूसरे के साथ कैसे सम्बन्ध रखते हैं।

16.3.3 कैंडिड और स्ट्रीट पोर्ट्रेट

कैंडिड और स्ट्रीट पोर्ट्रेट फ़ोटोग्राफ़ी दो आकर्षक शैलियाँ हैं जो सहज क्षणों की सुंदरता और रोजमर्रा की जिंदगी के सार को दर्शाती हैं। हालाँकि उनमें कुछ समानताएँ हैं, लेकिन उनमें प्रथक पहलू भी हैं जो उन्हें एक-दूसरे से अलग बनाते हैं। फ़ोटोग्राफ़ी की यह शैली प्रामाणिकता और सहज भावना पर जोर देती है, जिससे फोटो खींचे जा रहे व्यक्ति की असल भावनाएं प्रदर्शित होती है। कैंडिड फ़ोटोग्राफ़ी का लक्ष्य फोटोग्राफर के हस्तक्षेप या प्रभाव के बिना, विषय को उसी रूप में कैद करना है जैसे वह है। इसके परिणामस्वरूप अक्सर ऐसी छवियां बनती हैं जो वास्तविक और जीवंत होती हैं, जो विषय के चरित्र, भावनाओं और व्यक्तित्व को प्रकट करती हैं।

दूसरी ओर, स्ट्रीट पोर्ट्रेट, स्ट्रीट फ़ोटोग्राफ़ी का एक उपसमूह है। इन चित्रों में अक्सर अजनबियों या व्यक्तियों को उनके रोजमर्रा के परिवेश, जैसे कि भीड़-भाड़ भरी शहर की सड़कों, बाजारों, उद्यानों या अन्य सार्वजनिक स्थानों पर तस्वीरें खींचना शामिल होता है।स्ट्रीट फ़ोटोग्राफ़ी की चुनौती विषय के व्यक्तित्व और उस वातावरण को कैद करने में निहित है जिसमें वे स्थित हैं।

कैंडिड और स्ट्रीट फ़ोटोग्राफ़ी दोनों प्रकार के चित्रों को कैद करने के क्षणों को देखने और उसको कैद करने के लिए वृहद कुशलता की आवश्यकता होती है। इन शैलियों में काम करने वाले फ़ोटोग्राफ़रों को धैर्यवान और चौकस रहना चाहिए। इनको दिलचस्प विषयों और दृश्यों के लिए अपने परिवेश को लगातार सतर्कतापूर्वक देखते रहना चाहिए। उन्हें रचना और फ्रेमिंग में भी कुशल होना चाहिए, क्योंकि उन्हें अक्सर क्षणभंगुर क्षणों को कैद करने के लिए तेजी से काम करना पड़ता है।

कैंडिड चित्रों में फोटोग्राफर का लक्ष्य विषयवस्तु का सहज बने रहना होता है, जिससे विषय को कैमरे से अवगत हुए बिना अपनी गतिविधियों को करते रहना जारी रखे। इस दृष्टिकोण के लिए विवेकपूर्ण तरीके से और पर्यावरण में घुलने-मिलने की क्षमता के साथ-साथ विषय की गोपनीयता की आवश्यकता होती है। फ़ोटोग्राफ़रों को नैतिक दृष्टिकोण बनाए रखने का प्रयास करना चाहिए, यह सुनिश्चित करते हुए कि उनका काम विषय के अधिकारों का उल्लंघन नहीं करता है या असुविधा का कारण नहीं बनता है।

कैंडिड चित्रों के लिए फ़ोटोग्राफ़र व्यक्तियों से संपर्क कर सकते हैं और उनका चित्र लेने की अनुमति मांग सकते हैं, जिससे अधिक विचारशील और सहयोगात्मक प्रक्रिया संभव हो सकेगी। इसके परिणामस्वरूप आकर्षक छवियां प्राप्त हो सकती हैं जो विषय के व्यक्तित्व को दर्शाती हैं और साथ ही उनके परिवेश को भी उजागर करती हैं। इन मामलों में, आरामदायक और भरोसेमंद माहौल बनाने के लिए फोटोग्राफर को विषय के साथ संचार और संबंध बनाने में कुशल होना चाहिए। छवि के दृश्य प्रभाव को बढ़ाने के लिए दोनों शैलियों को विभिन्न फोटोग्राफिक तकनीकों, जैसे क्षेत्र की गहराई, प्रकाश व्यवस्था और परिप्रेक्ष्य के उपयोग से लाभ होता है। फोटोग्राफर क्षेत्र की उथली गहराई बनाने, विषय पर ध्यान आकर्षित करने और पृष्ठभूमि में मनभावन प्रभाव बनाने के लिए विस्तृत एपर्चर का उपयोग कर सकते हैं। कोणों और परिप्रेक्ष्यों के साथ प्रयोग करने से दृश्य में रुचि भी बढ़ सकती है और दृश्य के भाव और माहौल को व्यक्त करने में मदद मिल सकती है। चित्रों के संपादन में फोटोग्राफर अपने काम में उत्कृष्टता लाने के लिए रंगों में परिवर्तन और तीखेपन को समायोजित करके अपनी छवियों को और बेहतर बनाने का विकल्प चुन सकते हैं। हालाँकि, छवि के प्रभाव को बढ़ाने और उसकी प्रामाणिकता को बनाए रखने के बीच संतुलन बनाना महत्वपूर्ण है।

कैंडिड और स्ट्रीट पोर्ट्रेट फ़ोटोग्राफ़ी दोनों प्रकार के चित्र मानव जीवन की सुंदरता और जटिलता को उसकी सबसे प्राकृतिक स्थिति में कैद करने के अद्वितीय अवसर को प्रदान करते हैं। ये शैलियाँ दूसरों के जीवन में एक दिशा के साथ-साथ भेद्यता, लचीलेपन और जुड़ाव के क्षणों को प्रकट करती हैं जो दर्शकों के साथ गहरे स्तर पर जुड़ती हैं। इन शैलियों में महारत हासिल करके, फोटोग्राफर सम्मोहक और यादगार छवियां बना सकते हैं जो कहानियां बताती हैं और भावनाएं पैदा करती हैं।

16.3.4 स्व-चित्रण अथवा सेल्फ़-पोर्ट्रेट फ़ोटोग्राफ़ी

स्व-चित्रण अथवा सेल्फ़-पोर्ट्रेट, पोर्ट्रेट फ़ोटोग्राफ़ी का एक अनोखा और आत्मविश्लेषणात्मक रूप है, जहाँ फ़ोटोग्राफ़र अपनी छवि खींचने के लिए कैमरे को अपनी ओर रखता है। यह शैली आत्म-पहचान, व्यक्तिगत अभिव्यक्ति और रचनात्मकता की गहन खोज की अनुमति देती है, जिससे

यह कलात्मक और व्यक्तिगत गतिविधि के विस्तार दोनों के लिए एक शक्तिशाली उपकरण बन जाती है।

स्व-चित्र बनाने के लिए तकनीकी कौशल और आत्म-जागरूकता के मिश्रण की आवश्यकता होती है। पारंपरिक पोर्ट्रेट फ़ोटोग्राफ़ी के विपरीत, जहाँ फ़ोटोग्राफ़र विषय का मार्गदर्शन कर सकता है और उसके साथ बातचीत कर सकता है, सेल्फ-पोर्ट्रेट की मांग है कि फ़ोटोग्राफ़र दोनों भूमिकाएँ एक साथ प्रबंधित करें। इसमें वांछित परिणाम प्राप्त करने के लिए सावधानीपूर्वक योजना और कार्यान्वयन शामिल है।

स्व-चित्रण की प्राथमिक चुनौतियों में से एक है शॉट का चयन और रचना। चित्र को कैद करते समय कैमरे के व्यूफाइंडर के माध्यम से देखने के बिना, फ़ोटोग्राफ़र अक्सर शॉट कैप्चर करने के लिए ट्राइपॉड, रिमोट शटर या टाइमर प्रक्रिया जैसे उपकरणों पर भरोसा करते हैं। कई आधुनिक कैमरे ऐप या घूम जाने वाली (फ्लिप-आउट) वाली कैमरा स्क्रीन के साथ आते हैं जो फोटोग्राफरों को वास्तविक समय में उनकी रचना का पूर्वावलोकन करने की अनुमति देते हैं। प्रभावी आत्मचित्रण के लिए इन उपकरणों में महारत हासिल करना आवश्यक है।

स्व-चित्रों में प्रकाश एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, क्योंकि यह छवि के मनोदशा और स्थिति को नाटकीय रूप से प्रभावित कर सकता है। फ़ोटोग्राफ़रों को अलग-अलग प्रकाश व्यवस्था के साथ प्रयोग करना चाहिए ताकि यह पता लगाया जा सके कि कौन सी चीज़ उनकी विशेषताओं को सबसे अच्छी तरह से उजागर करती है और इच्छित भावना को व्यक्त करती है। प्राकृतिक प्रकाश, स्टूडियो लाइट और यहां तक कि बल्ब के लैंप या मोमबत्तियां जैसे रचनात्मक प्रकाश स्रोतों का उपयोग विभिन्न प्रभावों को प्राप्त करने के लिए किया जा सकता है। सेल्फ-पोर्ट्रेट की सेटिंग और पृष्ठभूमि भी उतनी ही महत्वपूर्ण है। स्व-चित्रों में वास्तविक भावना और व्यक्तित्व को दर्शाने के लिए कुछ हद तक आत्मनिरीक्षण और संवेदनशीलता की आवश्यकता होती है। इस अन्वेषण से शक्तिशाली और विचारोत्तेजक छवियां प्राप्त हो सकती हैं। इस प्रयोग से नई शैलियों और दृष्टिकोणों की खोज हो सकती है जो उनके समग्र फोटोग्राफिक अभ्यास को बढ़ाते हैं।

चित्रों का संपादन स्व-चित्रण का एक और महत्वपूर्ण पहलू है। संपादन सॉफ़्टवेयर फ़ोटोग्राफ़रों को एक्सपोज़र, रंग संतुलन और तीक्ष्णता जैसे पहलुओं को समायोजित करके अपनी छवियों को परिष्कृत करने की अनुमति देता है। हालाँकि, संपादन और प्रामाणिकता के बीच संतुलन बनाए रखना आवश्यक है, यह सुनिश्चित करते हुए कि अंतिम छवि मूल रूप के अनुरूप बनी रहे।

अपने कलात्मक मूल्य के अलावा, स्व-चित्र व्यक्तिगत दस्तावेज़ीकरण के रूप में काम कर सकते हैं, जो जीवन के विभिन्न चरणों, भावनाओं और अनुभवों को कैद करते हैं। वे व्यक्तिगत विकास और समय के साथ बदलाव को प्रतिबिंबित करने का एक तरीका प्रदान करते हैं, यह दृश्य दस्तावेज़ बनाते हैं जिसे दोबारा देखा और संजोया जा सकता है। कुल मिलाकरसेल्फ-पोर्ट्रेट फ़ोटोग्राफ़ी की एक सम्मोहक और बहुआयामी शैली है जो फोटोग्राफरों को उनकी पहचान और रचनात्मकता को गहराई से तलाशने में सक्षम बनाती है। तकनीकी पहलुओं में महारत हासिल करके और

आत्म-चित्रण की आत्मनिरीक्षण प्रकृति को अपनाकर, फोटोग्राफर शक्तिशाली छवियां बना सकते हैं जो उनके अद्वितीय अनुभवों और दृष्टिकोणों को बयां करती हैं।

16.3.5 जीवन शैली अथवा लाइफ स्टाइल फ़ोटोग्राफ़ी

जीवनशैली या लाइफस्टाइल फ़ोटोग्राफ़ी के चित्र लोगों को वास्तविक जीवन की स्थितियों में कैद करते हैं। वे ऐसी गतिविधियों में संलग्न होते हैं जो उनके रोजमर्रा के जीवन और व्यक्तित्व को दर्शाते हैं। पारंपरिक पोर्ट्रेट फ़ोटोग्राफ़ी के विपरीत, जो अक्सर नियंत्रित वातावरण में खींची गई छवियों पर केंद्रित होती है, जीवनशैली पोर्ट्रेट का उद्देश्य वास्तविक क्षणों और प्राकृतिक अभिव्यक्तियों का दस्तावेज़ीकरण करना होता है, यह एक वर्णन प्रदान करता है जो विषय के जीवन के बारे में एक कहानी बताता है।जीवनशैली के चित्र अधिक अनौपचारिक होते हैं और अक्सर उपभोक्ताओं से अधिक जुड़ने के लिए विज्ञापन में उपयोग किए जाते हैं।

जीवनशैली चित्रों की शूटिंग की अधिक अनौपचारिक प्रकृति के कारण, कई तस्वीरें कैंडिड रूप से ली जाती हैं। फोटोग्राफर एक सहज वातावरण बनाने का प्रयास करता है, जिसके परिणामस्वरूप छवियां सहज और जीवन के प्रति सच्ची लगती हैं। इसमें अक्सर परिचित वातावरण में शूटिंग करी जाती है जैसे कि विषय का घर, कार्यस्थल या पसंदीदा बाहरी स्थान, जहां वे सबसे अधिक सहज महसूस करते हैं। जीवनशैली के चित्रों में प्रकाश और रचना आवश्यक है, लेकिन उन्हें प्राकृतिक परिवेश के अनुकूल सादगीपूर्ण तरीके से पेश किया जाता है। फोटोग्राफर सयोंजना को बेहतर बनाने और छवियों में गहराई जोड़ने के लिए वातावरण में उपलब्ध प्रकाश स्रोतों, जैसे लैंप, खिड़कियां या मोमबत्तियों का भी उपयोग कर सकते हैं। जीवनशैली चित्रण में सहभागिता और जुड़ाव महत्वपूर्ण है। फ़ोटोग्राफ़र अपने विषय को उन गतिविधियों में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित कर सकता है जिनमें उन्हें आनंद आता है, जैसे कि खाना बनाना, बच्चों के साथ खेलना, या किसी शौक में शामिल होना। यह न केवल अधिक गतिशील और दिलचस्प शॉट्स लेने में मदद करता है बल्कि विषय के व्यक्तित्व और जुनून को भी दिखाने की अनुमति देता है। जीवनशैली चित्रों में पोस्ट-प्रोसेसिंग या सम्पादन छवियों के प्राकृतिक स्वरूप को बढ़ाने पर ध्यान केंद्रित करती है। चित्रों में उस क्षण की प्रामाणिकता को बनाए रखते हुए एक्सपोज़र, रंग संतुलन और तीक्ष्णता में सुधार करने के लिए समायोजन किए जाते हैं। तस्वीरों की वास्तविक अनुभूति को बनाए रखने के लिए आम तौर पर अति-संपादन से बचा जाता है।

जीवनशैली के चित्र लोगों के जीवन का दस्तावेजीकरण करने का एक समृद्ध और सार्थक तरीका प्रदान करते हैं। वास्तविक क्षणों और प्राकृतिक अंतःक्रियाओं पर ध्यान केंद्रित करके, ये चित्र विषय की दुनिया की एक झलक दिखाते हैं, जिससे ऐसी छवियां बनती हैं जो व्यक्तिगत और प्रासंगिक दोनों होती हैं। फ़ोटोग्राफ़ी की यह शैली व्यक्तियों के भाव और उनकी अनूठी कहानियों को दिखाने के लिए एक बेहतर माध्यम है, जिसके परिणामस्वरूप शाश्वत यादें होती हैं जो विषय और दर्शक दोनों के साथ सदैव रह जाती हैं।

16.3.6 ग्लैमर पोर्ट्रेट फ़ोटोग्राफ़ी

ग्लैमर पोर्ट्रेट एक फ़ोटोग्राफ़ी की शैली है जो विषय की सुंदरता, विशेषज्ञता और आकर्षण को एक परिष्कृत और शैलीबद्ध तरीके से कैद करने पर केंद्रित है। पारंपरिक चित्रों के विपरीत, जो प्राकृतिक अभिव्यक्तियों और विषयवस्तु की दिनचर्या पर जोर देते हैं, ग्लैमर पोर्ट्रेट का उद्देश्य असाधारण और प्रायः नाटकीय छवियां बनाना होता है, जो विषय की शारीरिक बनावट और फैशन की समझ को उजागर करते हैं। एक सफल ग्लैमर पोर्ट्रेट की कुंजी सावधानीपूर्वक तैयारी और विवरण पर ध्यान देने में निहित है। इस शैली में अक्सर विषय की विशेषताओं और चित्र को समग्र रूप से बढ़ाने के लिए पेशेवर रूप-सज्जा, बालों का सौंदर्यीकरण और विषय के अनुरूप कपड़ों का चयन शामिल होता है। इसका लक्ष्य विषय को उनके सबसे आकर्षण रूप में प्रस्तुत करना है तथा उनकी सुंदरता को एक आदर्श तरीके से प्रदर्शित करना है।

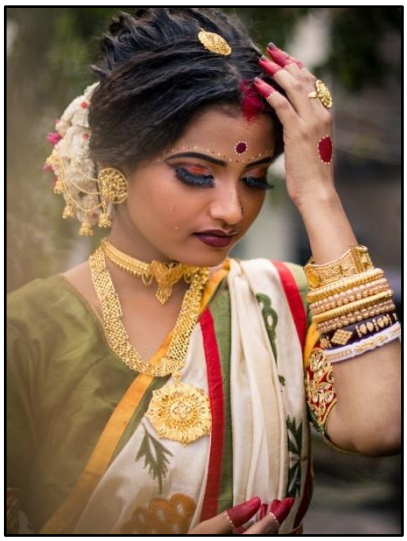

ग्लैमर फ़ोटोग्राफ़ी में प्रकाश एक महत्वपूर्ण और नाटकीय भूमिका निभाता है। फोटोग्राफर विषय के चेहरे और शरीर को तराशने या दर्शाने के लिए नियंत्रित प्रकाश व्यवस्था, जैसे सॉफ्टबॉक्स, ब्यूटी डिश और रिफ्लेक्टर का उपयोग करते हैं।जिससे हाइलाइट और छायाएं बनती हैं जो उनकी विशेषताओं को बढ़ाती हैं। व्यक्ति का सही मुद्रा या पोज़ में रहना और विषय के अनुसार भाव-भंगिमाएँ देना ग्लैमर पोर्ट्रेट का एक और महत्वपूर्ण पहलू है। फ़ोटोग्राफ़र अपने विषयों को ऐसे मुद्रा में निर्देशित करते हैं जो उनकी सर्वोत्तम विशेषताओं को निखारते हैं और आत्मविश्वास व लालित्य व्यक्त करते हैं। मुद्रा, कोण और अभिव्यक्ति पर ध्यान देने से एक मनोरम और गतिशील छवि बनाने में मदद मिलती है।

ग्लैमर पोर्ट्रेट में पृष्ठभूमि और सेटिंग्स को अक्सर विषय और शूट के समग्र सौंदर्य को पूरक करने के लिए सावधानीपूर्वक चुना जाता है। ये वांछित लक्ष्य और शैली के आधार पर न्यूनतम स्टूडियो पृष्ठभूमि से लेकर शानदार व बड़े स्थानों तक हो सकते हैं। विषय के स्वरूप को और बेहतर बनाने के लिए संपादन तकनीकों का उपयोग किया

जाता है, जिसमें त्वचा को सुधारना, प्रकाश व रंगों को समायोजित करना और विवरणों को परिष्कृत करना शामिल है। इसका उद्देश्य प्राकृतिक स्वरूप को बनाए रखते हुए एक परिष्कृत और पेशेवर स्वरुप प्राप्त करना है। ग्लैमर पोर्ट्रेट फैशन, सौंदर्य और मनोरंजन उद्योगों में लोकप्रिय हैं, जहां उनका उपयोग पत्रिकाओं, विज्ञापनों और व्यक्तिगत ब्रांडिंग के लिए किया जाता है। फ़ोटोग्राफ़ी की यह शैली ऐसी कालजयी छवियां बनाने के बारे में है जो सुंदरता और आकर्षण को प्रदर्शित करती हैं, विषय को सबसे ग्लैमरस रूप में प्रस्तुत करती हैं।

16.3.7 पर्यावरण संबंधी पोर्ट्रेट

पर्यावरण संबंधी पोर्ट्रेट में विषयों को उनके प्राकृतिक परिवेश में कैद करते हैं। यह शैली व्यक्ति और उनके पर्यावरण के बीच के संबंधों पर जोर देती है। पारंपरिक चित्रों के विपरीत, जो पूरी तरह से विषय पर ध्यान केंद्रित करते हैं, पर्यावरणीय पोर्ट्रेट व्यक्ति के जीवन, कार्य व उसके कार्य से जुड़ाव के बारे में अधिक व्यापक कहानी बताने के लिए पृष्ठभूमि और संदर्भ को शामिल करते हैं। पर्यावरण चित्रण में विषयवस्तु का विन्यास अथवा सेटिंग एक महत्वपूर्ण तत्व है, जो विषय की पहचान और जीवनशैली में अंतर्दृष्टि प्रदान करती है। इस प्रकार का चित्र अक्सर कार्यस्थल, घर या बाहरी सेटिंग जैसे स्थानों पर होता है जो विषय के लिए महत्व रखता है। उदाहरण के लिए, एक कलाकार की तस्वीर उसके स्टूडियो में खींची जा सकती है, जो अपने काम और यंत्रों से घिरा हुआ है, जबकि एक किसान को उसके खेतों या खलिहान में चित्रित किया जा सकता है।

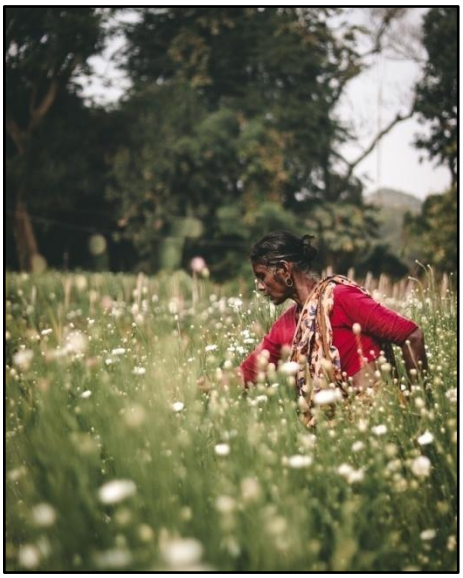

पर्यावरणीय चित्रों में प्रकाश आम तौर पर प्राकृतिक होता है या सेटिंग के भीतर उपलब्ध प्रकाश स्रोतों का उपयोग करता है। यह दृष्टिकोण दृश्य की प्रामाणिकता बनाए रखने में मदद करता है और विषय और उनके पर्यावरण के बीच संबंध को बढ़ाता है। फ़ोटोग्राफ़रों को विभिन्न प्रकाश स्थितियों के साथ काम करने में माहिर होना पड़ता है, चाहे वह खिड़की से आने वाली मध्यम रोशनी हो या बाहर दोपहर की कड़ी धूप हो। विषय को उसके परिवेश के साथ संतुलित करने के लिए रचना और फ़्रेमिंग भी आवश्यक है। फ़ोटोग्राफ़र अक्सर परिवेश को अधिक शामिल करने या दिखाने के लिए वाइड-एंगल लेंस का उपयोग करते हैं। इसके साथ ही यह सुनिश्चित करना होता है कि पृष्ठभूमि विषय से ध्यान भटकाने के बजाय उसकी पूरक हो। विषय और उनकी सेटिंग के बीच परस्पर क्रिया सामंजस्यपूर्ण होनी चाहिए, साथ ही वातावरण चित्र में गहराई और संदर्भ जोड़ता है।

शॉट का चयन और फ्रेम में कैद की जाने वाली सभी जानकारियाँ पर्यावरणीय चित्रों के प्रमुख पहलू हैं। फ़ोटोग्राफ़रों का लक्ष्य विषय को प्राकृतिक व सहज क्षणों में कैद करना है, जो उनके वास्तविक चरित्र और उनके पर्यावरण के साथ संबंध को दर्शाता है। इसमें उनकी दैनिक गतिविधियों, काम या शौक में संलग्न होने के दौरान उनकी तस्वीरें लेना शामिल हो सकता है। पर्यावरणीय चित्रण में चित्रों का सम्पादन दृश्य के प्राकृतिक तत्वों को बढ़ाने पर केंद्रित होता है। कैप्चर किए गए क्षण की प्रामाणिकता को बनाए रखते हुए एक्सपोज़र, रंग संतुलन और तीक्ष्णता में सुधार करने के लिए समायोजन किए जाते हैं। पर्यावरणीय चित्र शक्तिशाली कहानी कहने के उपकरण हैं, जो विषय की दुनिया की एक झलक पेश करते हैं और पारंपरिक चित्रों की तुलना में एक समृद्ध कथा प्रदान करते हैं। व्यक्ति और उनके परिवेश के बीच परस्पर क्रिया को उजागर करके, ये चित्र एक गहरा संबंध बनाते हैं और विषय के जीवन और पहचान की अधिक व्यापक समझ व्यक्त करते हैं।

16.4 पोर्ट्रेट फ़ोटोग्राफ़ी सम्बन्धी तकनीक

पोर्ट्रेट फ़ोटोग्राफ़ी एक कला का रूप है जिसमें तकनीकी कौशल, रचनात्मकता, मानवीय भावनाओं और बातचीत की समझ के मिश्रण की आवश्यकता होती है। विभिन्न तकनीकें एक साधारण से लिए गए चित्र से एक सम्मोहक और विचारोत्तेजक छवि में बदल सकती हैं। पोर्ट्रेट फ़ोटोग्राफ़ी की तकनीकों में रचना, प्रकाश व्यवस्था, विषयवस्तु और सम्पादन शामिल है, जो आश्चर्यजनक पोर्ट्रेट बनाने के लिए एक व्यापक मार्गदर्शिका प्रदान करता है।

16.4.1 चित्र संरचना तकनीक

रूल ऑफ़ थर्डस : फ़ोटोग्राफ़ी के मूलभूत सिद्धांतों में से एक रूल ऑफ़ थर्डस फ्रेम को दो क्षैतिज और दो ऊर्ध्वाधर रेखाओं का उपयोग करके नौ बराबर भागों में विभाजित करता है। विषय को इन पंक्तियों के साथ या उनके प्रतिच्छेदन पर रखने से एक संतुलित और गतिशील रचना बनती है। यह तकनीक दर्शकों का ध्यान विषय की ओर आकर्षित करने में मदद करती है और छवि में रुचि को जोड़ती है।

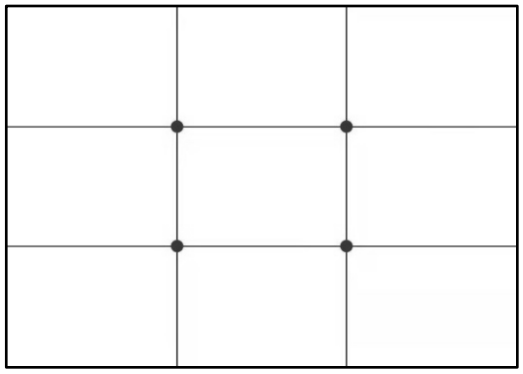

लीडिंग लाइन्स या अग्रणी पंक्तियाँ : लीडिंग लाइन्स या अग्रणी पंक्तियों का उपयोग करने से दर्शकों की आँखों को विषय की ओर निर्देशित किया जाता है। यह नियम किसी चित्र की संरचना के आकर्षण को बढ़ा सकता है। ये रेखाएँ सड़कों और सड़कों के किनारे लगी बाड़ों से लेकर किसी व्यक्ति के शरीर या प्राकृतिक रेखाओं तक कुछ भी हो सकती हैं।

समरूपता और पैटर्न : सममित रचनाएं और दोहराए जाने वाले पैटर्न एक चित्र में सद्भाव और संतुलन की भावना पैदा कर सकते हैं। जबकि समरूपता एक औपचारिक और संरचित अनुभव दे सकती है, पैटर्न दृश्य में रुचि और बनावट जोड़ सकते हैं।

16.4.2 प्रकाश तकनीक

प्राकृतिक प्रकाश: प्राकृतिक प्रकाश का उपयोग सुंदर चित्र प्राप्त करने के सबसे प्रभावी तरीकों में से एक है। प्राकृतिक प्रकाश की गुणवत्ता पूरे दिन बदलती रहती है, जिससे विभिन्न मूड और प्रभाव मिलते हैं। सूर्योदय के ठीक बाद या सूर्यास्त से पहले का सुनहरा प्रकाश चित्रों के लिए अनुकूल होता है। आसमान में आच्छादित बादल रहने वाले दिन विसरित प्रकाश प्रदान करते हैं जो कठोर छाया को कम करता है और एक समान व हल्की रोशनी पैदा करतेहैं।

कृत्रिम प्रकाश: स्टूडियो लाइटें जैसे सॉफ्टबॉक्स, छतरियां और स्ट्रोबस, फोटोग्राफरों को प्रकाश की स्थिति पर नियंत्रण प्रदान करती हैं। सॉफ्टबॉक्स और छतरियाँ प्रकाश को फैलाती हैं, कठोर छाया को कम करती हैं और एक हल्का व समान प्रभाव पैदा करती हैं। एकाधिक प्रकाश स्रोतों का उपयोग करके हाइलाइट्स और छाया को नियंत्रित करके चित्र में आयाम और गहराई जोड़ी जा सकती है।

16.4.3 विषय की मुद्रा या पोज़िंग तकनीक

आरामदायक और प्राकृतिक मुद्राएं : प्रामाणिक अभिव्यक्तियों और भावनाओं को कैद करने के लिए विषयों को उनके स्वाभाविक रूप से कार्य करने के लिए प्रोत्साहित करना आवश्यक है। बातचीत में शामिल होना, संगीत बजाना या विषय को स्वतंत्र रूप से घूमने की अनुमति देना एक आरामदायक माहौल बनाने में मदद कर सकता है, जिससे

वास्तविक तस्वीर उतर सकती है। इसके साथ ही विशिष्ट भावनाओं या यादों के बारे में सोचने के लिए कहने से वास्तविक अभिव्यक्तियाँ व प्रतिक्रियाएँ उत्पन्न हो सकती हैं जो चित्र में अच्छी तरह से प्रदर्शित होती हैं।

शारीरिक भाषा: विषय के शरीर की स्थिति चित्र के समग्र अनुभव को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित कर सकती है। मुद्रा में थोड़ा सा समायोजन, जैसे आगे की ओर झुकना, बाहों को सही स्थान पर रखना, सिर को झुकाना विभिन्न दृष्टिकोण व भावनाओं को व्यक्त कर सकता है। प्राकृतिक गति और अंतःक्रिया को प्रोत्साहित करने से भी चित्र में गतिशीलता आ सकती है।

हाथ और इशारे: हाथ अभिव्यंजक हो सकते हैं और किसी चित्र में संदर्भ जोड़ सकते हैं। जेब में हाथ डालने, चेहरे को छूने या किसी वस्तु को पकड़ने से विषय के व्यक्तित्व या मनोदशा के बारे में सुराग मिल सकता है। अजीब या ध्यान भटकाने वाली स्थिति से बचने के लिए हाथों की स्थिति पर ध्यान देना महत्वपूर्ण है।

16.4.4 सम्पादन तकनीक

री-टचिंग : री-टचिंग में दाग-धब्बे, बिखरे बाल और त्वचा की बनावट जैसी छोटी खामियों को ठीक करना शामिल है। संपादन सॉफ़्टवेयर में क्लोन स्टैम्प, हीलिंग ब्रश और फ़्रीक्वेंसी पृथक्करण जैसे उपकरण एक परिष्कृत लेकिन प्राकृतिक लुक प्राप्त करने में मदद कर सकते हैं।

रंग सुधार: रंग संतुलन और टोन को समायोजित करने से चित्र के समग्र भाव को बढ़ाया जा सकता है। उग्र रंग या वार्म कलर सांत्वना और अंतरंगता की भावना पैदा कर सकते हैं, जबकि शीत रंग या कूल कलर अधिक शांत या नाटकीय माहौल व्यक्त कर सकते हैं। रंग संतुलन को ठीक करने के लिए वक्र, स्तर और चयनात्मक रंग समायोजन जैसे उपकरण आवश्यक हैं।

शार्पनिंग: चयनात्मक शार्पनिंग करने से चित्र में विवरण को बढ़ाया जा सकता है, जिससे आंखें, बाल और बनावट जैसी विशेषताएं उभरकर सामने आती हैं। हालाँकि, अधिक शार्पनिंग करने से बचना महत्वपूर्ण है, जो एक अप्राकृतिक और अप्रिय चित्र का निर्माण कर सकता है।

रचनात्मक संपादन: बनावट, ओवरले और रंग ग्रेडिंग जैसे रचनात्मक तत्वों को जोड़ने से एक चित्र को कालजयी कला में बदला जा सकता है। विभिन्न प्रभावों और शैलियों के साथ प्रयोग करने से फोटोग्राफरों को अपने चित्रों में अद्वितीय सौंदर्य को विकसित करने और अपने काम में एक व्यक्तिगत स्पर्श देने का प्रयास करना चाहिए।

16.5 सारांश

पोर्ट्रेट फ़ोटोग्राफ़ी एक बहुआयामी अभ्यास है, जो तकनीकी ज्ञान को कलात्मक दृष्टि से जोड़ती है। रचना, प्रकाश व्यवस्था, विषय के शरीर की मुद्राएं और सम्पादन तकनीकों में महारत हासिल करके, फोटोग्राफर सम्मोहक और विचारोत्तेजक चित्र बना सकते हैं। तकनीकी कौशल के साथ ही नैतिक विचार और मानवीय संपर्क की गहरी समझ ऐसे चित्र बनाने के लिए आवश्यक है जो न केवल देखने में आश्चर्यजनक हों बल्कि सम्मानजनक और प्रामाणिक भी हों। इस क्षेत्र में एक नया फोटोग्राफर हो या अनुभवी फोटोग्राफर, विभिन्न तकनीकों और दृष्टिकोणों के साथ लगातार प्रयोग करने से उसे अपनी अनूठी शैली विकसित करने में मदद मिलेगी और पोर्ट्रेट फ़ोटोग्राफ़ी के माध्यम से शक्तिशाली दृश्य कहानियां बताने की क्षमता भी बढ़ेगी।

16.6 शब्दावली

- **एपर्चर:** कैमरे के लेंस में खुला भाग जो प्रकाश को सेंसर या फिल्म तक जाने की अनुमति देता है। एपर्चर का आकार एपर्चर सेटिंग्स का उपयोग करके समायोजित किया जा सकता है, जो एफ-स्टॉप में व्यक्त किए जाते हैं। एफ-स्टॉप नंबर, या एफ-नंबर, एपर्चर के व्यास और लेंस की फोकल लंबाई का अनुपात है। छोटे एपर्चर में बड़ा एफ-स्टॉप अंक होता है, जबकि बड़े एपर्चर में छोटा एफ-स्टॉप अंक होता है।
- **एक्सपोज़र:** एक्सपोज़र फ़ोटोग्राफ़ी के सबसे बुनियादी शब्दों में से एक है। जब आप कोई तस्वीर लेते हैं, तो आप कैमरे का एपर्चर खोलने के लिए शटर बटन दबाते हैं और प्रकाश प्रवाहित होता है, जिससे सेंसर से प्रतिक्रिया शुरू हो जाती है। एक्सपोज़र प्रकाश की वह मात्रा है जो आपके कैमरे के सेंसर तक पहुँचती है और एक निश्चित अवधि में दृश्य डेटा बनाती है।
- **फ़्रेमिंग:** फ़ोटोग्राफ़ी में फ़्रेमिंग से तात्पर्य चित्र बनाने की प्रक्रिया से है। इसमें यह चुनना शामिल है कि आप फ़्रेम में क्या शामिल करेंगे और क्या छोड़ देंगे। इसका लक्ष्य एक मनभावन रचना तैयार करना है जो दर्शकों का ध्यान विषय वस्तु की ओर ले जाए।

- **की-लाइट:** यह सबसे महत्वपूर्ण और सबसे तीव्र प्रकाश होता है, जिसे एक फोटोग्राफर, सिनेमैटोग्राफर या लाइटिंग कैमरामैन किसी लाइटिंग सेटअप में उपयोग करेगा। मुख्य प्रकाश का उद्देश्य विषय के स्वरूप और आयाम को उजागर करना है।

16.7 सन्दर्भ ग्रन्थ

1. McIntosh, W. S. (2004). Classic Portrait Photography: Techniques and Images from a Master Photographer. Amherst Media.
2. Pavlidis, G. (2022). Foundations of Photography: A Treatise on the Technical Aspects of Digital Photography. Poland: Springer International Publishing.
3. Peterson, B. (2020). Understanding portrait photography: How to shoot Great Pictures of people anywhere. Watson-Guptill.
4. Valind, E. (2014). Portrait photography: From Snapshots to Great Shots. Pearson Education.
5. Wilkinson, P., & Plater, S. (2015). Mastering Portrait photography.

16.8 अभ्यास हेतु प्रश्न

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

4. पोर्ट्रेट फ़ोटोग्राफ़ी में सुनहरे घंटे के महत्व को समझाइए और इस दौरान प्रकाश की विशेषताओं का वर्णन कीजिए।
5. रूल-ऑफ़-थर्ड्स की अवधारणा का वर्णन करें और पोर्ट्रेट फोटोग्राफ की संरचना को सुधारने के लिए इसे किस प्रकार लागू किया जा सकता है।
6. पोर्ट्रेट फ़ोटोग्राफ़ी में प्रकाश की भूमिका पर चर्चा करें। विभिन्न प्रकार के प्रकाश तकनीकों की तुलना करें और बताएं कि प्रत्येक तकनीक विषय के भाव और उपस्थिति को कैसे प्रभावित करती है। उन परिदृश्यों के उदाहरण प्रदान करें जहां प्रत्येक प्रकाश तकनीक का उचित उपयोग किया जा सकता है।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. पर्यावरण संबंधी पोर्ट्रेट को उदाहरण देकर लिखिए?

2. ग्लैमर पोर्ट्रेट फ़ोटोग्राफ़ी की योजना बनाने पर प्रकाश डालें?

3. स्ट्रीट पोर्ट्रेट के बारे में लिखिए?

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

1. री-टचिंग क्या हैं?

2. एक्सपोज़र क्या है?

साभार : शिंजन चटर्जी